नखशिखहजारा ॥

परमानंदसुहाने संग्रहीत ॥

जिसमें

श्रीजगज्जननी राधिकाजी महारानी के नख-शिखका वर्णन पद्माकर, पजनेस, परताप, प्रवीन, बेनी, बलदेव, बलभद्र, ब्रह्म, भूषण, भगवन्त, मतिराम, मुबारक, रघुराज, रघुनाथ, रसखानि शम्भु, हठीदिवाकर, सेनापति, दूलहद्विजराज, ठाकुर, चिन्तामणि, शिवनाथ, गिरिधारी, ग्वाल, केशवदास, किशोर, कालिदास, कविन्द, श्रीपति, इत्यादि कवियों के बनायेहुये २३७ दोहा व १००० सवैया कवित्तों में वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीबल्लभकुलसेवक वैश्यकुलोत्पन्न बंगालीलाल सुहानेके पुत्र परमानन्दसुहाने ने सर्वकाव्यानुरागियों के अवलोकनार्थ अतिपरिश्रम करके अनेकानेक मुद्रित व हस्तलिखित ग्रन्थोंसे चुनकर संग्रहकिया ॥

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी,आइ,ई) के छापेखाने में छपा
दिसम्बर सन् १८९३ ई० ॥

विज्ञापनपत्र ॥

विचित्रचरित्र ॥

तयारहै ! तयारहै ! तयारहै ! अब यह अपूर्वकथा विचित्रचरित्र नामतियारहै इसपुस्तकमें १४४७ सफ़ेहैं और आदिसे अन्ततक प्रेम-वीर-शृंगार और करुणाआदि अनेकरसोंसेभरेहुए नानाप्रकारके छन्द आख्यानोंसे पूर्ण है मुख्य आशय इसपुस्तकका यह है कि इसभरतखण्ड में एकसमय ऐसा होगयाहै कि उससमय में सर्वत्र म्लेच्छोंकाराज्य होगयाथा और वह म्लेच्छ ऐसे मायावी थे कि दूसरी पृथ्वी दूसरा आकाश दूसरा सूर्य और दूसरा चन्द्रमा माया बलसे बना देते थे और अपनेको ईश्वर समझते थे और संसारी मनुष्यभी उनको अपनाईश्वरसृष्टिकर्त्ता जानकर उनकी पूजा और उपासना ईश्वरके समान करतेथे निदान ऐसाहोगया था कि उससमयमें संपूर्ण वेदमार्ग संसारसे उठगयेथे और जो सृष्टिकर्त्ता परमेश्वरहै उसका कोई नामभी नहींजानताथा ऐसा कठिनसमय प्राप्तहोनेपर उससमयके महात्माओंने सच्चिदानन्द ईश्वर से उन म्लेच्छों के नाश होनेकी प्रार्थनाकी और उसके अनुसार एक शत्रुंजयनामी बड़ाहरिभक्त राजा उत्पन्नहुआ और उसने सहस्रों वर्ष युद्धकरके सब पृथ्वी के मायावी म्लेच्छों का नाशकरके सन्मार्गको स्थापितकियायह तो इसपुस्तकका तात्पर्याशय है और इसके अन्तर्गत जो कथा वर्णित हैं वह यहहैं १ मायासेरचेहुए सहस्रोंदेश और पर्वतोंकावर्णन २ सहस्रोंमायाकृत वन बाग उपवन और वाटिकाओंकी शोभाका कथन ३ मायाकृत असंख्यदुर्ग प्रासाद मन्दिर नगर ग्राम और सभाओं की अद्भुत सुन्दरताका आख्यान ४मायाकृत लाखोंनदी सरोवर और समुद्रों की शोभा की कथा ५ सहस्रों मायावी म्लेच्छ और म्लेच्छियोंके मायाकृत स्वरूप और सामर्थ्यका निरूपण ६ शतशः मायाकृत युद्ध होने की कथा ७ नानाप्रकार के मायाकृत अस्त्र शस्त्रोंका वर्णन ८ सहस्रों स्त्री और पुरुषों की नखशिखशोभा और शृंगार

भूमिका ॥

बिदित हो कि इस पुस्तक के रचनेका यह कारणहै कि एक देवस मैं कुछ कबित्त अवलोकनकर रहाथा उसीसमय हमारे पेता बंगालीलाल सुहाने जोकि इसकाव्यके कहनेमें प्रसिद्धथे, मुझसे कहा कि एक पुस्तक तुम ऐसी संग्रह करो कि जिसमें नख से शिख तकके कबित्त एकसहस्त्र अनेकानेक कवियों के रहैं — हे प्रिय पाठक गणो यह आज्ञा पिताकी पातेही उसी दिन से इस पुस्तकके रचने का उत्साह हुआ, परन्तु दैवगतिसे पिता का देहान्त जेठ सुदी ११ संवत् १९४७ तारीख ३० मई सन् १८९० को होजाने के सबब से फिर यह कार्य्य वर्ष भरतक न होसका इसके पश्चात् पुतली घरकी नौकरी छूटजाने के सबबसे फेर मुझको राजनादगांवदी सेन्ट्रल प्राविन्सेज मिलसलिमिटेड के सेक्रेटरी वा ऐजण्ट पंडित गदाधर शुक्ल के पास जाना पड़ा वा उनके आश्रित वहां रहा लेकिन वहां भी यह ग्रंथ संग्रह न होसका तदनन्तर तारीख ९ अक्टूबर सन् ९२ को उनकी मृत्यु होजाने के सबबसे वहांसे नौकरी छोड़कर घरआया--वा दो तीन महीनाका अवकाश मिलनेसे फिर यह कार्य पूर्णरूपसे होसका अब मैं सब विद्यानुरागियोंसे प्रार्थना करताहूं कि इस विषयका यह प्रथमही संग्रहहै इससे जैसा होसका संग्रह किया जहां कहीं इसमें अशुद्ध वा अनुचित देखैं क्षमाकरैंगे ॥

(आपका शुभचिन्तक श्रीवल्लभ कुल सेवक
परमानन्दसुहाने)
ज़िलाजबलपुर, मध्यप्रदेश

इश्तिहार॥

सब महाशयोंको सूचित कियाजाताहै कि इस पुस्तकका कुल हक्क मैंने श्रीमान् मुन्शीनवलकिशोर (सी, आई, ई) मालिक मतबा अवध अखबार लखनऊ को दे दियाहै इससे मेरी वा उक्त महाशय की आज्ञाविना कोई छापने का अधिकारी नहीं है॥

मैं सर्व काव्यानुरागियों के अवलोकनार्थ और भी तीन ग्रन्थ संग्रह कर रहा हूं उनके नाम नीचे लिखेहैं. वा उक्त महाशय की कृपा दृष्टि रहने से इसी प्रेसमें प्रकाशित कियेजायँगे॥

(१) षट्ऋतुहजारा--इसमें एकहजार कबित्त सवैया हर एक कविके अलग अलग रहैंगे और ऋतुभी अलग अलग रहैंगी सूची-पत्र में देखकर जिस कविका कवित्त चाहो तुरन्त देखलो॥

(२) परमानन्दसंग्रहीतकबित्तहजारा--इसमें भी एकहजार कवित्त सवैया प्राचीन कवियों के जुदे जुदे हरएक कविके रहैंगे॥

(३) नायकासर्वसंग्रह--इसमें नायका भेदके प्रायः दो हजार कवित्त सवैया रहैंगे॥

नीचे लिखेहुयेग्रन्थ प्राचीनकवियोंके वनायेहुये जिनमहाशयों के पास हस्त लिखित वा छपेहुये होवैं और मुझे कृपा पूर्वक देवैं तो मैं उनको उनकी इच्छानुसार पारितोषिकदेसक्ताहूं मिहरबान-गी करके नीचे लिखे पतेसे पत्र भेजें॥

ग्रन्थोंकेनाम॥

(कालिदासहजारा--कालिदासकविकृत) (भूषणहजारा--भूषणकविकृत) (किशोरसंग्रह--किशोरकविकृत) (सतकविगि-राविलास—बलदेवकविकृत) (हनूमान्नखशिख--खुमानकवि-कृत) (रागसागरोद्भवरागकल्पद्रुम--कृष्णानन्द व्यासदेवकृत यह कलकत्ता का छपा हुआहै) (रहीमकविके दोहा) वा बिहारीकवि की सतसईके ऊपर करीववीसटीकाहुयेहैं वहभी हमको चाहिये॥

बाबू परमानन्द सुहाने बम्बई बीडी
मरचन्ट कोतवाली के पास
जबलपुर, सिटी मध्यप्रदेश

नखशिखहजारा का सूचीपत्र ॥

नखशिख हजाराके कबियोंका सूचीपत्र ॥

हे प्रिय काव्य रसिकों ॥

आपने आजतक अनेकानेक इसविषयके ग्रन्थ अवलोकन किये होवैंगे परन्तु ऐसा सूचीपत्र दृष्टिगोचर न हुआ होगा इस सूचीपत्रमें यह गुणहै कि कबियोंके कबित्त सवैया बहुत सरलता से देखने में आतेहैं, इसग्रन्थमें एकसौ साठ कवियों की कविता है वा जिन कबित्तोंमें कबियोंके नाम ठीक ठीक नहीं मालूम होते वे जुदे लिखेगयेहैं. इसग्रन्थको देखकर कोई कोई महाशय यह भी कहैंगे कि उक्त कबियोंके जीवन चरित्र क्यों नहीं दिये सो जीवन न देनेका यह कारणहै कि एकएक नामके कईकवि होग-येहैं इससे उनकी काव्य अलग अलग लिखना वर्त्तमान समय के संग्रह कर्त्तासे नहीं होसक्ता वा एक ग्रन्थ महान् परिश्रमसे शिवसिंहजीने (शिवसिंह सरोज) नाम संग्रह करके छपायाहै इसमें एक हजार कबियोंके जीवन चरित्रमय सन् सम्वत्के दिये हैं और इसी प्रेसमें छपाहै अगरदेखनेकी इच्छाहोवै तोमँगाकर देखिये. मेरीभूलसे पांचकबियोंके कवित्त इसग्रंथमें नहीं दियेगये जिनके नाम कि ग्रंथकेआदिमें हैं वा कई ऐसे कवित्त भी हैं कि जो दो दफे लिखगये हैं उन कवित्तों के ऊपर ऐसा ❀ चिह्न है आप सब महाशय कृपा करके इसमेरी भूल को क्षमा करेंगे ॥

आप का कृपाभिलाषी
पुस्तक संग्रहकर्त्ता

परमानन्द सुहाने
बम्बई बीड़ी मरचएट
जबलपुर सिटी ॥

४९ देवकीनन्दनकवि (टोटल ३६)

५० देवकवि (टोटल १)

५१ देवमणिकवि (टोटल १७)

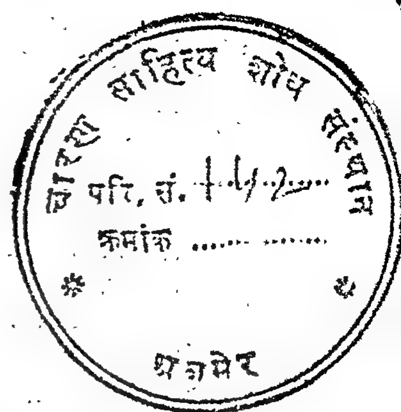
५२ दयादेवकवि (टोटल २)

५३ दयानिधिकवि (टोटल १)

१३७ शम्भुराज कवि (टोटल २२)

इतिश्रीनखशिखहजाराकेकवियोंकासूचीपत्रपरमानन्द सुहानेसंग्रहीतसम्पूर्णम् ॥





अथ नखशिख हजारा ॥

परमानन्दसुहाने संग्रहीत ॥

अथ चरणवर्णन ॥

दोहा ॥

अतिकोमलपद बरणिये पल्लव कमल समान ॥
जलजकमलसे चरणकहि करकहिथलजप्रमान १

कवित्त ॥ कोमल अरुणस्वच्छ पुहुपगुलावहूते अति द्युतिवन्त दिव्यकीरति कुमारीके । नूपुर निवासहैं अनूप गतवारे शुभमोहन सदैव कन्त मौतमदहारीके ॥ भने रघुनाथ ना विसारों क्षणएक धन्य सवसुखदाता कृष्णचन्द्र पियप्यारीके । वारों रतिरम्भा शचीशत अतिशोभापुंज ऐसेपदकंज मंजु राधिकादुलारीके १ ॥

क० ॥ कोमलविमल मंजु कंजसेअरुणसोहैं लक्षण समेत शुभ शुद्ध कंदनीकेहैं । हरीकेमनालय निरालय निकारनको भक्तिवरदायक वखानै छंदनीकेहैं ॥ ध्यावत सुरेशशम्भु शेष औगणेश खुलेभाग अवनीकेजहांमन्द

परेनीके हैं। कटैं यमफंदनीय इंदनीय हर हरि बंदनी चरण वृषभाननंदनीकेहैं २ ॥

क०॥ कोऊ उमाराज रमाराज यमाराज कोऊ कोऊ रामचंद्र सुखकंदनाम नाधेमैं। कोऊध्यावै गणपति फणिपति सुरपति कोऊदेवध्याय फललेत पलआधे में॥ हठी को अधार निरधारकी अधारतुही जप तप योग यज्ञ कछुवैन साधेमैं। कटैंकोटि बाधे मुनिधरत समाधे ऐसे राधेपद रावरे सदाही अवराधे मैं ३ ॥

क०॥ कल्पलता के कैधौं पल्लव नवीन दोऊ हरन मंजु ताके कंजताके बनताके हैं। पावनपतित गुणगावैं मुनि ताके छबि छलैं सबताके जनताके गरुताके हैं॥ नवोनिधि सिद्धि ताके आले हैं अमलहठी तीनोंलोक ताके प्रभुताके प्रभुताकेहैं। कटैंपापताके बँधे पुण्य के पताके जिन ऐसे पगताके वृषभानकी सुताकेहैं ४ ॥

स०॥ कर कंजन जावकदै रुचिसों बिछियासजिके ब्रजमाड़िलीके। मखतूलगुहे घुँघुरूपहिराय छला छिगुनी चितचाड़िलीके॥ पगजेवैजराव जलूसनकी रवि कीकिरणैं छबिछाड़िलीके। जगबंदतहै जिनको सिगरे पगबंदत कीरतिलाड़िलीके ५ ॥

स०॥ कोऊकहै जपा जावकरंगकी कोऊकहै अरुणाई सहावकी। कोऊकहै गुललाला गुलालकी कोऊ कहै रँगरोरीकेआवकी॥ प्यारीके पांयनकीउपमा द्विज को सब जानपरी जिमि खावकी। पंकजपातकी बात कहा जिन कोमलतालई जीति गुलाबकी ६ ॥

स०॥ कोहरकौल जपादलविद्रुम काइतनी जोबँधू-

कर्मेंकोतहै। रोचनरोरी रचीमेहँदी नृपशंभुकहैं मुकता सम पोतहै॥ पांयधरै ढरैईंगुरसो तिनमें मणिपायलकी घनी जोत है। हाथ द्वै तीनलौं चारहू ओरते चांदनी चूनरीके रँग होत है ७॥

क०॥ कैधौं मानसरके विमलकमल दोऊ सोहैं जपा जावक सुरंगअनुहारीके। कैधौं सुरतरुके सुपल्लव विमलराजैं कैधौं ये विराजैं भानुभ्रमतमहारीके॥ द्विजकहै कैधौं रतिपतिके मुकुटवारी लाल मणि माणिक अमितगुण भारी के। लोभितरहत मनमोहन को जामें ऐसे शोभितचरण वृषभानकी दुलारीके ८॥

क०॥ कैधौं यहकोमल अमलताकी रंगभूमि कैधौं यह आंगनहै शोभाकेसदनको। अरुणदलनपरकीनो कै तरणिकोप जीत्यो कैधौं रजोगुण राजिवके गनको॥ पलपल प्रनयकरत कीधौं केशोदास लागिरह्यो पूरवानुराग पियमनको। एरी वृषभानकी कुमारी तेरेपाँयसोहै जावककोराग कैसुहाग सौतिजनको ९॥

क०॥ कोहर औ विन्दु इन्दुवधू के वरणजीते मेहँदीके मौजनकी झलक सहलकी। सहजहि सुरंगदार जावकके रंगभार होतनसँभार उर भारतीकीललकी॥ श्रीधर अरुणछवि छाय छहरायजाय क्षितिपै बिछाई मानों पांखुरी कमलकी। ज्योंज्यों प्यारी मंदमंद पांयन धरतआवै पौधसीपरतिआवै त्योंत्यों मखमलकी १०॥

क०॥ कामकेतुणीरत्रिचि पल्लवपटीर कीधौं विद्रुम की पीठपर बारिज बरन हैं। जानु युगनालफूले सुंदर सरोज दोऊ अतिही सुदेश महामनके हरनहैं॥ उन्नत

अंगूठा नख आभा आंगुरीनपर चंदकलाआई कैधौं राहुके डरनहैं। हौंहूं बलिहारी रीझे रसिकबिहारी हंसगतिअनुसारी कैधौं प्यारीके चरनहैं ११॥

क०॥ कैधौं रति रानी उरहार पीतफूलनको कैधौं कदलीके अंग कंचनकी बेलहै। कैधौं कमला के गेह बांधी अतिशोभितहै पतिमणितोरण उठतछबिरेलहै॥ सूरत सुकाबिछबि कहांलौं बखानौं नेक देखत हियेरी मन सबको सकेलहै। तेरेपांयपर ये न पायजेब आली कैधौं गतिगजराज गरे हेमकी हमेलहै १२॥

क०॥ कैधौं रतिपति रचि गति गजराज पैये हेमकी अँवारी समाधानसों बिचारि कै। कैधौं तनमन्दिर में आभा चढ़िबे की सीढ़ी कीनी काम कारीगर कंचन सुढारिकै॥ सूरतबनी है तेरेपगमें झलक शोभा कहांलौं बखानौं कहिजात ना उचारिकै। जेहरि सकल जगमोहन कहावतहै तेहरि तोरीझेहेरि जेहरि निहारिकै १३॥

क०॥ मखमल माखन से इन्दुकी मयूषन से नूतन तमालपत्र आभा आभरनहैं। गुलसे गुलालसे गुलाब जपाजावक से पावक प्रबाललाल गावैं भूधरनहैं॥ उमापति रमापति यमापति आठौंयाम ध्यावतरहतचारफलके फरनहैं। पंकज बरण छबि छबिके हरणहठी सुखकेकरन राधे रावरे चरनहैं १४॥

क०॥ मन्दही चपत इन्द्रबधूके बरणहोत प्यारी के चरण नवनीतहूते नरमैं। सहज ललाई बरणी न जाय काशीराम वाकी गति देखिदेखि मेरी मति भरमैं॥ एँड़ी ठकुराइनकी नाइन गहतिजब ईंगुरसो रंगदौरि आवै

दरवर मैं। दियोहै कि दीवेहै बिचारै शोचै बारबार बा-
वरीसी ह्वैरही महावरी लैकरमैं १५ ॥

क०॥ देखो शुभबाला पद सुन्दर विशाला मानो ई-
गुरलजात जाके देखत बरणहैं। जलज गुलाब खिसि-
यात देखि कोमलाई सिरसहु पुहुप मन माहिं सकुचत
हैं॥ ऐसेपगप्यारीके सकल छवि छीनि लियो छबिनहिं
काहूकी पदन सरसतहैं। उपमा न काहूकी सकल कवि
ढूंढ़िहारे मधुपति जैसे प्यारी तेरे ये चरणहैं १६ ॥

क०॥ सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंगरंग अंगअंग
फैलत तरंग परिमलके। बारनकेभार सुकुमारिको लचत
लङ्क राजैपरयङ्कपर भीतर महलके॥ कहैपदमाकरबिलो-
कि जन रीझैं जाहि अम्बर अमलके सकल जलथल
के। कोमल कमल के गुलाबनके दलके सो जात गड़ि
पांयन बिछौना मखमलके १७॥

स०॥ शीश जटाधरि नन्दनमैं मुनि वृन्दनमें बहुकाल
बिताये। बल्कल चीर लपेटि शरीर महासुर तीरथनी-
र नहाये॥ आठहू याम सही हिम घाम पुरन्दर धामहू
काम बढ़ाये। यों कलपद्रुम कोटि उपाय किये तुवपां-
य से पात न पाये १८ ॥

क०॥ सुमन निकेत लाल जावक समेत कौन कौन
सुख देत मानकरत निहोरीके। ललित अनूपमविराजै
बलदेवकबि बिमल सकल कमलनि छबिछोरीके॥ मेहँ-
दी सुरंग रँगे नख रुचि चन्द जगे पगे गजमणि गति
हंसनकी जोरीके। अंकुश पताका चारु रेखन ललित
लसै बसै मन मेरे युग चरण किशोरीके १९ ॥

स० ॥ वरषा अरु शीतहु आतपको निशि द्योससहै सरही में खरे। कहुं सूखहूं जात कहूं हरियात रहैं जल-जातयों ध्यान धरे ॥ रघुराज सुनो तपके बलयद्यपि राव-रेकेभल मेह परे। तवहूंनलहैं सरि रुक्मिणीके पदकी मधु व्याजहि आश परे २० ॥

स० ॥ विंव प्रवाल बँधूक जपा गुललाला गुलाबकी आभा लजावति। शंभु जू कंजखिले टटके किशलय ब-टके भटके गिरा गावति ॥ पाँव धरै अलि ओर जहां तिहिं ओर ते रंगकी धारसी धावति। मानो मजीठकी माठ ढुरी एक ओर ते चाँदनी वोरति आवति २१ ॥

क० ॥ बिम्बमें प्रबालमें न ईंगुर गुलाब में न चम्प-क रसाल में न नेसुक निहारे में। दाड़िम प्रसून में न मून धरातून में न इन्द्र की बधून में न गुंजा अधिका-रेमें ॥ कुसुम सुरंगमें न किंशुक सुरंकमें न जावकमँजी-ठ कंज पुंज वारि डारे में। राधे जू तिहारे पग अरुण समान ताको हेरिहारे कविता न आवत विचारे में २२॥

स० ॥ है इनकी उनमें अनुहार्यो न हार्यो न मान हिये में सकात हैं। कीचके बीच गड़े सरमें बड़े बेसर में जो फुलावत गातहैं॥ भेंटतहीं कहूं या छवि सों रवि सों करजोरे खरे हहा खात हैं। राधे जु रावरे पाँव हौं धोवति कौल धौं काहे को ऐंठे से जात हैं २३ ॥

स० ॥ जिन सोहैं कहाचली पंकज की जो सकै स-म ह्वै कहूं ख्वाब में है। जब चंद नखावली देखि चप्यो तब ज्योति किती महताब में है ॥ कमलापति प्यारीके पाँयनकी समता को नहीं कछु ज्वाब में है। तहँ आब

गुलाबकी कौन कहै न रही लखि ताब सहाबमेंहै २४ ॥

क० ॥ प्यारीके पगन पाई एती अरुणाई जामें मुगध बधून दिन साँझ करि भाख्यो है। बाग ह्वै कढ़ति जाके शिशिर लतानहूके किशलय तोरिबेको मन अभिलाख्यो है ॥ चिंतामणि आये जाके चाँदनी बिछौना पर लाल मखमल को बिछौना जनु नाख्यो है। चरण धरत जाके आँगन फटिक बन्द मानों लाल बिद्रुम दलानि बाँधि राख्यो है २५ ॥

क० ॥ तेरे पग बाल कैधौं जावक दयो है लाल कैधौं पाँय पस्योहै सोहाग सौति जनको। कहै शंभुराज कैधौं किशलय ललित पर बिछ्योहै पराग आइ जपा के सुमनको ॥ कैधौं पाके कोहर बँधूक के दलन मूंदे ताहू पर उपमा न आवै मन तन को। जानि निधिबास मेरे जान करि आश बस्यो कंज आस पास अनुराग लुब्धन को २६ ॥

क० ॥ राधे के चरण युग अरुण अरुण रूप लालमणिवलि ऐसी लालहू में होती है। कोमल सुमनहूते शोभा भरे शोभित है दाहन मरत जपा भये मानो गोती है ॥ तामें सुधाधरसे बिबिध भांति राजत है कहै मनीराम नख मिलै बनी ज्योती हैं। याते एक उपमा अधिक भासी मेरे जिय पंकजके दल अग्रधरे मानो मोती है २७ ॥

क० ॥ अरुण कमल नख चंद्र हैं समीप ताते जोन्हको प्रकाश फैल्यो अद्भुत धरणिमें। सौतिनके भालको नखत रिझवार कहैं देखे द्युति होत जात

विद्रुम वरण मैं ॥ चांदनी की चादर बनात के बिछौना होत चलै अलबेली छबि छायाके परणमैं। भयो अनुराग या सोहाग कैसो बाग खिल्यो चलन सकत चित चुभ्यो है चरण मैं २८ ॥

क० ॥ अरुण कमल अरुणोदय परममित्र तिनहूं को लालीते लजावतहै अंगतू। उदैनाथ ईंगुर गुलाल गुड़हर लाल निदरत लाल ऐसे करत प्रसंगतू ॥ बाजत न नूपुर कहत चरणन छ्वै छ्वै जामैं सुखपावैं हरिसोई करि ढंगतू। पाँयनमें मेहँदी लगाई राधे कौन काज सहज ललाईको बिगारै जनि रंगतू २९ ॥

क० ॥ अरुणता एंड़िनकी रबि छबि छाजतहै चारु छविचन्द आभा नखन करे रहै। मंगल महावर गुराई बुधराजत हैं कनक बरण गुरु बनक धरे रहै ॥ शुक्र सम ज्योति शनि राहु केतु गोदनाहैं मुरली सकल शोभा सौरभ भरेरहै। नवोग्रह भाइनते सेवक सुभाइन ते राधा ठकुराइनके पांयन परे रहै ३० ॥

क० ॥ गंगाजूके जल मध्य कंठके प्रमाण पैठि पढ़ि पढ़ि सूरमन्त्र आनँद बढ़ावहीं। केशोदास घाम जल शीतसहै एकरस ठाढ़े एकपांव कोटि कलप नशावहीं ॥ कोमल अमलभये कमला निवास भये सुन्दर सुवास मन यदपि भ्रमावहीं। पायोपद ब्रह्मसुत पदमिनि पदमिनि तेरेपद पदवीको पद पै न पावहीं ३१ ॥

क० ॥ मूल सुखमाके सुखमाके जाके सेवनते प्रचुर प्रभाके पुञ्ज कैधौं मुक्ताकेहैं। कैधौं कलपलताके ललाड़िवेके काज छाज यहतो चैतन्यताके वह जड़ताकेहैं ॥

कीरति पताके हेतु महानिरवानताके वसु सिद्धिताके अरु नवनिधि ताकेहैं। नाथ नेह जमाकेसे जहां के तहांके धरे ऐसे पदभान वृषभान केसुताकेहैं ३२॥

क० ॥ एकही छमाके में छमाके मन मोहिलेत छमा लतिकाके यूप श्याम ममताके हैं। पियाके मथाके टेके थाके मान श्रीप्रियाके बलाके छलाके भरे नूपुर वलाके हैं॥ देव दयिताके अप्सराके कामके तियाके नागसुता केहू नाहिंपद उपमाके हैं। अघ ओघ बाधिकाके दोष दुखदाधिकाकेनाथ सुखसाधिकाके पदराधिकाकेहैं ३३॥

क० ॥ सोनेके सितून ब्रजराज मन मन्दिरके रचिबे को चारु चतुरानन कहांकेहैं। कैधों रसराज महाराज के निशान खम्भ कान्ह कहै कैधों सौतिमान भंजनाके हैं॥ कौन उपमाके अति राजै सुखमाके गजगजब बिथाके राजहंस गतिनाके हैं। मोहन वनाके मन मोहबे के नाके खम्भ काम पलनाके कैधों पग ललनाके हैं ३४॥ इतिचरणवर्णनसम्पूर्ण॥

अथ पग आँगुरी वर्णन॥

दोहा॥

आँगुली चम्पककी कली जीवन मूरि प्रमान।
तारा रविशशिसुमनमन नगगानिनखनिसमान॥

कवित्त॥ अरुण कमल पग पाँखुरीकी पांतिलसें सरस सघन शोभा मनके हरनकी। दीरघन लघुताई

पातुरी सुहावनी हैं देखे द्युति होतजात बिद्रुम बरनकी॥ नखकी निकाई नीकी आरसीसी सोहतिहै जामैं देखी जाति शोभा सौतिके सरनकी। भरमी सुकबि कहिआवति न मेरी मति पाँगुरी भई है लखि आँगुरी चरनकी १॥

क०॥ कैधौं विधि जावकके रंगसों रँगीन करि सुधासों सुधारि कलाराखी सुधाकरकी। शोभा के समुद्र मांझ बिद्रुमलतासी लसै पेखियत पल्लवप्रभा न पटतरकी॥ सूधी सूधी सुन्दर सुभाइहै सुरंग अंग कञ्ज कलिकासी शुभ शोभ सरवरकी। प्यारी तेरे पायँ युग आंगुरी बिराजैंमानोपंकजानिषंग शरपांति पंचशरकी २॥

स०॥ कैसी सुढार गढ़ीहै सुनार सो कोरदबाय दई चहुंघाकी। प्यारीके कोमल पायँनकी अंगुरीन रही ढरिंचक बाकी॥ कंजनकी पँखुरीनचढ़ी जुहीमनो फूलि रही सुखमाकी। सान सयानसबै चुटकी न उठावति है चुटकी ललनाकी ३॥

स०॥ कोमल फूल मनो अरविन्द दोऊ पद सुंदरि के रसभीने। ताकी अनूपम आँगुरियां छबि लेतसुबर्ण की मानहुं छीने॥ आँगुरी लाली लखी पदमें जनुभूसुतबैठि समाजहि कीने। उपमा रतिनाथ लखात नहीं निजहाथ रचे पद अंग बिधीने ४॥

क०॥दसहूदिशाकी मानो देवतासी शोभियतकैधौंदिग पालनकी छरीहैं सुहावनी। कैधौंदसौं इन्द्रिनके बांधिबे की कलदोऊ कैधौं दस दिशाकी ये उपजी बसावनी॥ कैधौं मन मथिबेकी मथनी बनाईकाम कैधौं पदआंगुरी

है चित ललचावनी। कैधौं काम मुकुट के शोभित कँ-
गूरा चारु कैधौं तरकस भरी तिकुली है भावनी ५ ॥
इतिपदअँगुरीवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथपदअंगुरीभूषणसह वर्णन ॥

दोहा ॥

अरुण सरोरुहसे चरण अँगुरी अति सुकुमार ॥
जुवतिसुरँग रँगसी मनो चपि बिछिया के भार १
राधापद अँगुरीनसम सुनिसरमाय डेराय ॥
आनिपरी पगतलदबी चंपकलीमुहँ वाय २
छिनक छिनक छुनछुनकरैं पगबिछुवाहरवार ॥
मनों जगावत मैनको रैनि पुकार पुकार ३
सुबरणअनवट चरणको बरणकरत यहमूल ॥
नवलकमलपर विमल मनुसोहत गेंदाफूल ४
ओटकरे नाहिं जात है कैहूं इनकी चोट ॥
बिधि याहीबिधिते धरयो इनको नामअनोट ५
सोहतअँगुठा पायँके अनवट जटित जराय ॥
जीत्योतरिवनद्युतिसुढरि परयोतराणिमनुपाय ६

कवित्त ॥ गोरीगोरीआंगुरीन ऊपरअनूपछवि देखिये दिनेशद्युति तनकतनककी। बीचबीच बीजनके उठेहैं बलूलाकैधौं रूपकीनदीमें रुचिराजति वनककी ॥ मोहनीसी सबै मनमोहनके मोहिवेको सूधे चित यंते सुधि रहैनासनककी। करतकलोलें जब लालसंग डोलें यह झनक मनकबोलें बिछियाकनककी १ ॥

क० ॥ सहजरसीली गरबीली छनकीली अतिशीत मेंसनीहैं करीसौतें जिन पंगुलीं। पूरणकरनहार आस पति शोभारास भूषणसमेतदेख निद्वंभई कंगुलीं॥ भनै रघुनाथ भरी भागयों सुहाग सदा जावकलगेते लसैं लाल रंग रंगुलीं। अमल गुलाब कंज दलरंग लाजै लखि नवलसोहाईदश तेरेपद अंगुलीं २॥

स० ॥ चम्पकली दलछूते भलीपद अंगुली बाल-की रूपरसेहैं। शुभ्रसुवेश लसैंनखयों जनु पीतमकेदृग देवबसेहैं॥ बांकेअनौट बनीबिछियान बिभूषित जोति जराव गसे हैं। केशव सोमसरोजनि ऊपर कोपि मनो तनत्रान कसेहैं ३॥

स० ॥ राधे के पायँनकी अँगुरी मेहँदीसों रँगी सो भयेनवरातहैं। कैन्नृप शम्भुजू इन्दुबधूजुरि बैठी मिहीं जेसरोजके पात हैं॥ कैवटके टटके बरपानपै आरे के फारे प्रबाल सुहातहैं। कैधौं चकोरन चोंचचप्यो चिन-गारिकेधोखे चुनीनचबातहैं ४॥

क० ॥ गोरी गोरी अँगुलीहैं अंगना तिहारी प्यारी लघु मध्यदीरघ सुक्षम थूलकरकी। नखनकीद्युति कवि जीवसो उदितशोभा हनूमान कैधौंहैंमयूषैं कलाधरकी॥ दशचक्रचिह्न दशदिशजीत्यो बीसोबीसकली कशमीर कैधौं फली चामीकरकी। शक्ति पंचदेवनकी भारती हैं लेखनीकी पंचपंचगांसीहैं प्रपंची पंचशरकी ५॥

क० ॥ छलाछाप मूंदरीविराजैं करकंजतामें मेहँदी केबुन्दनकी बृन्दउपमानीहैं। कैधौंलिखे यंत्रमंत्र मोहन केहनूमान बैठोभौम चन्दभौन संकुलित जानीहैं॥ कल

धौतपत्रगोये बाघनबसनभौन इन्दिराकेआई इन्दुवधू मोदमानीहै। दईहै विचित्र चित्र कीनो चित्र चित्रनीके देखि चित्रनीके चित्त लाललोलुभानीहै ६ ॥ इति पद आंगुरीभूषण सहवर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ पदनखबर्णन ॥

दोहा ॥

अरुणचरण अँगुरीनपर नखअवलीकी आव ॥
जनु कनेरकी कलिनपै पँखुरी लगी गुलाब १
राधापगनख निरखितुव नखत पनखतलजात ॥
निशिनिकसत थलथिरनाफिरि भोरहोतछपिजात २
द्युति या उद्दित नखनकी भनै कौनकविईश ॥
पायँपरत छितिजाहिके भयो चन्द्रपियशीश ३

क० ॥ रूपकी अवधिमानों कंजकिशलयसद छवि चितचीकनी न माखनकी ओटैं हैं। पिय अनुराग के निवासको नवीनभास आभाअरुणाई कांति मान कान जोटैंहैं ॥ पांगुरीभई है मति आंगुरी निहारिचारु उपमानआन ऐसीबुद्धि योंचपेटैंहै। देखिपदनखन उजाली तेरी मेरीआली आज परीचांदनी धरणिपरलोटैंहै १ ॥

क० ॥ कैधौं पद्मराग रत्नजटित भरेहैं कुण्ड तामें विन्दुरोरीकी प्रकाशीप्रभा पानीने। कैधौं पगपंकज में राजत रँगीलेनख जावकरँगेजे आलि सुमति सयानीने ॥ भनैरघुनाथ प्राणपति मनमोहनको मोहनीदियेहैं

लिखि यंत्रबरबानीने। कैधौंमुखचन्द्रश्रमीबिचन प्रकाशहेतु नजरकियेहैं लाल दशरथरानीने २॥

क०॥ कैधौं मन बेधन बनायमैन विधिनाहैंदेखिदस दर्पण मोहे नन्दकेलला। हंसनके गोलककी तार तार काननके कमल दलनपर स्वातिबुन्दकेछला॥ अन्तर कीआभा करबीरकोर कानिकोर बलिभद्रनिरखि सिहात नितहीहला। राकाचन्द्रमुखी प्यारी तेरे चन्द्रकीधौं कामके कलंबनकी भाल चन्द्रकीकला ३॥

स०॥ कामबिरंचिके वेषबनाय किधौं सुखमाके सोहात तिहारे। कंजदलीन के शीश किधौं लसैं गंग के अम्बुके बुन्दकतारे॥ सांची सुनो रघुराज किधौं सजे चम्पकलीन पै मोतिन हारे। कै पदके नख रुक्मिणी के जिनपै कबि कोटि कलानिधि वारे ४॥

क०॥ मानो अध गुंजकासे चंचुक चकोरचख चाबुक चमक चीज बिद्रुम तसालके। चेटकके चिह्न कैधौं नाटक के सुन्न कैधौं हाटककेहुन्न देश दक्षिणके चालके॥ जटित जराय मधिनायक अमोल मोल गोल गोल मोती मानो मणि हेम पालके। आँगुरी अनीकी नीकी कनककनीसी कैधौं कामिनीके नखकै नगीना कामलाल के ५॥ इति पद नखबर्णन सम्पूर्ण॥

अथ पगतल बर्णन॥

दोहा॥

तुव पगतल मृदुता चितै कविवरणत सकुचाहिं॥

मनतें आवत जीभलौं मत छाले पर जाहिं १
तुव पद समता पदुमकी कही कवन विधि जाय ॥
जिन राख्यो निज शीशपर तुव पदको पदलाय २
प्यारी तेरेपगन सम किमि सरोज कहि जाहिं ॥
कियो सरसरस हरि हियो प्रफुलितसदा सुहाहिं ३
निरखि ललाई चरणकी रँग मँजीठ सकुचात ॥
अरुण मृदुल ऐसे रचे लखि जलजात लजात ४
प्यारी के पग सुरँगरँग मग बढ़ि परत अदाग ॥
करत सकोमल पाँवड़े हरि मन मनु अनुराग ५
प्यारी पग पग धरत रँग सुरँग फैलि दरशात ॥
ललितलाल मन मखमली परत पाँवड़े जात ६
कहि न सकै अँग और सुख सुखमासिन्धु तरंग ॥
जावक जा पगि लगि लहै औरै ओप उमंग ७
मनभावक जावक सखिन सवतिन पावक ज्वाल ॥
शीश नवावक लालको तुव पद जावक लाल ८

क० ॥ अलक पै अलिवृन्द भालपै अरधचन्द्र भौंपै धनु नैननपै कंज वारों दलमैं। नासाकीर मुकुर कपोल बिंब अधरन दाखों वारों दशनन ठोढ़ी अंबु फलमैं ॥ कम्बुकंठ भुजन मृणाल दास कुचकोक त्रिवली तरंग वारों भौंरनाभी थलमैं। अचल नितंबनपै जंघन कदलिखम्भ लाल मखमलवारों बालपगतल में १ ॥

क० ॥ शोभाके निवासकै प्रकाशके निकेत मंजुकैधौं यह उदधिअमोघ यशभारीके।कैधौं रसहासकेतड़ागया सुधाके सिन्धु सौतिमदहारी किधौं यह सुकुमारी के ॥ भनैरघुनाथ बसैंहिये हमरे में सदा सब सुखदाता वृष-

भानकी दुलारीके। अरुण अमन्द चारु विमलसोहाग भरे कमल गुलाबरंग पगतल प्यारीके २॥

क०॥ अँगुठाअनोटे छोर अँगुरी अरुणतोर भूसुत सोहात मानो नलिनी कलीकीजू। भनत दिवाकर गुलाबसों चरणमृदु बोयो जलजात चले बृजको गलीकीजू॥ जावकके रंग जाको फीकीसीलगत पांयएंड़ीके मलेते आसु झलका झलीकीजू॥ हंसकैसीचाल मग वाहीतेचलतिकैधौंभलीपगतलवृषभानकीललीकीजू ३॥

क०॥ करजोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँबोरलीन्हें चौर चतुराननी करत छबिछाकी है। छत्रसेन छत्रपतिनीहूं नचैरम्भा ठाढ़ी मकरपताका वारी कलपल ताकी है॥ यमलाना राधिकासी कमलाहै हनूमान कौनकहैरसना फणेशहूकी थाकी है। तलातल वितल रसातल महातलकी अतल सुतलकीते पगतल ताकीहै ४॥

क०॥ सातुकीसिताई रजगुणकी रताई मनुतामस कोत्यागि सुखजन के सहाय के। कोमल अमल दल मोहनीकी पुस्तककी राजत रुचिरबिधि बरण सुभाय के॥ प्रेमदलदलकी सुपथभूमिसोहै किधौं रहेखैंचिलोचनतुरंग हरिरायके। कैधौं मीनकेतन तलप ताप ताम रसदल बलभद्र तरुणी रघोछातेरे पांयके ५॥

इति पगतल बर्णनसम्पूर्णम्॥

अथ एंड़ीबर्णन॥

दोहा॥

कोहरसी एड़ीनकी लालीदेखि सुभाय॥

पायँ महावर देन को आपु भई वे पाय १

तुव अनुपम एँड़ीन लखि पकिकोहर सजिगात ॥
समता चाहि नाहिं लहित बाहिं गिरिगलिजात झुरात २

पायँ महावर देनको नाइनि बैठी आय ॥
फिरिफिरिजानि महावरी एँड़ी मींजति जाय ३

जोहरि जगमोहितकरे सोहरि परे बिहाल ॥
कोहरसी एँड़ीनते कोहरि लियो नवाल ४

क० ॥ मृदुल मनोहर गुलाबदलहूं ते अति कमल प्रबालते सुरंग दरशातीहैं । कलित महावरसों ललित लखेहीबने दाड़िमप्रसूनहू ते सरस दिखाती हैं ॥ भनै रघुनाथ बाल इंडुरी तिहारीवर सौतिनको शालती मनोज मदमातीहैं । चलत मरालचाल लाल बलिहारी करे निकस मरीची चन्द्रभौन चढ़िजातीहैं १ ॥

क० ॥ रजोगुण रंगवारी जावक सुरंगवारी आनँद उमंगवारी स्वच्छ छवि छाकी है । सौतिगण भंगवारी सखी सतरंगवारी नवलन रंगवारी अंगवारीताकीहै ॥ गिरिधरकहैं सोहैसम्पुट सरोजवारी बशीकरन मंत्रवारी यंत्रवारी बांकीहै । पियमनवेड़ी अक्षलक्षण निवेड़ीवेस उपमा न छेड़ी राजे एड़ी राधिकाकी है २॥ इति एँड़ी बर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ मुरवा भूषण सहित बर्णन ॥

दोहा ॥

रह्यो ढीठ ढाढ़सगहे शशि हरि गयो न सूर ॥

मुख्यो न मन मुरवानतें भो चूरन चपि चूर १
प्यारी ऊरुन की दिपति अम्बरमें न समाय॥
दीपशिखा फानूसलौं न्यारे झलकति आय २
स०॥ लखि लाजत जाहि मराल गतै गजराज तजैं गत आतुरवा। द्युति देखत दामिनिहू सकुचै दुरजात घनै घनके कुरवा॥ रघुनाथ भनै मृदुचाल चलै अतिप्यारे लगै सकरी चुरवा। मनमोहतहैं जगमोहन को मनमोहनीके पग के मुरवा १॥

क०॥ पायजेब घुंघुरू घुमाउ देइ जेब पाव नूपुरके रुनुक झुनक ललचायये। घूमि घूमि लालमन घुमत गोलाइनमैं चाइन बढ़ाय जन्न जीव अटकायये॥ महरू दिवाकर भनत कोक पण्डितहै मण्डित पलंगपै छटाको फैलायये। राधिका रसीली गरबीली तेरी मुरवाने सुरी वो परीके किन्नरीके कहरायये २॥

क०॥ दिपट पटीजे नभ नखत जतीजे भौन चक्र रतन पटीजे रटी टाटी चुरवानमें। मर्कत अमोल मध्य सुक्रि कैसो सुक्तहै साधु मन चमकत धुरनधुरवानमें॥ पजन मरीचें अच्छ पच्छ चच्छ चकचौंध चमक चुनीन जोर चारु चंचलानमें। रतिके मजेमें पग पग उरझेमें हाय देती ये जुजेबै पायजेबैं मुरवानमें ३॥ इति मुरवा भूषण सहित वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ गुल्फ वर्णन॥

क०॥ चरणकमल कर हाटक की शोभादेत परी

मणि मानो लट नागिनी उलुफकी । रंभातरु उलटि कपूर पूर राखिबेकी कोठीसी युगल कम काम के कुलु-फकी ॥ साजत सुदेश गांठि गिरीहै दिनेश कैधौं रेशम रसेकी रूप भूपके सुलुफकी। एंड़िनसों आडराजे पांयन दुहूंबिराजे अतिछबिछाजै लाल गोरीके गुलुफकी १ ॥

क० ॥ शोभावान परमप्रकाशित लखेहो वने किह त्रिधनाने निजहाथसों सँभारीहैं । मोहनकी मोहनीसु-ढार मदमाती मैन देखतही सौतें मानछोड़ हियेहारीहैं ॥ भनै रघुनाथ राव स्वच्छ हैं प्रबालन ते युग महताबी मनो मनसिजवारीहैं। रम्भाखम्भ अग्र कम्बुद्युति प्रति-बिम्बी किधौं गहब गुलाबी गोलगुलुफ तिहारीहैं २ ॥

स० ॥ बरगोल सुडौल बनेहैंअमोल ढरे मनोसांचे सुभायनमें । असकोजगहै जिनको लखिकै नहिं होत मनोजकेचायनमें ॥ कमलापति कामचितेरहूतौ नसकै लिखि केहूंउपायनमें। अस पेखत प्यारीके गुलफनको लगे कुलफ न कौन के पांयन में ३ ॥

क० ॥ करैगी कहातू दृगअंजनदै राधे पगमंजनकै हरीबुद्धि नंदके दुलारेकी । लाल नख लाल अंगुरीन लखि लीनभयो लालीलखिलाल वाकेचरणकिनारेकी ॥ तरवासुरंग एंडी ईंगुरकेरंगरँगी छबिहैतरंग अंगवारे च-टकारेकी। गोरीतेरे गोरेगोरे गोल गुलफनपर नजरनि-गोड़ीगड़ीजुलुफनवारेकी४॥इतिगुलुफवर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ पिंडुरी वर्णन ॥

क० ॥ सारघनसारलै केसर कनकचूर सानि सुधा सलिल सँवारीहै किशोरीकी । चीकनी करजहीसोंकरी है विरंचि पुनि ताते तैसीभईहै युगुति नाहिं थोरीकी ॥ रम्भा छबि छीनलीन्हीं रम्भाछबि छीनकीन्हीं चिन्तामणि तिलोत्तमा रति मति भोरीकी । जेहरिके उरबसी जेहरिसों अतिलसी ऐसी गोरी गोरी गोल पींडुरी हैं गोरीकी १ ॥

स० ॥ गोरी गुलारी सुढारसी साँचेकी देखत देहिन कोमलताकी । रम्भ कुसुम्भ किधौं है किधौं छबिछीनत कंचनके कालिकाकी ॥ कामगढ्यो बड़हीके किधौं रति के रतिकीबेको पापलिकाकी । तोष विलोकि बिलोचन मैनबस्यो बलि पींडुरी या मलिकाकी २ ॥

क० ॥ कीधौं वैसबेलिबेको बेलनबनाय विधि शोभा धर सुघर सकल सुखदाईकी । कोमल अमल दलकेतुकी के कलिकाकी केसरि कलाई मानों मनमथराई की ॥ कीधौं बलभद्र शोधि सकल सोहाग गुन शुचि रुचि रची सची पींडी है बनाईकी । आभा सौति खण्डिनकी ऐपनसोंमाडी ताते कीधौं पदमिनी तेरी पेंडुरी सुभाईकी ३ ॥ इति पिंडुरीबर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ जंघ बर्णन ॥

दोहा ॥

सघनजघनअतिगिलगिलीमनोथलीरतिराज ॥

जनु गाभे कदलीनके किधौं शुण्ड गजराज १
शीश जटाधरि मौनगहि खड़े रहे इक पाय ॥
एतो तप कदली कियो लह्यो न जंघ सुभाय २
गोरे ढोरे जंघ तुव बोरे सुवरण माहिं ॥
कोरि निहोरे नाह पै गये निहोरे नाहिं ३
जंघ युगल लोयन निरै करै मनों विधि मैन ॥
केलि तरुन दुख देन ये केलिकला सुखदैन ४

क० ॥ भाये महानैन मनभाये मैन कुंभकार पाये कोटि रंग अंग कंचन चमेलीके। सेवक भनत पट बाहिर कढ़त आब महताब जाविधि फनूस रंगमेलीके ॥ वरणि न जाय अतिशोभनि सुभाय कढ़ी कालिंदी सों न्हाय संग सोहनी सहेलीके । गौनको करति परगौन को हरति ऐसे कौनेविधि कीन्हे जंघयुगल नवेलीके १

क० ॥ कदली दलहे सुऊषम सहित एतो एतो है मयूषमय गुणहिततेरेहैं । जाकी कहूं रोमनकी पावैनर मन रुचि भरेजान रम्भाहूंके करभ केरेहैं ॥ रदमाति जिनकी दुरदकर जे कहत धुरकाम रथ उपमानते अनेरे हैं । शोभाके सदनके कि काचे कलधौत खम्भ कीधौं मृगलोचनी युगल जंघतेरेहैं २ ॥

क० ॥ मोहनके मनके अवलम्ब ये आली लखि चित्रमें लिखे न जात चकित चितेरेहैं । कंचनके खम्भनके दम्भ दूरिकारिबेको कीन्हेकरतार ऐसे कहूंकहू हेरे हैं ॥ रूपही की ईंडुरी है पींडुरी दिनेश जामें लघुन बिशाललाल चाहि भये चेरेहैं । सूखी सब सौति मन शोचन सकोचकरि शोच मदमोचनयुगल जानुतेरेहैं ३॥

क० ॥ रूपरस आसनकै काम के सिंहासन है केलि कला कौतुक की जीत मन आनिये। सौतिन को गरब गयो है देखि देखि जिन्हैं कदली के खंभ दोऊ उलटे प्रमानिये ॥ भरमी सुकबि गज शुंड सकुचन लागे सौगुणी करभहू ते शोभा सर सानिये। सुघर सुढार ये सवाँरे है बिरंचि कैधौं जंघ अलबेली के अनूप युग जानिये ४ ॥

क० ॥ शोभाके निवास को लगे है किधौं स्वर्ण खम्भ कैधौं चन्द्र स्यन्दन के युग धुर धारे हैं। रम्भा खम्भ रम्य किधौं सुरतरु शाखा युग सुखद सदाही निज प्रीतम को प्यारे हैं ॥ भनै रघुनाथ पीन अमल सुवर्ण कंज दामिनिते अमित अमोघ द्युतिवारे हैं। कैधौं ये सुधारस भरे हैं इक्ष दण्ड दोइ किधौं कामदण्ड जंघ युगल तिहारे हैं ५ ॥

क० ॥ रतिहू की मति पतिहूकी ललचात अति मैनहू के नैन देखि लालच भरति हैं। सुन्दर सरस शुभ सौरभ सहज सोहै करकश जानिकरी कर निदरति हैं ॥ शोभित सुभग कोऊ चोप घन कर तेरे जंघन युगल मणिकण्ठजी हरति हैं। भाँय के उतारी कैधौं शोभा साँचे ढारी छबि कनकके कदली की बदली परतिहैं ६ ॥

क० ॥ हाटक समान रम्भ खम्भसी लसत जानु केलिमें निधानु मानो भानुराते प्रातके। भनत दिवाकर वितुण्ड शुण्ड गोल रोल उपमा अतोल रसराज कान्ह घात के ॥ घनसार स्वच्छता सुबासता धसीसी जामें एतो मैन मानवी तो देववृन्द जात के। कौन कौनबात

की बड़ाई करों खोजि खोजि कामिनी के जंघ युग डार पारजातके ७॥

क०॥ सकुच समेत ह्वैकै सुंदर समेटि शुण्ड गाह-तही रहत तड़ाग बन कोनेके। करभ कहानी कहां अ-तिही असार सेत साने तरु कलिके लुकाने डरहोनेके॥ भनत दिनेश अति कोमल युगल जंघ हेरतही होत जैसे बशमन टोनेके। मोहनी महल सुख छावन के हेतु मानों कारीगर मदन बनाये खम्भ सोनेके ८॥

क०॥ कैधों मैन मंजिनी मतंगिनी की सकुच छानि कैधौं हंस हंसिनी बिहारकी चलनि है। कैधों सुखसागर थहावत मयंक मुखी कैधौं नन्दलाल मन माणिक झ-लनि है॥ हरे हरे हेरि हेरि हटि हटि हरिन नयनी झूम-त झुकत कैधौं केशरीमलिनहै। शिवनाथ कैधों अनुराग में सुहाग बेलि फहरि फहरि फैलि फूलन फलनिहै ९॥

क०॥ कोमल कमल मुखी तेरे ये युगल जान्हु मेरे बलबीरजूके मनही हरत हैं। सौरभ सुभाय शुभ रम्भा को सदन अरु केशव करभहूकी शोभा निदरत हैं॥ कोटि रतिराज शिरताज ब्रजराजकीसों देखि देखि ग-जराज लाजनि मरतहैं। मोच मोच मद रुचि सकल सकोच शोच सुधिआये शुण्डनकी कुण्डलीकरतहैं १०॥

स०॥ कंचनके कमनीयकिधौं कदली अतने उलटे करिराखे। मैन मतंगनके कै भले सित शुण्ड हैं पीन अमीरस चाखे॥ कै सुखमा तियके करके करभै जुमहैं सुखमा तरु साखे। बिम्बबिजय रसराजके कै किधौं रुक्मिणी जंघके काम दुसाखे ११॥

स० ॥ जानकिधौंहै रती रतिनाथको सोनके त्रोन रच्यो पंचबानुहै। बानहै फावत आनके मानहै की कदली विपरीत उठानुहै ॥ ठानहै ऐसे नहींकरिके करतोष चितै जिहिं कान्ह बिकानुहै। कानकरैं यह सौतिनके पर प्राणसे प्यारी सुजानकी जानुहै १२ ॥

स० ॥ कै विधि कंचनगार शिंगार कै दीन्हें बनाय अनूपम रंगके। कै कदली उलटे ह्वै बिराजत कै करि शुण्ड दिखात उमंगके ॥ ऐसीलसै उपमातिनकी द्विज भाषतहै इमि पाय प्रसंगके। प्राणप्रियाके सुराजत ये दोउ जंघ किधौं है निषंग अनंगके १३ ॥ इति जंघवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ नितम्ब वर्णन ॥

दोहा ॥

लखि नितंब बरतुलसघन उपमा असहियहोय ॥
मनहुँ मैन मुरचानकी बिरची बुरजैं दोय १
तियनितंब अति पीनकी उपमा असरहि फैल ॥
जनु रतिसागर पारहित रची मैनधर तैल २
सुवरण सुवृत नितंब युग यों सोहत अभिराम ॥
रति रण जीति धरे उलटि मनो नगारे काम ३
वा नितंब युग जंघकी उपमा को यह सार ॥
मानो कनक तमूर द्वै उलटि धरे करतार ४

क० ॥ कैधौं द्वार मारजूके दोऊ चारु चौंतराहैं कैधौं

चक्रवाक चितचोर सुरनीके हैं। चामीकर चक्र चीन्हे जात इहिं चितनातें चितये चपल नैनी जौन करनीके हैं॥ रतिके सहायक हैं तोष सुखदायक हैं राखिबेको लायक अगर बरनीके हैं। संबरारि रागीजू के राजत तमूरा कैधौं मैनहीं के तम्बु कै नितम्ब तरुनीके हैं १॥

क०॥ बाला बाल बैसके बिताइक किशोर कर्ण हर्ण आतुरी के चातुरी के देनवारे हैं। मत्तगजठवनि सिखावन गुरू है किधौं प्यारे प्रेमरंगके सुवर्ण घट भारे हैं॥ भनै रघुनाथ बिश्व बिजय बिलोकि मैन उलटि धरे के संत कुम्भ के नगारे हैं। कैधौं प्रभापुंज स्वच्छ सुन्दर गुलाब रंग प्यारी मृदु युगल नितम्ब ये तिहारे हैं २॥

क०॥ गानकर मदन तँबूरन उलटि धरे कंचन बरन दोउ लगत सोहायेहैं। चीकने उठोहें मृदु बाल के नितम्बवर महिमा न कहिजात ऐसी छबिछायेहैं॥ शोभाको समेटि औ लपेटि सब उपमान चायन सहित बिधि इनहीं बनाये हैं। कैधौं जगजीति रति आपनी दुहाई फेरि नौबत बजाइ ये नगारे औंधाये हैं ३॥

क०॥ चहूँओर चितचोर चाकचक चक्रमणि सुन्दर सुदरशन दरशनहीने हैं। दितिसुत सुखनि घटाइबेको सुखरुख सुरन बढ़ाइबेको केशव प्रवीने हैं॥ सबहीके मननि हरण करि हारिहूके मनमथिबेको मनमथ हाथ लीने हैं। रुचि शुचि सकुचि सकेलिकै तरुणि तेरे काहू नये चतुर नितम्ब चक्र कीने हैं ४॥

क०॥ लाल रंगवारे घेरदार घांघरेसों घिरे नेक न उघारे भारे सुखमा समूलहैं। जगजीतिवारे पति प्रीति

रीतिवारे कैधौं कामके नगारे उलटारे झपे झूलहैं॥ उपमा अतूल या पिछौड़ी मति भूल चेत मनसा कहे तें करें कविन कबूलहैं। निरखे नितम्बनीके या नितम्बनीके मानों जंघ युग कदलीके थम्भ थूलमूलहैं ५॥

क०॥ कैधौं खरी खीन कटितिकसी नितम्ब पीन कैधौं सतसमर प्रहारताके छालसी। भनत दिवाकर कि मदन तमूर धरे मेखलाकेरव सोइ बाजतहै झालसी॥ कैधौं जातरूप युग हरिडका उलटि राखे होत जगमग ज्योति सभावर जालसी। हरुवेबदन ताके थम्भनलगी यों मानों सौतिउर शालतहै पेखि पेखि शालसी ६॥

क०॥ अंगनि में कैधौं जंघ अजब अनंग रचे गांठ कुच गिरहित हेतु मद चालके। कटि रथचक्रकी आकृत यामें पाइयत केलिकला बैठक ये रसिकरसालके॥ विपरीत खण्डित जघन खम्भ निम्ब कैधौं लाहकी गिरदगादी मैन महिपालके। अमृतसों सानी कैधौं सोनेकी सरस पींड़ी सोहतहैं सुन्दर सुभग श्रोनी बालके ७॥

क०॥ तोतन मनोजहीकी फौज है सरोजमुखी हाव भाव शायक रहे हैं शरमायकै। तापर सलोनी तेरे बश है गोविन्द प्यारो मैनहूंके बश भये तेरे ढिग आयकै॥ तिनहूं गोविन्द लै सुदरशन चक्र एक कीन्हें बश भुवन चतुर्दश बनायकै। काहे ना जगत जीतिबेको मन राखै मैन दुर्लभदरश हैनितम्ब चक्र पायकै ८॥

क०॥ पियरति समताके थमिबेकीठौर कीधौं रूपके नगारे मैन उलटिकैराखेहैं। कैधौं काममालतीकी नाल सी सिखत सिखी कैधौं पीठिदेवी ताकेशुद्धघर भाखे हैं॥

कैधौं चक्र चतुराई ताहीके हैं आगे धरे कोविदके मारि-
बेको नूर अभिलाखे हैं। शोभा सबजगकी सँवारिकै धरी
है कैधौं तरुणीके नीके ये नितंब रचिराखे हैं ९॥

क०॥ घन अतिजघन नितंबपृथु पेखियत कटिघटि
केहरिकुमार कैसो माप है। विंध्य कैसे शिखर उभरे हैं
उरोजउर मानों बलिभद्र अचरज कैसोलापहै॥ मिटे
वेदविधि बालापनके विनोद सब कलदई विज्ञरसनाको
अनुलापहै। श्रोणिनगुरुता सुलघुताई लंकभयो बारहै
बरष गुरुसिंहको मिलापहै १०॥

स०॥ त्रिबली तटिनी तटकी पुलिनाई कोउ बहि
जाइ कवौ फबि में। जनु चक्रकुमार जुवाके थली छिपे
घांघरीबीच परेदबिमें॥ गतिमंदके पीड्यो चहै रिसलै
हरिसेवक मीड्योचहै नबि में। सुघराई सुकाम विरंचि
कीहै तिय तेरेनितंबनकी छबिमें ११॥

स०॥ लाड़िलीके बरणे को नितंबन हारिरही रस-
ना कविजेतके। कै नृप शम्भुजू मेरुकी भूमि में रेतके
कूराभये नदीसेतके॥ कैधौं तँबूरन के तबलारँगि औंधे
धरे करिरम्भाके लेतके। कंचन कीचके माथे मनोहर कै
भरना हैमनोजकेखेतके१२॥ इतिनितम्बवर्णनसम्पूर्ण॥

अथक्षुद्रघंटिकावर्णन॥

कवित्त॥ रागिनीकी मण्डली रची है कामदेव कैधौं
रागिनीसमेत रचना है चितचोरीकी। कैधौं नाभि कूप

कीरहट्घरी रूपभरी ढरी अन्तढरीहै विचित्रभांति भोरी की ॥ कैधौंहै दिनेश आलि वेष कोऊ मोहनीको मोहन को मोहैमन बैनधुनि थोरीकी । कैधौं बरबाजन बिराजत नितंबढिग छाजत छबीली क्षुद्रघंटिका किशोरीकी १ ॥

क० ॥ कैधौं नाभिसरके निकटही सुधाके हेतु समर खरेटी गुंजिरही मालसीगुही । कैधौं शम्भुराजके डमरु के कमर बीच शैलतनयाकी बांधी घुँघुरू सुधामुही ॥ प्यारीजूके किङ्किणी को डोलनि बजनिसो बखानै जोइ ध्यावै गणपति शारदातुही । कलपलतापैबसी जानिकै प्रभात मनो बोलिबोलि नाचती कनककी चुहचुही २॥

क० ॥ कैधौं क्षुद्रघंटिका रतनकी ललितशम्भु राजत झलझलात राधिकाके घरपर । घांघरो मढी के पर किङ्किणी कनककी कलशतरलसैं कैधौं रूपरूप घरपर॥ चलत हलत कैधौं पौनते डुलत ताते बोलिबोलि उठतीहैं आय आप अरपर । पींजरे जराऊटंगी बुलबुल जलमानो झरलाय राखी है निकट नाभीसरपर ३ ॥

इति क्षुद्रघंटिकावर्णनसम्पूर्ण ॥

अथकटिवर्णन ॥

दोहा ॥

सुनियत कटि सूक्षम निपट निकट न देखत नैन ॥
देहमध्य यों जानियत ज्यों रसना में बैन १
विधि अनुमान प्रमाणश्रुति कियेनीठि ठहराय ॥

सूक्ष्मकटि परब्रह्मलौं अलख लखीनहिं जाय २
सूक्ष्मकटि वा बालकी कहौं कौन परकार॥
॥ जाके तनक चितौतही परत छगन में वार ३
लगी अनलगीसी जु विधि करी खरीकटिखीन॥
किये मनो वाही अकस कुचनितंब अतिपीन ४
॥ लहलहातितनतरुनई लचिलगिलौंलफिजाय॥
लगै लंक लोयन भरी लोयन लेति लगाय ५
लंक लकलकी पातरी तनक छिवाये हात॥
छुई मुई सम लचकिकै कमची लौलफिजात ६

क०॥ भूतकी मिठाई जैसी साधुकी भुठाई जैसी स्यारकी ढिठाई ऐसी छीन छ्हूं अ्रतुहै। धीरा कैसो हास केशोदास दासी कैसो सुख शूरकैसी शंक अंक रंक कैसो वितुहै। सूमकैसो दान महामूढ़ कैसो ज्ञान गौरी गोरा कैसो मान मेरे जान समुदितहै। कौने है सँवारी वृषभानकी कुमारी यह तेरीकटि निपट कपट कैसोहितुहै १॥

क०॥ कीन्हों कमलासनं कलानिधि वदन तेरा सकुच्यो कमल सारबासर निसरिगो। भयो है उताल रचिबेको तिहिकाल बाल बाहस बिडरि वाको साहस निसरिगो॥ टेढ़ीकीन्हीं भौंहें कचकीन्हे कुटलोहिं फेरि कलिका भयेतें वाको असन खिसरिगो। गोपजानि जानो स्याल जगत जनायो यह यातें वाको कटि को बनायबो बिसरिगो २॥

क०॥ लाजैजाहि निरख सुलंकलखि केहरहू पुनि रतिरम्भाकै गुमान गुरहारोहै। तामें किङ्कनावल बिशाल सुरवारी बजे बरजरतारी लस्यो घांघरो घुमारोहै॥

भनैरघुनाथ मंजु मृदु मखतूल तुल्य सौरभ गुलाब लौं सुजान अलिधारो है। कैधौं इन्द्रजालकी यती मैहू निकाय्यो विधि कुन्दन तपायबाय सुकटि तिहारो है ३ ॥

क० ॥ सुमनमें बास जैसे सुमनमें आवे कैसे नाहीं नै कहत नाहीं हांकह्यो चहतहै। सरस्वती सुरसरी सूरतनयामें है जैसे बेदके बचन बांचे सांचे निबहत है ॥ इन्दुकला जैसे रहै अम्बर में परिचाको परखाको लक्षन प्रतक्षना लहतहै। जैसे अनुमान ते प्रमान पारब्रह्मजीको तैसे कामिनीकी कटि मीरन कहत है ४ ॥

क० ॥ लरकीलरकपर भौंहकी फरकपर नैनकीढरक पर भरि भरि ढारिये। हरिकेश अमलकपोल त्रिहँसनपर छाती उकसनपर बेशक निहारिये ॥ गहिरोही गतिपर गहिरोही नाभिपर हौंन बरजति प्यारे नेक निरवारिये। एक प्राणप्यारीजूकी कटि लचकीली पर ढीली ढीली नजर सँभारे लाल डारिये ५ ॥

क० ॥ सिंहनीकी करिहांते छीन कञ्ज नाल कस्यो कञ्जनालहू ते नागबेलऊ न घटिहै। नागबेलहूते छीन जानी गुणवन्त गुणगुणहूते छीन बरबार कस्यो बाठि है ॥ बारहूते छीनतार चन्दन बिचार कर तार मकरीको रच्यो सूक्षम निपटहै। मकरीके तारहूते चारु सुकुमार अति करी करतार या तियाकी छीनकटिहै ६ ॥

क० ॥ छहरति छबि क्षिति छोरनलों छूटि छटा बश किये छैलन छकाये हिरलाति है। छीरदकी छोहरी सी छपासी प्रवीण बेनी छपामें छपाकरकी छातीमें लसतिहै ॥ छला छाप छाजत छराके छोर छिटकत छबनि छु-

वत क्षणद्युतिसी लसतिहै। छीन कटि छोटीसी छबीली
ने छटांक भरी छाई छलछन्द छितिपालहि छलतिहै७॥
क० ॥ तारसों तगासों बारलीकसों लोकंजनसों जादू
कैसो छंद कहिबे में छलियतु हैं। चितै न परति चौंकि
जात है चितौन जहां नैनन की गतिको गुमान दलि-
यतु हैं॥ पगन धरत धरकत हियो बलिभद्र डगन भ-
रत डगडग हलियतुहैं। कचकुचभार चीर बीरनके भारी
भार ऐसे खीने लंक पै निशंक चलियतु हैं ८॥
क० ॥ हारी हार भार उरभार त्यों उरोज भार यो-
बन मरोर जोर दाबे दलियतु हैं। परग परग पर यहै
जिय होत शंकटूटि ना परत कौन पुण्य फलियतु हैं॥
कोऊ कहै खरी खीन कोऊ कटि हीन मदनगुपाल ऐसे
चित्त धरियतु है। काहू की न मानें सांक कहतही आई
नाँक ऐसे खीने लांघ पै उलांक चलियतु है ९॥
क० ॥ सारी जरतारी बूटी मोतिन किनारीदार किं-
किणी झनक नीबी छवि छहराति है। भनत दिवाकर
उरोज पीन भारनते बिजन बयारि लागे अंग थहराति
है॥ सिंहिनी सुनति कान आपने अधिकखीन दीन ह्वै
मलीन मन हिये हहरातिहै। राधिकाकी लंकबेलि परयंक
पर नीठि नीठि ईश्वर सी दीठि ठहराति है १०॥
क० ॥ सुनियत कटि सोतो सूक्षम निपटतेही प्रकट
दरश कहां सपने न पेखिये। पचिहारे चतुर चितेरेहू
बिचारे सब वाको सही चित्र केहूं कछऊ न लेखिये॥
कहै सो सदेह नाहिं देह में सँदेह नाहिं गिरा अनुमान
ताते मन अवरेखिये। झूंठी गाहि न्याय रह्यो त्रिधि लल-

चाइजाइ विधिहू न देख्यो ताहि कौनबिधि देखिये ११॥

स०॥ भृंगिकी सूक्षमता को कहै कटि केहरिकी समता नहिं पावै। तार औ बार सेवार कतार बिचार किये लघुही मन भावै॥ देवकी सुत सुनो रघुराज सुरुक्मिणी लङ्क अनूप सोहावै। ब्रह्मबसीठिधौं जीवकी पीठिधौं दीठि है कीधौं न दीठिमें आवै १२॥

स०॥ सूक्षक लंकबिलोकत बालकी केहरि जायभयो बनबासी। सूम को दान कि गौरिको मान सो छीनिछवो ऋतु है बिमलासी॥ भूतनहीं चितयो चित चोरत कादर की दृढ़ता जिमिनासी। कुचभारन ते लचिजात अजो शिवनाथ भनै प्रिय मान छमासी १३॥

स०॥ रंचक दीठि के भार लहे बहुबार बिलोकनि इठ अनैसी। टूटि है लागि है लोक अलोक तबै हठ छूटि है जूटि है कैसी॥ पौन बहै ब्रज देह में लागति देखि परै नहिं आंखिन जैसी। तैसी है सूक्षम छामोदरी कटि केहरि की हरि लंकना ऐसी १४॥

स०॥ सिंह भ्रमै बन भाँवरी देत औ साँवरी भृंगी भई करि खेदै। शम्भु भनै चसमा चख दैकै बिरंचि रची बिसराइकै वेदै। राधिका लङ्ककी शंक करो जनि शंकरहो नहीं जानत भेदै। जो मन है परिमान समान निगोड़ी तऊ तिहिं में करै छेदै १५॥

स०॥ है तनहीं में लखाति नहीं बर बूझिये जायतौ हैं सब साखी। मानिलई सबही अनुमान कै पेखी न काहू पसारिकै आँखी॥ जानत साँची कै याते जहान जो आगे ते वेद पुराणनि भाखी। ब्रह्मलौ सूक्षमहै कटि

राधे कि देखी न काहू सुनी सुन राखी १६ ॥

स०। जो कहिये विधिनाहीं रची शिवतें धर क्यों पगको सँग लीन्हों। जो कहिये कि विरंचि रचीहै तो देखी न जाति कितो दग दीन्हों॥ कीन्हें विचार न आवे सनै नृप शम्भु भनै तब मो मति चीन्हों। जो चितचोर को चित्त चुरावत राधे के लंक लो कंजन कीन्हों १७॥

स०। प्यारी के गात बनाइबेको विधि मांगि लई द्युति देवन अंगकी। आनन में शशि राखि दियो हरि बास कियो रचि भौंहनि भंगकी॥ आपने आसन नैन रचे नृप शम्भु जू बैन सुधा सब संगकी। भाग सुरेश उरोज महेश बलाहक केश निलंक अनंग की १८॥

अथ नाभी वर्णन॥

क०। कैधौं यह परम अनूप रूप सरिताको भ्रमत भँवर जोर भवे पियमान है। सहज शृंगारकी गुफा है जहां मैन बैठ ऐसे मंत्र जपै शम्भु दम्भु दै विकान हैं॥ कैधौं मणि कण्ठ यह आनँद भवन गेह जाहि देखिवेही प्राण सौति को निदान है। वारी हौं तिहारी बड़े भागमें निहारी ढारी कैधौं प्राणप्यारी तेरी नाभी निरमानहै १॥

क०। शोभाकी तरंगनी के तोय के भँवर कैधौं सोने की भूमि मध्य सदन कीट कीन्हों है। पिय नैन गोलक के खेलकी खलेल कैधौं बलभद्र पारखी सुलाख काम दीन्हों है॥ राख्यो करि अचल सचलता बिसारि सब

हेरि चित्त चंचरीक रंध्ररस भीन्हों है । नाभी तेरी तरु-णी निवास कैधौं मोहनी को मेरे मन मोहन को मन हर लीन्हों है २ ॥

क० । सुखकी नदीमें कैधौं परत गँभीर भौंर धराको तखत पिय लोचन अरथकी । कैधौं बरषामें रोम राजि रहे पन्नग की कैधौं खानि खुली है जवाहिरके गथकी ॥ घासीराम कैधौं सौति सुखन की भाकसी सी मान भई खिरकी उरज गढ़ पथकी । एरी मेरी बीर तेरी नाभी रस भरी कैधौं दोत करतार की के मथानी मनमथकी ३ ॥

क० । अंधकार मध्य मुनि मैनकी गुफाहै कैधौं रूप ठग काज हेरु बीच तम कूप है । साँवरी तमाल लता को है आलबाल कैधौं ब्याल को बिवर अति सुभग सरूप है ॥ चिंतामणि कैधौं नीलमणि की शुभ सोपान बांधि भूमि ग्रह रच्यो मनसिज भूप है । अतिही गँभीर रोम राजिके निकट कैधौं तरुणी की नाभी कुण्ड लसत अनूप है ४ ॥

क० । शिशुता के भाजिबे को गहरी गुफाहै कैधौं रस की तरंगनि में भौंर मझधार को । लक्षण बत्तीसहू के शोभाको भँडार यह सौतिन को गरब गयो है इकवार को ॥ कैधौं सुधा कुण्ड देखि गहिरे गई है मति उपमा-न आवत न आवत विचार को । रूप को नगर काम भूपने वसायो तामें नाभीरसकूप मनमोहे रिझवारको ५

क० । राजत गंभीर रोमावली बनतीर मनतीर पहुँ-चे ते भूले त्रिबली डबर में । भूरि भीर भारी छबिछलक शृंगार पानी कालिदास देखत भँवर क्यों न भर में ॥

ऊर्वी नेकही में डूबी गई लरिकाई ताते रही ये छिपाय सखी बाहिर नगर में। चञ्चल गुपाल खेलें गोकुलकी गलीबीच बड़ी करवर तेरी नाभी सरवर में ६॥

स०। रूप को कूप बखानतहैं कविकोऊ तलाव सुधा हीके संगको। कोऊ तुफंग मोहारि कहै दहला कल्पद्रुम भाषत अंगको॥ बारही बार बिचार कियो नृप शम्भु न या मत मोमति संगको। शीशी उरोजन ते मद धार रोमावली नाभी न प्याला अनङ्ग को ७॥

स०। क्यों मन मूढ़ छबीली के अंगनि जाय पस्योरे ससा जिमि भीर में। ठानी अठान अयान जे आपु तौ ताहीको आनि सकै पुनिनीर में॥ योवन पूर विलास तरंग उठै मनमोद उमंग शरीर में। शैल उरोज कै कूदि पस्यो मन नाभी प्रभानद भौंर गँभीर में ८॥

स०। प्यारी कि नाभिही सो बरनै जो लगायोहै गोरी के लाड़िले लाड़कै। रूप को कूप सरोवरसी उपमा कवि लोग पुकारत डाड़ कै। रोम लता को कहै दहला नृप शम्भु एहो बरनी नहीं चाड़ कै। धूरिको कांट मनो भो अनंग रह्यो गाड़ि कंचन रेतमें गाड़ कै ९॥ इति नाभी बर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ उदर बर्णन॥

क०॥ कोमल अमल दल कमल नवल कैधों कीन्होंहै बिरंचि सब छविको सहटहै। उदित प्रभाकर की

क० ॥ पुरट शिलापै किधौं सोहत सुधाको कुण्ड तापै आहितीन कला अमृत पिवैयाकी। कैधौं छबि कूप नीलमणि मुख बन्धनपै रोमावली डोरचन्द्र सुजल भरैयाकी ॥ भनै रघुनाथ स्वच्छ रुचिर गंभीर शुद्ध हर्णहार हीतलसुजान ब्रजरैयाकी। दलत हमेशमान सौत मन सालैबल त्रिबली संयुक्त नाभि नवलदुलैयाकी २॥

क० ॥ कैधौं मैन भूपतिके रथके सुचक्र चले तिनहीं की लीकै उर भूपैजान तौनहै। कैधौं मन ठगकी ये गलीभली ठगिबेकी कैधौं रूप नदीहै त्रिधार कियो गौन है ॥ ऐसी छबि देखि तेरी मोहेमन मोहन जू यातेमैं हूं जानी यही मोहिबे को भौनहै। एकबली सबहीको बश करि राखतहै त्रिबली जो करै बश अचरज कौनहै ३॥

क० ॥ जंघ युग डोरि धरि लहरी सुरोम झोरि नाभी के हलोरि भौंर लम्ब कुच गही है। भनत दिवाकर अन्हान रस बापी लखि भये अविनाशी ऐसी पुण्य शुभ लही है ॥ कोक की कलान सोइ यश के समान सब केलिके कथान सो निधान मंत्र कही है ॥ उदर सुढार तेरोपानके समान प्यारी त्रिबली तरंग परलोक सीढ़ी सही है ४॥

क० । अमल अनंग के अनंद की उदधि भूमि जीति पिय वाजी दगावाजी सी पसारी है। कनक के पान से उदर में उदित द्युति त्रिवली तिहारी मैं निहारी मति हारी है ॥ रूप गुण चातुरी सो सुर नर नागिनके जीते मणिकण्ठ विधिसोहै रेखसारी है। सौति सुखउतरेकोपियप्रेम चढ़िवेको कुंदनकीप्यारी पैरकारीसी सँवारीहै ५॥

क०। अंग गोरे गोरे भांति देखि झिलिमिलीकांति कछू उठी रोम पांति वेणीकी सी झांई है। रघुनाथ तन मन मानों नित नित नई नैननकी कोर कान ओरलगि आई है॥ कञ्ज कली कैसे कुच आलि केशो कृश लांक त्रिबली की तीनों रेख सरल सुहाई है। शिशुता उतरिबे को यौवनके चढ़िबेको मानों काम कारीगर सीढ़ी सी बनाई है ६॥

क०। पान सो उदर तामें त्रिबली विराजमान कैधौं त्रैलोक हू की शोभा मर्य्यादरी। नाभि की गँभीरता त्रिलोकि मन भूलिजात सुरसरि सलिल के भ्रमन छबि छादरी॥ कोमल अमल द्युति गोरी की गोराई वर हेरि हेरि शिवनाथ नयनन सी आदरी। कैधौं पार कूप ये अवला उझकि२ उठत तरंग कैधौं हरत विषादरी ७॥

क०। मन हंस वसिबे को रूप की नदी में कैधौं निकसी पुलिन पांति कांति हेम लोने की। सै सब सों लरिबे को यौबन महीप कैधौं कीनी मेड़ मोरचे की साध जीत होनेकी॥ नैन बश करिबे को कहै कवि रघुनाथ त्रिबली त्रियाकी कैधौं तीन रेख टोनेकी। कुचभार धरिबे को देखि अति क्षीण कटि कैधौं काम बांधी है बनाय दाम सोने की ८॥

स०॥ नैन विसासिनके सँग गो सुखमालखिबे तिय के अँग अंगमें।ताहीसमय पट नाभि तटीको गयो उड़ि सेवकपौन प्रसंग में॥ हौंसरही मनकी मनमें तितजाइ पर्‌यो मदके उत मंगमें। बूड़िगयो मन मेरो भटू त्रिबली बलि रूप नदीकी तरंगमें ६॥

स० ॥ उघरे पट देखिपरै त्रिबली गुनै सेवक श्याम
हुलास धरैं। तियकी सम दूजोनहीं सुख सोइ त्रिरेख
लिख्यो विधि बास धरैं ॥ तिरैबीच ये रूप नदीकी सु-
जो रस बैसत्रईको बिलास धरैं। हरनैनसों भीत मनोज
मनोसर तीनि सुगेह के पास धरैं १० ॥

स०। प्यारी के अंग बनावतही नृप शम्भु जू देव
भये अनमेखैं। कंजके कण्टक साल जम्यो भयो चंद
मलीन अजौं लगि देखैं ॥ लाजमई सुर बाम भई पछि
तान्यो स्वयंभू महा मन सेखैं। दूसरी और बनाइबेको
त्रिबली खची तीन तिलोक की रेखैं ११ ॥

स०। एकै कहैं सुखमालहरैं मनके चढ़िबेकी सिढ़ी
यक पेखैं। कान्ह को टोनो कह्यो कछु काम कवीश्वर
एकयहै अवरेखैं। राधिका के त्रिबलीको बनाव बिचारि
विचारि यहै हम लेखैं। ऐसी न और न और न और
है तीन खँचाय दई विधि रेखैं १२ ॥ इति त्रिबली ब-
र्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ रोमराजी वर्णन ॥

क०। मेरु मध्य मदन मलंग को बसन नील कनक
की शिलापै भुजंगिनी बिराजी है। मिटी मृगधाई ताकी
मध्य शेख रेख रही बुझी बिरहागि कैधौं मग छबि छा-
जी है ॥ रसराज कैधौं वेर पूरबबिचारि चित्तकाम बांधिबे
को हर आंग सांग साजी है। कैधौं कूच बिहँग शिकार

को तुफंगताने कैधौं रमनीकी रमनीय रोमराजी है १॥

क०॥ यौवन सरोवर में अलक झलक कैधौं नेह नवबेली नाभि कूप ते बिराजी है। खञ्जन नयन हरि बांधिबे की बद्धी कैधौं राजत सुदेश महावांकी छबि छाजी है॥ उदर अभूत निकसत श्याम सूत मुख महा अभिराम काम कीन्हीं कैधौं बाजी है। राखी अवरेख हिये मोहनी दिनेश देखि रोम रोम राजी ताते नाम रोमराजी है २॥

क०॥ चिंतामणि चौकी श्याम मणि के मयूषन की झांई सी झलक तम शोभा एक साजी है। अंगन ते बालपन गुणन निकारे सोई आबनूस छरीकीसी छबि दिब्यछाजी है॥ अमल रतन हार ज्योति उर नाभि गुफा पैठिबेको अंधकार धार मानो भाजीहै। तैसे आभरन मणि दीपन के दीपति सी काजर की रेख सी बिराजी रोमराजी है ३॥

क०॥ पाग रस पतिकी बिनत नाभि कुण्ड बैठी मेहरि मनोभवकी परानिको तारु है। शरल अलपही की छाती है अलप कीधौं भक्षत ते भागि वचो भोगिनी कुमारु है॥ वालातन सदन सम्हारिबे को बलिभद्र धरि गयो रेखा सूत बांधि सूते धारु है। पात से उदरपर तेरी रोमराजी कीधौं जमल उरोजन कोठाई मृदु वारु है ४॥

क०॥ कैधौं काम बागवान बोई या शिंगार बेलि सींचकैबढ़ाई नाभीकूप मनमोहिये। कैधौं हरिनैन खंजरीटनके खेलिबे की भूमि केशवदास नख पंकरेख रोहिये॥

कैधौं चल दल पात पियको कपट ज्वर छूटिबेको मंत्र लिखि लोचननि जोहिये। सुंदर उदर शुभ सुंदरी की रोमराजी कैधौं चित्त चातुरीकी चोटी चारु सोहिये ५॥

क०॥ सोगीकरे योगी औ बियोगी सब भोगी करे रोगी करे साधु ज्ञान धाम दयो वारिकै। खग मृगमीन शम्भु नाग औ असुर सुर हारे तीनोंपुर सो सकल जीते झारिकै॥ तेरी रोमराजी मन मोहिबेमें राजीहोत जाकी रुचि ताजी में मधुप रहे हारिकै। दैकै जगताप निज भुजनि के दाप मानों राखी काम चाप पर पनिच उतारि कै ६॥

क०॥ जंग करिबे को ठान ठानी है अनंग राख्यो अंगना के अंगनि सिलह खानो करिकै। नासिका तु-पीर लखे केशरि के तीर शम्भुभृकुटी धनुष जेबै लेत प्राण हरि कै॥ शूल से नयन हैं नितम्ब चारु चक्र कैसे ढालहैं उरोज राख्यो एक फूल धरिकै। रोमराजी सजि ऐसी रची कछू अज मानों धरी गज करि कै तुपक नाभी भरिकै ७॥

क०॥ विषकी लतासी बिन पानि भानु दुहिता सी आसी विष अलपासी भामिनी की भांति है। कुचचक डोरी की कि डोरी मखतूल की कि ताकि अमी घटनि चढ़ी पिपीलि पांति है॥ जठर अगिनि आभा डोरी नाभि कूप की कि चतुर चितौनि में चहूंटि अहटातिहैं। अलप उदर पर तेरी रोमराजी कैधौं बलिभद्र बानी की विपंचीही की तांति है ८॥

क०॥ कोऊ हेमसांगे चढ़ीबानि सकसीसे कहै कोऊ

नाभी बामि व्याली विषम कढ़ीसी है। कोऊ छबि सागर ते सरिता शिंगार वारी तरल तरंगै चारु सुखमा बढ़ी सी है॥ उपमा रसीली रोमराजी की रसिक छबि छीलि छीलि कवि मति हाथन गढ़ी सी है। लिखी हेम पट्टिका पै पांति मंत्र मोहनी की जादूगर काम घने फूंकन पढ़ी सी है ९॥

क०॥ गवनि गयंद गूजरेटी गुरु गुनन की गली में गिली ज्यों देखिबेको तरसानोहै। कहै रघुनाथ वाके मुख की मरीची आगे चिलक जुन्हाई कौन चन्द सरसानो है॥ चारु कुच कलित ललित रोमराजी राजो साजी कबि समता विनोद बरसानो है। उर छबि सागर में सिंधुर धस्यो है मैन बूड़ि गयो धर कर कुम्भ खुल्यो मानो है १०॥

क०॥ कैधौं यह पान पै बशी करण मंत्र लिख्यो देखि छबि मोहै कोन विद्या पंचशर की। हृदय सरोवर शिंगार रस जल कैधौं उमड़ि चल्योहै नाभि कुण्डिका गहरकी॥ छोटे छोटे आखरन अबला लिखाये याते आपनी सबलताई सूरति समर की। जिन्हैं देखि नैनन की गति मति भाजी यह तेरी रोमराजी कैधौं बाजी बाजीगरकी ११॥

क०॥ कैधौं काम चोपदार केसरि की भूमिपर छरी आबनूस की धरी है प्यारी जीयकी। कैधौं मंत्र मोहनी की पांतिहै सुवेष कीधौं मरकत रेखपाटी कंचनजरीय की॥ कहै कवि रघुनाथ बसत नरेशकारी डारी है जरीब नापिबे को रसरीयकी। हीय धरछोड़ि लरिकाई भागी

ताकी राह राजतिहै नोखी रोमराजी कैधौं तीथकी १२॥
क० ॥ सोनजुही चम्पक कनक की बनकरंग कुमकुम तनक भाव लिये जाके अंगको। शम्भु राज राधा रची रूपही की निधि याहि बिन करि सके सुरतरु मान भंगको॥ बड़े बड़े मोतिनके हारन के बीच बीच रोमराजी लसति बखानै वहि रंगको। मानों बढ्यो दिनन अगाऊं फूटि कढ्यो एक अण्डन के मण्डलन बालक भुजंगको १३॥ इति रोमराजीबर्णनसम्पूर्णम्॥

अथ रोमावली बर्णन ॥

दोहा ॥

आल बाल बर नाभि अलि रोमलता शृंगार ॥
फलितसुफलकुचसरससुख दरसपरसदातार १
प्यारीतुव रोमावली इमि मोहिं परति जनाय ॥
बसेहिये हरिरँग सोई झलकत ऊपर आय २
रोमावलिरसलीन तिय उदर लसतियहिभांति ॥
सुधाकुम्भ कुचहित चली जनुपिपीलिका पांति३
लसत उदर रोमावली अति बिचित्र बारीक ॥
लिखी कनककी भूमिपर मृगमदकी जनुलीक ४
शैल उरोजन बीचते कढ़ी कलिन्दी धार ॥
मन तरिबो चाहत तहां बहत न पावत पार ५
नाभी बामीते निकरि रोमावलि अहि जोय ॥
चली इन्दु आनन अमी रसजनु चाखनकोय ६

क० ॥ लागे लाल चौकीमें विराजे हरीरामकहै रोमावली दण्डहै अकाल दिया कामको। कैधौं जलधर एकधारासो विराजतहै कैधौं कबरीकी परछाईं झाईं बामको ॥ कैधौं गजशुंडि नाभि कुण्ड जलपानकरे कैधौं कामदेव लिख राख्यो रति कामको । कैधौं कुचभूप सीमा बांटिलीन्हीं आधोआध कैधौं है पिपीलिका की पांति चली धामको १ ॥

क० ॥ कारे सुकुमारे पन्नगीके रूपधारे वीर कैधौं फोरिपर्वत कलिन्दजा के धारेहैं । भनत दिवाकर बिरंचिभाल भाग लिखि करते छटकि मानो मसीके पनारे हैं ॥ कैधौं जलभौंर सुधा कुण्ड पैरिवेकेकाज कीरके विनोदजात बांधिके कतारे हैं । कृष्ण करझाईंके झलक झलकारे कैधौं उदर रोमावली नवेलीके विचारे हैं २ ॥

स० ॥ पारसी पांतिकी पीपर पत्र लिख्यो किधौं मोहिनी मन्त्र सुहावली । तोष किधौं अधरा रसको चली नाभीथलीते पिपीलिका आवली ॥ कोऊक काम किसानबई सो जमी किधौं बेलि शिंगार की साँवली। हावली बावली सौतैं भई लखिरी लड़ बावली तेरी रुमावली ३ ॥

स० ॥ योवन फूल्यो वसन्त लसै तेहिअंग लता लपटी अलि सेनी । नाभी विलोकत जात सुधाको थकी मुख देखत नागिनी येनी ॥ राजत रोमनकी तन राजिव है रसबीज नदी सुखदेनी । आगेभई प्रतिबिम्बित पाछे विलम्बित जो मृगनैनी की बेनी ४ ॥

स० ॥ मनोहर अंगकी भाठीरची शिशुताई जराई

अनंग कलार। भनैनृप शम्भु जू दीपत ज्वाल अंगार से राजत लाल के हार॥ लसैं शिर बार ज्यों धूमकी धार बन्यों तरे भाजन नाभी सुढार। रुमावली कंचन कुंभ उरोजन ते मनो च्वै चली आसव धार ५॥

स०॥ जो रतिनायक कोह भरो हठिनैन हुताशन ज्योति जरायो। सो तुव नाभी सुधासर में निज अंग अँगारन आय बुझायो॥ तामधि ते मृगलोचनी मेचक धूम समूह उठ्यो मन भायो। सोई रुमावली को छलपाय दुवो कुच कुंभन के बिच आयो ६॥

स०॥ बैठीमलीन अली अवली कि सरोज कलीन सोंढ़े बिफली है। शम्भुगली बिछुरीहीचली किधों राग लली अनुराग रली है॥ तेरी अली यह रोमावली कि शृंगार लता फल फैलि फली है। नाभि थलीते जुरे फल द्वैक भली रसराज नली उछली है ७॥

स०॥ कनकाचल कंदर अंदर ते निरबात शिंगार लता लटकी। तिय रूमावली किधों शङ्कर द्वैलखि बाल भुजंगिनि है ठटकी॥ चकवा तकि कै कविलाल मुकुंद जू मीर शिकार दई फटकी। किधों मैन मतंग चढ्यो थलि तुंगजंजीर अरीन परै झटकी ८॥

स०॥ योबन बाहिर आयो नहीं तन भीतरही बढ़ी आभा अपारसी। ज्यों नृप शम्भु जू काँचके कुंभधरी कछु चीज लखी परै वारसी॥ आमिल मानों उरोज कढ्यो चहै सायत कामधरे शुभ सारसी। ऐसी रुमावली देखी परै ज्यों धरी परै अंजन रेत की धारसी ९॥

स०॥ रूपके राशिकी रूप रुमावली यंत्रके मंत्र के

तंत्रकेतारसी। प्रेमज प्राणतेप्यारीलगी अँधियारीलगी अँखियान को आरसी॥ मालवनी नवली अवली पिक बेनी त्रिबेनी के बेनी के वारसी। कंचन के गिरिकंचन भूमि पै धूमरी धूमरी धूम की धारसी १०॥

स०॥ कै निधिक्षीरके वीचमें जाय कलिंदीको नीर नयो झरको। नृप शम्भुजू कैधौं मरालकी मालके वीच भुजंग लग्यो सरको॥ बड़े मोतीको हार लसै कुचहू पै रुमावली ते तरको लरको। किधौं गंग के संग सुमेरु शिला बहि पातरो लाग्यो जटा हर को ११॥

स०॥ प्रेम के कूपको हेत कलोल कढ़ी यक पन्नगी कैधौं बिराजै। इन्द्र मतंगके दान के छिद्रमें भौंरन की अवली किधौं छाजै॥ भारती भौंरमें कैधौं कलिंदजा धारकी लीक सुधारस भ्राजै। नाभिके ऊपर कै रघुराज सुरुक्मिणी रोमावली रुचि राजै १२॥ इति रोमावली वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ हृदय बर्णान॥

क०॥सुमति सुशील अम्बुसरवर शोभावान कैधौंप्रिय प्रेमको पयोनिधि सुनीतिहै। बिम्बकुच बीच रोमराजी अति सोहतिहै मेरुते प्रकाशी मनोभानुजा पुनीत है॥ भनै रघुनाथ चारु हीरनको हार गंग लालनकी माल वहै शारदा प्रतीतहै। तेरेतन तीरथ प्रयाग में त्रिबेनी तट प्यारी उरमाधवको मन्दिर पुनीतहै १॥

क० ॥ लालगुणमुक्तासी सुरसरि सरस्वती बीच सुर सुता रोमराजी सुखदैनी है। शुद्धभये न्हाय करि नयन हरिरायजूके बलिभद्र सकल अदान केरी छैनी है॥ रस पतिहास अनुराग रसरसकोकि पदुप पद्मम मुखपदुम नसैनी है। रजतम सतकी त्रिरेखा हृदय मैनीकी कीधौं तियतेरे उर त्रिविधि त्रिवेनी है २॥ इति हृदय वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ कुच तरहटी वर्णन ॥

क० ॥ घनकी घटासी नील कंचुकी चहकि रही मोतिनकी माल सुरसरी ठाठ है ठटी। कबि मकरन्द रोमपांति यमुनाकी भांति धसीनाभी कुण्ड ह्वै सुदीठि देखिकै लटी॥ परम पुनीत भूमि रची है बिधाता यह ऋषिराज कामदेव तपकाज है डटी। कुचनिके नीचे नीचे कैसी छबि छाजति है जैसी कछुराजति है मेरु की तरहटी १॥

क० ॥ अटके ललन रूपहटके सकोचनमें लटके विरतरीझि बूझियों परतहै। छबिसों छबीली डीठि चितै हरिओर फिरि चातुरीकी डोरी चकडोरीसी भरत है॥ नीलकंठ अँगरात अंचलके फहरात छबि छतिया में कछु ऐसी उघरत है। गंगाजल भीतर सुमेरु के समीप कैसी मेरेजानि कनक की भूमि पसरत है २॥ इति कुच तरहटी वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ कुच वर्णन ॥

दोहा

घटि बढ़िबढ़ि घटितिय अँगनि नाप जोख सबकीन ॥
राजगीर मनसिज मनौ कुच साहुल धरि दीन १
त्रिय उतंग कुच की प्रभा कढ़ि बढ़ि गड़ी करेज ॥
जनु सहाव के कुंभ भरि धरे मैन रँगरेज २
त्रियकुच द्युतिके लखतही होति चखन चकचौंधि ॥
मनो मदन जग जीतिके दिये दुंदुभी औंधि ३
जब तें ये कुच रावरे हरि देखे अति पीन ॥
खान पान भूषण बसन सुधि बुधि तनक रहीन ४
खरे करेरे चीकने ऊंचे गोरे गोल ॥
मोहन जोहन मन हरण कंचन वरण अडोल ५
चलननपावत निगममग जगउपजी अतित्रास ॥
कुच उतंग गिरिवर गह्यो मीना मैन मवास ६
उठि यौबन में तुव कुचन मो मन माख्यो धाय ॥
एक पथिक द्वै ठगन तें कैसे कै बचि जाय ७
कठिन उठायो शीश इन उरजन यौवन साथ ॥
हाथ लगावै सबन कों लगै न काहू हाथ ८

क० ॥ अचल चकोर की कली है कोकनद की सी दाड़िम जँभीरी कैधौं फटिक के पौआ हैं। श्री फल सोहाये किधौं कोकनि के शावक हैं शृंग गिरि शङ्कर की कञ्चनके लौआहैं ॥ कंजकी कलीहै कै सिधोरा रूप राशि भरे यौवन के मग किधौं पकेसे बटौआहैं। अतिही

कठिन है बखाने नाहिं जात क्योंहूं प्यारी की पयोधर कि काम के बटौआ हैं १ ॥

क० ॥ अमल कठोरे गोरे चीकने उतंग भोरे बरबस मरोरे मन नेक ना डरोलये । शीश पै भिलम डारि बदत न काहू सूंघालय साल करै घाव कठिन करोलये ॥ ऐंडिकै अड़त आनि खेत रस जूझ हूं में टरत न टारे भारे रतिके हरौलये । अड़ाअड़ी परैतें अँचलापै चलाय दल कवि शिवनाथ छीन मैन के सरोलये २ ॥

क० ॥ आजु अलबेली अलबेले संग रंग धाम राते बिपरीत पूरी प्रीति सों करतिहैं । उझकि उझकि झुकि झुकि लचकीली लंक अतिही अशंकअंक प्यारेको भरति हैं ॥ गिरिधरदास उभय उरज उतंगसोहै उपमा कहत बनि लाजही धरतिहै । मानो द्वैतुम्बराखि छाती केतरे तरुनिसूरत समुद्र बेप्रयासहि तरतहै ३ ॥

क० ॥ आंगिराति ललितबनत चहुंओरलागी कारचोपढँगी उमगत उमगाइके । श्रीपति सुकविछबिसांचे केभभरढारे कारीगर यौबनसँवारे चितलाइकै ॥ जाहि देखि भभरि भजतदुख खलदल भूपरूप हरषित सुख सों अघाइकै । जीतिकै सकलजग उरज विजय नगारे मदन नगारची धरेहै औंधाइकै ४ ॥

क० ॥ अरुण अनार ऐसे नारंगीसुढार ऐसे उलटे नगार ऐसे कंचनके तारसे । त्रिपुरारि वारऐसे श्रीफल सुढारऐसे चकवा जुरारऐसे मारप्रतिहारसे ॥ कंजकेकुमारहार सरके करार ऐसे तोषको उदार अति सुखद

अपारसे। पर्वतअगार तेरे उरज गोरार मेरे मोहन के प्यार खरबूजा टोपीदारसे ५ ॥

क० ॥ कैधों जगजीति मार दुन्दुभी उलटिदीन्हें कैधों पीन श्रीफल छिपाय उरराखे हैं। मनत दिवाकर गयंद मणिहार गंग चक्रवाक तीरमें सिकोरबैठिपांखेहैं॥ कैधों हेम कलश पियूष रस भरि भरि काले रंग मुखपे सुआधे रंग दाखे हैं। तुंग कुच रुद्रसे करेरे गोल गोरी पूजन करे में मन काको नाभिलाखे हैं ६ ॥

क० ॥ कैसे रति रानी के सिधोरा कवि श्रीपति जू जैसे कलधौत के सरोरुह सँवारे हैं। कैसे कलधौत के सरोरुह सँवारेकहि जैसे रूप नटके बटासे छवि ढारेहैं॥ कैसे रूप नटके बटासे छवि ढारे कहि जैसे काम भूपति के उलटे नगारे हैं। कैसे काम भूपति के उलटे नगारे कहि जैसे प्राणप्यारी ऊँचे उरज तिहारेहैं ७ ॥

क० ॥ कञ्ज की कली से उपमान हूं भली के सोहै सुखमा थलीके लखि सौतिमति छरिकी। कोक युगनीके पीके हीके मोहिबे को करी हेम कुम्भ गाम करतूति निजकरकी॥ गिरिधरकहै कुचनीके कामनीके इमि तापै मुक्तानिमाल छाजे छविवरकी। मानो शम्भु शीशतें भगीरथकेसाथकाजनिकसीअपारयुगधारसुरसरकी ८॥

स० ॥ कोऊ कहैं कुच कंचन कुम्भ सुधारस से भर राखेहैं ओऊ। श्रीफल शम्भु सुमेरु समान मनोज के गेंद कहै कवि कोऊ ॥ मो मनमें उपमा अस आवत भाषतहों पुनि होउ न होऊ। जीति सबै जग आंधि धरेहै मनोज महीप के दुन्दुभी दोऊ ९ ॥

स०॥ कंचुकी माहँ कसे उकसे परैं कामिनी ऊंचे उरोज तिहारे। दत्तकहै जनु बिश्व बिजयकरि मैनधरे उलटेकै नगारे॥ जोबन जोर कढ़े हिय फोरके औरही ते यकठोर निहारे। गेंदकै गुम्मज कै गिरिकै गज कुम्भ के गर्व गिरावनहारे १०॥

स०॥ कंजसे संपुटहैं पै खरे हियमें गड़िजात ज्यों कुंतल कोरहैं। मेरुहैं पै हरिहाथ ना आवत चक्रवतीपै बड़ेई कठोरहैं॥ भावती तेरे उरोजनमें गुनदास लखे सब औरही और हैं। शम्भुहैं पै उपजावे मनोज भुवि त्तहैं पै पर चित्तके चोरहैं ११॥

क०॥ कैधौं बिबिनीलकंठ बसत सुमेरुपर मधुकर माते कैधौं संपुट सरोजहैं। उलटे अछिद्रताल श्रीफल रसाल कैधौं यौवनके वाले युगजने एकरोजहैं॥ पिय चुगानके निशान कैधौं तारा कवि तूंबा तरुणाई सिंधु तरिबेको चोजहैं। कुंजर के कुम्भकै कलश युग कंचन के मदन के मठ कैधौं कठिन उरोजहैं १२॥

क०॥ कैधौं उर आनँद के मंदिर शिखर बिन्द कैधौं काम कीरति लताके कन्दजानेमैं। कैधौं चितचाहके चुगुल काढ़ि हियमेंते योवन जवाहिरी के सम्पुट समानेमैं॥ येरी तिय तेरे अति उन्नत उरोज कैधौं दुं-दुभी युगल धरे भूपतिके थानेमैं। कैधौं शालढांपे हेम कुंभद्वैगुलाबभरे मदननवावजू के आबदारखानेमैं १३॥

क०॥ कहै रघुनाथ कैधौं कंचन पटा पै बैठे केशर वरण दोऊ देवता है टोनेके। त्रिय हिय घर चतुराई आयबे को कैधौं मैन धरे कलश सगुन शुभ होने के॥

सुमति नटी के ये वटी के फेरिवे के बटा कैधौं कुच छवि की छटामें योग जोनेके। जोवन जवाहिरके राखिवे कों लौने कैधौं सम्पुट बनाये काम सोनी गोल सोनेके १४॥

क०॥ कैधौं मनोहर मनिहार दिति सुत खेलै यौवन कलश कुम्भ शोभन दरसहैं। मोहनीके मठ कैधौं इन्दिराके मंदिर की इन्दीवर इन्दुमुखी सौरभ सरस हैं॥ आनँद के कन्द कीधौं अंग है अनंगही के बाढ़त जू केशौदास वरस वरस हैं। येरी प्राणप्यारी सुकुमारी तेरे कुच कीधौं रूपअनुरूपजात रूपके कलस हैं १५॥

क०॥ कैधौं रतिजंगके सुभट युगराज सोहैं कंचुकी सुरंगकसे उन्नत अमानेहैं। दृग कमनैतके कटाक्ष शर छांडिबेको मानो ये बिरंचि रचे रुचिर निशाने हैं॥ कैधौं है कलिन्दी कूल कोक शुभ शोभ कीधौं उरजउतंग लखि कान्ह मनमानेहैं। जोबन महीप अंग आगम सुगमजान मदन फरास कैधौं तम्बू युगतानेहैं १६॥

क०॥ कैसे कहौं कोक वे तो शोकमैंही रहत निशि ये तो शशिमुखी सदा आनँदसों हेरे हैं। कैसे कहौं करि कुंभ वे तो कारे करकस येतो चारु चीकने सुहार हीसों घेरे हैं॥ कैसे कहौं कोल वे तो पकरे बिथुरिजात ये तो गोरे गाढ़े आछे ठाढ़े आप नेरे हैं। याहीहै प्रमाण तोष उपमा न आन प्यारी तरुणाई तरुताके फल कुच तेरे हैं १७॥

क०॥ कैधौं काम महलके कनक कँगूरेपूरे कैधौं सर शोभाके सरोज कलिकावहैं। कैधौं बाल यौवनकेमोदक हैं लाल लाल कैधौं ताल हाटकके उलटे उपावहैं॥

मदन महीप की सिफर के सुमन कैधौं कीधौं छवि छो-
हरा के कन्दुकजरावहैं। सुखमा सदन प्यारी उपमा न
आवै तोष तेरेकुच कविनके मानस प्रभाव हैं १८॥

क०॥ कैधौं विविसुन्दर सुहाये चक्रवाक बैठे कैधौं
आप शिवही सरूप ह्वै प्रकासे हैं। कैधौं चारु श्रीफल
धरेहैं सम भूमि कैधौं मदनके खेलिबेके कन्दुक सुखा-
सेहैं॥ कैधौं श्याम झंपनदै कंचन कलश धरे कामिनी
के उरमैं उरोज ऐसे भासेहैं। कामकेतुकासे कोकनद
कलिकासे स्वच्छ पुरटबटासे गुमठासे चहुँधासेहैं १९॥

क०॥ कैसे करि कुम्भ जैसे कंचन के कुम्भ कैसे कं-
चनके कुम्भ जैसे गिरिशृंग ओजहैं। कैसे शृंग ओज
जैसे शम्भुराज योग कैसे शम्भु राज योग जैसे काम
मठ खोज हैं॥ कैसे मठ खोज जैसे श्रीफलके चोज कैसे
श्री फलके चोज जैसे चक्रवाक मोजहैं। कैसे चक्रवाक
मोज जैसे है सरोज कहो कैसेहैं सरोज जैसे प्यारी के
उरोजहैं २०॥

क०॥ नैन रखवारे निशिदिन निरखत रहै दिन दिन
दीन ह्वै न उतरन पायो है। कहै नीलकण्ठ केते देखे
अनदेखे पैन काहू रूपवती निजरूप दै छुड़ायो है॥
निपटकठिन ठौर फावत न जापै जोर ऊँचो चहुँ ओर
काहू मारग न लायोहै। कौनसी गुनाह प्यारी मेरोमन
मनमथ तेरे कुचगढ़ ग्वालियर पै चढ़ायो है २१॥

क०॥ मदन महीप कुच गुम्बज उठायउर भृकुटी
कमान बंक मारत निशाना है। भनत दिवाकर सुरेश
नर नागलोक थिरता बिहाय सब अंग थहराना है॥

करत विचार लोग अबना बचैंगे जान आंखिनके सान मानों वीररस साना है। यौबन उरोजवर सुन्दर उतंग बाम अजब अनोखो बाण काको न समाना है २२॥

क० ॥ मौनी विवि गंगा कूल करत तपस्या कैधों कामके तुकासे लागे उठन उठोनाके। यौवन नरेश चौगानके निशान कैधों श्रीफलतें सरस सलोने फूल दोना के॥ आलम कहत कलधौत के कलश कैधों आनँदके कन्द कै मनोज रस होनाके। श्वेत कंचुकी में कुच ढापे नँद नन्द प्यारी फटिकके सम्पुटमें द्वै सरोज सोनाके २३॥

क० ॥ मुकुल सरोजके द्वै उलहे हियेमें कैधों उपजे मनोजहीके चोजये कछुक से। कञ्चन कलश करी कुम्भहू कहाहें कोक आनन्द भरेसे आछे कविन के तुकसे॥ कैधों महामोहनीके मठही बनाये विधि हेरिभौचकित चित्त सुर मुनि शुकसे। अबही दुलहैयाजूके नेककर लावतही कंदुकसे उरमें उरोज आनिउकसे २४॥

क० ॥ महा मञ्जु नाभीसर रूपहै सलिल वर रोमावली नालपर लसे भांति भली है। उदर रुचिर भांति सोतो बरणी न जात शिरपर श्यामता मधुप द्युति रली है॥ बासना बलित अति ललित परसबेको पिय मनमोहनकी मनसाहू चली है। जोवन नवीन देखे दृगहोत लीन नवनागरीके कुच कैधों कञ्चनकी कली है २५॥

क० ॥ मंगल कलश भरे मकरंद वलिभद्र कैधों सम दुंदुभी सहोदर समर के। कैधों रहे शंकि सूरसुता

के शरण शोचि चकवा के शावक सताये शशि करके ॥ मैनके मवास मन मोहिबेको मोदककी बिमल श्रीफल है कि फल शोभातर के । ओपे बिन कामिनी पयोधर की आवै ओप ऐपनसों माड़े आड़ेपिय धौरहरके २६ ॥

क० ॥ श्यामताई जटा जाल सुरसरी मोती माल शशि कलाभाल नख ब्यालकेसकाले हैं । मलय बिभूति श्याम कंचुकी सो रघुनाथ फटी कफनीके गज खालगरे घाले हैं ॥ बनक बिलोकि बाँकी बरणै कहांलों पर एतिक कहत सेवै ताके बड़े ताले हैं । पाले है मनोज इन्हैं प्रेम करि आले प्यारी संकर सों तेरे कुचशंकर निराले हैं २७ ॥

क० ॥ सोहत सुरंग मुख रंग में दुरंग सोहै जिन रंग सोहै रंग कोहै नारंगीप के। सुकवि रतन सरबसी भरे उरबसी तरबसी करै उरबसी के समीप के ॥ चमकन चीकने कपूर मणि कैसे ओपे लोपत बिलोकत बिवेक ज्ञान दीप के। सरस सरोज सुखी तेरे ये उरोज मूंगामीर मसनंदी मानो मदन महीपके २८ ॥

क० ॥ सम्पुट कमल तापै राजत प्रभात द्युति शृंग है सुमेरु कैधों धरे ओस औनाके। कैधों सुरसरी धर मौनी सुरसरी तीर राजत बिभूति अंग बैठे दोउ कोना के ॥ आलम सुकवि कैधौं भोडरके पींजरा में चकई के बाल कैधों पियचित टोनाके । ढापेनँद नन्द प्यारी श्वेत कंचुकी में कुच फटिक के सम्पुट में द्वै सरोज सोना के २९ ॥

क० ॥ सोने के सिधौरा कैधों श्रीफल सरोज कैधों

सोने ही के कलश पियूष रस भरे हैं। कैधौं करि कुंभ कैधौं शम्भु युग श्यास कैधौं कनक के तर ये उतार बिधि धरे हैं॥ सोहत सुमेर ये सुभग बिबि कञ्चन के कञ्चन की फूली बेलि कञ्चन के फरे हैं। सूरज बिमोहीं ये गुरुज से उरज देखि मोहिं कौन गनै मुनिहू के मन हरे हैं ३० ॥

स० ॥ सोई हुती पलँगा पर बाल खुले अँचरा नाहिं जानत कोऊ। ऊँचे उरोजन कञ्चुकी ऊपर लालन के चरचे दृग दोऊ॥ सो छबि प्रीतम देखि छके कबि तोष कहै उपमा यह होऊ। मानों मढ़े सुलतानी बनात में शाह मनोज के गुम्मज दोऊ ३१ ॥

स० ॥ सोने के चूरन में चमकै किरचै सी उठै छबि पुंज झवाके। हाथन लेत बिरीलटकै मखतूल के फूलन जोर जवाके॥ गंग बड़े बड़े मोतिन के सँग सोहत थोरे थोरे कुच वाके। अण्डनि के मनो मण्डल मध्य ते द्वै निकसे चकुला चकवाके ३२ ॥

क० ॥ श्रीफल शरीफा किधौं दाड़िम नरंगी रूप कैधौं स्वर्ण सम्पुट बिशाल छबि वारी के। कैधौं यह गिन्दुक गुलाब अनफूले कञ्ज गुञ्जत मलिन्द मनो आशारस भारी के॥ भनै रघुनाथ हेम कलशरती कृतकै पतिनट नागरके बाट खिलवारी के। रसपति बास कै निवास द्युति शोभा धाम आसन हैं काम के उरोज प्राण प्यारी के ३३ ॥

स० ॥ श्रीफल कञ्ज कलीसे बिराजत कै बिबि मोनी बसे ढिग गंग के। कै गिरि हेम के सम्पुट सोने के

राजत शम्भु मनो रस रंग के॥ कै युग कोक कै शोक विमोचन कैधौं शिली मुख मैन निषंगके। कैधौं रसाल केताल फले कुच दोऊ महा लजगीर अलंगके ३४॥

क०॥ श्री फल सरोज कैधौं कोमल करारे कुच कलिका कुसुम कैधौं भरेरस मैनके। आनँदके कन्द कैधौं योवन के भैया बंधु नारंगी सुरंग कैधौं शम्भुसुख दैनके॥ कंचनके ढार कैधौं सोने के पहार परे चकवा की ताक कैधौं छत्र पति मैनके। गाढ़े गढ़िलंक कैधौं शोभित हियाके बीच दौलतयती के कैधौं मौनी दिन रैनके३५॥

क०॥ रूप की नदी ते निकसत मन्द मन्द कैधौं योवन गयन्द रूप शोभन सरसहैं। दुंदुभी दिनेश करि कञ्चनके कारीगर उलटि धरे हैं दोऊ देखत दरसहैं॥ सुमन के गुच्छन के स्वच्छ द्युति दोना कैधौंकाम काछी धरे प्राणप्यारी के परस हैं। उन्नत उरोज कैधौं मुद्रित सरोज युग शिखर सुमेरु के कै सोनेके कलसहैं ३६॥

स०॥ रूप अनूप बनी सखी आजु सुता वृषभान की पानसी भूपर। पूरन भाग महा मणि कण्ठ सोवारी कहा इन मोहनी जूपर॥ रीझि रँग्यो अँचरा कुसुँभी इमि डोलत बयार लगे कुच दूपर। लाल ध्वजा मकर ध्वजकी फहराति मनो गज कुम्भन ऊपर ३७॥

क०॥ गौनको नवेली तू भवनते नबाहरहो कुचतेरे कंचन मनोजद्युति हरिहैं। फूल ऐसीमाल औ दुकूल ऐसी चपलासी ललितन देखे चिलकनसी नजरिहैं॥ कहैंद्विजनंद प्यारी पूतरी छपायचलो अबतो ये नयन तेरेरी पषानकरिहैं। ऐसीकसबाती तूतो नेकन डिराती

काहू छाती न दिखाउ कोऊ छाती फारि मरि हैं ३८ ॥

क० ॥ बालपन दूरिकरि बालतन मध्य आइ योव-न प्रबल गुण आपते प्रकासे हैं । चिंतामणि ठौर ठौर आपनी दुहाई फेरि अंगी प्रतिपक्षक ते सिगरे उड़ासे हैं ॥ नूतन वहिक्रम से नूतन प्रगट भये उरमें उरोज ऐसे सुखमा सों भासे हैं। निधिसे निरखि चिहन अनु-पम लक्षभरे मानो विवि कंचन के कलशानिकासेहैं ३९॥

स० ॥ वे धरेंअंग भुजंग के भूषण येहू भुजंगरहें हिय धारे। वे धरैं चन्द सवाँरिकै भालमें येऊ नखक्षत चंद सवाँरे ॥ शम्भु की औ कुच की समता कवि कोविद भेद इतोई विचारे। शम्भु सकोप ह्वै जाख्यो मनोज उरोज मनोज जगावन हारे ४० ॥

क० ॥ उठेहैं उठान करि उरज उचौं हैं दोऊ सुथरे गोलारे गेंद वारेगात गोरेमें। कैधौं हेम गुम्बज बनेहैं भांति याछिनके आछेफल श्रीफल कमल मुख मोरेमें। उपजो अचंभो येपरी है पहिंचान धोखे चकित विरा-हिम कहत सब ओरेमें ॥ मेरेभुज भेंटिबे को भाग कहां देखियत जाके महादेव जू बिराजमान कोरेमें ४१ ॥

स० ॥ उरमें उलहे मुलहे द्वै उरोज सरोजकरैं गुण दासवके। नृप शम्भुजू कुम्भीके कुम्भ कहा समकीजें वँधे रहैं पासव के ॥ फल श्रीफलके कहे आवति लाज कहा गिरिश्रृंग हैं वासव के । सु मनो छबि अंग अनंग धरे उलटाय पियाले द्वै आसवके ४२ ॥

क० ॥ पारद के गुटिका सवाँरे काम सिद्धजू ने धातु बेधिबे की कहा गात बेधि जातहै। नेकहू छुयेते अंग

अंग रंग औरै होत दोऊ गुणपूरण सुरूप सरसातहै॥ भरमी सुकबि कोऊ धनितू रसाइनी है जाके उरविद्या फल ऐन दरशात है। तेरे कुचदेखे रुचि मोहनके बाढ़तिहै मेरेजानि आली तेरोरूप उफनातहै ४३॥

स०॥ जगजीवनको फल जानि पर्यो धनि नैननि को ठहरैयत है। पद्माकर ह्यो हुलसै पुलकै तन सिंधु सुधाके अन्हैयतहै॥ मन पैरतसो रसके नदमें अति आनँदमें मिलि जैयत है। अब ऊँचे उरोज लखे तिय के सुरराजके राजसो पैयत है ४४॥

स०॥ ठाढ़ेरहैं दृग आसनकै कुटी कंचुकी के पटखोलतना। माल सुगंध प्रबाह बहै तिहिमें उठि नेकु कलोलतना॥ कारेभये करि कृष्णको ध्यान डुलायेते काहूके डोलतना। ये तपसी द्वै गरूर भरे दुनिया ते दयानिधि बोलतना ४५॥

क०॥ इन्दिराके मंदिर अमंद द्युति कंदुक से बंधु रविमोद भरे युग धौं बिरदके। तारापति ललित लता के स्वच्छ गुच्छ कैधौं श्रीफल सुफल भये आनि अनहदके॥ कैधौं चक्रबाक आन बैठे ऊंची भूमिपर तुम्ब के परनतीर बासी नाभि नदके। सुभग सरोजसे उरोज तेरे ओझ भरे कैधौं मीर फरश मनोज मसनदके ४६॥

क०॥ हारे करी कुम्भ तो लपेटेछार बन बसे हरकहा शम्भु जो न मूरति धराधरी। कमल सकंटक बिलोकै शशिक्षीण छबि कहा कोक कोकी निशि बिरह जराजरी॥ श्रीफल सुमेरु कुम्भ सम्पुट सुमन गुच्छ दुन्दुभी दुरित छबि निरखि दरादरी। भूमि गहि मारै

उरधारैमहँ शंककरैगेंद दईमारे उरजनकीवरावरी ४७॥

स० ॥ ह्वजे न आतुर ह्व अवहीं वहजानै कहा रति की परपाटी। खेलतसाथ सहेलिनके फिरै आँगन मो नहिं अवघट घाटी ॥ बूझिपरै कविराज अबूअव मैन महीपकी लागी है सांटी। योवन जामत यों उकसै छतियां क्षिति ज्यों गुण आंकुर माटी ४८ ॥

स० ॥ योवन ज्योति जगामग होति शृंगार प्रभासर सावतहै। रीझि रहैं लखि लालके लोचन मोद हिये भर आवत है ॥ सोहत टीको जराय जखो तियभाल महाछबि छाजत है । मानहुं चन्दके मण्डल में दिन नायक शोभा बढ़ावतहै ४९ ॥

क० ॥ योवन नृपति जाके परसपुनीत भये दरस ते जाके सरसत चित चेत है। कालिदास आस पास अमल अनूप सोहै पानिप को पूरो महाछबि को निकेत है ॥ दिन दिन दूनी भई ओपकीउमंग हरिजाकी रचनाकी रचिबेको हरिहेत है। तनकसी गुटिकासे कनक कलश भये आली तेरो उर कैधौं सांचो कुरखेतहै ५०॥

क० लाल लाल रेशमकी डोरसों बनाय जाल बांध्यो तकसीर बन्द जानिकै सरासरी। फटिकके भूमि मांह दै दै माखो बार बार ज्यों ज्यों वा उछारै त्यों त्यों शीश पै परापरी ॥ तऊ ऐसो निलज विचारै नहीं हार जीत कुचनकी समता में नजर खराखरी। नैननिसों हेरिहेरि कहतहैं बेर बेर गेंददई मारे फेरि करी है बराबरी ५१॥

स० ॥ लाड़िली के कुच देखतही शिरनाय सरोज लखाय बिसूरत। दाड़िमको हियरो फटिजात जबै कहूं

कंचुकी ओरको घूरत ॥ शम्भु सतावत हैं जगको है कठोर महा सबको मदतूरत। कूहकै कै करमारै मही लखि कुम्भन वारन छारन पूरत ५२ ॥

क० ॥ आली ऐंडदार बैठी ज्वानीके तखतपर नैन फौजदार खरे लखैं चहूँ ओरा है। द्वादशहू भूषण के द्वादश वजीर खरे सोरह शृंगार भूप लखै दृग कोराहै॥ रूपको गुमान शीश मुकुट है छत्र चौंर जेवरकी नौबति बजति सांझ भोरा है। कहैं कबि केशौदास आली बरणी नजातियोब नकोजोरामानौबादशाहीतोराहै५३॥

क० ॥ कुंदनसे झलकैं खलक बशकरैं मानौ पलकैं बुलाइ लेत सहित दगासेहैं। नवल नवीन मन छीनि लेत मनसिज पीन जु बटोरेते पियारे खूब खासेहैं। धीर धरधासे मैन कासेते उमंग भरे काम रंग रासे शुचि जोहत प्रभासेहैं। कामता प्रसाद उरप्यारी के उरोजसो हैं कोक कोकनद गुमटासे घनघासेहैं ५४ ॥

क० ॥ गोरे गात गेंदसे गसेहैं गदकारे गोल गजब गुजारत वे गोरीके उरोजहै। सफरी सुमेरु शृंग श्रीफर सरीफा कैधौं संपुट सरोजरोज दूनी द्युति रहीहै। भनत दयालकी गुरीद गोलगालिबहै कनक कलासि नील मणित जटेहैंके। काम चक्कवैके कसे कंचुकी नगारे कीधौं कुंदेरके सिंधौराकै सुघर नटवट्टाहै ५५ ॥

क० ॥ कंचनके घट नट बटहु युगुल मठ कमठ कठोर अरु सुभट मनोजके। शुक प्रिय श्रीफल लंगूरको क संपुट त्यों उलटे नगारे ज्यों मंजीर केत चोटके॥ तम्बु कम्बु शम्बु कर कुम्भ रूप छत्रपती कबि हनूमान

कहै शिखर सरोजके। बीजभरे मौजभरे रोज सुखदायी श्याम येतो उपमा अधीन सुन्दरि उरोजके ५६॥

क०॥ संपुट सरोज कैधौं शोभाके सरोवरमें लसत शिंगारके निशान अधिकारीके। कविपजनेस लोलचित्त वित्त चोरिबे को चोर इक ठौर नारिग्रीव वर कारीके॥ मंदिर मनोज के ललित कुम्भ कञ्चन के ललित फलित कैधौं श्रीफल बिहारीके। उरज उठौना चक्रवाक न के छौना कैधौं मदन खिलौना इस लोना प्राण प्यारी के ५७॥ इति कुच वर्णन सम्पूर्णम्॥

कुचअग्रलालिमा व श्यामतावर्णन॥

दोहा॥

पीन कुचन मुख अरुणई इमिशोभित उरबाल।
मनो कनक सम्पुट अमी भरि ढकना दिये लाल १
ये तेरे कुच मदन रस मोदक धरे अदोस।
मूंदे मरकत हेमके साजि सुन्दरि सरपोस २
युगुल कुचनके मुख विषे रही श्यामता छाय।
मनौं कमलके फूल बिच मधुकर रहे लुभाय ३
गोरे कुचपै श्यामता दृगन लगति इहि रूप।
कंचन घट पै जनु धरे मरकत कलश अनूप ४
कुच युग कंज खिले नये आनन इन्दु उजास
तदपि अलि कलीन पर बैठे लेत सुबास ५

स०॥ योवन छत्रपती के मनो सर कंचन छत्रसों आ-

ति छये हैं । कामके त्रास मनो शिव के शिर कामिनी सुन्दर बुन्द दये हैं ॥ श्रीफल में मनो कोऊ बिहंगम कौलन के दल तोरि गये हैं । लाली अली कुच अग्रन की लखि नूर सु लालन चूर भये हैं १ ॥

क० ॥ शरद के घनमें ज्यों अरुण उदोत द्युति सतोगुण माँझ रूप राजसको छलकै । फटिक पहारन में सन्ध्यासी झलक रही सुरसरी माहिं शोभा शारद के जल कै ॥ झीनी श्वेत कंचुकी में अरुण उरोज आभा जाहि देखि पूखी मन लालनको ललकै । कैधौं हांस अंतर अनूप अनुराग राजै कैधौं श्वेतसारीमें कुसंभ रंग झलकै २ ॥

क० ॥ कैधौं उदयाचल उदोतराका योबनको अस्ता अस्त कैधौं शिशुताई भानुगतिहै । अंतरकोराग कीधौं बाहिर प्रगटभयो कैधौं मुख रागकी झलक झलकति है ॥ कैधौं बंद बंदनकी बंदन गयंद कुंभ कैधौं उभय भालराजै शिवकी शकतिहै । कैधौं बलिभद्रजामी मूरि है सजीवनकी ऐसीकुच अग्रताकी लालिमा लसतिहै ३ ॥

क० ॥ शंकर के मुखमें हलाहलकी डरी मानौ करि कुम्भ मधु हेतु भौंर लपटानो है । सोनेके बटामें श्याम मणिसी जरी है मानौ योबन बुरुजमें शिंगार कैसो थानोहै ॥ नील कौंल पांखुरीको रंचक सुभग भाग मुख चकवान के सनेह करि भानोहै । तेरेकुच अग्र ऐसी श्यामता लसत नीकी शिखर सुमेरु पिय मन को निशानो है ४ ॥

क० ॥ अवलम्ब अलिन नलिनहीके कोरि काकी

अमी कुंभ ऊपर अनंग छापदीन्हीं है। कैधौं सिति कण्ठ २ राजति गरल द्युति कनक गिरिन मणि मंजरी नवीनी है॥ शिशुताकी तनुता तनक तनधरितन तामसकी रीति ते तरुणि तेज कीनी है। श्यामाके अनूप कुच अग्रनकी श्यामताई कैधौं बलिभद्र रसराज छबि छीनी है ५॥

क०॥ कैधौं गिरिराजके सुहाये बिबि शृंग कैधौं सुधाके कलश भरे कञ्चनके रंगके। कैधौं शम्भु राल फूले श्रीफल ललित कैधौं ऐंठमद गलित सिपाही रति जंगके॥ कैधौं प्यारी कुचन पै श्यामता लसत कैधौं मरकत मणिके कलश ऊंचे शृंगके। कैधौं कञ्ज मञ्जु पै मधुप आइअरे कैधौं शरआर गड़े भट लटू ह्वै अनंगके ६॥

क०॥ कैधौं तेरेकुचन पै श्यामता सुहाई प्यारी कैधौं सिद्धजूरा बांध्यो बारन समेटिकै। कैधौं शम्भु श्रीफल में बिषके कनूका धरे कैधौं कञ्ज ऊपर मधुप रहे भेटि के॥ कञ्चन कलश कैधौं सारसरपोस मूंदे याहू तैं सरस लसै उपमा न मेटिकै। कैधौं रोमराजी तार दृढ़कै चढ़ायो मञ्जु स्वरन मिलायो चारु खूंटिन लपेटि कै ७॥

क०॥ सुंदर सजीले पर लम्ब सहजीले राधे परम लजीले शुभ काजन कजीले हैं। बेलिन बसीले अलि बेलिन हँसीले आदि रस में रसीले रूप यशमें यशीले हैं। नेह रस सीले नेह पर सीले अनु नयन बहकीले चटकीले मटकीले हैं। तेरे कुच नीले छूटि छबि से

छबीले मानो पन्नग रँगीले मैन मंजु बतकीले हैं ८॥

क०॥ कैधों पिये कालकूट बैठे शम्भु जटाजूट निशि के नलिन पै अलिन बास लीन्हों है। चामीकर कुंभन पै मर्कत कठोरधरे रति रणबीर युगटोप शिर दीन्हों है॥ प्यारी कुच श्यामताकी डीठिगड़ी श्यामताकी कहै हनूमान इन काहू को न चीन्हों है। तपिन के तप जीते जपिन के जप जीते ताते चतुरानन बदन कारो कीन्हों है९॥इतिकुचअग्रलालिमाऔरश्यामताबर्णनसंपूर्णम्॥

अथ कुच कंचुकी सहित बर्णन॥

दोहा॥

जालदार आंगी बिषे यों कुच दीपति होति॥
झंझरीके तुम्बन लसै ज्यों मसालकी जोति १
सोनजुहीसी जगमगति अँग२योबन जोति॥
सुरँग कुसुंभी कंचुकी दुरँग देह द्युतिहोति २
बिधु बदनी तुव कुचनकी पायकनकसी जोति॥
रँगी सुरंगी कंचुकी नारंगी रँग होति ३
भईजुछबितनबसन मिलि बरणिसकतसुनबैन॥
अंग ओप आँगी दुरी आँगी आँग दुरैन ४
हरि ताँगी बूटा सुरँग ओप उरोज अपार॥
मनु प्रफुलित हरिहित बने उरवन कुंज सुढार ५
सबुज कंचुकी में लसतयों त्रिय कुचकी छांह॥
मानो केसरि रँग भरयो मरकत शीशी मांह ६

हरित चिकनकी कंचुकी पाय कुचन पै थान ॥
हरत हराई ते हियो बूटन लूटत प्रान ७
कुच उतंग आँगी सबुज जाबिच बूटी लाल ॥
जटित लालमणि ते मनो मरकत कुंभ रसाल ८
सबुज कंचुकी के विषे इमिकुच छबिछहराति ॥
मानहुँ पुरइनिपातछिपि चक्रवाक दरशात ९
लसति मढ़ीसी कंचुकी हिय मुक्तावलिसेत ॥
गंगातट कुच मुनि तपै हरि मिलिवे के हेत १०
कुच उतंग सित कंचुकी कसी लसी इमिओप ॥
मनो मदन महिपाल के तम्बू तने सचोप ११
श्वेत कंचुकी अतिलसी कसी कुचनपर आनि ॥
भरे धरे घट कनक के मनमथ तम्बू तानि १२
दुरत न कुच बिच कंचुकी चुपरी सारी सेत ॥
कवि अंकन के अरथ लों प्रगट देखाईदेत १३

क०॥ कैधों शिशुताईके पयान सामियाने ताने सुंदर सुधार पट कुटिका है लाज की। कोकशाला रूप की कि कामहीकी सुख शाला बलिभद्र कोमल कुलहवाज काम-की॥मोहनीके डारीहै अँध्यारी मनमथ मानों ऐसिही बि-राजै कैधौं योवन गजराजकी। गोरेगोरे गोल कुचतेरे नील कंचुकी में पहिरे सिलह रति रणके समाजकी १॥

क० ॥ कैधों गिरि शृंगनि में तासके वितान तने जरीबान पोसमूंदि राखे खरबूजासे। कैधौं बिबिश्रीफल कनक कटोरा ढांपे कंचन मठनके करत शम्भु पूजासे॥ पदुमके पात कैधौं पीरेभे परागलगि ताके तर दबिरहे चक्रवाक चूजाके। कुचन पै कंचुकी करेरीकरि कसी

कैधौं कनक के कागद न काम कंद कूजा से २ ॥

क० ॥ कोऊकहै लाजन ते कंचुकीमें कुचमूंदे कोऊ कहै बांधिराखे बटाद्वै मलयके। कोऊकहै कुंभिनकेकुंभ पै अँध्यारी डारी शम्भुराज भारीजे अवधिहै बलयके॥ कंचनके सम्पुटन मूंदेहरकहैं कोऊ पहिरे सिलाहके ये भट ह्वै दलयके। जैसे शिवतीजोभाल नैनमूंदि राख्यो मेरे जान काममूंदे बिबिलोचन प्रलय के ३ ॥

क० ॥ आई जलकेलिके नवेली रतिरंग भरी अंग अंग भूषण अनंग रंग रसतें। कहत किशोर मुखधोय पोंछि आंचर सों ठाढ़ीभई तीरपै छबीली उरजलतें ॥ भुज उलटाय कै कँधापर कै आंगीबन्द गहि रहिगई देखि लाल लाजबसतें। सनमुख सबलबिलोकि रणधीर मानों खैंचत सुभट बीर तीर तरकसतें ४॥

स० ॥ असराफ असीलखुमानीखरे जिनको परदेकी सदा सरसें। उबटे चुवरे रँग केसरिके जिनकीसमता न चमी करमें ॥ उरपै अति खासी खुली अँगिया कवि साहब रामलगे भरमें । मिरजादे मनो खूब सूरत से शिर टोपी दै बैठिरहे घरमें ५ ॥

क० ॥ घनकी घटासी पट बिज्जुल लतासी आब छबिके छटासी उचटत अँग अंगतें। अमीकीसी भीन तमीपतिके बरणबेल बिबरणहोत सुबरणतन अंगतें ॥ प्रातके पहर अलसानी ठाढ़ी मंजनको जागी सब रैनि सुखपागी पिय संगतें। कंचुकी के बन्द त्रिय खोलतिहै आपकर मानों पंचशर शर खैंचत निषंगतें ६ ॥

स० ॥ लोचन नीरज देखि नये छबि दन्तन दामिनि

को दफनी। वेणीवनीसो मनोमाणिकाज पखोशशिपै फण फाट फनी॥ पीनपयोधर ऊपरकै दरकी अँगिया उपमा उफनी। राजसो लूटिकै मैन नरेश महेशको मानो दई कपनी ७॥

स०॥ रजनीमधि प्यारीने गौनकियो निरखी अँखियां पिय रंगभरी। कवि आलम रंभनको ललक्यो रति लालचकै हियलायहरी॥ खरी खीन हरेरँगकी अँगिया दरकी प्रगटी कुच कोर सिरी। अरुझे युगजार सिवारन में चकवान की चोंचें मनो निकरी ८॥

स०॥ सजनी मिलि द्वै अवलोकिकहैं अतिही हरि राधिकाके बसरी। कहिकैसे धौं कुंज विराजत हैं कवि आलम औरकहा रसरी॥ उरझीनी सी आंगी फुलेलभरी कसकी सब ठौर कसे कसरी। छवि प्रात सुमेरके देश मनो जितही तित ओस पखो पसरी ६॥

स०॥ जीतिबे को रतिकेलि हरौलसे आये मनोज महीपतिके ह्वै। देखत बाढ़ कठोर महा जिन्हैं कातरताई कहूं न गई छ्वै॥ बीचहरीमाणिकी किरणं न हथ्यारन की सनि ज्योति रही च्वै। जाली कि आंगी कसी यों उरोजनि मानों सिपाही सिलाह किये द्वै १०॥

स०॥ मधुराका कि राति सखी जुरि राधिके उज्जल भूषित नूपुर लौं। अवली सवरी चकफेरी फिरै न फरै डिग पाइत सूपुरलौं॥ अँगिया झुनकारी खरी सितजारीकी सेद कनी कुच दूपरलौं। मनों सिन्धु मथे सुध फेन बढ्यो सो चढ्यो गिरि शृंगानि ऊपरलौं ११॥

क०॥ मानो काम लतासी सवाँरी कामिनीहै नूरनू-

तन अनूप ताके पात सरसतहै। कैधौं शिव शीशपर अंकुर सरोरुहके सदा दिन रैन चैन काम बरसत है॥ निपट कठोर मानगढ़के समान कुच तिनके कँगूरनकी छवि परसत है। कंचुकी के ऊपर बिराजत है बंदकीधौं मदन महीपके निशान दरसत है १२॥

क०॥ प्यारी सुकुमारी ताके उरज बढ़त आवैं सुख सरसावैं सुकुमार जल जत्ताके। कंचुकी कसत तैसी सुखमा लसत ताते कहै कवि तोष घनश्याम मनरत्ता के॥ नीके हैं बरोरू बड़े वाह कस जोरू तन अतिही कठोरहैं बधैया काम कत्ताके। शिशुतागनीमके निकासि वेकेकाजआये टोपीदार एलची सु योबन चकत्ताके१३॥

क०॥ पियमन कामना को शंकर बिराजमान देखिये कठोर ताके श्री फल सिवारे हैं। चित हित खेलिबे को गोला चौगानकेहैं चंचरीक चोपिबेको पंकज बिचारे हैं॥ कहै शिवदीन मोहिबेको मन बचक्रम कंचुकी के संपुट रतन उरधारे हैं। धारे हैं सु व्रत गर्व सौतिन बिदार रहैं ऐसे छबि धाम बाम उरज तिहारे हैं १४॥

स०॥ प्रात समय वृषभान सुता चलि आवतही यमुना जल न्हायें। नीरसों चीर लग्यो सबदेह में दूनी दिपै छबि ओप बढ़ायें। दरियाइ कि कंचुकी में कुचकी छबियों छलकै कवि देत बतायें। बाजके त्रास मनो चकवा जल जात के पात में गात छिपायें १५॥ इति कुकंचुकी सहित वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ हार बर्णन ॥

स० ॥ आज गुपाल लखी वह बाल प्रभाकी मसाल सी काम गढ़ी है। अञ्चल खोलै न कञ्चुकी अंग सों शम्भु कहै द्युतिदूनी चढ़ीहै ॥ मोतीके हार लसैं कुच बीच रोमावलीतें मिलि ज्योति बढ़ी है। मानो सुमेरुहि भंगकै गंगलै भानुतनूजा को संग कढ़ी है १ ॥

स० ॥ दाने मनोहर सान धरे बहु दीपति ताकी कहा कहै वारिकी। शम्भु जू मञ्जु गुहे गुणसों उर डारत औरै बढ़ी द्युति नारिकी ॥ लालके हार लसैं उर यों कै रोमावली बेलि लखीहै उजारि की। मानो सुमेरुके शृंगन तें उतरी दरी आवति पांति दवारि की २ ॥

क० ॥ झूमि झूमि आये घूमि घने घनश्याम आली कूकै काक पाली काम पाली बरसातके। मन स्फटिक चन्द्रकांत सुच हीरा हेर मोती मनि वंसज बराइ बड़ दामा के ॥ भनै रघुनाथ वही साजत रसीली ग्रीव कैधौं यह शोभा सिंधु सीव तन कामा के। कैधों गंगधार गरे हेम गिरि आई यह राजत है कैधौं चन्द्र हार उर श्यामाके ३ ॥ इति हार वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ भुज बर्णन ॥

दोहा ॥

चलत हलत तुव बांह नित देत रसिक जियदान ।।

यातें सब जग कहत है सुधा लहरि परमान १
सुधा लहरि तुव बाँह के कैसे होति समान॥
वा चखि पैयत प्राण को या लखि पैयत प्रान २
कित दिखाय कामिनि दई तैं दामिनि को बाँह॥
तरफराति सी तन फिरति फर फराति घन माँह ३
सुबरण बाजूबन्द युत बाहुँ लसत इहिं भाय॥
मनु दामिनि पै चाय कै नखत बसे हैं आय ४

क०॥ कञ्चन लता सी चपला सी नाह नेह फांसी मदन विलासी काम केलि बेलि बाढ़ी है। परसत कोमल अमल मखमल हू ते दरशत लागत दिनेश द्युति गाढ़ी है॥ हीरा मणि लाल की अँगूठी अंगुरिन राजै मोहन के साथ महा मोहनी सी ठाढ़ी है। भुजन निहारि अनुमान लै मृड़ालन की सुभग सवाँरि कै मनोज जनु काढ़ी है १॥

क०॥ कैधौं हैं ये कमल की ललित मृड़ाल नाल पिय मन फांसिबे को कीधौं यह पास है। सौतिन सौं सुहाग दण्ड लीबे काज मेरे जान ताकी बाहु दए विधि कीन्हीं शोभा रास है॥ कैधौं रूप लता भार रस के लरकि आई नूरजामें खञ्जन नयन को सुपास है नागर नवल लाल जब तें निहारी नेक तब तेन प्रा की परति कछू आस है २॥

स०॥ कैधौं सुधा के सरोवर के ढिग सोहैं मृड़ा उभय अति भाये। कैधौं मयंक पियूष के पानको पन्न पति द्वै ऊरध धाये॥ भाषै मुनी रघुराज किधौं युग हे

के दण्ड अखण्ड सोहाये। कैधौं लसै सुखमाकी लता किधौं रुक्मिणी के भुज द्वै छवि छाये ३ ॥

क० ॥ तन तरुवर की उभय शाखा बलिभद्र सुंदर सुडौल अति गोल समतूल हैं। सांचे भरि ढारे विधि दामिनी के दोऊ टूक दमकति द्युति नाहीं दुरत दुकूल हैं॥ सुखके सरोवरके पोषे हैं मृणाल मानों फूलेकर अग्र कोकनद कैसे फूलहैं। काम कुंदहेरे भाय कुंदन कनक दण्ड कैधौं भोरी भामिनीके गोरे भुज मूल हैं ४ ॥

क० ॥ प्रीतमको मन तेरेहाथन लग्योई रहै अंक उरभौनी रसबेलि सरसत है। कोकनद नाल दोऊ रूप के सरोवरमें देखि २ सौतिनके मनतरसत है॥ भरमी सुकवि जांचि विधिने बनाईतोकों व्याकुलसचेत होत नेक परसतहै। बाहँकी झुलानिमांझ डोलैमन मुनिनके जग बशकर तेरेभुज दरसत है ५ ॥

स० ॥ भोरहि भोरहि श्रीवृषभानके आय अकेलहि केलि भुलानो। देव जू सोवतही उत भावती झीनो महा झलिकै पट तानो॥ आरसलै उघरी इकबांह सो वा छबि देखि हरी अकुलानो। मींड़तहाथ फिरैउमह्यो सो मह्यो उहि बीच फिरै मड़रानो ६ ॥

क० ॥ भूप मुखचन्द ताके सोहैं गल तकि यामें उदर अमल द्वार उलटे कलसहैं। कैधौं रूपमणिरासि राखी करि दोऊओर योवन सरितके करारेकै सरसहैं॥ कैधौं पिय मनके मनोरथ की बैठकहै ऊंचे २ आसन बनाये करि यशहैं। तेरेभुज मूल तूल तरुणी न कोऊ भूल तातें लाल लालची रहत प्यारी बशहैं ७ ॥

क० ॥ हरनैन आगि जरे मैनको जिआवैं येतो वेतो
विरहीको देखे मरनके दानीहैं । अतिही अमल अंश
सूल इनकोहै वेतो पंकमें भयेहैं यह सबजग जानी हैं ॥
बाम बाहु बदन सुधाधर मरीची सींची कनक सरूप
कामलता मैन मानीहैं । कैसे करि सरिपावै उनकी मृ-
णालवेलि बिषजल पोखी बिषलता जो बखानीहैं ८ ॥

क० ॥ हलत चलत कैधौं छीरनिधि की लहरि भाई
सो भुज नन्दलालन लोभायगो। गोरेसे अमल ये कमल
कीसी कोमलाई हेरिहेरि सौतिनको मुख कुम्हिलायगो॥
ऐरापति करकीसी तरासरी शोभियत चोभियत चित्त
माहँ ऐसी छबि छायगो । कण्ठके बसैया कैधौं आनँद
दिवैया शिवनाथ बरसैया रस लोचन अघायगो ९ ॥

क० ॥ गोरी २ गोल २ भामिनी की बाहुनेही रूप
रस सानी दोऊ विधिना बनाई है । चलत हलत कोटि
कोटि प्राणदान देत सुधाकी लहरि पटतर ताते पाई है ॥
कान्ह काम मूरतिके कंधे परहोत जब तब कहै पुहुप क
मान सी चढ़ाई है । ताकी उपमाहै कीन्हीं कविन जो
मेरेजान याहीते मृणाल नाल लाजन नवाई है १० ॥

स० ॥ गिरिराज उरोजन की सरहद्द बिराजत कंच-
नकी भुवभासी । हार हमेल तरंगन संग सुमेल सुधा
रसकी सरितासी ॥ गोरी सुभायही भाय उतारी स्वरूप
महा ठगकी जुगफासी । काम महीप धुजाकी भुजा तुव
कोम्मल बाल मृणाल लतासी ११ ॥

स० ॥ दूरिते दीपति देखतही प्रतिपच्छ बधून के
होत रुजा हैं । वार पयोधि घटानके बीचजुरी बिजुरी

कीमनो तनूजा हैं ॥ याछबि सों सरसात मनोहर राधि काकी अँगिरात भुजा हैं। कान्हके कन्ध अलंकित अंकित मैनकी मानों विजैकी धुजा हैं १२ ॥

स० ॥ जोशन बाजू बिजायठ भूषित दामिनिसी दस कैअति गोरे। भट्ट दिवाकर बांह डुलाय दिखाय के लाल लियोचित चोरे ॥ अमृतकी लड़रीसी लगे जब लेत छिपाय करेजन तोरे। नांकमें पेखनये सीसुरी रति रम्भा परी को दिमाक बिलोरे १३ ॥

क० ॥ राधिकाके भुजनकी भूरि द्युति लखोलाल सब ते विशाल जाकीजीति यों रही है छ्वै। केसरि कनक सो न जुही चम्पा कौन काज शम्भु राज जाको रंग देखत चलत च्वै ॥ कोऊ कहै शाखा हरि चंदन की चंदनकी मंदन की मति याकी उपमा सकत छ्वै। मेरे जान रस की तरंगिनी के तरिबे कों कञ्चन की तरिनी में बांधी किलवारें द्वै १४ ॥

क० ॥ केशव दास गोरे गोरे गोल काम सूल हर भामिनी के भुज मूल भौंड़से उतारेहैं। शोभा सुख बर- सत माखन से परसत दरशत कञ्चन से कठिन सु- धारे हैं ॥ वलय बलित बाहु देखि रीझे हरि नाह मानों मन पासिबे को पासी यों बिचारे हैं। मलिन मृणाल मुख पंक में दुराये दुख देखौ जाय छातिन में छेदकारि डारे हैं १५ ॥ इति भुज वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ करतल बर्णन ॥

दोहा ॥

कर पल्लव पखुरी अरुण सुरंग हथेरी बाल ॥
रूप सरोवर में खिले भुज अम्बुज सह नाल १
पेखि पाणि पाणिप सुरंग पल्लव नीले होत ॥
फूलकञ्जकुँभिलाततलखि लजि तजिमानउदोत २
दीप हथेरिन की द्विपति यों मेहँदी के संग ॥
लाली सावन सांझ में ज्यों सूरज को रंग ३
बड़े कहावत आपु तो गरुवे गोपीनाथ ॥
तौ बदिहौं जो राखिहौ हाथन लखि मनहाथ ४

क० ॥ कमल की शोभासी समाइ रही प्यारी सुनि लाली नव दलन की आनि सरसाई है । रेखा गन गनित की गनिहाथ करी छबि अंग अंग नित्त शोभा भावती को भाई है ॥ करिकै परेखो कहा बैठति है पीठ दै दै साहिबी सोहाग की लिखाइ नूर लाई है । सौतिन के आगे यों शृँगार जनि करै प्यारी जगत की शोभा सब तेरे हाथ आई है १ ॥

क० ॥ कञ्चन के पल्लव में छोटी बड़ी लीक मानों लिख्यो है उचाट मंत्र विधि मोह सों भयो । सुधा को स्रवत मनि मानिक लसत सोहै आंगुरी किरण ज्यों प्रभाकर उदै भयो ॥ मेहँदी रचित नख कैधौं मैन पंच वान खरसान धरे सोनी पानी तिनको दयो । आँचर की ओटते अचानक ही डीठ पस्यो तेरेहाथ देखे मन मेरो हाथ ते गयो २ ॥

स० ॥ करतार करे यहि कामिनी के कर कोमलता कलता लुनिकै। लघु दीरघ पातरी थूली नहीं सु समाधि टरै सुनिकै मुनिकै ॥ तिनमें मेहँदीनके बुंद घने यह तोष कहै उपमा गुनिकै । सखि मानों सरोजके पान मनोज बिसाती बिछाई चुनी चुनि कै ३ ॥

क० ॥ कैधौं प्रीति प्रीतमकी सनद लिखी है विधि लेखनी विचित्र चित्त हरण मुनीन के। अमल सुधा सों भरे ताल युग सोहै बाल विचरन काज किधौं प्यारेमन मीनके ॥ भनै रघुनाथ किधौं सुरतरु तेरोतन शाखा भुजपत्र यहीनायक प्रवीनके। दर्पण दिव्य यों सुधानिधि सी प्रभापुंज प्रफुलित कंज कीधौं तारेकर पीनके ४ ॥

क० ॥ कैधौं अर्थ धर्म काममोक्ष फल दाता वृक्ष स्वच्छ दक्ष दान भृत्य पक्षको अथोरी के। रम्भा ते सुढार चारु उज्ज्वल मृणाल हूते पंकज गुलाब रंगराति मद मोरीके ॥ भनै रघुनाथ रिद्धसिद्धके निवास कैधौं परम प्रकाशवान पिय चित चोरीके । सुकृत जरूरेपति पदरत रूरेयह दीपति प्रपूरेकर कीरति किशोरीके ५ ॥

क० ॥ ईंगुर अगिन जरै कंज अरुणाई टरै गिरि गिरि परत बँधूक स्रमताई को। विद्रुम कटावत गहावत उपाय ओप सानहूं चढ़ेते यकरतन ललाई को ॥ देखिदेखि देखिलाली उर दाड़िम दरकिगयो तबहूं न पायो नेकरंगहू कलाई को। ऐसेतेरे करन की कौन पटतर दीजै जपाविम्ब सोहै जासु पावै मलिनाई को ६ ॥

क० ॥ पावैजो परस ताकोहोत है सरस भाग पावन

दरस जाको जानो अनुसार है। रमनीय बेषन कीली
लाधर पेखन की ललित सुरेखन की प्रगटी पसार है
वहिक्रम बूढ़ीकरि चिंताचित गूढ़ीकरि रचनाऊ ढूंढ़ि
बिधि बिबिध बिचार है। कथन कथेरी लोक चौदह
मथेरीपर तेरी या हथेरी की न पाई अनुहार है ७॥

क०॥ नूतहू के नूतन सरस सुकुमार पात जात
लजात जेवै निपट ऊपर के। कोसम की को सम कर
किसलय कहा होत न बराबरी नवीन पात बरके ॥ कौ
शम्भु राज दूजो सम कौन देख्यो और पेखि पेखिरेख
सो ललित प्यारीकरके। जावक सरस बिधिपारसी ह
फ लिखे कञ्जके दलन में प्रबंध पंच सरके ८॥

क०॥ लालकरताल करगाहिकै नवेलीके सुदेखत स
हेलीकोऊ परमसयानी है। कालिदास कौनसकै सुयस
खानिकर इन्दिरा की खानि सो तो हमपहिचानी है॥
तिको न गेह लिख्यो श्याम सों सनेह सुनि सखीकेब च
विधुमुखी मुसुकानी है। एरी ठकुराइनि सु तेरी
हथेरी बीच सौति चेरी लिखीसब रेखानिते जानीहै ९

स०॥ लाड़िलीके करकी मेहँदी छबि जातकही नां
शंभुहुजूपर। भूलिहू जाहि बिलोकतही गाड़ि गाढ़े
अतिही दृगदूपर ॥ इन्द्रबधू बटके टटके दल बै
बिछाइ ज्यों कंचन भूपर। बांधी मनो रंगरेज मनो
सुचूनरी नीरज पातके ऊपर १०॥

स०॥ राधिका रूपनिधानके पानिनि आनि म
छिनिकी छबि छाई। दीह अदीहनि सूक्षम थूलनहै
गोरीके दौरि गोराई ॥ मेहँदीबुंद घनीतिनमें मनमोह

के मन मोहनी लाई। इंद्रबधू अरबिंदके मंदिर इंद्रिरा कोमनो देखन आई ११॥

स०॥ बैठी मथै दधि राधा उतै कहुँ डोलत नन्द-लला चितचायकै। बंक बिलोकति झांकति त्यों कोउ जानत नाउँ धरैना बनायकै॥ काढ़त माखन ताखन में मेहँदी करबुंद रही छबि छायकै। क्षीर समुद्रमें डोलै मुमारख इन्द्रबधू ज्यों सुधासों अन्हायकै १२॥

क०॥ सुंदरि छबीली प्यारी तेरेकरतल येतो लिखे हैं बिचित्र बिधि लेखनी सुरेखसों। कंचनसे दरशत माखनसे परसत भरेहैं सोहाग सब भागहीकी रेखसों॥ कमल कलीसे प्रेम नेम नीके बंधपाय रूपके अभासित मिलेहैं मानों बेषसों। बांचत रहत नित नाहके नयन बुध बलिभद्र लगत न नयन निमेष सों १३॥

स०॥ देनलगी मिहँदी दूलही कर बैठि तिया इक नागरी नेरी। होय लटू गई बाल बिलोकि ललाई अ-लौकिकै वाकरकेरी॥ देइ न दूरिकरै नधरै न टरै टकते न हलै चितचेरी। योंचुभि डीठिचलै न उतै इतैचाहि रही लिये हाथ हथेरी १४॥

क०॥ हाथ हँसिदीन्हों भीति अंतर परसि प्यारी हाथ साथ छकी मतिनायक प्रबीन की। निकस्यो झ-रोखा ह्वैकै बिकस्यो कमल जैसे ललित अँगूठी तामें चमक चुनीन की॥ कालिदास तैसी लाली मेहँदी के बुंदन की चारु नख चंदन की लाल अँगुरीनकी। तैसी छबि छलकत छापकी छलानहूकी कंचन चुरीन की जराऊ पहुँचीन की १५॥

क० ॥ गोरीके हथोरी शिव कवि मेहँदीको बिंदु इंदुतीको गण जाके आगे लगै फीको है । अँगुठा अनूप छाप मानो शशि आयो आप कर कंजुके मिलाप पात तजि हीको है ॥ आगे और आंगुरी अँगूठी नीलमणि युत बैठो मनो चायभरो चेटुआ अली को है । दबिकै छलासों कोमलाईसों ललाई दौरि जीतत चुनीको रँग छोर छिंगुनी को है १६ ॥ इति करतलबर्णनसम्पूर्णम् ॥

अथ कर अँगुरी वर्णन ॥

दोहा ॥

अँगुरी दिपति मरीचिका चंद्र हथेरिन साथ ॥
तुमसवतिनजनठेलिपियजियचकोरकियहाथ १
योंअँगुरी त्रियकरनकी लागति नखन समेत ॥
औषधीस गुण अमिय जनु जीवन मूरिन देत २
मोहन सोखन बासिकरन उन मादन उचटाय ॥
मदन सरन गुण तरुणिके अँगुरिन लये छिनाय ३
चंपकली करगहि कुँवरि हुतीसखी कों देति ॥
वह बौरीधोखे परी अँगुरी गहि गहि लेति ४
चंपकली समकरअली अँगुरी किमि कहि जाय॥
रसिक श्याममन मधुप बसिलेत सुरसनअघाय५
करअँगुरिन हेरत हरिहि भूख प्यास कछु हैन ॥
मनमोहन गुणकन भरी छबि छीमी छीजैन ६
तियप्राति अँगुरिन कलिनपै त्रयत्रय पोर सुहाय ॥

तीनलोक वशकरन को बीजवये जनु आय ७
विविध कनक मणिमूँदरी वलया वलित विचित्र॥
कौतुककरभूषित कियै हरिगुण करि शशि मित्र ८
छाप छला मुँदरी लला सोहत हथ हथफूल॥
कनक लता फूली मनों भांति भांति रँगफूल ९

क० ॥ कैधों कल्पतरुवर शाखा यह सोहावनीहैमन ललचावनी सदाही निज वरकी । जगमग होतज्योति नख मखलावलकी पदिक प्रकाशके मरीची हिम करकी॥ भनैरघुनाथ किधों कुसुम कली है भलीपुरद फली है कै पतीके मनहरकी । कैधों यह अँगुली तिहारे करपंकजकी कैधों अनी कामके प्रसून पञ्चशरकी १॥

स०॥ कैकिशलयमें लगी फली मूंगकी कोमल मञ्जु महामुददानी। पञ्चदली किधों फूले सुकञ्ज सुगंध सनेह सुख मान के खानी ॥ पञ्चशरै सरपञ्च किधों जड्या कंचन पीठ पै शोभा अमानी । कै रुक्मिणि के पाणिलसै रघुराज सुकीर्त्ति कवीन वखानी २ ॥

क० ॥ फूले मधुमालती के पुहुप पुनरभव मानों वलिभद्र पञ्च शाखा देवतरकी । केसरि कली सी कलिधौत की कली सी कीधों कली भलीभांति कञ्ज लता कामशरकी ॥ कोमल अमल अग्र दश चक्र चिहन राजै जीती शोभा दिशा दशरूकी सुरनरकी। तेरे तन वसत तनक तन धरि तंत कीधों कर पल्लव किशोरी तेरे कर की ३ ॥

क० ॥ सोना की कली पै कैधों भौंरा लपटि गयो कैधों काले रंगन लाय लाय चूरी है । भनत द्विजाकर कमल

से अमल अति देखि द्युति बिधुने बिहायसमय मूरी है॥ दीपकीसी खासी चपलासी चंद्रकासी खासी युगल हथेरी रंग मेहँदीकी दूरीहै। विद्रुमकी बेलिसी नवेलीके सुअँगुरीपै नखतके पांतिसों नखनमानों पूरी है ४॥

क०॥ गोरी गोरी आंगुरीन रातेसे रुचिर नख और अति पैने पैने रचि रुचि कीनेहैं। रति जय लिखिबेकी लेखनि सुरेख किधौं मीनरथसारथीके नोदन नवीनेहैं॥ किधौं केशवदास पंचबाणजू के पंचबाण सकल भुवन जिन बश करिदीनेहैं। कंचनकलित मणि मुंदरी ललित मानो पिय परिजन मन हाथ करिलीनेहैं ५॥ इति कर अँगुरी वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ नख मेहँदी सहित बर्णन॥

दोहा॥

सोहत कर अँगुरीन पर झलक नखनकी कांति॥
बैनी विद्रुम बेलि पै जनु उड़गन की पांति १
बारह मंगल राशिगुन सो सब जनु मिलि आय॥
उभय हथेरी दश नखन मेहँदी भये बनाय २
यों मेहँदी रंग में लसत नखन झलक रसलीन॥
मानो लाल चुनीन तर दीन्हीं डाँक नवीन ३

क०॥ कोमल अमल करकमल बिलासनि के रचि कीन्हीं विधु सुंदर सुधारी है। राजत जराऊ अँगुरीनमें अँगूठी पुनि छैछै छला द्युतिराखि पोरऊ सँवारि

है ॥ मेहँदी की बुन्द यों विराजति है बीच लाल सेनापति देखिपाये उपमा विचारी है। प्रातही अनंद ते अरुण अरविंद मध्य बैठी इन्द्र गोपिन की मानो पांति वारी है १ ॥

क० ॥ कैधों पद्मरागन में मीनावर हीराजड़े कैधों कंज पातन में बुन्द ये सुधाकेहैं। कैधों अमीकुण्डनमें तारागण केलिकरैं देखे मुखचंद महामोद छविछाकेहैं॥ भनै रघुनाथ किधौं हास्य रसहीके भौन कैधौंयश विस्म किधौं महल प्रभाकेहैं। कैधौं दिव्य दीपति के धाम हैं अनूप किधौं दश नखनीके अँगुली में राधिकाकेहैं २॥

क० ॥ सुंदर सुरंग गोल शोभाकर पल्लव कि कैधौं इन्दुगोप आनि बैठी बीचबालके । कैधौं लोल कुंदन की अधिक अमोलता में स्वाती कीसी बूँदै बहरानी है रसालके ॥ कैधौं नगपांतिन की कांति द्युति सोहति की मदन की माल हुस्न दक्षिण की चालके । भरमी सुकवि छवि बरणी न जातमोपै कामिनीके नखके नगीना कामलालके ३ ॥

क०॥ मानोअधि गुंजिकासे चंचुकचकोरचख चाबुक चमक चीज विद्रुम तमालके । चेटकके चिह्न कैधौं नाटक के सुन्न कैधौं हाटक के हुन्न देश दक्षिणके चाल के ॥ जटित जराय मधिनायक अमोल मोल गोलगोल मोती मानो मणिहै वियाल के। आँगुरी अनीकी नीकी कनक कनीसी कैधौं कामिनी के नखके नगीना काम लाल के ४ ॥

क० ॥ देखे अनदेखे हरि तजत न अङ्क तेरो वि-

मल मयंकमुखी मोहे कोटि निबलों। कालिदास रीझि रीझि करत सराह प्यारो क्यों न यह छबि लागै बैरनिको त्रिषलों॥ लाल कुरबिंद अरबिन्द इन्द्रबधू वारों विद्रुम ललाई नीचे करि राखी इखुलों। तेरे करनख की बनक को बिलोकि उठै सौतिन के अनख की आगि नखशिखलों ५॥ इतिनखमेहँदी सहित बर्णन संपूर्णम्॥

अथ कलाई बर्णन॥

दोहा॥

कौन कलाई तैं करी भेवे रहित बिवेक॥
लखी कलाई जबहिं ते पुनि न कलाई नेक १
लालन के मन दृगनको रही चोप यह आनि॥
पहुँची बनि पहुँचो कबै प्यारी के पहुँचानि २
सुरँग रंग करमें लसै बलया अति रँगदार॥
नाग छौन लिपटे मनो मलयागिरिकी डार ३
गड़ि बैठी गोरे करन श्याम चुरी यहि भांति॥
सोनजुहीकी मालमें लपटति ज्यों अलिपांति ४

स०॥ चुरियानहूं में चपि चूर भयो दवि छन्द पलिन घाँई कहूं। मनु मैन कुम्हार सुकंचन की स्रुति लै सुमंत्रि बनाई कहूं॥ हरिसेवकै ज्यायो चहै तौ सुयदि सोंधी सुधा जिय ज्याई कहूं। लखि पाई कला तेरी जबते तबते उनको न कलाई कहूं १॥

स०॥ दीठिपरी नँदलालै कहूं वृषभानलली

सुएक कलाई। ताछिनते तजि खान औ पान सुहाय री हाय यहै जकिलाई॥ ऐसी दशा लखिकै उनकी समुझायो रसीले तबोना कलाई। घूमत हैं ब्रज वीथिन में रटलाय रहे हैं कलाई कलाई २॥

स०॥सुंदर सूधी सुगोल रची विधिकोमलता अतिही सरसात है। त्यों हरि औंध जराव जरे खरे कंचन कंचन के दरशात है॥ चूरी हरी विलसैं जिहि में तिहि देखि हियो सबको हुलसात है। ऐसी कलाई लखे।थकिलाई भई कलआई नहीं दिन रात है ३॥

क०॥ गजरा विराजै गजमोतिनके अति नीके जिन की अजीत ज्योति केशवदास गाई है। वलय वलित कर कंचन कलित मणि लालकी ललित पोंची पोंचिन वनाई है॥ सेत पीत हरित झलक झलकति लाल श्यामल सुमिलि मेरे श्याम मन भाई है। मानो सूर सोमकी कला सकेलि आपनी औ आपनी सखी को सुख पाइ पहिराई है ४॥ इति कलाई वर्णन संपूर्णम्॥

अथ पीठ वर्णन॥

दोहा॥

जोरिरूप सुवरण रची विधि रचि पाचि तुव पीठि॥
कीन्हीं रखवारी तहां व्याली वेनी ईठि १
इकतरु दुइ दल होत हैं यह अचरजकी बात॥
द्वै तरु कदली जंघ में पीठ एकही पात २

नहीं पनारी पीठि तुव कीन्हीं दीठि बिचार ॥
धसकि गई यह भारते बेनी के सुकुमार ३
क० ॥ आरसी बिमल परनारीसी सँवारी कैधों रूप के प्रवाह कामभूप चल्योजातहै। कैधों कलधौत कीसी भूमिसुरमारग में मान को सुभाव कैधों कदलीके पात हैं ॥ कैधों यह मोड़रके तबक तिलौछिधरे भरमी सुकवि कोऊ उपमा न आतहे। सरस सुघाट सुख आनँदकी नाट कैधों प्यारी तेरीपीठि देखि डीठि न समातहै १ ॥
क० ॥ कैधों ये त्रिगुण रूप कनककी पाटीलिख्यो कैधों काम भूप रथ सावगी सुभाई है। कैधों यह बेनीजू को वार पार देखियत कैधों केलि कामनाकी सीव सुखदाई है ॥ कैधों मैन मूरति यहकियो है बिचित्र चित्र कैधों मैनकाकीदेह थापना सुहाई है । कैधों यह गोरी की जुसेज शुभ राजति है पीठि केलिपत्र द्युति तम की दुहाई है २ ॥
क० ॥ कैधों यह केश भेश रसको नरेश वाके देश की सुदेश भूमि शोभा रसभीनीहै। कैधों यह मदन की पाटी मंत्र पढ़िबे की सूरत सुकबि बनी हाटक नवीनी है ॥ जोबन के मंदिर की भीतहै सुढार कैधों राज रतिराज रुचिसो बयान कीनी है। येरी मेरी तेरी यह पीठ नेक डीठपरी देखतही ईठ सबही को पीठ दीनी है ३॥
क० ॥ कंचनकीपाटी तामें सोहन कस्योहै कैधोंमोहनी के मोहनको मोहनको बानरी। कैधों बेनी भारते पनारी परिगई प्यारी देवन कुमारी बलिहारी छबि कानरी। कुशल सिंह हेरि हेरि हाहा करि खोलि खोलि बारि

बोलि दीन्हीं वै अदीनी भरी मानरी। नीठि नीठि पीठि प्यारी परसत परम पाणि मानि मानि नेह कीन्हीं प्रेम पहिचानरी ४॥

क० ॥ वेनी छूटि शीशते लटकि झूमि झूमिकरनागरिके धँसिके पनारी पीठ ह्वै गई। भनत दिवाकर पुरट पात रंभ कैसे ऐंचि कर आंचर चटाक चित्त लै गई॥ ताछिनतेलाल खान पान नादुकूलसुधि अंगअंगसात्विक अनंग वीज वैगई। राधिका रसीली तेरी कहांलौं बखानौं छबि गण उपमा अनूठीसों अथैगई५॥

स० ॥ मृगनैनीके पीठि पैवेनी लसैयों सुगंध सनेह समोय रही है। अति चीकनी चारु चुभी चित में सो सुकेश सुकेशन जोय रही है॥ कवि देव कहा कहिये उपमा रविकी तनया तन तोय रही है। मनोकंचन के कदली दल ऊपर साँवरी सांपिनि सोय रही है ६॥

स० ॥ मानो मनोजकी पाटी लिखी हितमंत्रन की परि पाटी बसीठिहै। जाति उनै उनै काँतिके भारनि जाति दुनै दुनै जोपरै दीठिहै॥ गोकुल बालके अंग बिलोकिहौ और न की तव प्रीति उवीठि है। कंचनके कदली दल ऊपर सोवति साँपिनी वेनीन पीठिहै ७॥

क०॥ जोवन महीपतिको सेवक मदन ताहिं तियतन वसिवे को जगह वनाई है। चिन्तामणि जानतसोनन्दके कुमार जाते भई अंग अंगमें अनंगकी दोहाई है॥ रूपकी सँवारी चारु राधिका की पीठपत्र ताते वेनीवर वरनावली दिखाई है। दुहूं ओर वाके ढिग पारस रहत ताते मेरेजान सोनेकी सोहाई दरशाईहै ८॥

स० ॥ दास प्रदीप शिखा उलटीकी पतंग भई अव-लोकति दीठि है। मंगल मूरति कंचन पत्रकी मैन रची मन आवत नीठि है॥ काटि किधौं कदलीदल गोभको दीन्हों जमाय निहारि अगीठिहै। काँधते चाकरी पात री लंकलौं शोभित मानौ सलोनी की पीठिहै ९ ॥

स० ॥ शोभा सुमेरुकी संधितटी किधौं मैन मवास गढ़ीश की घाटी। कै रसराज प्रवाह को मारग बेनी प्रवाह सी यों दग ठाटी॥ काम कला धरि ओप दई किधौं पीतम प्यारे मढ़ावन पाटी। राधिका पीठि लखैं घन आनँद आनन आन की होति उचाटी १० ॥

क० ॥ साँचे ते निकारी भरि प्यारीकी ललित पीठि नीठि बिध ईठि की सुधारि करि गढ़ीहै। कैधों तोष पुरट की पाटी है अनूप जामें परम प्रवीणताई पंच-बाण पढ़ीहै॥ तैसी छबि बरनी न जात सुख करनी के हरिनी नयनपर जेती छबि बढ़ी है। तैसी सुखदेनी बेनी भली है रली सनेह मानो नागलली कदलीके दल चढ़ी है ११ ॥

क० ॥ केशव कुंवर देखी राधिका कुंवरि आजु सोवत सुभाय सेज जननी जनक की। बेनी में बनाय गुही काहू अली भांतिभली कुंदनकी कली तन तन-क तनककी॥ पीठमें तिनकी प्रतिमूरति बिलोकियत परत नयन युग सूरति बनककी। हरिमन मथिबेको मा नो मनमथलिखे रूपके रुचिर अंकपट्टिकाकनककी १२।

क० ॥ हीराके कतार बीच नालिकाके डौलमनोता माहिं चोटी नीलमीकेसे चमाकेहैं। बेणी यमुनाके रं

पीठ गंगाके तरंग लाल धागाके सुढंग कै शारदा के हैं। कैधौं मृदुकेशके सुपत्ताके बिचोही बीच मुखचंद सुधा कैधौं मोते आहि जाकेहैं॥ कामके कलाके सीखिबे को पटाकेशरीके कैधौं दृगदीठ पीठरूप राधिकाके हैं १३॥ इति पीठ वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ ग्रीवा वर्णन॥

दोहा॥

सुरँग स्वच्छ ग्रीवा ललित मनौं रूपको कंबु॥
तलफत मन बिरहीनको जनु वहिको अवलंबु १
जब मोहे तिहुंलोक सब तिहूं ग्रामले ठीक॥
तबदीन्हीं तुयकण्ठविधि यह त्रयमोहनलीक २
कंबु कण्ठपर धरत यों कनक चौलरी ज्योति॥
चतुरमाल मनुदीपकी जगमग जगमगहोति ३
प्रथम हुती हीरानसों जटित गुलीबँद ज्योति॥
गरे परे गोरीन के चिलक चौगुनी होति ४
पहिरतकी गोरे गरे यों दौरी द्युति लाल॥
मनौं परसि पुलकित भई मौलसिरी की माल ५
खरी लसत गोरे गरे धसति पानकी पीक॥
मनौं गुलीबँद लालकी लाल लाल द्युतिलीक ६
मुकुत जटित चंपाकली तरे रहै बहु गूँद॥
सहस किरण रवितें मनौं चुवत सुधाके बूँद ७

क०॥ सप्तस्वर तीन ग्राम रागनको धाम धन्य मूर्च्छना सुतानै श्रुति ग्रहमति पैनीको। कैधौं चंद्रमण्डल

को परमअधार शुद्ध उज्ज्वल अनूप स्वच्छदच्छ पिक-वैनीको ॥ भनै रघुनाथ शील शोभाको निवास यही प्रीतम की प्रीतिकी प्रतीति करदेनीको । कंबु ते सुढार रम्भचार है कियो तहूं ते रम्भा रति कण्ठ ते सु कण्ठ मृग नैनीको १ ॥

क० ॥ सुन्दर सुडौल आछीभांति सों सुधारि करी हरि कर कंबु शोभा वारि फेरि डारिये । कोकिल पारा-वतहूकरि न सकत सरिजगमें न और उपमानसों बि-चारिये ॥ शोभाकीसी सीवनूर कहिबरणत भेवरातोदिन पीतम रहत चितधारिये । जाके कण्ठमध्य पीठद्युति ऐ-सी सोहियत जैसे शीशी माहिं रंग जावककोढारिये २ ॥

क० ॥ सुखको सदन देखि मदन मुदित होत वारिज बदन शुभ नालसी विशेखिये। चारोरीति नवोरस हाव भाव की प्रतीति छबिसों लपेटि हेम पींड़ी के उरेखिये ॥ कैधौं मणिकण्ठ तीनिलोककी तरुणि जीति द्युति तेही भांति भांति तीनों रेख लेखिये। कनकके कंबु कमनीय ताके अंबु भेंटे आनँदकी सीवके अमोलग्रीवदेखिये ३ ॥

क० ॥ सुन्दर सुवेष रुचि राजत त्रिवेष युत कूजत दिनेश कल कोकिल बखानिये। अंग अंग छबिकी तरंग नि में मेरेजान माधुरी की ललित लपट लपटानिये ॥ जोहनी लगत मनमोहनीकी अँखियन मोहत मनहिं मोहनीहै जगजानिये। कण्ठ छबिआगे शंख सण्ठलागे लघुताई कैधौं बाहँ नाहकी रहति उरभानिये ४ ॥

स० ॥ शंख जड़े मणि माणिक सों शुभ गोतकपोत त्रिलात है सीवा । भट्ट दिवाकर रेख बरेखि केमोहे सुरा-

सुर मानुष जीवा ॥ माल हुमेल जगामग ते उपमानहिं लालत लाखव दीवा। स्वच्छ मनोहर चम्पकली अव-लीनके संग में शोभित ग्रीवा ५ ॥

स० ॥ कोकिल कण्ठकी त्योंहीं कमोजकी कीरहुकी कलकांति नकासी। कारीगरी करि कामहुँ जो रचे कंबु सुधा निधि को छबिरासी ॥ भाषै मुनी रघुराज तऊ सति मानिये तीनहूंलोक बिलासी। पावै न गो समता रुक्मिणि के ग्रीवकी सो सुठि मोद प्रकासी ६ ॥

स० ॥ कंबु बिलोकतही जिहिको दुरयो जायके दूर कहूंको उतालहै। सौतें बिलोकि भईहैं बिहाल कपोतन के कोकहै जसहालहै ॥ जानि परी द्विजको उपमातिहिं भाषतही मन होत निहालहै। पानकी पीकलसे प्रिय कण्ठ मनो पोखराज सिसी रँग लालहै ७ ॥

स० ॥ किधौं रूप सरोवर में ते कढ्यो लसै कम्बु भस्यो सुरसात कोहै। किधौं सांवरे जू गुण रावरे के या कपोत फँयो घड़ी जात को है ॥ अमरेश जू कीधौं सु-कोकिला को सुर साधि धस्यो विधिहान को है। वर कंठ में गोरी के कण्ठा लसै सुकतारनतारन कांतिको है ८ ॥

क० ॥ तेरे मुख गावत गोपाल जू के गुणगणि शा-रदा जू रहति है उर में उरेखिये। जिनके वे मण्डन फटिक माल हार हाँस हिये पर तेई वे शिंगार करि ले-खिये ॥ तेरे नेक बोल सों तो सुरको सुहाग कोऊ मीठो राग सुनि रीझ रीझ करि लेखिये। तोरि डारी तीनों तांति मेरे जानि बीन की तैं प्यारी तेरे गरे में ये तीनों लोक लेखिये ९ ॥

स० ॥ लचकै जिमि चारु कबूतर कण्ठहि रेख विराजत कम्बु कलासी। देखि कपोलन फांसिदई उर जानि यहै छवि भानु मलासी ॥ हंसनके चित चोप भई विचरहिं करि आठहुँयाम तलासी। यों शिवनाथ बनी नवला कमला गृह कञ्चन की लचलासी १० ॥

स० ॥ लखिकै वहि प्राणपियारी के कण्ठ को कम्बु लई सुधि तालन की। तिहुँलोक की सुन्दरता लै त्रिरेख दई विधि ज्योति के जालन की ॥ कमलापति कौन बखानि सकै छवि छीनत माणिक मालन की। इमि गोरे गरेलसै पीक मनों द्युति लाल गुलूबंद लालनकी ११ ॥

क० ॥ सुरनर प्राकृत कवित्त रीत आरभटी सात्विकी सुभारती की भारती यों भोरी की। किधौं केशवदास कलगानता सुजानता निशंकता सों वचन विचित्रता किशोरी की ॥ बीणा बेणु पिक सुर शोभाकी त्रिरेखरुचि मन वच क्रमन कि पिय मन चोरीकी। अम्बुसाई कीसों मोहैं अम्बिकाऊ देखि देखि अंबुज नयन कंबु ग्रीव गोल गोरीकी १२ ॥

क० ॥ लेति मोल लालको अमोल चित्त गोल ग्रीव लोल नैन देखि देखि जात गर्व भागिकै। श्यामश्वेत पीत लाल कंबु कण्ठ कण्ठ माल जाति नाहिं नेकही रही जु ज्योति जागिकै ॥ केशवदास आस पास बासकै रहे मनो समेत रागिनीनि रागराज रंग रागि कै। सूर के निवासते प्रकाश सोमजू कस्यो अनेक भांति की किधौं रही मयूष लागि कै १३ ॥

क० ॥ गुण जो कपोत ताके उपमाके पोत गये सुरा-

ही सुराही भरी ताके दोष ताकेहैं। पिक भौके भाठे भुठे भूमि घूमि ओट आम किल शिशु कोकिल के किलके चुपाकेहैं॥ बांसुरी सुरीन याके एकहू कला के आगे किये हीनताके बीनताके गुणजाकेहैं। नाथपुरी अखिलाके रंग अनमिलाके से कैधौं उतकण्ठताके कण्ठ राधिका के हैं १४॥ इतिश्रीग्रीवावर्णनसम्पूर्णम्॥

अथ मुख वर्णन॥

दोहा॥

लजित चंद आनननिरखिखि झत सदा अरविंद॥
मुख सुखमा केहिविधिकहौंहियजानत गोविंद १
सूर उदितहू मुदित मन मुख सुखमाकी ओर॥
चितै रहत चहुंओरते निहिचल चखन चकोर २
नवल नारि तुव बदनकी समता करै सु कौन॥
तैं जीत्यो मृदु हांसहीं इन्दु इन्दिरा भौन ३
पत्राही तिथि पाइयत वा घरके चहुं पास॥
नित प्रति पून्यूही रहै आनन ओप उजास ४
कनक ज्योति नयनन लगे वा सुंदर मुख तूल॥
जा दीपति ते होत है चंद चांदनी फूल ५
नहिं मयंक भू अंक यह नहिं कलंक रजनीश॥
तुवमुखलखि कारोकियो घसिघसि कारोशीश६
कहा ज्योति महतावमें कितीव आव गुलाव॥
प्यारी मुखसम कैसकै कहा चन्दकी ताव ७
चन्द नहीं यह बालमुख शोभा देखन काज॥

वारी कारी रयन में महताबी द्विजराज ८
प्रगटतपेखि मयंक महँ सखि कलंकदिखरात॥
तेरेमुख ते हारिकै मनो हलाहल खात ६
कीने पट घूंघट लखै तियमुख सुखमा कन्द॥
राजतहै घन बीच जनु पूरण शारद चन्द १०
छप्यो छबीलो मुहँ लसै नीले आंचर चीर॥
मनोकलानिधि झुलमुलै कालिन्दीके नीर ११
लसतश्वेत सारी छप्यो त्रियमुख इमिउपमेश॥
मानो सुरसरिता सलिल जगमगातराकेश १२
रँगेलहरिया चीर में गोरे मुख को देख॥
मानो कला अशेष शशि बैठ्यो है परिवेख १३
इहि बिधि गोरे बदनपर लसत डोरिया श्वेत॥
मनोलहरिलौं शरदघन शशिपर शोभादेत १४

क० ॥ आनन अनूपछबि छलकी छटासी होत ज्योति जोन्हनि दै निशिकर चंदनीको है। देखत चकोर से न मुरत सुनेश मन ममता मदादि तम करै खण्ड नीको है॥ ब्यास सनकादि वेद बिदित बिरंचि हरि शम्भु से बिवेकी जासु करै बन्दनी को है। कामता प्रसाद कला सोरहो अखण्ड मुख चन्दहू ते नीको वृषभान नन्दनी को है १॥

क० ॥ आनँद को कन्द वृषभानु जाको मुख चन्द लीलाही ते मोहन के मानस को चोरै है। दूजो तैसो रचिबे को चाहत बिरंचि नित शशिको बनावै अजौं मन को न मोरै है॥ फेरै है सान आसमान पै चढ़ाय फेरि पानी पै चढ़ायबे को वारिधि में बोरै है। राधिक

के आनन के सम ना बिलोके याते टूक टूक तोरै पुनि टूक टूक जोरे है २ ॥

स० ॥ कै सुखमा के सरोवर को बिकसो अरविन्द अनूपम भावै। रावरे आनन देखिबे को कीधों आरसी आनँद की छबि छावै। केशव की तुव नयन चकोरको रूप सुधानिधि इन्दु सोहावै। भाषे मुनी रघुराज किधौं मुख रुक्मिणी को सुखसिन्धु बढ़ावै ३ ॥

क० ॥ कोऊ कहै है कलंक कोऊ कहै सिन्धु पंक कोऊ कहै छाया है तमोगुन के भासकी। कोऊ कहै राहु रद कोऊ कहै मृगमद कोऊ कहै नीलगिरि आभा आस पास की ॥ भञ्जन जू मेरे जान चंद्रमाको छीलि बिधि राधे को बनायो मुख शोभा के बिलासकी। तादिन ते छाती छेद भयो है छपाकर के वारपार दीखत है नीलमा अकास की ४ ॥

क० ॥ कहां मृदुहास कहां सुखद सुबास कहां नित को उजास कहां सबहीको मोहनो। कहांमृदुबैन पुनिकहां ये लजीले नैन कहां नेह भरी सैन कहां मुरि जोहनो ॥ छबि की निकाई और जोबन जुन्हाई कहां उपमालजाई जैसे मणि कौड़ी पोहनो। आनँद को कंद जिन मोहे नँद नन्दनको कहां चंद मंद कहां तेरो मुख सोहनो ५ ॥

क० ॥ कोमलता कंजते गुलाबते सुगंध लैके चंदते प्रकाश लैके उदित उजेरो है ॥ रूप रति आनन सों चातुरी सुजाननसों नीरलै निवाजनसों कौतुक निबेरो है ॥ ठाकुर बिचारकै बनायो बिधि कारीगर रचना निहारि को न होत चितचेरोहै। सोनेसों सुरंगलै सवादलै

सुधाको बसुधाको सुख लूटिकै बनायो मुख तेरोहै ६ ॥
क० ॥ कैधौं अरबिंद प्रात वापी में प्रकाश भयो कैधौं सोनजुहीपै गुलाब फूल फूलोहै। भनत दिवाकर न ताब महताब आब देखत सिताब आफताब ओप भूलोहै ॥ सारीश्वेत घूंघुटते मुखमा दिखात कैसे मानो जल जाह्नवीमें कंज झूल झूलोहै। शरद मयंक राधे ताराकेससूह साथ तापै तेरी मुखके न जोट सम तूलो है ७ ॥
क० ॥ कैधौं सप्त ऋषिन के मखन की सिद्धि पुंज कै सहस चखन के मणिन की ज्योति है। चपल चमक की चहूंधा चकचौंधे कौंधे नेक हँसे दाड़िम दशन द्युति होत है ॥ जगर मगर जागे सगर बगर चारु चाहि चाहि चकित चकोरनको गोलहै। द्विगुणो दिनेशतेचतुर गुणो चन्दहूंते हनूमान प्यारी तेरोआनन उदोतहै ८ ॥
क० ॥ कैधौं शिवनाथ उदयाचल उदितभयो सोरहो कलाते परिपूरण मयंकरी। लोचन चकोर ये चलन लागे चारोंदिशि भरिभरि पियूष रसपीवत सशंकरी ॥ सोतेरे ये कमलनयनी सकुचि नमितमुख गई मुरझाय फीकीपरी छबि पंकरी। राधेको बदन येरी सदन सुधाहू को तिल औ डिठौना सोई कठिन कलंकरी ९ ॥
क० ॥ पानिप पहुमकी बदन झलकत द्युति रूपकी तरंग तामें प्राण तानियतुहैं। यौवनकी ज्योति जगमगत प्रभासी मानो अजिर उदोत ताको उर आनियतु हैं ॥ मुकुरते अमल बनाये हैं बिधाता बिधु बलिभद्र यहैं उपमा मानियतु हैं। मेरेजानि झाईं झलकत तेरे

आननकी ताहीको उजेरो जग ज्योति जानियतुहै १०॥

क०॥ पायजेब जेहर जराऊ जरी जोरी हठी माणि मुक्तान हीराहार उरधारे हैं। सल्लान समुद्र कढ़ी रमा रमणीय ऐसी अंगन सुगंध पाय भूमै भौंर भारे हैं॥ बैठीहै तखत खोल बखत पियारे जूको मानो कामबामपै सुहाग चमर ढारेहैं। देकैमृगु बिन्द कीन्हीं जोन्ह ज्योति मंद राधे तेरे मुखचंद पै अनेक चन्द वारेहैं ११॥

क०॥ परम प्रकाश रतिराज को निवास कलासोरह प्रकाश प्रतिभास भास भीनोहै। हिय को हुलास कुव-लयको बिकास अंधकारनको नाश नैनप्यास हरिलीनो है॥ तेरे मुखसुखमाकी उपमाकोहै न तऊ यातेछपिजात छिनछिन छबिछीनो है। वेगही गगन गहि भाजिगयो चाहे चित याही ते मयंक नेह रंग रथ कीनो है १२॥

स०॥ दृग भौंरसे ह्वैकै चकोरभये जेहिठौरपै पायो बड़ो सुखहै। लहरैं उठैं सौरभकी सुखदा मन्यो पून्यो प्रकाश चहूं रुखहै॥ ठगिसेरहे सेवक श्यामलखे सपनो है किधौं यह सौतुखहै। बन अंबरमें अरविंद किधौं शुचिइंदु कै राधिकाको मुखहै १३॥

स०॥ दिन रैनिमें भावनके रचे गोत उदोत मयी नित जान्यो परै। हरिके ढिग अंग अनंगमदै सुखसंग पै कोकमैं सान्योपरै॥ हरिसेवक भावतीको मुखयै श्रुति-वन्तह्वै चोर पिछान्यो परै। भोसुधा छबिसिंधुतें अर-बिंदु सो इंदु सो कैसे बखान्यो परै १४॥

क०॥ भृकुटी तनी को लट नागिनि फनीको देख प्यारे लखि नीको लगै फैल्यो कंज फीकोहै। मैन कम-

नी को नैन बाणकी अनीको चोखे चैन रजनीको है
हुलसनि नीकोहै ॥ रूप रस नीको कहां रमा रम
को गज गति गमनीको सीव जीव मुरनीकोहै। वे
वन्दनीको रुख हांस मंद नीको मुख चंदहू ते नी
वृषभान नंदनी को है १५ ॥
क० ॥ खरी खगड तीसरे रँगीली रंग रावटी में त
ताकी ओर छकि रह्यो नँदनंद है। कालिदास बी
दरीचन कै झलकत छबिकी मरीचनकी झलक अ
है ॥ लोक देखि भरमैं कहा धौं यह घरमें सुरंग म
जगमग्यो ज्योतिन को कंद है। लाल की माल है
ज्वालनकी जाल है कि चामीकर चपला कि रवि
कि चंद है १६ ॥
स० ॥ फूलेइ फूलनको तुमसोहिं पठावती फूलेि
सतपात हैं। फूलसी जातिह्वै होंहू तितै करतोरत
ल न मेरे अघातहैं ॥ राधेजू ताको कहा होंकरौं
शोचन मेरो तो कांपत गातहैं। फूलेइ फूलहौ ल
तीहौ मुख रावरो देखि कली भयेजातहैं १७ ॥
क० ॥ छहरै छबीली छटाछूटि क्षितिमगडलपै उ
गि उजेरी महाओजके उबकसी। कवि पजनेश क
मंजुलमुखीके गात उपमाधिकात कल कुंदन तबकस
फैली दीप दीप दीप दीपति दिपति ताकी दीपमालि
की रही दीपक दबकसी। परत न ताब लखि मुख म
ताब आब निकसी सिताब आफताबके भभकसी १
स० ॥ सूरसों मांगि प्रभाप्रति पून्यो कि क्षीरस
में जाइ अन्हातहै। उज्ज्वलकै करनी अपनी रघुन

किये रंग लाल बिभात है ॥ रोज की हारि चितै शशि प्यारी सों जीतिबे को कितनो ललचात है। कौन कथा कहिये मुखदेखत न्यायसों चंद सुफेद ह्वै जातहै १६ ॥

क० ॥ सुधा के पयोधि करि मज्जन अरुण अंग केसर के रंगकी बनक जब गहैगो। सुकवि धुरंधरसकल रूप सागरकी शोभाको सकेलि कामकेलि पुनिलहैगो ॥ सोरहो कलानि पूरि पूरण कलंकबिन निशि दिन सदा एकरूप जब रहैगो। येरे चंद शरद के राधेके वदन सम तब तोसों कोऊ कबि कहैगो तो कहैगो २० ॥

क० ॥ सुंदर बरण राधे शोभा को सदन तेरो बदन बनायो चार बदन बनायकै। ताकी रुचि लेनको उदित भयो रैनिपति शाख्योमति मूढ़ निजकर बगरायकै॥ कहै कवि चिंतामणि ताहि निशि चोरि जानि दियोहै सजाय पाकशासन रिसायकै। याते निशि फेर अमरावती के आसपास मुखमें कलंक मिसकारिख लगायकै २१ ॥

क० ॥ सूर मैंन हीन होत उगत नवीन ह्वैकै कुहूमैंन क्षीण होत शोभा दईदियो है। कालिमाको अंक नाहीं पूरण कलंक बिनु रहत निशंक अमी अमरन पियोहै॥ बिनुपग मृगरथ अचरजकीहै हद लग्यो नाहीं राहुरद ऐसो रमनीयो है। भंजनजू इंदु एकअचरज पेखियत कनकके लतापर उदय आनकियो है २२ ॥

क० ॥ सोरहो कलाकलित जानत जगत येतो सुख रूप इनमें बतीस कलाछाई है। पुनि हमें पूरण प्रकाश को निवास होत येतो सदा पूरण प्रकाश अधिकाईहै॥ सुधाको श्रवण कनसूक्षम उहांते इहां वचन सुधाको

धार अति सुखदाई है। आनंदको कंद सुनि हेरी नंद-नंद प्यारी चंदते अधिक मुखचन्द छबि पाईहै २३॥

क०॥ सुखमाके सिंधुको शिंगार मनमंदिरते मथिकै सरूप सुधा सुखसों निकारेहैं। करिउपचारताकी स्वच्छता उतार तामें सौरभ सुहागयुत हासरसडारेहैं॥ कवि रसरंग ताको सार जोनिथाख्यो तासों राधिका बदनवेश विधिने सँवारेहैं। सुघर सँवारिकै जो हाथधोइडारे सोई यमभयो चन्द हाथ झारे भये तारेहैं २४॥

क०॥ घूंघट खुलतअबै उलटकैजैहै देव उद्धत मनोज जगयुद्ध जूटिपरैगो। ऐसीनसरोक सियाको कहै अलोक बात लोकातिहूंलोककी लुनाई लूटिपरैगो॥ दैयन दुराय मुखनतरु तरैयनको मण्डलते मटकि चटा छूटिपरैगो। तो चितै सकोचि शोचि मोचि मृदुमूरि ह्वै छारते छपाकर छतासो टूटिपरैगो २५॥

क०॥ गोरोमुख गोलहरे हँसत कपोल बड़े लोच विलोल लोल लोनीलिये लाजपर। लोभालगे लाल लखिशोभाकहै देवकवि गोभासे उठत रूप शोभा समाजपर॥ बादलाकीसारी दरदावन किनारी जगमग जरतारी झीनी झालरिके साजपर। मोतीलगे कोरन चमक चहुँओरन त्यों तोरन तरैयनकी तानी द्विजराज पर २६॥

क०॥ जाकोलय सारदेश करतहै गधबध ऐसो वा सहजही गंधहै चमेली को। अंगमानो नारंगीके लनकी रास अंग अंगनि में विमल विलास अलबेली को॥ चिन्तामणि पंकज कुसुम दाम अभिराम दि

रूप कामकला आनँद की केली को। जाके अवलोके सब दूरिहोत दुखसी है नैनन को सुख मुख कमल नवेली को २७॥

क० ॥ राजत रँगीली रंगभौन रस भाती तहां झाँकत झरोखन ते जोतन को वृंद है। ज्वालामुखी मंदिर प्रसिद्ध सो दिखात वहां कैधौं स्वर्ण शैलकी गुहा में प्रभा कंदहै॥ भनै रघुनाथ लोग लखत बिचारे मनो तारागण चंद है कि भान है कि छंद है। चंद्र ते हैदूनो दीप्ति कन्द सदापूनों सम होत है न ऊनो मुखवाला बाल चंद है २८॥

क० ॥ मुख रुख सुखही के सुखमा सरोवरसों आनन दिनेश चाहि चित ते न टारिये। हास को प्रकाश और बिबिध बिलास आगे मैलो लागे मुकुर निकर वारि डारिये॥ भख्यो करतार सुधासार पानी पानिपमें मनसे तरत युग नैनन निहारिये। चंद्रमा न सर और सकै कौन करि प्यारी तेरे मुख ऊपर कमल कोटि वारिये २९॥

क० ॥ मोतिन की बेंदी वर कनक जराव जरी पाटी बिच मांग मेरे मनको गोह्यो करै। भारे कजरारे अनियारे वे तिहारे नैन रैनिदिन मेरे हियेरेई को गह्योकरै॥ मीठे वे सुअधर कपोल मुसक्यानि लीन्हें मंद मंद मोहिं कछु बातसी कह्योकरै। जितै जितै लखौं तितै तितै सुनु चंदमुखी आनन तिहारो आंख आगेई रह्यो करै ३०॥

क० ॥ वेनीनैन रोमावली यह रंग कालिमाहै कहत कलंक मृग जेतो भौरे वारेहैं। तरवा अधर नख अरुण

वरण एतो सांझसमय प्यारेलालदेखियेउघारेहैं॥ चाहि कहा रहेहो अकाशमें प्रकाश हरि चाहो किन जाहि जाते जग उजियारेहैं। प्यारी को बनाय बिधि हाथ धोये ताको रंग जसि भयो चंद हाथ झारे भयेतारेहैं ३१॥

क०॥ वहजो प्रकाशमान लागत बिभासरीमें येतो आठोयामहू बिमल ज्योति धारिये। वाके अंकराजत कलंक रंक रावसदा याके हृदयामेंबसे मोहन मुरारिये॥ वाको वपु क्षीण दिनप्रति अवलोकियत याकेअंग पूरण प्रभासो प्रेमप्यारिये। कहैकविराम छबिधाम प्राणप्यारी ये जू राधे मुख चंद पै शरद चंद वारिये ३२॥

क०॥ ग्रहनि में कीनो गेह सुरनि दै देख्यो देह शिव सों कियो सनेह जाग्यो युग चास्योहै। तपन में तप्यो तप जलधि में जप्यो जप केशवदास बपु मास मास प्रति गास्योहै॥ उडुगण ईश द्विज ईश औषधीशभयो यदपि जगत ईश सुधा सों सुधास्यो है। सुनि नँद नंद प्यारी तेरे मुख चंद सम चंद पै न भयो कोटि छन्द करि हास्यो है ३३॥

क०॥ कञ्चन खचित भूमि पन्नन प्रकाश चारु राजति अनूप ओप देखिये प्रभा भरै। भानु कुल कमल दिनेश सम शेष राम निमिबंश कैरव सुसोम से सुधाझरै॥ गंगाधर युगलकिशोर वर आसन पै तेज के मरीचिनके चोयस परापरै। रूपके सड़ाका मुखचंदसे जलूसजाति छूटिके छपाकरके ऊपर छरापरै ३४॥

क०॥ केसरि को कञ्चन ने कञ्चन को चम्पक ने चम्पक को जीत्यो प्यारी रूप ने असंद है। गजगति

छीने भूप भूपगति छीने हंस हंसगति छीनिबे को तेरी गति मंद है ॥ सब हारे आनन ते वान पञ्चआनन ते कृष्णलाल तोहिं देखि रीझै नंद नंद है ॥ गजमुख मूंदै कञ्ज कञ्ज मुख मूंदै चन्द चन्द मुख मूंदिबे को तेरो मुख चंद है ३५ ॥

क० ॥ अवनि अकाश के प्रकाशित बनाये पला दिशनकी जोती कान्ह ओज अति ऊशोभो । मारुतकी दंडिका बनाई सुघराई सुघर सोनार चतुरानन सुरूरोभो ॥ तोपै सुनु राधे या अनोखी तौल तौलीगई गयो वह ऊंचे यह नीचे आनि भूरोभो । तारागण यदपि चढ़ाइ समुदाइ दीन्हे तदपि न चंद मुखचंद भरिपूरोभो ३६ ॥

क० ॥ शोभासिंधु निरखि चकोर उठे चौंक चहूं जाने कियो शर्द चन्द्रमाको मुख फीकोहै । सोहै चारु चंद्रिका समेत वर बेंदाभाल अमित प्रकाश आसपास दामिनी को है ॥ कहिरघुनाथ दामिनी को द्युति देखि दबी मान मिटो रोहिनी सुभान भामिनीको है । कौकौ कहौं टीकौ तीनलोकको त्रिलोक्यो हम जैसो मुखनीको घनश्याम कामनीको है ३७ ॥

क० ॥ विमल विलक्षण विचित्र चपलाते अति कैधों यह सिंधु सुधासिंधु जामनीको है । कैधों है शिंगार जामनीको धरनी को भाग कैधों यो सुहाग शिवाशम्भु भामिनी को है ॥ कहि रघुनाथ है रमाको अनुराग किधौं कैधौं यों विभाग आदि ब्रह्म स्वामिनी को है । कैधों मानसर सुखमा को कै क्षमाको धाम कैधों मुखनीको घनश्याम कामिनीकोहै ३८ ॥ इतिमुखवर्णनसम्पूर्णम्॥

अथ मुख सुबास वर्णन ॥

दोहा ॥

मदन जीविका सुखजननि मनमोहनी बिलास ॥
निपट कृपानी कपटकी रतिसुखमा मुखबास १

क० ॥ कैधौं भयो उदित अनंग जूको अंग उर सुरभित अंगराग दाहेदेह दुखको। कैधौं चितचातुरी चमेली चारु फूलिरही फैल्यो बास केशव प्रकाश कर सुखको ॥ कैधौं परिमल प्रेम पूरन वतंसनि को कैधौं वरबानी मनमालाके बपुषको। कैधौं पाइ प्राणपति हृदय कमल फूल्यो ताको गंध बंधुकै सुगंध सुखमुखको १ ॥

क० ॥ पूरि पूरि मल मलयाचल उरोजनि को निज निरहारी है कमल पद पानिको। धुनि धुनि तपनहै गंध फली नासिकाको अधिक अमोद रद कुन्दकलिकानि को ॥ धूपलौं अनूप आवै वोलते बदन बास बलिभद्र दई तैं मधुप सुखदानि को। सोंधे भीजी भारती गुलाब से प्रसेद कन तेरोमुख दीपत सुगंधनिकी खानिको २ ॥

क० ॥ याही मुखबास कमलनकी प्रतीतिदेति याही मुखबास केतकी सो मधुमंत है। याही मुखबास बेलि मालती को मारे मान याही मुखबास कामी होत जन संत है ॥ याही मुखबासन नवेली तन कैसी फूली याही मुखबास सखी सोहती अनंतहै। तेरे मुखबासही सों सकल सुबासिरह्यो बारहौ महीना भौंरमानत बसंतहै ३ ॥

क० ॥ सोने में सुरंग सब बैसई लसत अंग जगमग जीवन जवाहिरसों संगतास। रूपतरु कण्ठ काम कंदुक

से सोहै कुच चंद्रमासे आनन अमंद द्युति मंद हास॥ शोभाकी निकाई देवकामकी निकाईहूते नीके भये भूषण भ्रमर भ्रमै आसपास। चौगुनी चटक तनचीरकी चटकहूतें सौगुनीसुगंध ते है मुखकी सहज बास ४॥

स०॥ सुगंध प्रवाहबहै अबलामुख ज्यों मलयागिरि गंधप्रकासी। चम्प चमेली गुलाब जुहीजुही कुंकुम केसरि पाइ सुबासी॥ चंदन औ घनसारहि पैठि किया इनबैठि बड़ो तप कासी। भूतलतें भरि मैन विलोकहि मुक्तभये लहि नाकके बासी ५॥ इति मुखसुबासवर्णनसम्पूर्णम्॥

अथ शीतलादाग वर्णन॥

क०॥ शीतलाके दाग साधि शुभलगन मुहूरत अबंध बांधि त्रिभुवन जीतबेको चक्र उपजायेहैं। कैधौंपांति लालनकी लागी विधुमंडलमें मंडल अखंडलके तन मन भायेहैं॥ यौवन दिनेशके उदयमें खुल्यो कंजनाल तापै मनो ओसके कनूका बिथरायेहैं। मोहन वशीकरके यंत्र लिखिराखे कैधौं दाग शीतलाके मुखऊपर सुहायेहैं १॥

क०॥ चन्द्रकी मरीची कानतोरि बिथराय दीन्हीं कैधौं हीराफोरिकै कनूका धरिधारेगये। कैधौं काममंदिर की झंझरी बनाई विधि कैधौं सोनजुहीके पुहुप झरि झरिगये॥ कामिनी मनोरथ आलबाल शिवनाथ मैनके मतंगमाले बेलि चरि चारिगये। अमल कपोलनपै दाग नहीं शीतलाके डीठिगाड़ि गाड़िगई गाड़परि परिगये २॥

क०॥ झिलमिले कपोलनपै कुण्डल सुडोलनपै

कोकिला सुबोलनपै वारिवारिकीजिये। लालमुख पाननपै चंद्रमासो आननपै कमलपत्र काननपै प्रेमरस पीजिये॥ कोरदार नैननपै चित्तचोर सैननपै माधुरी सुबैननपै अमृतरस पीजिये। भागभरे भागनपै ह्वैकै अनुरागनपै शीतलाके दागनपै लागनमन दीजिये ३॥

क०॥ पूरण मयंक कैधौं मेटिकै कलंककियो अंकमें समेटिकै नखत बड़भागहै। कैधौं रँगरेज मैन बांधनू विचित्र बांध्यो कैधौं रूप क्षीरमें उफनिआयो झागहै॥ कैधौं नये शोभाके बयेहै बीज रचि रचि कंचनकी भूमि में जड़ित पुष्परागहै। नाथ अनुरागहै कि फूल्योमैन बाग है कि सौतिको सुहागहै कि शीतलाके दागहै ४॥

क०॥ भागभरे आनन अनूप दाग शीतलाके देव अनुराग छियासे झमकतहै। नज़र निगोड़िनकी गड़ि गड़ि गाड़परे आड़ेकरि पैनडीठ लोभ लमकतहै॥ योवन कृशान मुखखेत रूप बीजबोयो बीजभरे बूँदन अमंद दमकतहै। बदनके बेझ पै मदन कमनैतीके चुटारे शर चोटन चटासे चमकतहै ५॥

क०॥ कैधौं स्वेद अहर विचारिकै बनायो विधि कामकी कटोरी कैधौं धोय धोय राखीहै। भनत दिवाकर नखत व्योमउडि कैधौं आननपै बैठिकै सुधाके स्वाद चाखी है॥ कैधौं श्यामसुंदर डिठौना गड़गाड़भये जुही के प्रसून छवि देखि देखि माखीहै। शीतलाकेदाग राधे मुखमेंलखात कैसेसांवरो प्रसंगकेप्रस्वेदसाथ साखीहै ६॥

क०॥ कंचनवदन तेरो तामें दाग शीतलाके कैधौं नैन जरियाने चूनी जरिधरीहै। कोमल कपोल कैधौं

श्रमके पसीजे भीजे आनंदके कनक कैधौंछवीछीटें परी है॥ वारिडारौं रति बलिहारिडारौं रतिपति सुखकोघटा ते मानों प्रेमबूँदैकरीहै। छोटी छोटी गोटी तेरेमुखपै सुघरप्यारी मानों लावा लाखन नखत ज्योति हरीहै ७॥
इति शीतलादाग वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ मुखराग वर्णन॥

दोहा॥

अरुणोदय राजीव में अंगराग अनुराग॥
रूप भूप रतिराज सो राजत सुखमुख राग १

क०॥ कैधौं अनुराग राग राजस को रूप निज कैधौं प्राण पंकज पराग द्विज न्हाये है। तन तरुणाई की अरुणता उदोत कीधौं श्री के गेह शिरीखण्ड कुसुम बिछाये है॥ शोभा तातें शोभियत देखि मन मोहियत तीनों लोक नारिन निरखि नैन नाये है। त्रिय तेरे वदन तमोल रुचि राची कैधौं बलिभद्र वाणी को वसन पहिराये है १॥

क०॥ कैधौं कमलाके गेह कमलकी लाल माल दिवाकरताकी ताकि झलकत रंगहै। कैधौं अनुराग रह्यो फैल बानी रानीजूको जब काहू काहूप्रति करत प्रसंग है॥ कैधौं आली तेरे लालओठनकी लालीछाई मनभाई मेरेवनमाली जूके संगहै। मोहत अनंग कैधौं शोभाको सुभग अंग कैधौं प्यारी तेरेमुख पाननको रंगहै २॥

क०॥ केशवदास राग रागनीन को कि अंगराग

केधौं द्विज सेवतहै संध्या भली भोरकी। अरुण रदन वहु रतनकी खानि कैधौं तिनकी झलक छलकानि चहुँ ओर की॥ कैधौं रेखा भूषणके मणिन की चाक चक्र चोरे लेति चित्त चाल तेरे चितचोर की। लागि रह्यो अनुराग कैधौं नाह नैननि को कैधौं रुचि राची ते तरुणी तमोर की ३॥

क०॥ हरी सारी सोहति किनारी वारी नेह भीनी देहके वरण सुवरण द्युतिपीरीकी। कलानिधि ऊदी आंगी कुच उचकन आबी कंचनके भारलचै कटि ज्यों भभीरी की॥ मासेहीकी नथ गजमुकता तमासेही के नासिका वनक कसकीर छविकीरीकी। लहलहीलाली आली अधरन पानन की फावीरी निकाई तेरे दशनन वीरी की ४॥ इति मुखरागबर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ दशन बर्णन॥

दोहा॥

नेक हँसोही बानि तजि लख्यो परत मुख नीठि॥
चौका चमकानि चौंध में परति चौंधि सी दीठि १
लाल चलति तेहि ठौर वा वाल दशन की बात॥
श्रवण सुनत ही सीप लौं मुकुतन ते भरि जात २
मोल लेन को जगत जिय बिधि जब हरी प्रवीन॥
राखे विद्रुम के डवा लैद्विज मुकुत नवीन ३
दशन झलक में अरुणाई लखि आवत मन मांह॥
परी रदन पर आय कै अधरन रँग की छांह ४

अरुणदशनयुत शुभलसत सुदती मुख इहिभांति ॥
बैठी जनु विच कमल के इन्द्रबधुन की पांति ५
अरुण दशन तुव बदन लखि को नाहिं करै प्रकास ॥
पुहुमी सुत आये पढ़न विद्या वानी पास ६
दशन माहिं कैसी बसी धड़ी मिसी की नीक ॥
कली चमेलिन में मनो गुलसोसनि की लीक ७

क० ॥ कैधौं कली बेलाकी चमेलीसी चमकपरै कैधौं कीर कमलमें दाड़िम दुरायेहै। कैधौं मुक्ताहल महावर में राखे रंग कैधौं मणि मुकुर में सीकर सुहाये है ॥ कैधौं सातौ मण्डलके मण्डल मयंक मध्य वीजुरी के वीज सुधा सीचिकै उराये है। केशवदास प्यारीके बदनमें रदन छबि सोरहों कलाको काटि बत्तिस बनाये है १ ॥

क० ॥ कैधौं दाने दाड़िम के पांति पांति राजत हैं कैधौं इंद्रबधू की जमाति जमि बैठीहै। भनत दिवाकर सुस्वच्छता कहांलौं कहौं श्वेत अनुमान मुख तारागण पैठी है ॥ कैधौं विधि हीरा खरसानपै खरादि शुभ्र साधि साधि सुत्रनते गोल कील ऐंठी है। राधिका तिहारे दंत दामिनि विलोकि व्योम समता न पावै याते दूरि दूरि सैठीहै २ ॥

क० ॥ कैधौं पद्मरागनकी पंगति विशाल कैधौंहीरन के जालकेप्रवाल अलबेलीके। कुंदकलिकाहै पुंजकुसुम जपाहै कैधौं दाड़िमकेबीज कैधौं पुहुपचमेलीके ॥ भनै रघुनाथ शुभ्र स्वच्छ शुचि शोभावान तापैलसैपानलाल रंग रसरेलीके। मोहतिहै कंत यो दुरंति द्युति सौतिनके अति द्युतिवंत दंत निरखि नवेलीके ३ ॥

क०॥ कैधौं कली बेलाकी चमेलीकी चमक चोका कैधौं अनबेध मुक्ताहल बसाये हैं। हीरनकी खानि यह जानिये कुशलसिंह कैधौं मणि मरकतके सीकर सुहाये हैं॥ हंसनके छौना ये पढ़नआये बाणी पास कैधौंयश बीज प्यारीसुखही जमायेहैं। दामिनीचमक कैधौं धसी है दशनआनि सोरहौकलानि काटिबत्तिसौबनायेहै ४॥

क०॥ कैधौं कुन्द कलिकाकी अवली अनूप कैधौं बाणीकी विपंचिके सुधारि धरे सारिहै। श्वासाके सदन शशि शिशु आये श्रीकेकाज कीधौं मुख वारिजमें वारिजके वारि है॥ झलकनि रुचिर बतीसीहीर बलिभद्र चमकत चारु बिज्जुरीके अनुहारिहै। अमृतके कणतपोधनके बिमल मन तेरे ये रदन चंद्रबदन मँझारिहै ५॥

स०॥ कामके बाणनकी कल कान्ति भरी कैधौं कुंद कलीदरशाही। कै सुखमाके सुसीपके ये सुकुमार कुमार लसैं सँग माही॥ कै मनहारी अनंदके खानकी हीरनकी युग औलि लखाही। भाषै मुनी रघुराज किधौं रद रुक्मिणी के हदशोभा सोसाही ६॥

स०॥ कोवरणै उपमा कविगंग सु तोहीमें है गुण ऊरवसीके। जादिनते दरशे मुसुकानिसो काह्नभयेबश तेरी हँसीके॥ चन्दसे आननपै छबिछाजत ऐसेविराजत दंत मिसीके। फूलनकी फुलवारिनमें मनो खेलत हैं लरिका हवसीके ७॥

क०॥ कैधौं मित्र मित्रमें बसाईहै किरण तातें फूल्योई रहत अनुमान यह पायोहै। कैधौं शशिमण्डलमें झाई उडु मंडलकी कैधौं हासरस निज नगर बसायोहै॥ द-

शनकी पांति कुंदकलिनकी भांति आछी सोहतहै कांति गुण कोविदन गायोहै। मानहुँ विरंचि तेरी वानीको चतुर रानी दोलर कै मोतिन को हार पहिरायोहै ८॥

क०॥ कैधौं मुकताहलहैं पहलके आवदार जावक रँगाय अरविंद मुख भरे हैं। कैधौं लालविद्रुम अमोल मणि माणिक के दामन जवाहरी उजासे खोलि धरेहैं॥ दाड़िमके बीज कैधौं सुधामें सिराये हंस सदन सुधाकर के मंदिर में भरे हैं। राधेको रदन कैधौं कामके सदन माहँ मदन जरीयाने जवाहिरसे जरेहैं ९॥

क०॥ कैधौं द्विजराजी द्विजराज जू को सेवत है कैधौं यहशारदा स्वरूप दरशतहै। कैधौं इन्दिरा के चारु हारकी अरुण मणि चिन्तामणि इंदिरा के घरमेंलसत है॥ कैधौं बिधुमण्डलमें दामिनी विराजतिहै ऐसी कछू सुखमा समूह निकसतहै। बिमल वदन बीच दन्तनकी द्युति कैधौं कमल के कोस बीच दाखो विलसतहै १०॥

क०॥ फूलि फुलवारी रही उपमा न जात कही कैसे कै सराहों तामें ज्योति अधिकानी है। आलम कहत हैरी मोतिनकी पांतिधरी हीरन की कांति छवि देखिकै लजानी है॥ दाड़िम दरकिगये इनके सम न भये रवि की किरण कैसी चमक वखानी है। तनक हँसनमें दशन ऐसे देखियत दिपत नक्षत्रमानों दामिनी दुरानीहै ११॥

स०॥ आलि कामकला करि काहुके संगते कामिनि भोर उठी भलकै। छविसों अरसाय ऐंडाय चलै लटि कै सुखदायकही अलकै॥ जमुहातहि दंतन सोने की सेष मयूषन सों मुख में भलकै। सुप्रभाकर देखि

प्रफुल्लित ह्वै निकसी मनो कंज कली जलकै १२ ॥

स० ॥ दाड़िमके दाने आनि भुलाने मुखही लुभाने छवि छलकी। कैधौं मुक्ताहल खाय हलाहल भये कोलाहल लखि भल की ॥ भौंरनके छौना करत बिछौना करतनगौना पददलकी। शिवनाथ नरीची रतनकरीची चंद मरीची बलबलकी १३ ॥

स० ॥ दाड़िम देखि तपोबन सेवत माणिक सिंधु समाय गयेहैं। मंगलके कुलके मनो बालक नूरकहैये अकाश छयेहैं ॥ तूतरुनी रंग दंतनते सुजुनीनहूके मन मोललये हैं। लाल कहा उपमा बरणे रदलाल लखे रदलाल भयेहैं १४ ॥

स० ॥ पांयधुवावतही नंदलालसो ऐंठिअमेठन रंग भरीसी। चारु महाछबिकी कवितासी लसैरसमें दुलही उमहीसी ॥ सीबीकरै सो भन्नानके भांपत देहदिपै दिन नेहयो शीसी। दंतनकी द्युति बाहिरह्वैकर जाहिरहोत जवाहिर कीसी १५ ॥

स० ॥ वारिजमें बिलसें अलिपांति किधौं अलि अक्षर मंत्रवसीके। मैनमहीप शिंगारपुरी निजबांह बसाई है मध्य ससीके ॥ आनंदसों दरशी दशनावलि श्याम मिसी मिलि ऐसी लसीके। फूलनकी फुलवारिन में मनो खेलतहैं लरिका हबसी के १६ ॥

स० ॥ घूंघुट भीने दुकूलकी भूलैं झुकै दग बंकित काननछ्वै। युग भौंहन बीच थक्यो मन गोहन ओठन लाल रह्यो रंग च्वै ॥ मंदहँसै रुख नागरिको मुखचोपन

की उपमा तब है। तिमिरावली सांवरे दन्तनके हित मैन धरे मनो दीपक द्वै १७॥

क०॥ सुधाको समूह तामें दुरेहैं नक्षत्र कैधों कुंदकी कली की पांति बीन बीन धरीहै। आलम कहत ऐन दामिनी के बीज बये बारिजके मध्य मानों मोतिन की लरी है॥ स्वातिहीके बुंद बिबि विद्रुममें बासलीनो ताकी छबि देखिमति मोहनकी हरीहै। तेरेहँसे दशनकी ऐसी छबिराजतिहै हीरनकीखानि मानोशशिमाहिंकरीहै १८॥

क०॥ सूक्षम सुबेषसुधी सुमन बतीसी मानोंलक्षन बतीसहूकी मूरति बिशेखिये। रातीहै रतीक रुचि श्वेत सब किधौं शशिमण्डलमें सुरनकी सभा अवरेखिये॥ किधौं पिय युगति अखंडताके खंडिबेको खंडनके केशवं तरंककुल लेखिये। दीनी दूनी कला बिधि तेरेमुखचंद को सुन्यायही अकाशचंद मंद द्युति देखिये १९॥

क०॥ किधों सातों मंडलके मंडन मयंकमधि बीजुरी के बीज सुधा सींचिकै उगायेहैं। किधों अलबेली की चँबेली की चमक किधोंकीर कमलमें दाड़िमदुरायेहैं॥ किधों मुकताहल महावरमें राखे रँगि किधों मणिमुकुर में सुधर सुहाये हैं। केशोदास प्यारी के बदनमें रदन छबि सोरह किरण काटि बत्तिस बनायेहैं २०॥ इति दशन वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ रसना वर्णन॥

दोहा॥

रसना कोमल बरणिये कोविद अमल अमोल॥

केशव देवी रसनकी रसहि श्रवत मृत बोल १

क० ॥ कमल बदन मध्य कमलाके काज छबि राखी है कमलदल तल्प सुधारीहै। कीधौं बलिभद्र षट तंत्रन की लिपिय है कैधौं षट स्वादन की परखन हारीहै॥ ललित तमोर रंग गुणकी कसौटी मनो मंत्रन की मूरि परमारथ की प्यारीहै। रसिक रसीली प्यारी तेरी मृदु रसनाकी पंद्रहो रसनकी रसानन्द कारीहै १॥

क० ॥ कैधौं विधि रसनाकी रचीहै कसौटी यह अरुण वरण अचरज मनमें गह्यो। कैधौं तेरीवानी ठकुरानी मनमानी ताकीरातेफूल तेजरंगजानत कछूकह्यो॥ सूरत सुकैधौं बोलरतन अमोल दानदैदै सबही को सुख दुख सबही दह्यो। नेकहूबखानिसकै काहूको सो वसना जोरस तेरीरसना सों रसना कहूंलह्यो २॥

क० ॥ कोक कला पढ़िबेकी पोथी सी बनाई काम कैधौं नवो रसनकी भूमि उपजाई है। परम प्रवीनरूप भारती है मेरेजान कंठते निकसि मुख वारिजमें आई है॥ प्रेमकीसी जंत्रहै मयंक मुख सम्पुटमें पूछे कहि बोलै नूर एती प्रभुताई है। रानी षटरसनकी सुबरन उरभानी एतो रससानी तऊ रसना कहाईहै ३॥

स० ॥ मणि पारस ज्यों हरिसम्पुटमें मणिभवन दिवा जनु साजतु है। तिहिकी समता न चढ़ै चितपै जिहि देखि रमारति लाजतुहै॥ रघुनाथ भनै पिय प्राणप्रिया द्युति दामिनसी छवि छाजतुहै। मृदुबैन पियूष श्रवै जिहते रसना मुखचंद्र विराजतुहै ४॥

क० ॥ शारदाकी सेज कैधौं सुखकी सहेली सोहै रस

कीसी रानी कैधौं कवित्त विधानी है । कोमल अमल अमी अंशही चुराय कैधौं कमला कलासी चारु चन्द्रहि छिपानी है ॥ हरिसों कहत बैन हाँसरस रीति प्रीति नीति निपुणाई कैधौं निगम न धानी है । कुशल सिंह कैधौं अरबिंद में निवास कीन्हों विधि की बरंगना सरस बरदानी है ५ ॥

क० ॥ सप्तस्वर सागरकी नौकासी बनाई विधि कैधौं सुधारस पानकरै की पतूषी है । आगम निगम इतिहास औ पुरान सब काव्य व्याकरन कों बखानत विदूषी है ॥ विद्या गुण धन भस्यो चुपतारा लग्यो तहां खोलिबेकी तारी जीभ उदर पियूषी है । नूरकहैयाही सब अंगकी शिरोमणि है सदा हरियश भाषै मधुर महूषी है ६ ॥

क० ॥ गूढ़ गुण ग्रंथके प्रकाशकी करन हारि झूठ सांच कहे देत सबके मनसकी । नादवेद भेदके उचारि देत आंखरिन कोमल रसाल जात बसुधाके बसकी ॥ भरमी सुकवि पिय मनकी हरनहार सुधासों सुधारी जान गान हार जसकी । रसनाकी उपमा न होत कोटि रसनासों मनकी सचौटीके कसौटीवत रसकी ७ ॥

क० ॥ ईंगुर गुलालहूकी हारी प्रभुताई और जेती हौं गनाई अरुनाईको तुमनसों । रोरी लाल फूल जाकी समतान तूल इन्हें कहापरी भूल भयो विधिको कुमनसों ॥ शम्भुराज कहै याकी उपमा कहांलोंकहौं ध्यानहूके खोजे नहीं पावत है मनसों । आनन अमल बीच रसना विमलदेखो मानहुं कमलकोस जपाके सुमनसों ८ ॥

क० ॥ देखी ना परतिदेव देखिबेकी परीबानि देखि देखि दूनी हियसाध उपजति है। शरद उदित इन्दु विन्दुसो लगत लखे मुदित मुखारबिंद इन्दिरा लजाति है॥ अद्भुत पियूषसी मधुरबानी सुनिसुनि श्रवनानि सुख होत भूखसी भजातिहै। मंत्रीकर्यो मैन पर तंत्री कर्यो बैननि को बिनातार तंत्री जीभजंत्री सी बजाति है ९॥

क० ॥ देखतहीं आधापल बाधी जाति बाधा सब राधाजू की रसना सुरूप कीसी रानी है। आछी आछी बातन की जननी जगमगात रसनकी देवी किधों पवि पहिंचानी है ॥ केशोदास सकल सुबास कीसी सेज किधों सकल सुजानता की सखी सुखदानी है। किधों मुख पंकज में शक्ति कौनो सेवैं द्विज सबिताकी छबिता की कबिता निधानीहै १०॥ इति रसना बर्णन संपूर्णम् ॥

अथ बाणीबर्णन ॥

दोहा ॥

बानी बीना बेनु अलि सुख पिक किन्नर गान।
शोभन शुभबहु अर्थ मय केशवदास बखान॥

क० ॥ अमित लजीली शील सुमति सजीली सुच सुरस शृंगार में रंगीली सुख दानी पै। बदन सुधा करते कढ़त सुधासनी सहित सुवास रूपरास ब्रज रानी पै ॥ भनै रघुनाथशुद्ध सारथ सदेव सुनै रंभा रति सकत न बातकर स्यानी पै। वारों बरबानी बीन कोकिल कहानी कहानागरी नवेलीकी सनेह मृदुबानीपै १॥

स० ॥ आजुलखी ललना पढ़िबे में कहा कहौंहू

भयो अनुरागी। वारक तो पहिले सुनिलेत है सुन्दर बोल गुरूते सभागी॥ अक्षर द्वै मुँहते सुनिये उचरै फिरि बोल सुधारस पागी। सोहतयोंसु पढ़ावन हारको आपुही मानो पढ़ावन लागी २॥

क०॥ केकीपिक कोकिला अवाजन पै गाजपरै छै-लिया लजाय छोड़ि सोरभ पराई है। भनत दिवाकर ति-लोत्तमा न ढूंढ़ेको कोउ रूरेराग सुने सबसरी शरमाई है॥ कैधौं आय शारदा निवास कियो रसना में बातनकेब्याज बोलि झरत मिठाई है। राधिकाकी वानी कैधौं सानीहै पियूषरस देत बरदानी ऐसी वेद मुनिगाई है ३॥

क०॥ कामकी दुहाई की सुहाई सखी माधुरी की इंदिराके मंदिर में झांई उपजातिहै। सुरनकी सुरीकैधों मोदकी महोदरी है चातुरीकी मातु ऐसी बातन सजाति है॥ राग राजधानी अनुरागनकी ठकुरानी मोहे दधि-दानी केशो कोकिला लजति है। ऐरी मेरी व्रजरानी तेरी वर बानी कैधौं बानीही की वीन सुख मुख में बजति है ४॥

स०॥ धुनि कैधौं विराजि रही मन मोहनि मैन के बीन वे वेसबनी। विधि रावरेके वशकी वेलिये विरच्यो बसीमंत्र कैधों अवनी॥ रघुराज कहै किधों रागमयी प्रकटी सुर साजहुकी सजनी। मृदु रुक्मिणिके मुख चन्द्रते कैधौं कढ़ै वरबानी सुधासों सनी ५॥

स०॥ मीठी अनूठी कढ़ै बतियां सुनिसौतिनकी छ-तियां दरकी परै। कोकिल कूकनिकीका चली कल हंसन हूके हिये धरकी परै। प्यारी के आनन तेरो कढ़ै तिहि

की उपमा द्विजको फरकी परै। धार सुधार सुधाधरतें सुमनों वसुधा में सुधाढरकी परै ६॥

स०॥ फूलनसी झरि शूलहरै हरि जीवन मूल है औनके ईठी। दूरिलौ दौरत दन्तनकीद्युति ज्यों अधरा उधरै अतिनीठी। तोष भरी मुसका हट मोद सुहोत हे सौति सबै लखि सीठी। ऊख पियूष मयूष की भूख मिटै वा त्रिया बतियां सुनिमीठी ७॥

क०॥ जाके एकअंश हंसबाहिनी प्रशंसतिहै किन्न-रीसु कौन जाकी नहीं सरकरि है। और कोकिला सों कोकलाहूं एक जाने नाहिं सूरत सुकबि गनतीमें कौन धरिहै॥ बनिाबेन तबलों बजाय लीजै प्यारेलाल फेरि तुम्हें उनहूं की चरचा बिसरि है। सुधि बुधि सकल हिराय जैहै जानो यह जबैमेरी रानीजूकी बानी कान परि है ८॥

क०॥ बिमल बरणहीकी कैधौं यह पुष्पदाम आख-रअरथ कैधौं आलय पयूष है। दर्पक दुरेफहूकी पंख-निकी सुरधुनि सुरन की माधुरी की मधुर मयूष है॥ पियमन साधिबे को कहो अनहद धुनि बलिभद्र जाहि सुनि भूलीनींद भूखहै। प्रेमरस सानी तेरी सुखकी नि-धानी बानी रागनि की रसना की रसहीकी ऊखहै ९॥

क०॥ सहज झरोखा मांझ बोलत रसीले तेरेसुधा कीसी धार धौराहर में धसतिहै। नीचे खरे सुनत प्रवी-णलोग वीणजानि कहतगवेले इहां कोकिल बसतिहै॥ कालिदास मुखते बरण मुकता हलसे निसरत जबै रस रंग बरसाति है। येरीमेरी रानी हरिजूके मन मोहिबे

को नेहकी निशानी तेरी वानी विलसति है १० ॥

क० ॥ सौतिनको होत दुख सखिनको सुखसुने होत गुरुजननि को गुनको गुरूरहै। कहैकवि देव लाखलाख भांति अभिलाख पीकेउर उमगत प्रेमरस पूरहै । तेरो कल बोलकल भाषनिके स्वाति बुन्द जहां पायपरे तहां तैसोई सरूरहै। व्यालमुख विष और पियूषज्योंपपीहा मुख सीप मुख मोती मुख कदली कपूरहै ११ ॥

क० ॥ सुधाके समुद्रकी लहरसी कढ़तरहै याही को सुनाय लाल कीनेतें अधीन है। बन उपवन बैठि आप को दुरावै याते मेरेजान यहै कलकण्ठ कण्ठ हीन है॥ बलदेव ऐसी न रचीहै न रचैगो विधि मोतिनकी उपमा करन लागी क्षीनहै ॥ कमलके कोषपैठि गुंजरत भौंर कैधों बानी मांझ बानीजू बजाई मानो बीन है १२ ॥

क० ॥ ऐसो नीको बोलिवो सिखायो सखी कौने तोहि सीखवे को होत सरस्वती हूकी मतिहै । कुधरैं कुहुकि सबहीते सरकस पिक पखावरकस करकस अति रति है ॥ केकी कोक कलरव लागति विकलरव अलिअलखोहै धुनिसुनि भये नतिहै। येरी मेरी रानी रीझ मोहै दधि दानी तेरीबानी आगे बीनाहू कमीनासी लगति है १३ ॥ इति वाणी वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ हासी वा मुसक्यान वर्णन ॥

दोहा ॥

अधरनविस मुसक्यानि तुवतजोन प्रकृति निदान ॥
ज्यों कृपान अमृत धरे तऊ मारि है प्रान १

सुदती के मुसक्यात यों अधरन आभा होति ॥
मनहुं मानिकन पै परी आय दामिनी जोति २
दंत कथा वा दशनकी और कही नहिंजात ॥
फूलभरीसी छुटत जब हँसि २ बोलति बात ३
पियविनोद युतबातसुनि ललकिहँसी सुखकंद ॥
भइ राका रजनी शरद चंद चांदनी मंद ४
वचनरचित हँसि माधुरी गुनसों गूँथि रसाल ॥
पहिरावति तिय पियमनहिं मनोसुमनकी माल ५
बिहँसिबचन प्यारी कहति सुधा नहीं समतूल ॥
मनों कमलके कोशतें झरत मालती फूल ६

क० ॥ ओठनके बीच छबि दंतनकी झलकत कमल के कोश चपलासी चारु लसीहै । मंद मंद जोति होति उदित अनेक भांति कला कलानिधि मुखमानो लौटि वसीहै ॥ ऐसीसेत अंचलमें नीकी छबिलसैनूर शरदके चंद्र ऐनचन्द्रिकासी रसी है । कै है बतराने कहा कौन जानै एरी वीर नेक मुसुकानेभई सौतिनकी हँसीहै १ ॥

स० ॥ अधरानहिमें मुसकी वह बाल बिलोकत प्रात को बारिजलाजै । दंतनकी झलकी छबिनेक सो दाड़िम दामिनको मदभाजै ॥ माधुरता बरसै शिवनाथ सुधाधर सी परसी छबि छाजै । आनँदकंद सपूरण चंद मनो सुखरूपी विनोदन साजै २ ॥

क० ॥ कोमल अमल कोश कमला बसत ताके भूषनकी जोति कैधौं जगत प्रकासीहै । कैधौं चपला के चखचौंधिबेको दयानिधि कीन्ही तुव नैननि जुगति अति खासीहै ॥ कैधौं महिमोहनीके मोहिबेको मोह

मई चतुर विरंचि नई चातुरी निकासोहै। कामको सुधा सी चल चित्तनको फांसी कीधों एरी प्राणप्यारी या मधुर तुव हाँसीहै ३॥

क०॥ कोकनद कली जैसे खिलत बयारिलागे मंद मुसक्यान उसकान है चमेली की। आरसी में भानुके प्रकाशको उजासहोत जैसे दीपमालदिपै दीपति हवेली की॥ भरमी सुकवि द्युति दामिनीसी कौंधति है चांदनी सी चहूँ ओर बातमें सहेलीकी। चंदकी चमक चकचौंधति दशन द्युति पियमन बसन हँसन अलबेली की ४॥

क०॥ कैधौं द्विजराजनकी तपस्या को तेज ये है कैधौं रसन अग्रकीरतिको बासुहै। बलिभद्र ताकीछवि रंग शुभ्र देखियत कीधोंसर आपगाको आनन में बासु है॥ सुरनकी ज्योति सुरगनकी मरीचकाकी विचका सुबीच चतुराई को प्रकासुहै। पियपाय पारनको कैधौं निजचन्द हासु सुखके सुमनके कृशोदरीको हासुहै ५॥

क०॥ पूरत पियूषयों प्रकाशत प्रकाश पुंज पूरण करण कान प्राणपति साधाकी। सुखद सदाही मिल सिंधुकी कलोल कैधौं हरण हमेश कृष्णचन्द रतबाधाकी॥ भनै रघुनाथ कौन कौन उपमादै कहौं कौन समताहै रूप सुरति अगाधाकी। चौगुनी सुचन्द चन्द्रिकाते सौगुनी है यह हांसी चंचलताते है हजारगुनी राधाकी ६॥

क०॥ मदन महीपतिकी कैधौं जयकीरति है कैधौं प्रिय प्रेततरु अंकुरकी सीचिका। कैधौं मुखचन्द चारु चंद्रिका प्रकाशमान कैधौं रूप कुण्डल के रसकी उलीचिका॥ कैधौं अतिचारु सुधारसके सरोवरकी योवन

समीर कै परम मृदुबीचिका । भारती बसन सुखरास बिलसन सुख राजै मन्दहँसन सुदर्शन मरीचिका ७ ॥

क० ॥ क्षीराधिकी छीर कैधौं नीरसर आपको है कैधौं हीरहारन की हाटही सम्हारी है । हंसनकी पांति कैधौं गुनकी है भांतिभली कीरति को सांति कैधौं शारदकी सारी है ॥ अम्बुज कहत बसुधामैं कै सुधाकी धार कैधौं हासरसकी हरोल भीर भारी है । चंद उजियारीकी बिहारी की बसीकरन सीकरन वारी कैधौं हँसनि तिहारी है ८ ॥

क० ॥ हँसि हँसि ब्याल ख्याल करत सखीनहू सों झरि झरिपरत कैधौं मालतीके फूलरी । कण्ठ लकलकी तीनों ग्रामसे फिरतजात शब्द झनकर सोतो सुर अनुकूलरी ॥ चौंकाकी चमक देखि तड़ित लजाय जाय घनन दुराय रही उठी उर शूलरी । फूलझरी छुटत कैधौं छुटत चित शिवनाथ कुलट शीश सौतें ज्ञानिसुख निरमूलरी ९ ॥

क० ॥ लुरि लुरि ढुरि ढुरि झुकि झुकि रीझि रीझि आधेघेवरन कहत किलकारीसों । सुनत सोहात नेको समुझिपरत कैसो चुमकिचिबुक गाड़परत हाहाहीसों ॥ खैंचि खैंचि पीतपट लचि लचि गात उर अम्बुक उमगि अरुणारीसों । ढीली ढीली भौंहन रसीलीछबि शिवनाथ दैदै करतारी प्यारी हँसै गिरिधारीसों १० ॥

स० ॥ बोलत बात प्रसूनझरै छहरै छबि होठनकी सुखथाला । भट्टदिवाकर प्रेम कपाटन ठाटनलोहकी खोलति ताला ॥ राजतिहै गजरा गरसैं घरके चमकै जनु

दीपके माल। खग्गके धारनते द्विगुणी मुसुकानि लगे नवला तेरी आला ११ ॥

स० ॥ नयननकी गति कोरनलौं अरु कोरनकीगति कानलौं जानो। काननकी गति जीभलौंहै गतिजीभकी कण्ठ तरेलौं वखानो ॥ कण्ठतरेते गिरागतिहै यशवन्त सदा रसनालौं मानो। है रसनागति होंठनलौं गति होठनकी मुसक्यानलौं जानो १२ ॥

स० ॥ गहि हाथसों हाथ सहेलीके साथमें आवतही वृषभानललो। मतिराम सकाति न आवततीर निवारति भौंरनकी अवली ॥ लखिकेमनमोहनसो सकुची कियो चाहत आपनीओटअली। चितचोरलियो दृगजोरि त्रिया मुखमोरि कछू मुसक्याय चली १३ ॥

क० ॥ गुल गुलकंदकै सुमंदकरि दाखनको देखहु दुचंदकला मंदकी कमाईसी। कहैंरत्नमाकर त्योंसाहवी सुधाकी सबै ब्रज बसुधामें सोकहांधों परीपाईसी ॥ खारिक खरीको मधुरीको माधुरीको स्वच्छ सरदसिरीको मिसिरी को लूटिलाईसी। सांवरी सलोनीके सलोने अधरानही में मंजु मुसक्यान भरी मंजुल मिठाईसी १४ ॥

क० ॥ रसना ललित कलवानीजूको आसनहै दशन लसन कौन सकत वखानिहै। कालिदास लाल अधरन पै वारो लाल लसति अमोल मृदुबोलनकी वानिहै ॥ सुंदर गोविंदके रिझायवेको इंदुमुखी रची एकरचना अनंग विधि आनिहै। कैसी मुखमाहिं खुली सुखमाकी खानि जहां महामोहमयी निरमयी मुसकानिहै १५ ॥

स० ॥ रंगभरे बहु विद्रुमके बिच मोतिनकी सुखमा

दरसी है। फूली मनोहर सांझके मांझ सुधाकरकी कि-
रणै सरसीहै॥ छायरही अनुरागकेअंतर कामकी कीरति
आन बसीहै। गोकुलचंद सदानँदनंदन रावरे ओठन
मंद हँसी है १६॥

क०॥ शिवशिर गंग जैसे जलकी तरंग जैसे उडु-
गण भंग जैसे करतपयानहै। मोतिनकी माल जैसेदामि-
निकीधार जैसे ओपीतरवार जैसे तजत मियानहै॥ दी-
पनकी माल जैसे पावककी ज्वालजैसे मोहिबेको लाल
मन निपटसयान है। तार जरजरी कैसे फूल फुलझरी
कैसे जुगनूज्यों जरी कैसे तेरी मुसक्यान है १७॥

स०॥ शारदकी कैधौं पारदसी दिपै दामिनी दीपति
मोद करी है। कैधौं सबै नखतानिकी ज्योति अकोति
बिरंचि बटोर धरीहै॥ भाषै मुनी रघुराज की नेक सो
दाड़िम मञ्जु मरीचि झरी है। कै रुक्मिणिकी हास
छटा सुखमाकी किधौं महताब बरी है १८॥

क०॥ कैधौं मुख कमलमें कमलाकी ज्योति होति
कैधौं चारु मुख चन्द्र चन्द्रिका चुराईहै। कैधौं मृगलो-
चनि मरीचिका मरीचि कैधौं रूपकी रुचिर रुचि शुचि
सों दुराईहै॥ सौरभकी शोभाकी दशन घन दामिनीकी
केशव चतुर चितहीकी चतुराई है। येरी गोरी भोरी
तेरी थोरीथोरी हासी मेरेमोहनकी मोहिनी कि गिराकी
गुराईहै १९॥ इतिहासी वा मुसक्यानवर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ अधर वर्णन ॥

दोहा ॥

तेरसि दुतिया दुहुँन शशि एकरूप निजठानि ॥
भोर साँझ गहि अरुणई भयेअधर तुवआनि १
अधरमधुर रसचाखिकै कहौ सकल जगजोइ ॥
ऊषमयूष पियूष में इतो मिठास न होइ २
लिखन चहत रसलीन जब तुवअधरनकीबात ॥
लेखनिकी विविजीह बँधि मधुराई ते जात ३
जीते कटक कटाक्षशर जपतपसुधि बुधि ज्ञान ॥
अब अधरनको कौन पै दीन्हे प्यारी पान ४
तरुणीअधरन अरुणपर यों रँग धरत तमोल ॥
ज्यों रँग जेठो कुसुमको राजत लाल निचोल ५
जान्यो रंग तमोलको दीन्हों अधरन बाल ॥
कीन्हों विद्रुम सुरँगपै मानो मीना लाल ६

क० ॥ अरुणसे अमल कमलकीसी कोमलाई अधरन देखि बिम्बा प्रलापये। जाके रूप आगे रूपविद्रुम बरंग होत शोचि शोचि मोचि दृगभरत अलापये॥ खीने हैं न थूले भूले देखिकै कुशलसिंह देवतानहूं के मन सुखद कलापये। अमीरस माते ताते चढ्या है उन्माद उर हैजके युगल चंद करत मिलापये १॥

क० ॥ अमल अरुण अरविंद बिम्ब आभादेत सहज सुवास रीझै माधुरी समरहैं। सोति कोतिवारी पिय मति मतवारी होत पूजै नयवारीसो सवाँरी शोभा धरहैं॥ मणिकण्ठ सूक्षम सुरेखहैं बधूक फूल बरुणीके

चिह्न पिय लोचन डगरहैं । कैधौं लीक शिशुगाते दीने विधि कोककला सुन्दरि सुलोचनीके शोभितअधरहैं २॥

क० ॥ कैधौं बिधु ऊपर बधूकके कुसुम धरे कैधौं बिम्ब पाके परे योबन जनाये हैं । बिद्रुम बरण बिंबि खारिक दिनेश कैधौं पल्लव प्रसूनके कि शोभा सरसाये हैं ॥ अध अनुराग भाग ऊपर सुहाग रूप राजत रुचिर कैधौं अमृत कनाये हैं । योबनके रंगके प्रसंग लाल बिधि दोऊ अधर मधुर सुधासारसो बनायेहैं ३ ॥

क० ॥ कुसुमके सार कैधौं काशमीरी केसरिसों पूजे न हियेसर मजीठ होइहारीहै । पाहन भईरी यहदाहन पवारी रति रति यो उतारी रही रती सुखकारी है ॥ करि छबिहार चूरभयेहू न पूजे जावकके नेक देखे कान्ह बाँसुरी बिसारी है । बीरबधूवारी हरिहृदय बिहारी देखि यहअधर लाली तौ गुलाली यो उतारी है ४ ॥

क० ॥ केसरि निकाई किशलय कीरताई लिये गाई नाह जिनकीधरत अलकत है । दिनकर सारथीते कैसे नीके देखियत अधिक अनारकी कलीते अरकत है ॥ लालकी लसनि तहां हीराकी हँसन राजै नैन निरखत हरखत आसकत है । जाते नगलाल हारिलालहि ठगतेतेर लाल लाल अधर रसाल झलकतहै ५ ॥

क० ॥ लाले मृदु उथले सुथले फल कुंदुरू से तामें रंग पानछबि दुगुनी बढ़ायो है । भनत दिवाकर यों सुमन नवीन कैसो कोमल रसाल दल देखिके लजायो है ॥ विद्रुम बेरंग होत हारत उदोत पेखि कुसुमके रंगने निरेखि ललचायोहै । प्यारी मुख चंदते पियूष र

च्वइ च्वइ अधर अमल मानो ऊपर सें छायो है ६ ॥

क० ॥ लाल रंग राचेहै प्रवालते अनोखे अति विं-बा फल हाल ते विशाल द्युतिवारे हैं। उज्ज्वल अनूप अमीकूपके किनारे किधौं ऐसे शची रम्भा रती कौन के निहारे हैं॥ भन रघुनाथ वा विधाता चतुराई धन्य जानेसब शोभाको समेटकेसवांरे हैं। निज पिया प्यारेको मनोहरन वारे बने मधुरअपारे प्रियाअधरतिहारेहैं ७ ॥

स० ॥ लालनके मन ते जिनको छिन एक न नेकु छुट्यो बिसरामहै। विद्रुम से तिन ओंठन जो बरणे रस-राज सुतो मति छाम है॥ सोमति सानि सुधा जल ते हरिको अनुराग महा रुचि धामहै। ढारिकै ढैज सुधा-धर साँचे रच्यो बिधि ने अधरा अभिराम है ८ ॥

क० ॥ गुलगुले कंदके सुमंदकर दारनको देखहु दुचंद कलाकंदकी कमाईसी। कहै पदमाकर त्योंसाहिबी सुधाकी सबै ब्रज बसुधासें धौं कहां धों परीपाईसी ॥ खरकखरीको मधुहूकी माधुरीकोशुभ सरदासिरीको मि-सिरीको लूटिलाईसी। सांवरी सलोलीके सलोने अध-रानमें सुमंद मुसक्यानि भरी मंजुल मिठाईसी ९ ॥

क० ॥ डाभ कैसे चीरेओठ अलपसुरेख अति सुंदर सुरंग इंदुनारि कैसो तनुहै । मधुर मधुर रस नारंगी कलीकी फाक धरीहै सुधारि शुद्धसुधाकोसदनुहै॥ सुघर सुपंकु बिम्बुलीने शुकचंद गोद महामोहनीको यह धनु है। बंधुजीव विद्रुम अनार कालिकाकेदल तेरे अधरन की अरुणताको अनुहै १० ॥

स० ॥ दाड़िम फूलके द्वै दलकी किधौं कंचनबेलि

में विम्बु सोहावै। कैमधुसागरके है प्रवाल सेंदुर हैलीक धौं इंदुमें भावै॥ की अरविंदमें इंद्रबधू तति है रघुराज प्रमोद बढ़ावै। रावरेके अनुरागके ऐन धौं रुक्मिणी ओंठ किधौं छबि छावै ११॥

क०॥ दाबि दाबि दशननि रसके सवाद कैकै अधर मधुरखान सुधारसको हँसै। कालिदासरीझै मुकताहल के योग हरि सुधि बुधि भूलिगई वेई मनमें बसै॥ लाल नग जवाफूल कैसे करिकीजैतूल कोकनद वि-द्रुमकी छबिनी चलेबसै। देखि आरसीलै शशिबिंब से बदन तेरेओंठ प्रतिबिंब परतीत बिंबसे लसै १२॥

क०॥ जपाके कुसुमताकी छबिके चतुर मणिमाणिक केमीत अतरोचक कलीवके। विद्रुम के दलहै विराजै हे-मसम्पुटमें राजत अनूप काहजनके नसीवके॥ भावतीके अधरपियूषके धरनहार कहै परसराम रसदानी प्राणपीव के। बिम्बनके बदीअनुरागके सो प्रतिबिम्ब नायकर-जोगुणकेबंधु बंधुजीवके १३॥

क०॥ जाकी मधुराईलै सुधाई सुरलोक छपी ऊखको छप्यो हैरी पियूष अपरानिमें। देखतही विद्रुमभयेहै जड़रूप अरु बिम्बमतिहीनभये जिनके डरनिमैं॥ पान अंग पातरो भयोहै तबहीतेपेखि एरीब्रजरानी अबरहै को शरनिमैं। सूरत सुकवि तिन्हैं सकैको बरणि प्यारी तेरे अधरनकी न उपमाधरनि मैं १४॥

क०॥ विम्ब औ प्रबालहू बँधूक कवि बरणत सोतो यह उपमा न मानों काहू के दिये। जपा रोरी ईंगुरकी गुरुता सकल मली दाड़िम कलीनहू के मान भंग को

किये॥ ललित ललाटहूते लटैयों लरकिरहीं दुहूंओर अधरके कोरनको हैंछिये। मेरेजान तापत लालित लाल-हीको शम्भु गुहयो मखतूलसों विराजै शशिकेहिये १५॥

स०॥ बर बिद्रुम में कहां लाली इती कहाँ कोमल-ता जपा ऐसी गहै। कहाँ लाल में लाल प्रकाश इतो समताकहा बापुरो बिम्बलहै॥ कहाँ ऊषमयूष में एती मिठास पियूषहू ना हरिऔध कहै। जिती चारुता कोमलता सुकुमारता माधुरता अधरा में अहै १६॥

स०॥ बैठि बिचारि विरंचि कियो रचि अंग सुढंग सबै उपमानको। हेरतही विरहानल व्यापिहै को पुनि थापिहै प्राण प्रमान को॥ है बसुधामें न औषधि आन सुमेरु हरी सुभयो सुखदानको। चन्दचहेटि समेटि सुधारस कीन्हों तबै त्रियके अधरान को १७॥

क०॥ अधर अरुण अति सुबुधि सुधाकेधर को-मल अमल दलद्युति छीनि लीनी है। केशव सुगन्ध मन्दहासयुत कौन काम बिद्रुम कठोर कटु विम्ब मति हीनी है॥ सूक्षम सुरेख अति सूधी सूधी सविशेष चतुर चतुर मुखरेखा रचि कीनीहै। मानो मैन गुरुहरि नाहके नयन गति गनि गनि लेखकहू वियागनि दीनीहै १८॥

क०॥ चन्दन में वन्दन में हैन अरविंदन में कुरु-बिंद मैन भानु सारथी बरनमें। मोहर मनोहर में कोहर में हैन ऐसी गुंजनकी पीठि में मजीठि अवरनमें॥ जैसी छवि प्यारीके निहारी मैं तिहारी सौंह लाली यह चरण करन अधरनमें। हैन गुलनारनमें गुलाब गुड़हरहू

में चन्दवधू मैन बिम्ब नारंगी फरनमें १९ ॥ इति अधर वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ अधर गड़हा वर्णन ॥

क० ॥ कीधौं द्विजराज मुख तर्पणको भाजनहै कैधों प्राण तर्पक चोरा पियदानको । तपस्या स्वरूप ताको तपसा को तपकुण्ड शोभाको सलिल कुण्ड सुरन के न्हानको ॥ राजरूप कंदरा कि सुंदरि शरण ताकि बलि-भद्र थिरह्वै बसोहै अरिथानको । तेरेत्रिय ऊरध अध-रकीपनारी मधि कैधौंपियलोचनपियालोमधुपानको १॥

स० ॥ कैधों गुलाबकी पाखुरीहै यह छांड़ि प्रसूनहि आनि बसी है । कै यह मोहनी की मरयाद है काहूके प्राणन पैठि नशीहै ॥ गाड़परो तियके अधरापर कै शिव-नाथ बुलाक धसीहै । कै हरिके उरको तजिकै भृगुको पदचिह्न सो आनि धसीहै २ ॥ इति अधर गड़हा व-र्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ ठोढ़ी बर्णन ॥

दोहा ॥

ठोढ़ी गोरी गुदगुदी चिबुक गाड़ सुख दैन ॥
गड़ेरहै निशि दिन तहां रसिक प्राणपतिनैन १
डारे ठोढ़ी गाड़गहि नैन बटोही मारि ॥
चिलक चौंध में रूप ठग हाँसी फाँसी डारि २
तो लखिमोमन जोलही सोगति कही न जाति ॥
ठोढ़ी गाड़ गड़्यो तऊ उठ्यो रहत दिन राति ३
फूलत फूल गुलाब तुव चिबुकदेखि लजिजाय ॥

फूल भाव तजि टूटि दल भरि सेवत तरपाय ४
कुच गिरिचढ़ि अतिथकितह्वै चलीदीठ मुखचाड़॥
फिर न टरी परिये रही गड़ी चिबुक के गाड़ ५
मन पारा दृग कूपते उफनि वाल मुख छाहिं॥
पर्‌यो चिबुक के गाड़ में केहूँ निकसत नाहिं ६
ललित श्याम लीलाललन वढ़ी चिबुकछबिदून॥
मधु छाक्यो मधुकर पर्‌यो मनो गुलाब प्रसून ७
अंध भवन जलमें धसे जे हरि केलि निधान॥
तीय चिबुक तिलके परे लागे चुवकी खान ८

स० ॥ आरसी अंकुर नोक शृंगारसी बीचरही परकार निशानी। कै बिरहीन के हायको दाग अहै वरु नीलकनी अनुमानी॥ बीजके वृन्दमें है तमछन्द कलिन्दजाबुन्द लसै दरशानी। नेह मई तिल ठोढ़ी कि गाड़में पेरिदई मनो प्रेमकी घानी १॥

क०॥ कैधौं अरबिन्द मकरन्द रसपान माते ढिग अलिबार रहे कैधौं अलसाय कै। कैधौं पिय प्रेमको पियूष भरो नारंगीमें वेंदी श्याम सुमन निशानसी बनाय कै॥ कैधौं है शृँगार रसमगन मनोजमन लालच ललकि मणिकण्ठ लाग्यो आयकै। सौतिनके विरह सुहागसोहैगोदनाकीलेत चितचोरतेरोचिबुक चुरायकै२॥

क०॥ कनक वरण कोकनदके वरण अरु झलकत झाईं तामें बसन रदनकी। कीनी चतुरानन चतुर ऐसी रचि पचि अलपसी चौकीचारु आसन मदनकी॥ अंग लसेवाके उपमानकी अवधि सब सुमिलि सोपान मानो श्रियके सदनकी। सुन्दर सुढारहै चिबुक नव-

नायकाकी कैधौं बलिभद्र बादशाही है बदनकी ३ ॥
क० ॥ कंचनके खानेमें जटित नीलमणि कैधौंसम्पुटमें सूक्षम सरूप श्याम लोनाहै । सुमुख सुखेत रसबीज बोइ होनाकैधौं केलिसमय कामजूको खुलतखिलौनाहै॥ रामकहै तिय मनमोहनके मोहिबेको कठिन कुहूमें पढ़ि राख्यो ठीकटोनाहै । कमल कलीपै अड़िबैठ्यो अलि छौना कैधौं कामिनी तिहारो चारु चिबुकडिठौनाहै४ ॥
स० ॥ ज्ञानभयो जबते तबते तिय एक लखी मणि आप अतूलमें । दामिनी ज्यों यमुना प्रतिबिम्बित यों झलकै तन नील दुकूलमें ॥ देखतही सुख देखे बिना दुख जायपरी कितले उत भूलमें । ठोढ़ीपै श्यामल बिंदु गुपाल मनो अलिबाल गुलाबके फूलमें ५ ॥
स० ॥ प्यारी कि ठोढ़ीको बिन्दु दिनेश किधौं बिसराम गुबिंदके जीको । चारु चुभ्यो कनिका मणि नील को कैधौं जमाव जम्यो रजनीको ॥ कैधौं अनंग शृंगार को रंग लिख्यो वरमंत्र बशीकर पीको । फूले सरोज में भौंर लसे किधौं फूल शशीमें लसै अरसीको ६ ॥
क० ॥ प्रीतमकी प्रगट प्रतीत प्रीति भूरीभरी दिपत प्रपूरी प्रभा सुरस अतोड़ी है । गाढ़ है गुनीली किलीरस पतकीली मनौं कैधौं कली कुंजकी मलिन्दनी बिथोड़ी है ॥ भनै रघुनाथभूप रसबश बासीभयो कैधौं श्याम बंदिया रीतिकी मति मोड़ीहै । करत न होड़ीभई सवति निगोड़ी मनो बाल तुव ठोढ़ीकी न जोड़ जगठोड़ीहै ७॥
स० ॥ मैनके मंजुल ऐनके बागकी आबभरी धौं गुलाब कली है । मीतहि जानि मनोज किधौं रचिदीनी

सो चन्दहि चौकी भलीहै॥ भाषे मुनी रघुराज किधौं अनुरागकी आसदिकोरी ढली है। रावरे प्रेमकी नारंगी धौं लसै रुक्मिणि ठोढ़ी प्रभानवली है ८॥

क०॥ मदन के कूप कैधौं रूपके तलाव मञ्जु सलिल प्रसेद नील नीरज फुलायो है। भनत दिवाकर गुलाब फूलि फूलि फूलि तूली नाहिं तूल मूल साख ते सुखायो है॥ कैधौं बैन तौल तौल बोले के विरंचि मुख लालमणि छांटिकेसुपल्लरालगायोहै। चिबुक तिहारोराधे श्यामसनपरोआई ऊबिऊबिडूबत विकूवतधकायोहै ९॥

क०॥ चिबुक प्रकाश कैधौं इन्दिराको मन्दिरहै कैधौं मैनसर जल भौंर छवि छाई है। कैधौं ठोढ़ी काटि के बनायो विधि रति मुख ताहीतें पस्योहै गाड़ लगतसुहाई है॥ कैधौं हरिकण्ठ मणिताको प्रतिविम्ब जानि कैधौं भवकूप नरलोगन बनाईहै। राजसुख यज्ञताको कुण्ड हैयहै शिवनाथ शंका समधि पाइ आहुति बनाईहै १०॥

क०॥ चन्दके चरणपरि उचरो तनक तमकिधौं तमगुणही को पटु अतिखीनो है। लगिरहो लोभ मकरंद काज बलिभद्र शारद मधुप कोकि मनुहरि लीनो है॥ मानो कलधौत पीठिबैठो रसनायकहै पिय लोचनन को परम सुखदीनो है। काम रँगरेज बाध्यो चूनरीको चिह्न एक कैधौंतिय चतुर चिबुक चिह्न कीनोहै ११॥

क०॥ गाड़पस्यो कैधौंयह मदन मतंग मात्यो कैधौं चंचरीक अरविंद रस पाग्योहै। कैधौं श्यामघटा को कनका टूटि गड़िगयो रस बरसावन सरस अनुराग्यो है॥ करतबिहार बैठि बालके बदनपर कुशलसिंह देखो

यह रूपमद दाग्योहै। नैन ठगहाँसी फाँसी डारि मारि रसिकमन ताहीतेचिबुकगाड़कालिमासोलाग्योहै १२॥

क० ॥ चंचरीक चेटुवाको लागोहै चरण चुभि अग्र-भाग तम्रमृदु मंजुकंज ठोड़ीको। प्रतिबिम्ब श्याम तिल मैनके मुकुर कैधों देखियततताको तन मधुगति छोड़ीको॥ रूपको शिथिलतल बूड़िगो सुआगर बीच पजनप्र-ख्यात फल कोकिलकी मोड़ीको। तमको तमोज तम बपुर-ज गोद लीन्हे गोदनाके गोरीगोरे मुखतेरी ठोड़ीको १३॥

क० ॥ शोभन शृँगार रसकीसी छीटसोहै फांक काम-शरकीसी कहो युगतनि जोर जोर। राहुकेसो रदन रह्यो है चुभि चंद्रमाहिं तमीको सुहाग कैधों डारो तृणतोरि तोरि॥ चतुर बिहारीजी को चित्तसो चिहुँटि रह्यो चितये ते केशव दास लेति चित चोरिचोरि। तनक चिबुक ति-लतेरपर मेरीसखी वारोंडारि तरुणी तिलोत्तमासीकोरि कोरि १४॥ इति ठोढ़ी बर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ कपोल बर्णन॥

दोहा॥

विमल कपोल सो गोलकी उपमायहै अतोल॥
मनों मैन हीरानके बिरचे मुकुर अमोल १
शशि मण्डलसम झिल मिलै गोरगोल कपोल॥
माखनके गोला किधौं किधौं मुकुर अनमोल २
वरनवास सुकुमारता सब बिधि रही समाय॥
पँखुरी लगीगुलाब की गालन जानी जाय ३
अमल कपोलन स्वेदकनदृगन लगत यहरूप॥

मानौ कञ्चन कम्बुमें मोती जड़े अनूप ८

क० ॥ मदन महीपके मुकुरहै सोहातगोल माखनके गोल कैधौं हाथे चिकनाईहै। भनत दिवाकर की रूप के समुद्र मांझ रतनके रूरे युग सफरी तराईहै ॥ कैधौं स्वर्ण शील चारु चांदीकी कलाई दैके सुखमा विरंचि रचि हाथसे बनाई है। कैधौं आसमानते मयंक है देह होय राधिका तिहारे ये कपोल ठहराई है १ ॥

क० ॥ मुकुरसे मंजुल झलकिरहे माणिक ज्यों हँसत परत गाड़ अमल अमोलये। कमलकी कोमलाई ला-गत न नेक जामें रसभरे चीकने लटेसे वने गोलये ॥ गदगदे गोरे भोरे कठिनई थोरेथोरे अरुणाई वोरेचोरे चितहिं विलोलये। अधरनके प्यारे कैधौं मानहूंके तारे शिवनाथ छबिवारे चंद निरखि कपोलये २ ॥

क० ॥ हरी अच्छ लच्छ करतलनि समान स्वच्छ राजत रुचिर ताते नाहीं टारियतुहै। चंद्रसा से चारु अति कोमल कमलहूते दुखन दिनेश देखि मीड़ मारि-यतुहै ॥ ऊपरसुहाग ढिगभाग अनुराग रूप विनादेखे दृगनि उपास पारियतुहै । लागिये रहति मुसक्यान ताते लोल दोऊ विमल कपोलपै मुकुर वारियतुहै ३ ॥

क० ॥ चपलाके ऐसे चारु चमके है छवि पुंज छेद निसरत झीने घूँघट निचोलहैं। कालिदास आसपास तरन तरौननकी ज्योति किरणावली ललित अतिलोल हैं ॥ कान्ह अवलोकत वदन प्रतिविम्ब निज कनक सरूप मानो मुकुरअमोलहैं। लेतमनमोल करें दृगनकी तोल ऐसे गोरे गोरे गोल स्वच्छ प्यारीके कपोलहैं ४ ॥

स० ॥ नाहिं जानिये कौने विरंचि रचे समता कहां माखन गोलनकी । किधि कामके दर्पनकीहो कहों सुखमा इनके सँग तोलनकी ॥ कमलापति देखि छकेसे रहे सुधि नेकुरही नहिं बोलनकी । तब कैसे कै भाषिसकै उपमा अनमोल ये गोल कपोलनकी ५ ॥

क० ॥ सुरभ सुवर्ण जासु पुहुप गुलाब कंज आदर समाजे मनो मदन घनेरेहैं । डोलत सुलोलगोल गोलक अमील झलक मानो प्रभा ताल नील कमल बसेरे हैं ॥ भनै रघुनाथ दीप्तराशहै प्रकाश पुंज आसन मनोजकै सदा सो मेरेहरे हैं । पियमन लोल मोललैन केलिबास कीधौं गोल गोल असल कपोल तिय तेरे हैं ६ ॥

क० ॥ सुखमा भरतभरे प्रेमकैसे सांचे ढरे सुधालौं सुधारिधरे दर्पन सुदेशहैं । आभाकी निकाईहै कि केदार कैधौं कांतिनके तीनोंपुर रूप परिजनके नरेशहैं ॥ रपटत लोचन चिलकदेखि बलिभद्र झलकत चौंधे किलकानिके ननेशहैं । गोर गण्डमण्डल अखण्ड ज्योतिवन्त तेरे छबिके छपाकरके द्युतिके दिनेशहैं ७ ॥

स० ॥ शोभाकी सांचसे मैनकी ढारी लसे युग आरसी आनँद खानकी । रवरे डीठिको बैठिबे को किधौं फाविरही फरसै फटिकानकी ॥ भाषै सुनी रघुराज किधौं सरसी युग सोहिरही सुखमानकी । रुक्मिणि के किधौं गोल कपोलपै राजै करै उभयचन्द्र प्रमानकी ८ ।

क० ॥ सोहत हे चिन्तामणि नगन जटित दि० कंचनकी वेली कैसे सुंदरिनवेलीके । सकल जगतमाँ एक सुकृतीहो तुम नायक नवल ऐसी नायका नवेली

के ॥ एक ठौर देखौ छवि आपनी और उनकी जू प्रति-बिम्ब हैं आप रूप आनँद की केली के। सुवरण आरसी से शीशे से अमोल कैसे गोरे गोरे गोल हैं कपोल अलबेली के ९ ॥

स० ॥ केसरि के सने चन्द के बीच रचे मनो लाल गुलाल चुनी गन। यों उजराई पिराई ललाई मलाई-हू के न मुलाइमी है तन ॥ लोने सलोने से सोने से शोभित होने न ऐसे बिधाताहू के धन। बोलत नाहिंने डोलत लाल सुगोल कपोलन मोल लयो मन १० ॥

क० ॥ कैधौं नैन नटुवाके नाचिवे की रंगभूमि शोभा गृह आंगन अनंग अंग लोल है। कैधौं है अनंग अंग बेलिके बिषद खेत देखे सुख देत द्युति असल अमोल है ॥ पिय मन मल्ल के अखारे कैधौं नीलकंठ वारे जिन ऊपर मुकुर गोरे गोल है। कैधौं कोलमुखी मोह मंत्र ते कलित औन भूषण फलित तेरे ललित कपोल है ११ ॥

क० ॥ केसरि कपूर कंद कीन्हे द्युति मंद अति आनँद के कंद होत चंदहूले जंग है। अमल कमल दलहू ते अति कोमल जे राजे बीच बीच इंद्रगोप कैसे रंग है ॥ प्रेमसों रहत नित पुलकित मुलकित झलकत छलकत छवि श्रुति संग है। गोरी तेरे लोल लोल ललित कपोल तामें लाल श्वेत पीत बहु रंग के तरंग है १२ ॥

क० ॥ कैधौं रूप धरणी में राजत युगल खण्ड कैधौं मीन केतन के मुकुर सुढारे है। कैधौं हरि लोचन तुरंगन को लीला थल कैधौं सरसीरुह के दल है निहारे

हैं ॥ परसराम कोमलमधूकसे चंपकसे चारु चीरचन्द्रमा को कोरिकै निकारेहैं। प्यारीतेरे गोल गोल ललित कपोल स्वच्छ नीठ नीठ रचिकै बिधाता करझारेहैं १३ ॥

क० ॥ कैधौं हरि मनोरथ रथकी सुपथ भूमि मीन रथ मनहू की गति न सकत छ्वै। कैधौं रूपभूपतिको आसन रुचिर रुचि मिली मृगलोचन मरीचिका मरीची क्वै॥ कैधौं श्रुतिकुण्डल मकरसर केशवदास चितयेते चित चकचौंधिकै चलत च्वै। गोरेगोरे गोल अति अमल अमोलतेरे ललित कपोल कैधौं मैनके मुकुर द्वै १४ ॥

क० ॥ मुनि मन मंजु मौज मिश्रित मजेजदार पजन प्रत्यक्ष देत द्युति महताबीजे। रद छद छिद्रधर अधर तमोर दाग चुंबन सरस रोस रसिक किताबीजे ॥ बिधुमुख बरण सुवर्ण पीक पानन की भासित जिन्हों में बिधि निधि दिखलाबीजे। झलक झलान झला झल झल झलकत अलि अमल कपोल गोल गहब गुलाबीजे १५॥

इति कपोल वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ कपोल गड़हा वर्णन ॥

स० ॥ कोरें हिये दृग कोरहीरावरे कासों कहौं कोउ होत न आड़े। खेल खरीहु मेटै ढिये भौंहै रहै हमसेनित रारिसी माड़े ॥ काहेको काहूको दीजै उराहनो आवैइहां हम आपनी चाड़े। पै पलमैं मुसकान समयहमैं लेती हैं मोल कपोल की गाड़े १ ॥

स० ॥ चन्दमुखी चपलासी लली लखि लाल मनोज की मौजन बाढ़े। द्वै रस हासके कूप किधौं पाति प्रेम

के पूरन को यह खाढ़े ॥ योंरघुनाथ बिलोकै लसै मुसक्यातही देती सुधा जनुकाढ़े। मोहती मोहनके मन को मन मोहनी किये कपोलकी गाढ़े २ ॥

स० ॥ नैन गड़े तो गड़े उनमें छबि मैनके ग्रानन की सरसातिहै। जो कुचकोर कठोर गड़े तो गड़ो वह तो कठिनै दिनराति है ॥ कै अलबेलिपने अलबेली जबै इतको मुरकै मुसकाति है। कौन अचंभोकहो यह याके कपोलकी गाढ़ हिये गढ़ि जातिहै ३ ॥

क० ॥ भँवर परत जल योबन के जोर कीधौं जामें छबि बूड़त सकल प्रमदान की। निकसि सकैन बल करिहारे बलिभद्र नैनन गनायबेकी ओदीविधिवानकी॥ उदित नवीनहोत रचित भरतमानौ रूपको निवासकीधौं कुण्डी सुखदान की। पियमन पारिद अटकिबेकी गाढ़ कीधौं गाढ़ गण्ड मण्डल मृदुल मुसकानकी ४ ॥ इति कपोल गड़हा वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ कपोल तिल वर्णन ॥

दोहा ॥

घूँघुट जालरु दंड भ्रू नयनन मुलह बनाय ॥
खैंचत खग जग दृग तिया तिल दानो दिखराय १
तिय कपोल तिल लसन को मैं यह जान्यो हेत ॥
रूप खजाने की मनो हबशी चौकी देत २
बिमल अमोल कपोल पै लसत गोल तिल श्याम ॥
मनो शरद के चंद पर राजत शालिग राम ३
तियजु कपोल अमोल तिल मणि बरणत मनमोद ॥

गई कहूँ धरि नागिनी कुँवर इंदु की गोद ४
गोरे मुखपर तिल लखौं मेटत है दुख दंद ॥
देखि परत जनु भानुसुत रह्यो गोद ह्वै चंद ५
पानिप भरे कपोल यह सुरसरि सम जगदीश ॥
तिल नहिं तामें देखिये बूड़त मन को शीश ६
तिय कपोल कंचन तुला इक पलरा तिल डारि ॥
तौलन को सम कोउ नहीं रह्यो बिरंचि बिचारि ७

क० ॥ अमल कपोल पै अमोल गोल श्याम रंग आय कै अनंग कैधौं पुतरी समाई है । भनतदिवाकर निशाकर कलंक कैधौं चंद्रमा के धोखे मुख मण्डल में आई है ॥ कैधौं कमलासन सँवारि छवि आनन के नजरि न लागै याते कालिमा लगाई है । कैधौं कील नीलमणि राधिका तिहारे तिल कैधौं कै सबील जादू लाल को लोभाई है १ ॥

क० ॥ कैधौं रूप राशि में शृंगार रस अंकुरित कैधौं तमकन सोहै तड़ित जुन्हाई में । कहै पदमाकर किधौं काम कारीगर नुकता दियो है हेम फरद सोहाई में ॥ कैधौं अरबिंद में मलिंद सुत सोयो आनि ऐसो तिल सोहत कपोलकी लुनाई में । कैधौं पस्यो इंदुमें कलिंदी जलबिंदु अरु गरक गोबिंद कैधौं गोरीकी गोराई में २॥

क०॥ कैसोसुधा सरमांझ फूल्योहै कमलनील जैसो वंकअंकमें मयंक मुखहेरोहै । कैसोवंक अंकमें मयंक मुखहेरो कह्यो जैसोमैन मुकुरमें मोरचा करेरोहै ॥ कैसो मैन मुकुर में मोरचा करेरो कह्यो जैसो अलि कमल में गहत बसेरोहै । कैसो अलि कमलमें गहत बसेरो

कह्यो जैसोरी कपोल पै अमोल तिल तेराहै ३॥

क०॥ शोभन शिंगार रसकीसी छीटसोहै फोंक कामशरकीसी कहौ युगति न जोरिजोरि। राहुकैसो रदन रह्यो है चुभि चन्दमाहिं तमीको सुहाग कैधौंडारो तृण तोरितोरि॥ चतुर बिहारी जूको चितसो चिहुंटि रह्यो केशवदास लेत चितयेतेचित चोरिचोरि। तनिककपोल तिल तेरेपरमेरीआली वारोंडारितरुणि तिलोत्तमासी कोरिकोरि ४॥

क०॥ फटिकशिला में नीलमणि इक मुद्रितहै कैधों खेत रजित सनेह बीज बोयो है। कैधों रसहास्य में शृंगारने अगार कियो कै तूं जस जाल डाल अयशहि गोयोहै॥ भनैरघुनाथ कैधौं यह तिल तेरो गोल गोलही कपोल पै अमोल पीत मोयोहै। कैधों क्षीरसिंधुमें गोबिन्द यह राज्यो किधौं मन्द आन चन्द में आनन्द मन सोयोहै ५॥

क०॥ फूले पारिजातमें लखातहै मधुप कैधों सुखमा सरोवर में रसराज पैठोहै। रतिके मुकुर पै धरीहै नील मणि कैधौं कामिनी के वदन परम छवि जैठोहै॥ श्रीपति रसिकराज सुन्दर गुलाब बीच मृगमद बिन्दुरूप परम परैठोहै। कोमल कपोलनपर तिलहै अमोलमानो पूरण मयंक में निशंक शनिबैठोहै ६॥

क०॥ बांकीभौंहैं सोहैंबांकी चितवनि मनमोहै बांको मोती बेसर अधरपर फरको। कहै कविगंग तेरेउचकि उचकि कुचगत्तिन रहत निरखत भरभरको॥ आनन की उपमाते सकल बिकलभई भली शोभा लेरह्योतिल

कपोलपरको। पंकजकेबीच आली अतिगो समाइतहां मानोरी बिछुरि छौना बैठ्यो मधुकरको ७॥

क०॥ बदन सरोरुह के संगही जनमजाको अंजन सुरंग समतान परसतहै। महारूखे मुनिनको मन चिकनायजाय सेनापति याही जबनेक दरसतहै॥ रूपहि बढ़ावै रसिकनहूं के मनभावै नेह उपजावै पै न आप बिनसतहै। आली बनमाली मनफूल में बसायो तेरे तिलहै कपोलसो अमोल बिलसतहै ८॥

स०॥ रूपकी राशिमें कै रसराज को अंकुर आनि कढ़्यो शुभहोना। कै शशिने तम ग्रासकियो तिहिंको रह्यो शेष दिखात सो कोना॥ प्यारीके गोलकपोलनपै द्विजराजिरह्यो तिल श्यामसलोना। कै मधुपान पस्यो अलमस्त किधौं अरविन्द मलिन्दको छौना ९॥

स०॥ लखी आज अचानक इंदुमुखी चलीसामुहें आवतिही कढ़िकै। उघस्यो पट घूंघुट पौन प्रसंगगेनेन चकोर तहां मढ़िकै॥ कमलापतियों तिल शोभित होतहै गोलकपोलहि पै चढ़िकै। जनुसुंदरिको मुखइंदु लसै तिल एकमयंकहूते बढ़िकै १०॥ इति कपोलतिल वर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ श्रवण भूषण सहित वर्णन॥

दोहा॥

सीप श्रवण या रमनि के कैसे होयँ समान॥
इहिप्रसंग तजि मुकुत गन यामेंबसे निदान १
मुकुत भये घर खोइकै बैठे कानन आय॥

अब घर खोवत औरके कीजै कौन उपाय २
जटित तख्योना श्रवणमें इहिविधि करत हुलास ॥
पितातरनि कीन्हे मनो पुत्र करन घर बास ३
जटित श्वेतमणि सोलसै तरल तख्योना कान ॥
हलत चलतमेंझिलमिलै दिनकरकिरणिसमान ४
लसत श्वेत सारी ढँप्यो तरल तख्योना कान ॥
पख्योमनो सुरसरि सलिल रवि प्रतिबिम्ब बिहान ५
शालति है नट शालसी केहूं निकसति नाहिं ॥
मनमथ नेजा नोकसी खुभी चुभी मन माहिं ६
झीने पटमें झुलमुली झलकति ओप अपार ॥
सुरतरुकी मनु सिंधु में लसति सपल्लव डार ७
करनफूल द्युति धरनदुहुं करन लसत इहि भाय ॥
मनो बदन शशिके उदय नखत दुहूं दिशि आय ८

क० ॥ कंचनके पत्र कैधों मुक्ता जड़ाय दीन्हे प्यारी के बदन मैन मदसो उयोपरै । वारिज दलन ओसकन से बिराजमान शिवनाथ मंजुलकपोलन छुयोपरै ॥ बीच बीच शीतलाके दागनमें ढुरिरह्यो जुरिकै उमड़ि आनि कंचन दुयोपरै । राहुकेरदनके छदनबीच चंदनते छलकि छलकि अमीबुंदन चुयोपरै १ ॥

स० ॥ कीधौं सुधाधर जू दुहुंओर सुधारधरे सुसुधा के है दोनहै । कैधौं निशान ये लोचनबानके भौंहकमान के कामके त्रोनहै ॥ कोनहै जोनहिं मोहही देखि किधौं सर्वज्ञ है तौनही मौनहै । भौनहैज्ञानके मानके दोन है श्रोनहै तीयके जीयके रौनहै २ ॥

क० ॥ कीधौं है अतिथि पियवचनके रसराज कीधौं

मित्र लोचनके बिमल बिशेखिये । सोनेकैधौंदोने रति कामअंगकीबेकाज सुधाधर आसपास धरेसोई देखि-ये ॥ पूरणमुदित शिवपूजनकरत चंद कनक अरधताके दुहूंओर पेखिये । तीक्षणकटाक्ष शरगत अवरोधकीधौं सुंदरीके सुंदर श्रवण युगलेखिये ३ ॥

क० ॥ कैधौं सुर पण्डित असुर गुरु दोऊ दिशि शशिके श्रवणलागे मंत्र मतकातहैं । कैधौंले सुरद्रुमके सुमन समेटि प्रभा सुंदर कपोलपर कला कतरातहैं । कैधौं रबिछील सुधाबुंददै जमायो कैधौं छबिके कमल कैधौं नवल सुहात हैं । कैधौं मनभावनकी साखी ले करनशाखी प्यारीके करणफूल कीन्हों मनमात हैं ४ ।

क० ॥ काननमें कुंदन के नगन जटितसोहैं अम्ब छपाये बहुतोल महागथके । कालिदास ललित कपोलनके योगलसै कैसे बरणत घनश्याम सहजथके । पाछे पस्यो राहु ताते छपे हैं कुरंगदृग अनुमान हो हिये अनुमानपथके । छबिआई आननमें काननतरौना वाके सोहत सुहाये मानों चाकचंद रथके ५ ॥

क० ॥ जटित जराय जगमगत सहसकर बलिभद्र वृषकि कुमारकाके भानहैं । धरत त्रिधार हैं अपारखत नैननिके तीरचा अनंग आनरोप्यो सरसानहैं ॥ उपमा अनंत मनरंचन बिहारी रती ताण्डवके तार जिन्हैंजा-नत सुजानहैं । चंदरथ चरणकी कामचक्कवैके चक्र कैधौं तियतरल तरौना तेरे कानहैं ६ ॥

क० ॥ सीपके समानकान रंचक लखात प्यारी कैधौं जेवधूरी काम धाम में लगायो है । मनत दिवाकर सुवि-

कस्यो सरोज कैधौं रूपके तलाव में चटकके फुलायो है॥ तरकी जटित ज्योति झलक बसन श्वेत रविके मयूष मानों जाह्नवी में छायो है। कैधौं है वजीरतारा चन्दके नजीक बैठो कैधौं है फनूस ढिग गादी के धरायो है ७॥

क० ॥ बदन प्रयाग गंगधारवर वन्दी वेश पाठोंकेश यमुन सुभाल सुखदेनीके। शारदा सुछूटीलरी माणिक मणिननकी टूटी शशिफूलते कपोलपिकबैनीके ॥ भन रघुनाथ कर्णराजत सुदेश युग्म सहित सुगंध चन्दनाद मृग नयनीके। कैधौं कंज एक एक दोनों ओर फूलिरहे अलियुत राजैं तटयुगल त्रिवेणीके ८॥

स० ॥ बसि वर्ष हजार पयोनिधि में वहु भाँतिनशीत की भीतसही। कवि देवजूत्यों चितचाहघनी शुचिसंगति मुक्तनहू की गही॥ इहि भाँतिन कीन्हो सवैतपजाल सुरीत कछूक न बाकीरही। अजहूंनइते परसीपसबैइन कानन की समता न लही ९॥

क० ॥ पियगुन आसन सरोजके सिंहासनहैं कीधौंवि-विश्वासन सनेह रसभरेहैं। साँच झूठ तौलिबेकोतुलाके पलाहैं कैधौं किंशुक के पातसे लपटिपाछे परेहैं ॥ कैधौं विविचक्र सह चक्रके सुधारे कैधौं कुण्डलकलाकी निधि विधिकर धरेहैं। करनके छिद्रकै अछिद्र छविगायेकवि कंचनके सीप मानो मुकतासेजरेहैं १०॥

स० ॥ प्रेमकथा रसपीवनको युगकंचन प्याल किधौं भल भावैं। आयकै बैन अन्हायबे को किधौं बावली है अति मोद बढ़ावैं ॥ भाषै मुनी रघुराज किधौं सुखमा के समुद्र की सीप सोहावैं। रावरे के गुण के

किधौं मौन सो रुक्मिणी श्रवण किधौं छबि छावैं११ ॥

क० ॥ रूपके अनूपम की राखी है ध्वजा उलारिसारा काम यंत्रकी कि कंचन के योतहै । पियकेबचन स्वाबद-न की सीप युग सुनतही मोदमुक्ता हलतनोतहै ॥ लोच-न कुरंगनको कीन्हों है परिष धारबलिभद्र भाँपे नभँपत लोल होतहै । सुसके सुमनहै श्रवण तेरे सुन्दरी किदरी है सोहाग राग शारँग किसोतहै १२ ॥

स० ॥ दास मनोहर आनन बालको दीपति जाकीदिपै सब दीपै । श्रौन सुहाये बिराजि रहे मुकताहल संयुत ताहि समीपै ॥ सारी महीनसो लीन बिलोकि बिचारतहै कबिके अवनीपै । सोदर जानि शशीहीमिली सुत संग लिये मनो सिंधुमेंसीपै १३ ॥

स० ॥ हेमसो अंग हियो हुलसै हरिनाछी सुनेहनयो मन बंधै । ठौरही ठौर जगी मदनद्युति ताहिर प्रेम के शायक संधै ॥ बीरी न होय बिराजत कानन आनन को मन लायक धंधै । लैकर भांभबजावन को सुचढ़यो मनो चन्द सुमेरुके कंधै १४ ॥

क० ॥ करन करीहै जैसी करनी करन दोऊ चरन विचारि दीन्हींकंचन को दानिये । औरऊकरनएकपिता प्रतिपाल कीन्हों बाँहको सुनी है हमकथा मृदु बानिये ॥ कामिनी करन दोऊ करतसो घटिनहीं करन बिहार समै सेज सनमानिये । वे करन पिता भक्त मन बच कै शिव नाथ ये करन पतिके वचन भक्ति जानिये १५ ॥

क० ॥ रागनिके आगर बिराग के बिभाग कर मंत्र के भँडार गूढ़ रूढ़ के रवनहैं । ज्ञान के बिवर कैधौं

तनकतनक तन कनककचोरी हरि रस अचवनहैं॥ श्रुतिनके कूप कैधौं मनके सुमित्र रूप कैधौं केशवदास रूपभूप के भवनहैं। लाजके नयन कैधौं नयन सचिव कैधौं नयन कटाक्ष शर लक्ष्यके श्रवनहैं १६॥

क०॥ खुटिला खचित मणि सोहत वनकवनि कनक कलश रुचि रुचिर रवनहैं। तनक २ तन तीतरी तरल गति मानहु पताका पीत पीड़ित पवनहैं॥ कालिंदीके कूल २ जात जल केलि कहँ कालिही सराहे मेरे कालीके दमनहैं। केशव दास सुन्दर श्रवण ब्रज सुन्दरीके मानों मन भावते केभावते भवनहैं १७॥

क०॥ पहिरे करणफूल देखीहै कुमारी एक सुनहु कुंवर कान्ह शोभै सुख दानिये। तिनके तनकीज्योति जीते ज्योतिवंत सब केशव अनंत गति कैसेउरआनिये॥ मानो कामदेव वामदेवजूके बैर काम साधे शर साधना निलक्ष्य उर मानिये। दुहूंदिशि दुहूंभुज भृकुटी कमान तानि नयन कटाक्ष बाण वेधतन जानिये १८॥

क०॥ रूप सिंधु ताके युग सीप गड़हाके युत कैधौं हिम शिखरगुहाके द्वार वांकेहैं। अष्टादश जो पुराण कथा केहू थाके बलताते विधनाके युगनव अंकटाकेहैं॥ कैधौंमन मन्दिर सुशालाके विशाला कैसे झरोखे धौंमुख कंज दल अलगाकेहैं। यशताके नित्यताके पताके सेदोऊ जाकेनाथकुल कानताके कान राधिकाकेहैं १९॥

क०॥ कंकन खनक पग नूपुर ठनक कटि किंकिनि झनक घनी घूम घहरातहैं। अंककी तचक परयंककी मचक लघु लंककी लचक हिये हारहहरातहैं॥ सेनैकवि

मान विपरीत की झलक डुलै बेसरि अलकछबि छूटि छहरातहैं।सुन्दरिकेकाननमें पानयोंतरफरात मानों पंच-बानके निशान फहरात हैं २० ॥ इति श्रवण भूषण सहित वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ नासिका भूषण सहित वर्णन ॥

क०॥केशवसुगंधश्वाससिद्धिनकीगुफाकैधौंपरमप्रसिद्ध शुभ शोभन सुकासिका। कैधौं मन मथमन मीनकी कुवेनी कैधौं कुन्दनकी सींव लोल लोचन बिलासिका॥ मुकता मणिन की है मुकुत पुरीसी कैधौं कैधौं सुर से-वत है काशी की प्रकासिका। त्रिभुवन रूप ताको तुंग तोयनिधि ताकेतोयकी तरंगकै तरुणि तेरीनासिका १ ॥

क० ॥ कीर कैसे ठौर पेख परम प्रकाश मान सुरभि समीर के झकोर झहरातहैं। भनत दिवाकर बुल्ला श्वेत मोती संग कैधौं पंचबान के निशान फहरातहैं ॥ कैधौं वेध वायो वेध रूप अति वेध हेतु कैधौंटूटेचंचरीकतुण्ड दरशातहैं। बेसरि के वेसता बखाने कवि कौनराधेनाक के निहारे प्यारे श्याम तरसात हैं २॥

क० ॥ कुन्दन लै बिरंचिने नकासी मनो ताके बीच दीन्ह्यो जड़ कुलिश दुतिन्द्रका। ताके आसपास सजे शशिमणि चन्द्रकांत तारागण वृन्दमें बिराज्यो नखति न्द्रका ॥ भन रघुनाथ रमारति लखिमोहे जाहिलजतन नाहिं देखिभामिनी सुरिन्द्रका। छबिन धनिन्द्रकानमोल सम जाके यह कृष्णचंद्र मोहन किशोरी शिरचंद्रका ३॥

स० ॥ कुण्डल रूप अनूप बिराजत ताबिच मोती

की ज्योति प्रकासी। सो जगदीश विलोकत आनि गड़ी हिय में नाहिं जात निकासी॥ जाहि लखे ते फँसे मुनि कौशिक एक बच्यो जो रह्यो अविनासी। राजति प्यारी की नासिका में यह नत्थ किधौं मन मत्थ की फाँसी ४॥

क०॥ कैधौं पिय नेह मई कीरति हसन लेकै भूले हेम भूले भूले ध्यान समरथके। कैधौं मति मन खग फन्दा तामें मित्रवश बैठि कवि कुंज सो मथा पै मन मथके॥ ऐसी भाँति देखियेरी मोहे मन मोहनजू सूरत बखान करौं कहां लौं अकथ के। भूले ज्ञानगथ के औ लोकलाज पथके सुकौन नैननथके निहारे तेरीनथके ५॥

क०॥ कोऊ कहै नाक हासी कोऊ मनमथ फांसी कोऊ कहै देवमाया चक्रसों वनायो है। मुकताअनूप लाल चूनीछवि रूपनथ कंचन के तार ताको सुगढ़ गढ़ायो है॥ दीप जीत शुकजीत चंपक कलीको जीत नासिका विजय जय कवि पै पठायो है। शीलको सुयश तीन लोक को सुहाग निज तेज में परोय मैन भूषण दिखायो है ६॥

क०॥ कैधौं प्रेमरंगको तड़ागहै तरंग भरो कैधौं सुधा सिंधु प्रीति मंदिर घनीको है। छेमको छलासो मैन फन्दकी कला सो किधौं रति कमला की मति करन सो फीको है॥ भन रघुनाथ मान सौतिन को मथन निषंग पंच बाणन की तीषन अनीको है। वेधनीय हीको भौन रसनूपजीकोजुलमकरतसुतीकोनीको वेधनथुनीकोहै ७॥

स०॥ शालत है नटशाल हियो सरशाल विनिंदित तीक्षण ताई। देखतहीमन भूलिरह्यो कहिये किमि ना-

सिरु बेध सुहाई ॥ यों शिवनाथ बिराजत गाजत लाजत मोतिन बेधि निकाई। जानि बड़ो बित कामना ओर मनो कमलागृह सन्धि चलाई ८ ॥

क० ॥ सुनि चितचहै जाके कङ्कन की भनकार करत है सोईबात होत जो बिदेहकी। शेश भनि आजुहैं सुकालिह नाहीं कान्ह जैसी निकसी है राधेकी निकाई कछू नेह की ॥ फूल कीसी आभा सब शोभाले सकेलि धरी फूलि ऐहौलाल भूलि जैहौ सुधि गेह की। कोटि कवि पचै तऊ बरणी बनै न फबि बेसरि उतारे छबि बेसरि के बेह की ९ ॥

क० ॥ शोभा सुख सदन को बातयन बलिभद्र मानो महा मोहनी पिपीलिका को गेहहै। मैन पंचबाण को छबीलो छिद्र छाजत है देखिबे को देहमें अदेहजू को देहहै ॥ पियमन रोकिबेको निडर किलीको रन्ध्र सुखमा मधुर को रुचिर जासों नेहहै। मैनके मवास में धनुर्द्धर को मोरचाहै कैधौंबाम नासिका में बेसरिको बेहहै १० ॥

क० ॥ सुन्दर सहज सुमनन की सुगंधन की निरमोल नासिका निकाई ते सँवारी है। प्रीतम शरीर माहिं धीरन धरत देखि सकुच की भीर कीर बिपिन बिहारी है ॥ कैधौं कलधौत महामुनि के कुसुम जीति मैन चैन सिंधु सुखसेतसी निहारीहै। मुकतालललितकैबालितमनि कंठ मानि छबिकी तरंग थिर नासिका तिहारी है ११ ॥

क० ॥ शोभाको सकेलि ऊंची बेलि बांधी बलिभद्र राख्यो सम लोचन कुरंगनि को रोस है। दीपति को दीप मुख दीप को सुमेरु यह मृदु मुख सारस को सिफा

कंद जोस है॥ कलप तरोवर की कली किधौं गंध फली उपमा अनूपनि को विविध निसोस है। तिल को सुमन है कि नासिका तरुणि तेरी सुरन की शरण की सोरभको कोस है १२॥

क०॥ सुरपति तीकी द्युति फीकी होत जाहि देखि रहत रतीक ना गरूरता रतीकी है। तीनलोक की कहौं जीकी होय याते अति नाहिंमें निकाइ द्रौपदी की नाक नीकी है॥ भन रघुनाथ चारु अमल सुढार बेश अति सुखदान कान्ह प्राणपति हीकी है। वर शुभ नासा ते बुलाक नथ बासा मंजु परम प्रकाश पुंज नासा लाड़िली की है १३॥

स०॥ तीनहूं लोककी दीपति संचि रच्यो करसों तिल फूल धौंमार है। कै युग अम्बुज के मधि सोहि रही भल चम्पकली सुकुमार है॥ मारके कीरकी तुण्ड किधौं किधौं काम को तूणरच्यो करतार है। भाषे मुनी रघुराज किधौं रुकमीनकी नासाविराजै अपार है १४॥

क०॥ तिलको कुसुम ताकी सम कहा कीजियत कहांसौज दीजियत कीरफल मूजी की। कामकेतु नीर कोऊ खाली वरनत आली ताकी कहा चाली जाकी बात बिन पूंजी की॥ शंभुराज कहै लाड़िली के अंग वरणत पावतन थाहहोति गिरागति लूंजी की। मानो रूप निधि सो वदन रचि विधिराखी नासिका सुलुफ दै कुलुफ बिचि कूंजी की १५॥

क०॥ लगी जब आस तब उतर्यो अकाश हीते सिंधु जलजंतु ग्रास कीनो सुख चीन्हो है। बड़ो हित

कार वाको उदर बिदारि कढ़्यो चढ़्यो मोल भारी बांस सम्पुटन लीन्हो है ॥ कहत किशोर भ्रम्यो देश दिशे श्रोर लह्यो ब्रज चित चोर जिय वारि फेरि दीन्हो है ॥ उरकै सुलाक मोती नासिका बुलाक भयो बढ़्योई चलाक पै हलाक मन कीन्हो है १६ ॥

क० ॥ नीचे को निहारत नगीचै नैन अधर दुबीचै परै श्यामरुन आभा अटकन को। नीलमणि भागकै कै विद्रुम सुराग पुखराग कै रहत बिध्यो छटा छटकन को ॥ देव बिहँसत द्युति दंतन जुड़ाति ज्योति निर्मल मुकत हीरालाल गटकन को। थिरकि २ थिर थामै पटतानै तोरि बानै बदलत नथ मोती लटकन को १७ ॥

स० ॥ नासिका चारु बिलोकत ही बनजाय समोहन कीर छपाने। बेसरि को मुक्ता छबि देत मनो कमला गृह तोरण ताने ॥ श्वासन ते उस कै पुटवाल कहै कबि कोमल होत पषाने। लै सिसकी मुसुकावत भायन घ्राण सुगन्धन की पहिचाने १८ ॥

स० ॥ बनबासी किये शुक पीठि निवासी तुणीर जो बीर बिलासिका है। तिल सून प्रसूनहू खेत गिरे गुहा सेवक सिद्ध निवासिका है ॥ भुव तेत सुनैन के बाण लिये मति बेसरि की सँग पासिका है। बहु भावनि की परकासिका है तुव नासिका धीर बिनासिका है १९ ॥

क० ॥ वदन सुराही में छबीली छबि छाक्यो मद अधर पियाले छिन २ में गहत है। अलसाय पौढ़त कपोल परयंक पर कबहूं गजक जानि चाखन चहत है ॥ प्रेम नग्रसाथी येतो सदारहै अंकभरे छक्योई रहत

कोऊ कछूना कहत है। भुकिपरे बात के कहेते अनखात न्यारो बेसरि को मोती मत वारोई रहत है २० ॥

क०॥ छांड्योजल सागर विंधायो तन आप आय अधर के बीच रह्यो और नाचहततहै। विधि के सँयोग वश आनि पस्यो बेसरि में वन्योहै बनाव शोभा अद्भुत गहत है॥ पूरण प्रताप चंद पायोहै मुखारविंद एतो कहां लहै कंत जेतो तूलहतहै। प्यारी के वदन पर मदनजूको मदपिये मोतीमतवारो सदाभूमत रहतहै २१॥

क०॥ प्यारीतन भूमि तामें रूप जलसागर है यौवन गँभीर भौंर शोभा को धरत है। दीपत तरंग नैन वारिज से डोलैं तहां उरग सी वेनी जिय देखत डरतहै॥ आलम कहत मुख कहर गहर राजै तामें मन मेरो यह दौरिकै परत है। बेसरि को मोती मानों कर है सिकंदर को बार २ भूमि २ मनै सो करत है २२॥

क०॥ राधिका के नथकी अकथ कथा सुनि जाहि नेकहू बिलोके को न मुनिहोत वस में। कहै शम्भुराज लसै मुक्ता बिशाल एक ताके बीच लाल दुरी भूलत अरस में॥ बेलि फूल चाप मूठि कली दै गुलाब सर केशर को फर गाड्यो यमके सुयस में। कुचजानि हर मेरेजान पंचशर तक काल तीर तानि राख्यो नाशा तीरकस में २३॥

स०॥ मदमाती मनोज के आसव सों अंग जासु मनो रंग केसरि को। सहजे नथ नाकते खोलि धरी कस्यो कौन धों फंद या सेसरि को॥ कमलापति हेरि हिराय रहे लख्यो और नहीं इहि कीसरि को। करि कौन

उपाय वचौं हे दई मोहिं बेधत बेधया बेसरिको २४॥
क०॥ केशव दास सकल सुबास को निवास सखि कैधौं अरबिंद मधि बिंदु मकरन्दको। कैधौं चन्द्रमण्डलमें शोभित असुर गुरु किधौं गोद चंद्रजूके खेलै सुत चंदको॥ बाढ़ैरूप कामगन दिनदूनो होत कैधौं चंदफूल सूंघत है आनँद के कंदको। नाक नाइकानि हूं ते नीको नकमोतीनाक मानों मन उरझि रह्यो है नँदनंदको २५॥
क०॥ सुंदर सीधा पनाके बिधुबदना के भाव कैधौं एक अंक रूप अद्वितीय ताके हैं। सरल मृदुताके मानों एकही स्वरूप सौरभ सुगंधताके खान समताके हैं॥ कैधौं कामदेव ताके इत्र दान पात्र ताके रेख छेक छोके करे अप्रमाण ताके हैं। एक ही कलाके रूप कला टारै चंद्रमाके कहै नाथ नासिका सुबासिका प्रियाके हैं २६॥
इति नासिका भूषण सहवर्णन सम्पूर्णम्

अथनेत्रवर्णन॥

दोहा॥

कंजन खंजन मीनमृग मद गंजन युग नैन॥
रतनारे कारे चपल अनियारे सुख दैन १
कारे कजरारे अमल पानि पधारे बैन॥
मत वारे प्यारे चपल तुव डवरारे नैन २
चम चमात चंचल नयन बिच घूंघट पटझीन॥
मानहुं सुर सरिता बिमल जल उछरत युगमीन ३
अमी हलाहल मद भरे श्याम श्वेत रत नार॥
जियतमरत झुकि झुकिपरत जिहिचितवत इकबार ४

दृगनलगतेबधतहिमाहिं विकलकरतअँगप्यान॥
येतेरे सबते विषमइ क्षण तीक्षण यान ५
साधत्त इक छूटत सहस लगत अमितकैजात॥
अर्जुन सम बाणावली तेरे दृग करिजात ६
अनियारे दृग बाणकी रस निधि बाँकीचोट॥
रुकत न रोके कैसहू धीरज ढालनओट ७
ज्योंबँदूक दारू दबे सहस गुनो कैगौन॥
त्योंदृगलाज दबेन की चोट सँभारे कौन ८
कसक बनी तब ते रहै बँधतन ऊपर खोट॥
दृग अनियारेन कीलगी जबते हियमें चोट ९
तेगा दृगतिय रावरे पानिप बार सुघाट॥
अंजन बाढ़दिये बिना करत सौगुनीकाट १०
योंछबि पावत हैं अरी अंजन अंजित नैन॥
सरसबाढ़सैफन धरी जनुसिकलीगरमैन ११
रेमन रीत बिचित्र यह तिय नैननकी चेत॥
विषकाजरनिजखायके जिय औरेनकेलेत १२
फिरिफिरि दौरत देखियत निचले नेक रहैंन॥
करत कजाकी कौनपै ये कजरारे नैन १३
तुरंग दीठआगेधरे बरुनी दल के साथ॥
तेरेचखमख केजगत कियोचहत हैं हाथ १४
मद में कल ते खुलत जब तेरदृग गज राज॥
आयतमासे जुरत तहँ नही नैन समाज १५
क०॥ अलक अमोल अलबेली की अनोखीआं
खिआति अलसात ओप अजन असेजमें। मन्दमुसि
कयान मांगमोती मोहनीके नीके सोहमदमातीमनमदन

मजेजेमें ॥ यौवन जलूस ज्योति जोयकैनरायणजू सक
ल शृंगार नख शिखते सहेजेमें । चन्दमुखी चंचल
चलांक चंचलासी चारु चसक लगायगई कसक
करेजे में १ ॥

क० ॥ आबदार अजब अनोखी अनियारी अल
बेली ऐसीआँखें ऐन ऐननसे रूखीसी । भोजभनैयौवन
जलूस में न जागै ज्योति ज्योति जोम जुलुम जुलाहल
में पूखीसी ॥ ताकिजाती तीक्षण तिरीछीतरुणाई पर
तेरी दृगनोकैं तेज तीरन ते तीखीसी । बैन मढ़िजाती
चारु चोख चढ़िजाती हियो फोरिबढ़िजाती चढ़िजाती
साफ सूखीसी २ ॥

स० ॥ आईहों देखि सराहे नजातहैं याबोध घूंघुट
में फरकेहैं। मैंतोयोंजानी मिलेदोउपौंछे क्वैकान लख्योवि
उन्है हरकेहैं ॥ रंगन ते रुचिते रघुनाथ वेचारुकरे क
ता करके हैं। अंजन वारे सही दृग प्यारी के खं
प्यारे बिना परकेहैं ३ ॥

क० ॥ अंजन सुरंग जीते खंजन कुरंग मीन नेक
कमल उपमा को नियरात हैं । नीके अनियारे अ
चंचल ढरारे प्यारे ज्योंज्यों मैं निहारें त्यों त्यों
चातहैं ॥ सेनापति सुधासे कटाक्षन बरषि ज्यावै जिन
निरखि हियो हरषि सिरात है । कानलौं बिसाल का
भूप केरसाल बाल तेरे दृग देखेमेरोमनन अघातहै ४

क० ॥ अबलख रंगअंग सुंदरता जीनतापै काजख
पाखर सुआपहाथ साजीहै । लाजहै लगाम चितवा
गाम चालमानों भृकुटीकुटिल तापै कलँगीसी छाजीहै

पुतरी सँवारिशुभलिये चाहचाबुकसी देखिके कटाक्षखुरी भयेलाल राजीहैं। नाचैमुख कंचन की थारीमें सुभारी अतिप्यारी तेरेदोउनैन मैनभूपबाजीहैं ५॥

क०॥आनँदके मंदिरमें कैधोंरुचिमाणिककी कैधों अनुरागलता अंकुर विराजही। कैधोंरतिनाथजूकेहाथ कीछबीली छरी जाके इतमाम ते तमाम दुख भाजहीं॥ कैधों तरुणाई अरुणोदय किरणराजै तारे कारे घन चपलासी सुखसाजहीं। लालमन बांधिबेको कैधोंलाल रंगडोरे कैधोंलालडोरे तेरेनैननमें छाजहीं ६॥

क०॥ आननकी द्युतिआगे चंदद्युति मंदहोत ओठनकीपांतिपै पवारि छविवारीहै। उभरोहे उरजपैआंगी श्वेतफबी सगीकानन कनक मणि गरमाल न्यारी है॥ ऐसी बालआजुलौं न देखी नंदनंदन मैं मैनमन मानि रुचिरतिकी बिसारीहै। लालडोरे नैननमें ऐसेनीकेलागें मानों खंजन चपल फंदे काम फंदवारी है ७॥

क०॥ अति अनियारे तारे कजरारे रेकभारे ऐसे उजियारे जैसे दिया बारियतहै। रूपरतनारे मतवारेप्रेम प्यारेजीके कमल करारे हारेई निहारियतहै॥ घूंघट उघारेते निहारे नेकतारा कवि टरत न टारे चित केतो टारियतहै। धृगहैं वेदृगजोई मृगदेखि रीझतहैं ऐसे दृगदेखे मृगछौना वारियतहै ८॥

क०॥ आछे अनियारे चटकारे कारे कजरारे मृग दृगकारे येरायेतो रतनारेहैं। चंचल छबीले रंगजावक रंगीलेचारुदीरघरसीले रसराते सुकुमारेहैं॥मैनमदमाते से उनींदेसे रहत नित झुकिझुकि उघरत चंकमतवारे

है। अजब अनूठे नैनदेखे प्राणप्यारीजीके जहां जहां देखे तहां जीतजीत डारेहैं ६ ॥

स०॥ कानन लौं अँखियाँ हैं तिहारी हथेली हमारी कहां लग फेलि हैं। मूंदब तौ तुम देखतीहौ पर कोर तिहारी कहां लौं सकेलि हैं॥ कान्हर हू कहँख्याल इहै तिनको हम हाथन हू पर झेलिहैं। राधे जी मानों बुरो कि भलो अँखमूँदनो संग तिहारे न खेलिहैं १०॥

क०॥ कमल न फीकेहैं सँवारे सुधरीके हैं जु सुंदरता सीके हैं सती के हैं रती के हैं। खंजन अनीके हैं कि गंजन मनी के हैं किरंजन धनीके हैं कि भंजन अमीके हैं॥ ऐसे हरनीके हैं न ऐसे हरिनीके हैं न राज रमनी के हैं न काम कमनीकेहैं। नैन मैन जीके हैं कि बैन बैन जी केहैं कि शोभा मूलहीकेहैं कि प्यारे प्राणपीकेहैं ११॥

क०॥ कज्जल कवचकिये बरुनी कैसरलिये भौंहधनु ताने जेत वार जग ऐनहैं। बाँकी सूधी चितवनि दोऊ तरवार बाँधे करें आधौ आधप्राण मारत डरैन हैं॥ इनकी कजाकी आगे कछुन कजाकी चलै दोऊ हाथ मलैं येतो वाहूदुख दैन हैं। ऊधव कहत ऐंठे ग्वैठे से रहत नित काम पातसाह के सिपाही तेरे नैनहैं १२॥

क०॥ कंजन अमलता में खंजन चपलतासें छलता में मीन कलता में बडेऐन के। प्रेम में चकोरचोर नेम के निबाहिबे में कहै रघुनाथ ठग ठगिबे में सैनके। डसिबे को भौंर डीठि फँसिबे को बंसी चैन गसिबे को यंत्र हेत चैनहू अचैन के॥ यासें झूठी है नप्यारे ही में आइलगिबेको प्यारीजूके नैनऐनतीखे बानमैनके १३॥

क०॥ कैधौं रूपसागर के रतन युगुल कीधौं भूपमीन के तनके केतन सुयस के। नेह भरे मदन सदन के प्रदीप कैधौं रसराज चाखिवे को चखकस रसके॥सुनत सुदेश के सुवस से महीप कैधौं वसकीवे काज इन्दिरिन दिशि दसके। लगे हिय ऐन कसकत दिन रैन कैधौं प्यारी तेरे नैनतीर मैन तरकसके १४॥

क०॥ करत कलोल श्रुति दीरघ अमोल लोल छुये दृग छोर छवि पावत तरौना हैं। नाहिंन समान उपमान आन सेनापति छाया कछु छुवत चकित मृगछौनाहैं॥ श्याम है वरण ज्ञान ध्यान के हरण मानौं मूरति ज्यों धारे वशी करन के टोना हैं। मोहत है करिसैन चैन के परम ऐन प्यारी तेरे नैन ऐन मैनके खिलौना हैं १५॥

क०॥काजरते कारे अनियारे डोरे मतवारे कमल ढरारे कैधौं अमृत के दौना हैं। खंजन सँवारे कैधौं खंजखरसान धारे कैधौं मनमोहन के मनके हरौना हैं॥ रूप जल भारे रसवारे डगमगत हैं नवल दुलारे कैधौं मृगन के छौना हैं। मदन निहारे पच्छी सीख देनहारे आली तेरे नैन ऐन मानौं मैनके खिलौना हैं १६॥

क०॥कंजद्युति भंजन हैं खंजनके गंजनहैं रंचनकरत जन मंजन सँवारे हैं। शोभा के सदन कोटि मोहत मदन मीन मदके कदन मृगदूरि करिडारेहैं॥ लाज गुण गेह नेह मेह वरसै अछेह देहन सँभारे जात जपत निहारे हैं। कारे कजरारे अनियारे झपकारे गिनवारे रतनारे प्यारी लोचन तिहारेहैं १७॥

स०॥ कंज सकोच गड़े रहैं कीचनि मीननि बोर

दियो दहनीरनि। दासकहै मृगहूको उदास कै बास दियोहै अरन्य गँभीरनि॥ आपुसमें उपमा उपमेयकै नैन येनिंदत हैं कविधीरनि। खंजनहूको उड़ायदियो हलके करदीन अनंग के तीरनि १८॥

स०॥ कंजन खंजन गंजन हैं अलिअंजन हू मद भंजन वारे। एकजरारे ढरारे पियारे बिसारे न जा बिसारे बिसारे। अंचल ओट अखारे में खेलत तारे निहारेहैं चंचलतारे। शोभसुधा सरके मधिडोलतमान मीनभये मतवारे १९॥

स०॥ कीसुखमाके समुद्रके सोहिरहे युगमीन अनेकलाकरि। की छबिकी रचि पिंजरी कामदियो तेहि युग खंजनको धरि। भाषैमुनि रघुराज किधौं बिधुवा कुरंग के लीन्हों मुदैभरि। आपके पन्थमें लागे सुप्रेम पागेकिधौं रुक्मिनी दृगैहरि २०॥

क०॥ कैधौं खंजरीटनकी चपलताई छीनीहै कैध चंचरीकनकी कजरारी छाइये। कैधौंप्रात कंजनकी स्वच्छता निवास कीन्होंलाजको समेटि बिधिलोचन बनाइये॥ चतुर चलांके बांकेसैन उझकि झांकेपैन ईश्वर कैधौं मैनसरपाइये। हंसिहांसि हेरिहेरि फेरिफेरि शिवना हरिसों हरिण नैनीनेक न दुराइये २१॥

क०॥ कारे कजरारे रतनारे अरविंद सम चदराज अनियारे सुखकारी हैं। भनत दिवाकर कुरंवान खंजनको गंजनकरति श्यामअंजन किनारी हैं। झुकि झुकि झांकति झरोखा लागिसानभरे लागेबनमाली मानोंलोहकी कटारीहैं। मोरिमोरि लेत मुसका

दृगघूंघटमें मारिके फिरतज्यों शिकारकोशिकारीहैं २२॥

क०॥ हरिण हिरानेकहूं हारनमें हेरिनयन मीनहूं समाने जल कंज खंज फीके हैं। रूपकेबजार मदपीके मतवारे भये कैधौं हुदेदारकै अनंगकी अनीकेहैं॥ नंदराम कैधौं ये कटार हैं कटाक्षके आँकरके अंत के विभाग बरछीके हैं। सानपै धरेहैं खरसानपै उतारे खूबकैधौं पंच बाणयह ओपे ओपिनीके हैं २३॥

क०॥ हियहरिलेतहैं निकाई के निकेत हँसिदेत हैं सहेत निरखत करिसैनहैं। छौनाहरिनीकेहूते दृगअति नीके राजैं हरत दरदयों करत चितचैनहैं॥ चाहत न अंजन रसिक मनरंजनहैं खंजनसरस रसरागरीति ऐन हैं। दीरघ ढरारे अनियारे रतनारे प्यारी कंजसे निहारे कजरारे थारेनैनहैं २४॥

क०॥ हमहीमें रहैं पैनकहे में है दहैंदेह विरह अगिनिऊक आनिउर डारती। दईहैं बनायविधि अविधि की बैरनेपै अमरेश इन्हें मारिहमहीं लौं हारती॥ होत न निबाह जो रिसायनेक राखैंमूंदि उघडे निगोड़ी दूनों मगपग धारती। लाजको न राखैं लोकलीक गहिदूरि नाखैं वरवश आंखेंहमें परवश पारती २५॥

स०॥ प्राणपियारी शृंगार सवाँरि लियेकर दर्पण रूपनिहारै। चंदसे आननकी द्युति देखतपूरि रह्योउर आनँदभारै॥ अंजनलै नखसों रमणी दृगअंजित उप्प मयों अनुसारै। चीरकेचोच चकोरनकी मनोचोपसों चंद चुगावत चारै २६॥

क०॥ पाटल नयन कोकनद कैसे दलदोऊ बलि-

भद्र बासर उनींदी देखी बालमें । शोभाके समुद्रमें है आभा बड़वानलकी देव धुनि भारती सो मेलपुण्यकाल में ॥ कामकैवर्त कैधौंनासिका उडुपबैठ्यो खेलताशिकार लरुणीके रूपतालमें । लोचन सितासितमें लोहितल-कीर मानोबीझे युगमीन लालरेशमके जालमें २७ ॥

क० ॥ पलकें अमोल तापै बरुनी झवा लसत ला-ज वारी कोरैं पग परम सुढंग हैं । श्रीपति सुकवि लोने पाखर बने हैं कोने रचि पचि बिधिना सवाँरे सब अंग हैं ॥ जापै चढ़ि रूप के सुभट प्रेम राज काज बिरह गनी मन सों जीत लेत जंग हैं । दिनरैन पियमन वीथिकामें नाचत हैं प्यारीतेरे नैन कैधौं मैनके तुरंग हैं २८ ॥

क० ॥ प्रेम रंग मगे जग मगे जागे यामिनीके यौव-न की ज्योति जगि जोरउमगत हैं। मदनके मातेमतवारे ऐसे घूमत हैं झूमत हैं झुकि २ झँपि उघरत हैं ॥ कहै कवि आलम निकाई छननैनन की पाँखुरी पदुम पै भँव-र थिरकत हैं । चाहत हैं उड़िबे को देखत मयंक मुख जानत हैं रैनिताते ताही में रहतहैं २९ ॥

क० ॥ पीके प्राण प्यारे प्रेम परम सुजान जीकेनीके नये नैननकी आब अबऊबीहै।कान्ह कमलेक्षनकी मानो मनमोहनी है काम कमलेक्षन की हुकुम हबूबीहै ॥ तरल त्रिबेनी की तरंग युग जाहिर है यौवन जवाहिर की अजब अजूबीहै । मीनन की मदी डूबी बदी डूबी कंजन की भौंरन की भूल खंजरीटन की खूबी है ३० ॥

क० ॥ पाइये न खोज खंजरीटन में रंचकहू लोचन तिहारे ये छिनैया गति मीनके । कंज दल गंजन कुरंग

मान भंजन ये रंजनहूं रंग मन रसिक प्रवीनके॥ मधुप विचारे हिय हारेही रहत बन अति सुख दायक सहायक सखीनके। तीखे तीर कामके न देखे काम बामके गनावें को परीन के नरीन किन्नरीनके ३१॥

क०॥ पानियके पानिय सुघरताई के सदन शोभा के समुद्र सावधान मन मोज के। लाजन के बोहित पुरो-हित प्रमोदनके नेह के नकीब चक्रवर्ती चित चोजके॥ दयाके दिवान पतिव्रतहू के परधान नैन ये मुबारक विधान नव रोजके। मृगन के महाराज सफरीके शिर-ताज साहब सरोज के मुसाहब मनोज के ३२॥

स०॥ पंकज के दल है पर है भँवरी रस लालच हेत लगी हैं। हैं नटनी सुरनायककी निरतें कल हाव सो भाव पगीहैं॥ बालके नैनकी पूतरियाँ निशि वासर लालके हीमें खगी हैं। कंचन की भख रूपड़ बीनमें खोल धरी मनोनीलनगी हैं ३३॥

क०॥ परम प्रवीन मीन केतन के मीन कीधों सुख के सरोज हैं फुलाये पिय भान के। शरद के खंजन मिलेहैं मुखचंद्र कोकि जोरे हैं कुरंग रथ वाहन समान के॥ बाल तेरे नैनकी विशाल शाल सोतिन के चालिभद्र साने हैं सोहाग सरसान के। मुनिन के मन उपजावत अनेक भाव सेरेजान सेईहैं विधाता पंचबान के ३४॥

क०॥ पतिव्रतता के मंजु मंदिर मजाके किधौं लखि मृग थाके चारुसर सुखमाके हैं। कैधों हेम छाके हैं अमंद भौन भाकेहैं न ऐसे रमा रम्भा के उमा के और काके हैं॥ भनै रघुनाथ धाम कैधों शीतलाके प्रेमसागर

के मीन नैन बांके राधिकाके हैं। पिय मुददाके बशीकर वसुधाके कीधौंसुधासिंधु मण्डलमेंकुण्डहै सुधाकेहैं ३५॥

क०॥ गुंजा गिले खंजन की भौंर भय कंजन की वारिबिधु मंजन औ अंजन समेत हैं। नेहभरे सागर सनेह भरे दीपक से मेहभरे बादर सलोने लखि खेत हैं॥ तरल त्रिबेनी के तरंगन में ताराकवि मानो शाल-ग्राम स्नान के निकेत हैं। मृगमद लागे शाखामृग दृग दागे मैन छाजन में पागेनैन ऐसे शोभादेत हैं ३६॥

स०॥ रूपसने बहुरूप दिखावत देखबनै दृगशील सचोहै। ज्योतिधरे मुक्ता से ढरे कै सुरंग सरोज से रंग रचोहै॥ खंजन मीन मधुव्रतसे सो कुरंगनु रंगसे मान मचोहै। श्याम सुधानिधि पान न चाहत होतहै चार चकोर निचोहै ३७॥

स०॥ रैनजगी रतिप्रेम पगी उरही सों लगी बिधि की अवरेखी। लाज लजीली कटाक्ष कटीली रसाल रसीली बिशाल बिशेखी॥ खंजन मीन मृगीन लजावन पीत सरोज समान कलेखी। कान्हरकी सों री तेरीसों राधिके तेरीसी आंखि न आंखिन देखी ३८॥

क०॥ रातिके उनींदे अलसाते मदमाते राते राजैं कजरारे दृगतेरे ये सुहातहैं। तीखीतीखी कोरन अँकोरे लेत काढ़िजिय केतभये घायल औ केते तलफात हैं॥ ज्यों२ लै सलिल चखसेख धोवै बार२ त्यों२ बल बुंदन के बारझुकि जात हैं। कैवर के भाले कैधौं नाहर नहन वाले लोहूके पियासे कहा पानीते अघात हैं ३९॥

क०॥ रसभरे जसभरे कहै कबि रघुनाथ रंगभरे

रूपभरे खरे अंग कल के। कमला निवास परिपूरन सुवास आस भावते के चंचरीक लोचन चपल के॥ जगमग करत भरत द्युति दीह पोखे यौवन दिनेश के सुदेश भुजबल के। गाइबे के योग भये ऐसे हैं अमल फूले तेरे नैन कमल अमल बिन जलके ४०॥

क० ॥ राजैं रतनारेहग ऊपर उजारे भारे प्रेम मतवारे पियसैन सुखदैन हैं। गंजन कमल मृग मीनमद भंजन हैं अंजन लखे ते न रहत उरचैन हैं॥ नंदन सुकवि नन्द नंदन पै ढुरेनेक रोसभरे देखे याते कहे कछु बैन हैं। ऐसी देखेनैन मैन बानसे बिराजे ऐन प्यारी तेरे अजब गुलाबीरंग नैन हैं ४१॥

क० ॥ राजत अमीके मदछाके कालकूट किधौं चंचल उरंगकी समाये ये नकाके हैं। पीके हियराके मृग मीननके थाके किधौं सौति सालहीके सुखमाके ऐन काके हैं॥परम कहत देखि खंजनहूथाकेकिधौं श्याम श्वेत ताके लाल आभा साखिकाके हैं। छत्र छपाकरके भूपाल के छलाके चारु चंचल चलांके नैनबांके राधिकाके हैं४२॥

क० ॥ खंजन नवीन मीन मानके उमाहेदेत नाकेदेत मृगमद कंजके तहांके हैं। ठौर २ भँवर भ्रमत जाके ताके संग माखन चकोर कहे चंचल चलांके हैं॥ ऐसे ना रमाके न उमाके ना तिलोत्तमाके प्रबल हरोल पंच बाण प्रीति नाके हैं। हैं न मंजुघोषाके बखानें मैनकाके मैन ऐन सुखमाके नैन बाँके राधिकाकेहै ४३॥

क० ॥ खंजन चकोर मीन मृग शिशु सारमयो बारिये कपोत हू अनूप कहि गोरी के। तीखे तीर खंजर कटा-

री तेग नेजनतें बाँक बिछुवाते हैं बंकैत बरजोरीके॥ भनै रघुनाथ हैं लजीले ललचौहैं लाल पंकज गुलाब रंग रति मद मोरीके। ललित बिशालयों रसाल कजरारे लोल मृदु रतनारे नैन नवल किशोरीके ४४॥

क०॥ खंजनके प्राण पिय बिरह तिमिर भान मीनन के मान धनवान मनमथके। शोभाके शृंगाररूप थारके डरार मोती शील सरदार फौजदार प्रेम पथके॥ श्रीपति सुजान लोने लोचन गुमान भरे सुघर पहलवान रति-रानी रथके। रस बहु रंग जाल ज्योति के कुरंग माल कंज से बिशाल महिपाल मनमथके ४५॥

क०॥ खंजन खिजात जलजात हू लजातहेरे हरि-नो हिरात मुकतान ठहरातहैं। पंच शर कीनेरद भौरन केभूले मद नट से विचित्र चित्रहीमें हहरात हैं॥ दीपक मलीन छीन मीन लागैं मेरे जानभीने तीन रंग यातैं अति इतरात हैं। परवश प्यारे प्राणप्यारी जू तिहारे दृगमारतनिशंक नकलंकहिडरात हैं ४६॥

स०॥ भौंर सरोज तेरोजजुरे नचकोरनहूं मदमोद परीहै। प्योमन रंजन अंजनहूं बिनखंजन कांतिको खीनकरीहै॥ काहूकहा कहिये केहिमानत येती अनूपम ओप भरीहै। जानतहों बिधिलै सबदेशकी आँखिनही छवि आनिधरीहै ४७॥

क०॥ भूपतिहै प्रेम लालडोरेहैं निशानतेई चंचल-ता चतुर तुरंग भीरभारीहै। देखिबे अनेकभाँति तेई असवार खरकाजर समोइकरी कोरसीसँवारीहै॥ बरुनी बँदूकन की पाँतिसी लई है पिय बिरह गनीम मारि-

बेको पैज धारी है। सूरत सुकवि स्वच्छ श्यामरंग बागे बने प्यारी तेरे नैननि में नीकी असवारी है ४८ ॥

क० ॥ भारेकजरारेदोऊ काजरसोंलालडोरे सेंदुरसों चीतेअति राजतसुपथके। मतिजूकहत पाँयअरुनीजंजीर डारि करत कटाक्षगति डोलहूल नथके ॥ पूतरी महावत बिराजै आड़ नासिकासों प्रीतमके प्यारे हैलिये याजग गथके। मोहन के मोहनहं सोहैं तीखे लरिबेको नैनातेरे दोउ गजमाते मनमथके ४९ ॥

क० ॥ भृकुटी कुटिल राजैं मूठिसी बिराजै बरपलक मियान पुंज पानिय रसालहैं। कज्जल कलित दोऊ कोर सें दुधारे धारे डोरे रतनारे जेबजौहरके जालहैं ॥ गोकुल बिलोकि निजनायक सनेहसनी स्वच्छहैं कटा-क्ष काट करत करालहैं। कमनीय कामनीके रमनीय नैन कैधौं कामिनके मारिबेको काम करवालहैं ५० ॥

स० ॥ भूत परेत कोफेरोबचै यह नैन को फेरोहियो तोड़िडारे। तीरचलैं तलवारि चलैं अरुशम्भुकोबाण छुटै अतिन्यारे ॥ वज्रको फेरोबचै तोबचै अरुप्राणबचैं नरसिंह हुंकारे। कालको फेरो बचे घड़ि द्वैक बचे नहिं नैन चपेट के मारे ५१ ॥

क० ॥ सफरी से कंज से कुरंग कर सायल से आम कीसीफाँकैं सब कहत सुजान हैं। नटुवा से नटसे तुरंगम से खंजन से बालक हठीले जैसे ऐसे ठने ठानहैं ॥ देखौ टेढ़ीकोरैं मानो नखनैया छोरके हैं बान ऐसी अनीपैनी लागेलेन प्रान हैं। ठग बटपार मतवार कवितुच्छ मति इतनेही नयननके कहे उपमान हैं ५२ ॥

स०॥ सुन्दरी साज श्रृंगार सुधारति सौतिके गर्वहि गंजनको। संगलिये करसार सुतामन मोहनके मनरंजन को॥कज्जलचारु दियेअंगुरीतिहिमें मेहँदीरँगअंजनको॥ ऐसीजचीहियमें उपमा मनोगुंज चुगावतखंजनको ५३॥

क० ॥ सुखमाके घर पूरेपानिय के सरवर आसन अनूप हररूप बिशरामके। चातुरी के चारकला केलिके अपार हावभाव के भँडार पाय इन्दीवर दामके॥ रतिके रतन जाल सोहन के मूलमाल राजत रसालहैं बिशाल नैन बामके। मीनके महीपति हैं खंजन प्रभाके पतिमृग के सलामत सलावतहैं काम के ५४॥

क० ॥ सुखमा सालिन्द के अलिंग अरबिंद हैं कविंद हैं नरिन्द के लगेहैं बरयसके। श्रीपति प्रवीन रूप सरके ललित मीनहरिन नवीन नेह कानन सरसके॥ ऐरीमेरी प्राणप्यारी लोचन तिहारे प्यारे सुरज सिखारे पिय बिरह तमसके। रतिरन बीरहैं श्रृंगार गुनधीर हैं सँवारे आछे तीरहैं मदन तरकस के ५५॥

क० ॥ सोहल सजीले सित असित सुरंग रंग जीन शुचि अंजन अनूपरुचि हेरे हैं। शीलभरे लसत अशील गुनसाज दैके लाजकी लगामकाम कारीगर फेरे हैं॥ घूंघुट फरसतामें फिरत फबीले फूले लोककबि ग्वालअवलोकि भयेचेरे हैं। मोरवारे मनकेत्यों पनके मरोरवारे त्योरवारे तरुनी तुरंगदृगतेरे हैं ५६॥

स०॥ झूमें झुकें उझकैं फिरि झूमें महासदमाते खरेईरहैं। टारटरैं न मदांधभये फिरिठौरहीं ठौर अरेई रहैं॥ कुंजरसेदृग तेरेसखी मुखके गुणमालगरेईरहैं। खू

नकरें सब आलमको फिरिलाजके आंदू परेहैंरहे ५७॥
क० ॥ झूमत झुकत उझकत फेर झूमतहै झूमि झूमिझूमि उठे काजरसे कारेहैं। ऐंडालमऐंडदार ऐंडत अड़त अति अगड़ परेते नेक टरत न टारे हैं॥ गहगहे गुननगहीले गरबीले महा श्रीपति सुजानमैन परमसु-खारे हैं । पियप्राणप्यारे सब भांतिन सुधारे प्यारी लोचन तिहारे कैधौं गज मतवारेहैं ५८ ॥
क०॥ झूमत झुकत भरे मदके अरुणनैन मानो मैनतूनहैं कढ़त जातेसरहैं। हावाकिल किंचित स्वरूप धरेनाथ कैधोंमोहन वशीकर उचाटके अमरहै ॥ कैधों मीन पैरत सहावके सरोवरमें मानिक जटित भूमि खंजन सुघर हैं। कैधों अनुराग को लपेटि के शृंगार बैठो कैधोंकोल पांखुरी में डोलत भँवरहैं ५९ ॥
क० ॥ मीनके कमीने परे पानीमें निहारे हारिहारिके चकोर तातेचुगत अँगारेहैं। भूपति भनत मंजकंजन के खंजनके गंजन गरबकरि डारे के निकारे हैं ॥ डारे रतनारे तारेकारे औ सितारे श्वेत उपमा सितासित तरंगिन में भारे हैं । प्यारीतेरे मानहग पानिप रसाल धेरै केंवर कसीसे वे कमान वारेवारेहैं ६० ॥
क० ॥ मृगकैसे मीनकैसे खंजन प्रवीण कैसे अंजन सहित सित असित जलदसे। चरसे चकोर से की चोखे खांड़े कोरसेकी मदन मरोर सेकी मातेरातै मदसे॥ नवीकवि ऐनासेकी और नैन बैनासेकी सियरलसोना सेकि आछे मृगमदसे। पयसे पयोधि सेकि और सौधे सौधसेकी भोरकारे भौंरसे कि प्यारेकोकनदसे ६१॥

स०॥ मनमोहनी सूरति राधिकाकी लखि मोहन के मन प्रेमपग्यो। चहुंओरते फैली है चंद्रकसी मुखकी छवि नंदकुमार रग्यो॥ दुहुं नैननबीच में काजर रेख विराजत रूप अनूप जग्यो। रविको तजि चंदसों नेह कियो अरविंदन मानो कलंकलग्यो ६२॥

क०॥ मैनमद छाके राजैं मोहन कलाके ऐन कंज उपमाके दैनचैन भरताकेहैं। पट अंचला के चोटकरन निशाके चाके काम चंचलाके नाके देखतही झांकेहैं॥ सुंदर प्रभाके भरे मधुर सुधाके मीनमृग भँवरा के गुन क्षीनवाके पाकेहैं। ताके समता के हेरि थाके पैनताके कहूंताके नैनवांके वृषभानकी सुताके हैं ६३॥

क०॥ महा कजरारे मृगशावक ते न्यारे दूरि खंजन विडारे निरखे जाहि चैनहैं। कैधों अलिकारे कैधों झूमें मतवारे कैधों ताम रसवारे कैधौंखंजरके ऐनहैं॥ कैधों युगमीन बसे सुंदर सरोवरमें कैधों कामखरसान चढ़े तीखेपैन हैं। और अंगअंगनकी शोभामानकहा कहैदेखो श्यामसांवरीके कैसेनीके नैनहैं ६४॥

क०॥ मोतिनते सीरे और ईंगुरते राते राते काजर तेकारे भारे पानिपके पान हैं। झलिके कटारी से औ दामिनि डरारीसे औ लागतहैं कारीसे जुसलसेरे जान हैं॥ डाकाके परैया कैधौं मनके लुटैया और वशके करैया और चोखनकी खानहैं। मंत्रमनमोहनसे बाधिक धरोहनसे औ मनके सोहनसे पारथके बानहैं ६५॥

क०॥ नैन अरसीले सरसीले अतिरसभरे बिवश वसीले औरंगीले रंगमगेसे। निपट हठीले अरवीले

रस कीले जनु गुणन गसीले गरबीले रस पगेसे ॥ कछु मुसको है तिरछो है सकुचो है कछू होत जाननो है मन मोहै पग लगे से। ललित ललो है कछु लाललचजो है जनुयाचक यँचो है ढिग डोलै हग मगेसे ६६ ॥

क० ॥ नैनको कमल कहौं वेतो मुरझाय आली जो तौ कहौं मृगनैनी वेतौ सव कारे हैं। जोतौ कहौं मीन जल वेतो नहीं आवें तीर जोतौ कहौं खंजनवे श्वेत रंग सारेहैं ॥ चपल तुरंगकहौं धायक वे पायकसे दीपककी ज्योतिकहौं वेतौरैनजारेहैं। शशि ऐसेशीतल कहौंवेकला हीन आली तेरे नैन जीतिवे को तीन लोकहारेहैं ६७॥

स० ॥ चख चंचलयों चमकै तियके हग अंचल में न रहै हटके। पुनि सैननि चित्त चुरावत श्यामको बाम को ये टुटिका वटके॥ अति लोल कपोलन डोलतहै दपना पट घूंघट में सटके। चट यों पट भेद दिखावत हैं जैसे भाव चलै गुटका नटके ६८ ॥

स० ॥ चंचल चोखे से चीकने से चटकारे से चोग ने रूप भिरामके। सान सगे से विखान लगे से सयान पगे से रँगे से ललामके॥ माजे ममारख दे विष अंजन सीधे से बींधे हदे घन श्याम के। वान चितै हग तेरे पियारी रहे शर काम के एकौन काम के ६९ ॥

क० ॥ देखे अरुणाई करुणाई लगे कंजन पै मृग-न गुमान तजि लाज लहिवे परी। तापनिधि कहै अनि खंजनहू छीनताई मीनन अधीनहवे गरीबी गहिवेपरी॥ चरचा चकोरन की कोरन सों कोरि डारी कविन कवी सता कीहार कहिवेपरी। आई चंचलाई जबराधिकाकी

आँखिन में खासे खंजरीटन खराबी सहिबे परी ७०॥

क०॥ दूरहीते सोहाचार अचल हँसोहीं बड़ी मोहन के संग सोहीं सुभग नवेली की। आयो जबढिग तबसुवरन वेलीपरलीन्हीअनुहारहै सुखंजयुगकेलीके॥ पुनि अधखुली इंदीवरकी कलीसी दीसीपरीहै तिरीछी डीठि बचिके सहेली की। बिबिध कटाक्षभांति मैनशर पांतिपांति बनीं ऐसी आंखियां अनूपअलबेलीकी ७१॥

क०॥ दीरघ ढरारे आछेडोरे रतनारे लागे कारेतहां तारे अतिभारे जे सुरंग हैं। कहै कविगंग जनुदूधहीसों धोये पुनिकोये बिकसित सित असित दुरंग हैं॥ पारद सरिस चीर थिरमें थिरकिजात तिरछे चलत मानो कूदत कुरंग हैं। खैंचेन रहत अनुरागहू के बागबर प्यारी जीके नैन कैधों मैनके तुरंग हैं ७२॥

क०॥ जीतेजिन तामरस अलिकुल मीनकुल कारे कजरारे सोहैं पियसुख देन के। जीतेजिन खंजन औ मुक्ता ढरनि जीती जीतहै चकोर कैधों दीपकहै रैनके॥ कमल ढरारे कैधों प्रेममद मतवारे तेवन सुहायधरे जागे सुखसैन के। मृगहै भँड़ैत कैधों पायक खँड़ैत दोऊ प्यारीतेरे नैन कैधों योधा एन मैन के ७३॥

क०॥ यौवन प्रवाह तामें छबिकी तरंगउठै भौंहकी मरोरन सों भौंर मतवारे हैं। बालमकी मूरति मलाह माँझ बैठिरही छूटे लालडोर तेइगुन रतनारे हैं॥ पूतरी हलनिसोई पतवारी ऊधोराम लाज बादवान चंपबरूणी सवँरे हैं। रूपके सरोवर में तीर तीर डोलत हैं आँखियां न होइँ येतोकाम के निवारे हैं ७४॥

क० ॥ ऐसेनैन मैनके नदेखे ऐन सैनके जगैया दिन रैनके जितैया सौतिसीन के। कमल कुलीन के मुकलित करनहार काननकी कोरन लौं कोरन रँगीन के ॥ भनत कविंद्र भावती के नैन चायक से देखे मैन पायक से नायक नवीनके। सींचेहैं अमीनके अमीन मानो मीनके वखाने को मृगीनके खगीन पन्नगीन के ७५ ॥

क० ॥ एकही झमाके मैं क्षमाके मनमोहे दृग ऐसे मा रमाके न उमाके न रमाके हैं। दशहू दिशाके मनसा के फलदेनहारे करन निशाके इमि जाकीओर ताके हैं ॥ जाय के जहांके तहां मीनजल ढांके गये हरिण हहाके ऐसे कमल कहांके हैं। सदनसभाके सुखमाके उपमाके चारु चंचल चलांके नैनबांके राधिकाके हैं ७६ ॥

क० ॥ ऊबीसी रहत अरविंदन की आभा महबूबी मृग छौनन की छाम करियतु है। दूबीवन बीथिन च-कोर चारुताई मन सूबी तुरगन की तमाम करियतुहै ॥ डूबी जल जोरन सों मान वरजोरी शोभ भोर मग रूरी बदनाम करियतु है। दोवि देखि तेरी अँखियोंन की अ-जूबी प्यारी खूबी खंजरीटन की खाम करियतु है ७७॥

क० ॥ छवि वाल वरसील साहब के घर पिय मन मीन सर सर काम देवतन के। चातुरी के पार के शृं-गार के कुमार कैधौं खंजनके अवतार रंजन श्रवन के ॥ रथ मनोरथही के वाहन से ऐन मैन नीलकंठ ऐसे नैन को सकै वरन के। भौंरन के भूप घार चक्र वै चकोरन के हरिन के हाकिम कुटुम्बी कमलन के ७८ ॥

स० ॥ लसैं बीरै चकासी चलै श्रुति में भृकुटी जुवा

रूप रही छवि छ्वै। अलकावलि डोरी कसी नृप शम्भु जू सुत अनंग दई छरी छ्वै॥ तम साँवरे रंगहि जानत हे हठि पीछू परे हैं चलैं जित छ्वै। कर छालत आवत नैन किधौं ये सुधा करके रथके मृग द्वै ७९॥

क०॥ लालची लजीले लोल ललित रसीले लखे लोगनि ललकि लैलें लूट लँगराके हैं। छिनमें छलीत चित्त छैलन को छोभैं छरैं छोरैं छरकीले सो छबीले छवि छाकेहै॥ मनसा कहूतडेरा डौंडीके न डाडे डांका डारत डगर डग डारत में डांके हैं। ऐसे और काके मैनका के अबला के मैन बानन ते बाके नैन बाके राधिकाके हैं ८०॥

क०॥ वारिज बिकाने लखि खंजन खिसाने मृगमीन मुरझाने वनहून बहरत हैं। भौंर भहराने आन उपमा न आने कवि हारि हेरिहार माति हियेहहरातहैं॥ अतिही बिशाल बाँके प्यारीके अनूप दृग कहत कछूपै रोमरोमथहरात हैं। मेरे जान आनँद सोंचारों चक्रजीतिवे को भूप मकरध्वज के ध्वजा फहरात हैं ८१॥

क०॥ बरुणी बघम्बर में गूदरी पलक दोऊ राते कोये बसन भगों हे भेष अँखियाँ। बूड़ी जलही में दिन जामिन हू जागति हैं धूम शिरछायो बिरहानलविलखियाँ॥ आँशू त्यों फटिक माल लाल डोरे सेली सजे भई है अकेली तजि चली संग सखियाँ। दीजिये दरश देव कीजिये सँयोगिन ये योगिन ह्वै बैठी हैं बियोगिनकी अँखियाँ ८२॥

क०॥ बंधु बिधु कोर में चकोर कैसो जोरा बैठ्यो कैधौं मृग मीन बाल हित कै बढ़ाये हैं। कैधौं काम राज

के युगल मीन जंग जुरे खंजरीट राखि मानो पींजरा पढ़ाये हैं ॥ मिलत जियाइबे को बिछुरत मारिबेको बानि-कपियूष विषबोरिके कढ़ाये हैं । केधों विधि पूरण मयंक मुखपूजाकरी अलिन सहित मानोललिन चढ़ाये हैं ८३ ॥

क० ॥ बाजी चपलाई तामें मैन असवार गाढ़ो तर कस बन्द वर पलकें सुधारि हैं । ताहीते कटाक्ष बान भरे बेई नोकदार जाकेतन लागेसोई लगन विचारि हैं ॥ कहै द्विजराज भौंहैं चापसी चढ़ावें जनिकह्यो मानु प्यारी एतोअबै बटपारि हैं । घूंघुट नखोल तेरेनैनहैं निप टबांके घरिक में घेरिकाहू घायल करिडारि हैं ८४ ॥

क० ॥ पियमन दूतकेधों प्रेमरथ सूतकेधों भँवर अभूतवपु वासके सुरंग हैं । चितवत चहूंओर प्रीतमके चित्तचोर चन्दके चकोर केधों केशव कुरंग हैं ॥ वानमद भंजन कै खिलिवे के खंजन कि रंजन कुंवर कामदेव के तुरंग हैं । शोभा सरलीन मीन कुवलय रसभीन नलिन नवीन केधों नैन बहुरंग हैं ८५ ॥

क० ॥ कीरति पताकि काम देवताके पात्रताके प्रेमके पताकेदेनहार हितताके हैं । साँचेसुखमाके सुखमाकेजा-के जोहेहोत मादक ताकेसे प्यालेआले रसताके हैं ॥ पूतरी प्रवीनाके सँकोचहैं नगीनाकेसे ताकेकाज जड़ित मुढाल डिबियाके हैं । जसकरता के सान तसकरताके बाननाथ येकजाके बाँके नैन राधिकाके हैं ८६ ॥

क० ॥ मीनहेतु दीनताके क्षीनताके हीनताके शरमा के भयेतरियाके दरियाके हैं । खंजन विछिततताकेमारफिरं मारेमारे तीतली भलीसी लहीनहीं थिरताके हैं ॥ जल

भवँराके भँवराके जल डूबेहोस बिधि दवँराके मारेरहे भवँराके हैं। पक्षी पक्षताके गुण अक्षताके खोयबैठे ना-थये चलाँके बाँके नैनराधिका केहैं ८७॥

क०॥ उड़िगे चकोर मोर खंजसिली मुख्यजोर जंग लगे उरग तुरग मृग द्विपनाह। झषझारि मनहारि कंजकारि बूड़े बारि ऊपर परीनकी परीनकी परीन आह॥ औध अवकलयो बहालहरि हाललाल सौतिसाल बो-लचाल बाहुबाह आहआह। लखत सखत दसखत ये तखत भाव बखत बलंद प्यारी तेरे नैन पात शाह ८८॥

स०॥ द्युतिदेखत दन्तनकी हिय हारत हीरनके गन दाड़िमहै। बसुधाबिच चारुकुधाकि मिठाई सुधाधर सोधर सालिमहै॥ अनुनैन बनी भृकुटी कुटिलै कलमैन के चापसो आलिमहै। जगजाहिर जोरजनाइसकै अँ-खियाँ यमराजसो जालिमहै ८९॥

क०॥ कोयनकी कुरसीमें करिकै कुमाच बैठी बरुणी वरीषबीर बिलसनि बेरेहै। पूतरी प्रबीण तेई पातुरे त्रिलोकियत पलकन प्यादनके पेखियत फेरेहै॥ चारु चंचलाई चोपदारहै हमेशबेश कहै परमेश डीठि मोह-न केडेरेहै। आबमहताबभरे किम्मति किताबभरे मानत न दाव येनवाव नैनतेरेहै ९०॥ इतिनेत्रबर्णनसम्पूर्ण॥

अथ सैन बर्णन

क०॥ कीधौंक्षितिमण्डल कुबेनी देखि तारागण होत मीनके तन केमीन सरकस है। मित्रनसों कहैसुखहीकी बात बलिभद्र पूछत कीमन्त्र मुनिन सों बरकस है।

लक्षीतर बरनि कोछूटैघृत चतुरनि विशिख विसारे पाथे काम कम करसतहै। उज्ज्वल सरल चक्र चहतहै रैनि दिन अक्षके अपागनके आछे तरकसहै १॥

स० ॥ केशव वाकी चितौन कीकौन कलाकहों जाति कही कछुनाहीं। यद्यपि सूधी सुधारसपागी विकार विवरजित सोहे सदाहीं ॥ तद्यापिजाय परैजहँ ओचक नेकौ स्वभाव हतेज्यहि घाहीं। चेतनहोत जड़ैजड़चेतन केतन को निरख्यो दृगमाहीं २॥

क० ॥ नेकही निहारे नैन नायका सुकीयानरि मुनिनके मन मनसिज सौतनौतहै। विनही कटाक्ष काटे लाजही के कवचन काजर नयेते कोटि कामके उद्दोतहै ॥ जोहै निर्बिकार तौविकारकरै औरनको छाँड़ैक्यों कुलान स्वभाव जैसे जाकेगोतहै॥ वाकी चितवनमें करैगो कहा बलिभद्रसूधी चितवनमें असाधुसाधुहोत है ३॥

स० ॥ वाजकीबैठक लैउचकी पुनिबेधि कढ़ीपर घूँघटभीनो। उड़िजाय कुहीजिमि दूरिदुरी वहुरी गति आनि करीलकीलीनो ॥ तानत काननलौं चखलालसो साननमें भरवानर कीनो। शालत देव अदेवनहू वरु पारथको पुरुषारथ छीनो ४॥

क० ॥ चंचल विशाल मीन खंजन मृगाते वेपताकन तिरीछी भईजवदृग जूटीकी। मृदुमुसक्याय रूपभलकदिखाय फेरिमोरिमुखदीन्हों जोरडोर प्रीति टूटीकी॥ भनैरघुनाथ भरी आनँदअटूटी लखिछूटी मानवान कान्ह सहित रतवूटीकी। लूटी सौत सानच्चान मैंड़

सबफूटी देखि नेजा मैनबूटी सैननवल बधूटीकी ५ ॥
इति सैन वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ तारे वर्णन ॥

क० ॥ फटिकके संपुटमें सोई सालग्रामशिला कमल दलनिपर भौंरसे निहारेहैं। मृगमद बिंदुके लसतप्रति बिम्बकैधौं दीपत दृगन पर कज्जल केवारेहैं ॥ कैधौं मरकतमणि मुकुत सुकुतपर कैधौं रति नायकने शायक बिसारेहैं। पियमन तारिवेको अवतारेतारे भारे बरुनी के बारमानो तरुनीके तारेहैं १ ॥

स० ॥ पंकजके दल द्वै परद्वै भंवरी रस लालचहेत खगी हैं। कैनटिनी सुरनायककी निरतें कलहावसो भाव पगी हैं ॥ बालके नैनकी पूतरियां निशिबासर लालकेही में लगी हैं। कंचनकी भरवरूपाड़ि बीनमें खोलधरी मनोनील नगी हैं २ ॥

क० ॥ पयभरे भाजनन पैयत मधुप मध्य कीधौंक्षीर निधि मध्यदीप युग कारे हैं। बसन बिसद बीचसोधहीके बिंदु कीधौं देखिबेको मैनमुख दर्पण सँवारेहैं ॥ छाती धेरे क्षिति जीतिबेके काजबलिभद्र तमकी रसकेतरुणी तेरे तारेहैं। कमल दलनपर मणिमयदेव कीधौं पियमन द्विज पूजिबेको पांयधारे हैं ३ ॥

क० ॥ कैधौं रूपसागरमें आंच बड़वागिनकी बिरह बिसाल ज्वाल जामधि बिकासीहै। कैधौं दलपंकज के ऊपर अरुणरेखैं कैधौंनेह दीपककी अरुण शिखासी हैं ॥ गोरी तेरे नैननिके बीच लालरेखैं तेतो रेखैं अनु-

रागहीकी प्रगट प्रकासी है। कैधौं अनियारे अति कारे बट पारेइन तारेनकी फांसी पियजिय कै निकासीहै ४ ॥

क० ॥ तामरससोहै तरुणीके बरनैनबीर तामें तम निशाकी बसीठी मानो आयोहै। कैधौं अनुराग जाल डाखो मैनसैन सरगोलकहैं ताकेताको ऐसोभाव भायो है ॥ खंजन धेरेहैं मुख जम्बूफलमेरे जान उपमान आन नूरऐसो ठहरायोहै। तरुणीके श्यामतारे ऐसे में निहारे लाल चंदपै चकोर हलाहलसो खायोहै ५ ॥ इतितारे बर्णन सम्पूर्ण ॥

अथकटाक्ष बर्णन ॥

क० ॥ कामकी कमानतेरी भृकुटीकुटिल आली ताते एती तीक्षण येतीरसे चलतहैं। घूंघुटकी ओटकोट करिकै कसाई काममारे बिनु कामकामी केते ससकतहैं ॥ तोरे तेनटूटे ये निकासेते न निकसत पैन निशिवासर करेजे कसकतहैं। सेनापति प्यारीतेरे तमसे तरलतारे तिरछे कटाक्षगडि छातीमें रहतहैं १ ॥

क० ॥ तेरीभौंहैं धनुष धरत करकोप आप चंपक के चापके हूं खैंचत खटातहैं। तेरिये अलक तामें ललित कलित गुणमधुकर मयगुण कथत डरातहैं ॥ केहैनील कंठ सबतेरे अंगअंगहेरि नातर अनंगसे समर समुहातहैं। जग जैतवार कोटितेरिये कटाक्ष नातो पांच पांच बाणसों जहाँन जीते जातहैं २ ॥

क० ॥ हरिन निहारि जकिरहे हियेहारि मानियारे चर वारिजकी वानिक विकातीहै। हातीहोति तियापाछे-

ताती कर छातीदैदै धीरमन रंचनके खंजन जमातीहै ॥ देबेको समान उपमान आनदृगनकी कबिनके मनकी उकति अधिकातीहै । प्यारीके अनोखे अनियारेई छ-नानि छ्वै छ्वै तीक्षण कटाक्षनते काटिकटि जातीहै ३ ॥

स० ॥ भीषम कर्ण कृपा अभिमन्यु दुयोधन सोम सोभूरिश्रवाके। अर्जुन भीम युधिष्ठिर धृष्ट बिराट बली सहदेव प्रभाके ॥ सो शरव्यर्थ भये इनहूं के कहाकहिये निरदीन दयाके। तेरे कटाक्ष बचैंन मुनीशहु हैं कबिसो शरकीसमता के ४ ॥ इति कटाक्ष वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथनेत्र तिलवर्णन ॥

क० ॥ राजैबाम लोचनीके तिलबाम लोचनमें ताकी छबि कहिबेको कौनके सयानहै । जहांतिल तहां नेहयहू न सनेह जानि चित चिकनाईको बिचाय्यो अनुमानहै ॥ शिशुताके भायते रुखाई दरशाई ताकी एकै युक्तिआई जियप्रीतमा सुजानहै । नाहक चतुर मनदीन छीनलेत नैनतिल न लग्योहै ताकोपातक निशानहै १ ॥

क० ॥ शिशुतामें यौबन निकाई कछुदेखी तातचरण सरोजगति धीरता गहतहै । घांघरे पै ओढ़नी बिराजे तामें चोटीचार ता छबिके देखे वे मनोज उमहत है ॥ दीरघ दृगनबीच पूतरी समीपतिल ताकी उपमाको जो सुजान सो कहतहै । अमल कमल बीचअलि अलनी सों मिलि करें मकरन्दपान आनंद लहत है २ ॥ इति नेत्रतिलवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ बरुणी वर्णन ॥

क० ॥ छुवतही कोमल सिरस कीसी पांखुरीहैं खिन खिनखरि खरकति जाति छाती हें। निपट अंध्यारीनेक होतनहिं येतेन्यारी अजों अटमालकी अनीसी अह-टाती हें ॥ मण्डल तिलौंछी असिकाक्षर करौंछी अति अंकुश शिंगारकीजईसी उलहातीहैं। नैनमैन तीरनकी फोंकसीतरेरी तीषीतरुणीकी बरुणीयेबरणी नजातीहैं १

क० ॥ नजर परेतेउ लहत उर आनंदहे लसत स-मूह सो कटाक्षन सफेद हैं। कालिदास लोचन पियारे अवलोकत ही प्रीतमके अंग २ पसरद सेद हे ॥ दोऊ हित कारी करि मोहत मुरारीजी को छकेई रहत लखे बिरत अखेद हे। चरणमें एकगुण भेदनातो तरुणी के बरुणीमें बारुणीमें और कछूभेद हे २ ॥

क० ॥ लिख्यो मन नायक बनाय रसराज मसी केधौं महा मोहनी के मंत्रके बरन हैं। कैधों नैन चोरन के हाथकी अनूप असी केधौं श्याम अंगनके रंगनके कन हैं ॥ कैधौं ये पचास कूट सीवन की सारसुई केधों कारे तारनके किरणके गन हें। कैधों रूप पंकजके ऊपर ये पंकरेखैं कैधौं नैन तरुणी कि बरुणी सघन हें ३ ॥

क० ॥ सूर सुरमाके सैन काम जंगजीते हेतु साजे दृग अँखकोर कोरन सँवारे हें। भनत दिवाकर सुधाकर नलेश जामें चकित सुरेश छोंड़ि आसन सिधारे हें ॥ बैठिकै नजीक चारु चमर डुलावें फेरि हेरि जोड़ि दारन के करत इशारे हें। उपमा बिलोकतहू लोकमें न आवें

प्यारी वरुणी बिलास जैसी राधिका तिहारे हैं ४ ॥

क० ॥ तेरे युग्म नैननकी बरुणी योंबनी घनी मनो
द्वै मीनन की कनी कनके लुंज हैं। शीलके दुकूप चक्षु
पलसुख बन्धन पै कंचन कँगूर ये मनोज रंच मुंज हैं॥
भनै रघुनाथ कैधौं शोभा द्वै सरोवर पै सुबर बंधानन
पै नर द्रुम कुंज हैं। पूतरी मनोहरन पातुर के चैलछोर
कैधौं नयन सुभट सुधारे सपुंज हैं ५ ॥

स० ॥ ओप अनूप है आनन की अँखियाँ बिन का-
जरहू कजरारी। रैनदिना बिसरैसी रहै बिसरो करिये
बिसरैन बिसारी ॥ नैनन जो निरखै अबला निकसैउर
बेधि अनी अनियारी। भागिनि की भरनींद भरी बरणी
न परैं बरुणी झपकारी ६ ॥

क० ॥ कैधौं दृग सागरके आसपास श्यामताई ताही
के ये अंकुर उलहि द्युति बाढ़ हैं। कैधौं प्रेम क्यारीयुग
ताके ये चहूंधारची नीलमणि सरनिकी बार दुख डाढ़ेहैं॥
सूरत सुकबि तरुणीकी वरुणी न होयँ मेरे जान आये ये
बिचार चित्त गाढ़े हैं। जेई जे निहारे मन तिनके पक-
रिबे को देखो इननैनन हजार हाथ काढ़े हैं ७॥

क० ॥ काम के केदारन की आयस की कीन्ही वारि
श्यामल सघन कमला करके कूल हैं। लोचन अनन्त
द्वै की रसना सहर चारि काजर की कोरैं युग रहरान
कूल हैं॥ पलक अनंग कर तल्लन के पल्लव हैं कीधौं
चितचोरे हैं हजार भुज मूल हैं। तरुणी की बरुणी
बिराजैं ऐसी बलिभद्र मोहनी पटनवारे ओरसखतूलहैं ८॥
इति वरुणी वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ पलक वर्णन ॥

क० ॥ सुन्दरि के सुन्दर पुरन्दर पियाले अति नाहिं नै सुसुन्दर यों पक्ष सुरनारीके। काम की तराजू के अमोले पला कंचन के कैधौं क्षेम धाम छत्र पूतरी सुखारी के ॥ भनै रघुनाथहैं मनोहरपियाके सदा कैधौंयुग सम्पुट हैं रतन अपारीके। परखत मैनत्री लगावै न पलक नैन ऐसे हैं सुखैन नैनन पलक पियारीके १ ॥

क० ॥ पातुर पूतरी पहिरे पवित्र पीत वास कीधौं ये सकल सुख वासना के धान हैं। पिय रूप पीवे को अधर आछे बलिभद्र सौतिन को एकौ पल कलन निदान हैं ॥ पिंजर की खंजरीट कनके सम्पुट हैं तिनमें वसत प्यारे प्रीतम के प्राण हैं। कामतुला पलाहै पलक तेरी पद्मिनी कि त्रियाके कपाट कीधौंतारे न त्रानहैं २ ॥ इति पलक वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ अंजन वर्णन ॥

दोहा ॥

बेष शिंगार रस तूलतम पूरे पातक लाज ॥
मन रंजन अंजन सवै वरणत हैं कविराज १

क० ॥ कंचनके कन्द परिखंजन तलफ कीधौं बांधे युगमीन नागफाँस सों मदनहै। कामके कसारन की कूलन की कूपिका कि अहिख तिलक के शृंगारके सदनहै ॥ विशिख पुलिंद मैन भाजे हैं प्रदीपनसों बलिभद्र मुनिनके मनके कदन है। काजरकी रेखै ग्रवरेखी

युगलोचन कीने चित चोरनके मेचक बदन हैं १
स० ॥ अंजनकोर दृगंचल राजत कै मुनि न
आनि चुभीवै। कैदुमुही यह नागिनिकी शिवनाथ
रसनाति लसीवै ॥ चंदहि चाहि चढ़ीफहरात कपो
कूल असीरस पीवै। देखतही बिष छायगयो उर का
ही कहौ कैसेके जीवै २ ॥
स० ॥ खाय हलाहल औरन मारत आली अ
म्भव बात सरीहै। नेकदया जियमें धरिये यह त
ऊपर पाप परीहै ॥ काहेको अंजन देइ सँवारत
हिये उर शाल करीहै। कोजग नाहिं भयो अभिम
अरी इन नैनन बाढ़ि धरीहै ३ ॥
क० ॥ कैधौं रसराज रस रसित असित कैधौं
लित त्रिशिख बिष बलित सुमाल के। कैधौं जगज
चेको राजा रतिनाथ हाथ बाहन बनाये केशव
चल चाल के ॥ ब्रतघाल पातक कि चित चोरिबे
तम देखिबे को नन्दलाल लालिकरै काल के। लागि
लोकलाज खंजन नयन कैधौं पियमन रंजन कि अं
हे वाल के ४ ॥ इति अंजनवर्णनसम्पूर्ण ॥

अथ भृकुटी वर्णन ॥

दोहा ॥

भृकुटी कुटिल बिलोकि यों होतहिये अनुमान ॥
बिनुरोदा की इंधरी मानहुँ मैन कमान १
भृडांड़ी काँटा तिलक पलचख पुतली बाट ॥
तौलति मूरति मित्रकी नेह नगर की हाट २

तुव भौंहें सौंहें सरस ऐंचि बिना जिह बान ॥
वेधिलेइमन बिकलजन किमिसम कहौंकमान ३
तजि सिंहासन राजअरु डासन रंक बिशेख ॥
छुटैन आसन कौन को भौंह शरासन देख ४
ऐंठेही उतरत धनुष यहअज गुनकी तान ॥
ज्योंज्यों ऐंठे भौंहधनु त्योंत्यों चढ़त निदान ५
वरुणी बाण समान के भौंह धनुष बिचतान ॥
लगत शूर घायल गिरे भरे गरूर महान ६
नासा मोरि नचाय दृगकरी ककाकी सौंह ॥
काँटेसी कसकति हिये गड़ी कटीली भौंह ७

क० ॥ अमल कमल पर गुंजत भँवर युग प्रेमके तुला की शुभ डांड़ी जोहियतु हैं। कैधौं मणिकण्ठ हाव भावके वकीलयेहै कामकी कमान पियमन मोहियतु हैं ॥ तनक मयंक अङ्क लोचन चपल गति ऊरध को अंजन की आड़ रोहियतुहैं। शोभा रसभाजन शृंगारशर आननकी कैधौं मन भावती की भौंहें सोहियतु हैं १ ॥

क० ॥ कैधौं अली पक्षको पसारि बैठो दर्पण में कैधौं ऐ कमान काम गोसाकी नवाई है। कैधौं के सोनार मार नारिरूप जोखत हैं पोखत गिरान फल डंडी थिरकाई है ॥ भनत दिवाकर नचाय दृग बोलति जो खोलति कपाट प्रेम नाभीमें समाईहै। बंकआविकाई काम धनुहून पाई ऐसी राधिका तिहारी जैसीभौंह की निकाई है २ ॥

क० ॥ कैधौंचन्द बिम्बमें प्रकाशी मन्दरेखा बिम्बके धौंरूप सिंधुमें बिकासे नील अरविन्दु। कैधौं शील नाल कै बँधाये मणिनीलमैन कैधौंपंचबाण कोकमान जगडाख्यो

निन्दु ॥ भनैरघुनाथ किधौंशोभारस जानतुन्द नयन कंजमानबसे मुदितमने मलिन्दु । कैधौंरतिराजकी परा जैकेकाज आज धनु जगसाजलै समाजरह्यो राजइंदु३।

क० ॥ कुटिल अनूपसोहै मानीकीसी गतिजामें भृंग नकी श्यामता सरस छबिछाईहै । कामके शरासन ते त्रासनअधिकदेखो आसन मुनिन इन्द्र शासन चलाई है ॥ कासन कहौंरीयोगीडासन तजत जगो शासनभरत रोगीभये सुरभाईहै। तानमें तुरंग मन पाई ऐसीबंकता ई जैसी शिवनाथप्यारी भौंहबनियाई है ४ ॥

क० ॥ कैधौं रतिनायक कोकुटिल कृपाण कैधौं बिरह भुजंगमके अंकुशाबिमलहैं । कैधौं बालआलिनकी अव-ली ललितलसै रङ्गरसभयो पियो आननअमलहै॥ कै-धौंनैन चातिकपैऊनीघटा अम्बुदकीलालमन छलिबेको कैधौं छलबलहैं । कैधौंभोरी भामिनी की भृकुटी बिराजै वंक कैधौंयेशृंगार बेलिहीके दोऊदलहैं ५ ॥

क० ॥ भृकुटी निहारिकोसँभारि सकै धीरगहि कैधौं कंजबैठी आलिपाँतिमोहै मतिहै। कैधौंमीत चन्दको सु-न्योहै राहुभैंयकाम तातेदीन्ही धनुहियाँमांभ्र आतिरति है ॥ सूरतिसुकबि हावभाव फलबेलि कैधौंकहालौं बखा नौं छबिकहीनपरतिहै । सोहनहौबात येरीजोहनमें दे-ख्योकछुमोहन कीरीतितेरी भौंहमेंअरातिहै ६ ॥

क० ॥ सौरभ सुगन्ध वास चम्पकली नासिकाको कैधौंआलिऊरधते आघ्रनुकरातिहै। कैधौंमुखचन्द धरयो वाहन कुरंगकंध युवामरकतनको मनहिंहरातिहै ॥ कैधौं बालिभद्रभाल कंचनके भाजनमें दीपक युग नैननको

काजर परतिहै । भामिनीकी भौंहकिधों कामकी कमान सोहै जिन्हैं देखि सौतिन के गरबगरति है ७॥

क० ॥ प्यारी रूप देखि विधि हियमें सरेखि कछू लिखिबे बिशेखिसों कलम हाथ गहिगो । भागन तेंपूरी दोऊरूप अति रूरीहोउ गुणनकीकूरी होउबैनऐसे कहिगो॥ शम्भु राजकहै भौंहैं जानतें न रचीसो अजानहीमेंएककछू ऐसो बावबहिगो । दासशशिकरिबेको कलम चलाई होती चन्दकी बड़ाई एकआँकलिखि रहिगो ८॥

क० ॥ ये बिन पनिचबिन करकी कसीसबिन चलत इशारे यहजिनको प्रमान हैं। आँखिन उड़त आय उर में करतघाय परत न देखीपीर करत अमानहैं ॥ बंक अवलोकनकी बानि औरई विधान कज्जल कलित जामें जहर समानहैं । तासों बरबश बेधे सेरोचित्त चंचलकोप्यारी तेरी भौंहैं कैसी कहर कमानहैं ९॥

स० ॥ नासिका ऊपर भौंहनके मधि कुंकुम बिन्दु मृगमदको कनु । पूछतें पंख पसारिउड्यो सुख ओर खगा लखि मोतिनको गनु ॥ देवके नैन तुलान पला धरिभाग सुहागके तालतटी तनु । नारिहिये त्रिपुरारि बँध्यो लखिहारिकै मैन उतारि धस्यो धनु १०॥

स० ॥ खेलहि खेल शशीमें किधों अति चंचल शावक ह्वै अहिकेरे । कीधौं लसै युग पांति सलिन्द की कै अरविन्दनके अतिनेरे ॥ भाषे मुनीरघुराज ह्वै रेख बचाय दियो किधौं भारि चितेरे । काम कृपाण कै कामकमानकै रुक्मिणी भौंहपरे दृगहेरे ११॥

स० ॥ गोरी किशोरी सुहोरीसी देहतें दामिनीकी

द्युति देति बिदारैं। नारिनवै सब नारिनिकी जबप्यारा को रूप अनूप निहारैं॥ भौंरसी भौंहन सोहिरही सुरकी उरतें न टरैं पल टारैं। भीजे मनो मुख अम्बुजके रस भौंर सुखावत पंख पसारैं १२॥

क०॥ कैधौं लागी पंकजके अंक पंकलीक कैधौं केशव मयंक अंक अंकित सुभायको। यंत्रहै सुहाग कोकि मंत्र अनुराग कोकि मंत्रानिको बीज अधउरध अभायको॥ आसन शृँगार कोकि कामको शरासन है शासन लिखोहै प्रेमपूरण प्रभायको। रोष रुख बेष बिष पियूषम विशेष मैं भामिनीकी भौंहैं किधौं भौन हाय भाय को १३॥

क०॥ ताकी एक दीठताकी समताकी छाया परे धनुष कुटिलताकी चाल ढाल खाकीहै। कुंठित कृपाण ताकी गौरव गुमानताकी बाँकपटाकी छटाकी चालना छटाकी है॥ षट दर्शनताकी विद्या सूचन ताकीहै युग षट अंक रेख लेख बिधनाकी है। बहुत बलाकी भरी करती चलाकी चाल नाथ नित्यताकी भौंह बांकी राधिकाकी है १४॥ इति भृकुटीवर्णनसम्पूर्ण॥

अथ भाल वर्णन॥

क०॥ केशव अशोक कीधौं सुन्दर शृँगार लोक कनक केदार कीधौं आनँदके कन्दको। शोभाको सुभाव कीधौं प्रभाको प्रभाव देखि मोहेहरि रावसखि नन्दन सुनन्द को॥ चमकत चारु रुचि गङ्गाको पुलिन कैधौं चक चौंधे चित मतिमन्द हू अमन्द को। सेजहै सु-

हागकी किभाग की सभा सुभाग भामिनी को भाल कीधौं भाग चारुचन्द को १ ॥

क० ॥ करत उचाट पाट मंत्रनको मंत्र मनो ललित लिलाट तेरो रहत हियान है। कालिदास बिलसत सेंदुर को बिंदु चारु सुन्दर गोविंद मनमोहन जियान है ॥ सोनेतें सलोने भाल पलकसें सुन्दरीके जगमगो दियो लै तिलक सखियान हैं। राहुपै चलायो है मयंक यम धरसोतो रहि गयो मेरेजान उरमें मियान है २ ॥

स० ॥ कीधौं शृंगार के बारिज को दल नूतन रूपवती सरसी को। कीधौं अनंग को आसन ये दमकै छवि कंचन ज्योति लसी को ॥ पारस नेक बिलोकतही वसकै मनलेत है कान्ह रसी को। बालको भाल बन्यो अति सुंदर भाग्य भस्यो मनो भाग शसी को ३ ॥

क० ॥ थापी कैधौं यशकी जनमभूमि शशिवत उपजत जहां सब सुकृतको जाल है। तिलक तरोवर की छाया सुकलपतरु रसके आगरन को अजिर रसाल है ॥ भाग कैसे बासन सोहाग कैसो आसनहै मोहनीको शासन कस्यो तेबस लालहै। कामकेतुरंगनकी थापिका धरनि यहै किधौं बलिभद्र भोरी भामिनीको भालहै ४ ॥

क० ॥ रूपकी नदीमें पारपाइवेको पारोहै किकामको अखारो है कीरतिको भँडार है। लाजको महल प्यारे मण्डलकी आंखिनके पैठिवेको पैंडो है किप्रेमरस सार है॥राहूजानि बारनके भारते उरानोयातो चंद्रमाकोमानो अधखण्ड अवतारहै। यौवनको द्वारके निकाई को निकार भोरी गोरीको लिलार कैधौं शोभाको शृंगारहै ५ ॥

क० ॥ बेंदीभालु तखतके रूपको बखत यह शम्भु-शज लखत भँडार काममाल को। आनंदको कंद कैधौं शरदको चंद्र लसै दामिनी अमन्द कै किनारो सुधा ताल को ॥ मोहिबे को यंत्र कैधौं कामरूपी मंत्र बिधि रच्योहै स्वतंत्र मनहरण गोपाल को। अतिही बिशाल कैधौं ज्योतिनको जाल यह भारी तेरो भाल है हरैया लाल साल को ६ ॥

क० ॥ बपुपक्ष ते लगायो भयो गुरुबंधु जानि भुव सुतभेंटे तकि उडपनरिंदु है। कैधौं रबि सारथी कुरंग रथ सारथी भौ कैधौं निजनारी उरपर धरे इंदु है ॥ सौ-तिनके गर्व दहिबेको दै दहन कन बलिभद्र सर्बसुख दैन दुखनिंदु है। राग पियमन को पराग मुख पंकज को भामिनीको भाल कैधौं बदनको बिंदु है ७ ॥

स० ॥ भागको भौन सुहाग को चौतरो सुन्दरता को सिंहासन सोई। सागर है रसको पुल प्रेमको लो-चन पंथिन को सुख होई ॥ नूर कहै न सुनै लड़ बावरी चंदहि दोष कछू नभ होई। होतनहीं सरितेरे लिलाट की तौ सखि चौथको देखैन कोई ८ ॥

स० ॥ सोहत अंग सुभायके भूषण भौंरके भार लटै लट छूटी। लोचन लोल अमोल बिलोकत तीय तिहूं पुरकी छबि लूटी ॥ नाथ लटूभये लालन जू लखि भामिनी भालकी बंदन बूटी। चोपसों चारु सुधारस लोभ बिधी बिधिमैं जनुचार बधूटी ९ ॥

स० ॥ सोहत कंचन पत्र किधौं कलि कीधौं सुअष्टमि चन्द बिशाल है। काम कलानि के सीखिबे को किधौं

कामकी पाटी रसाल है ॥ भाषै मुनीरघुराज किधौं रस-राज की राजै सभाछवि जाल है। किधौं वशीकर मंत्र के यंत्र की पीठिलसै किधौं रुक्मिणी भाल है १० ॥

क० ॥ आधे चन्द्रमा के रूपढांके केश घटा कैधौं गगना के नाके विधु आठवीं कलाके हैं। कैधौं काम-देवता के कनक वटाके रूप औंधा के धरे हैं हेतु शशि के सुधाके हैं ॥ कैधौं एकछत्र ताके छत्र छविताके छीने नासिका के दंडला के गुण विधनाके हैं। कैधौं नाथ भाग्य ताके भाजन भरे धरेहैं कैधौं ये विशाल भाल भले राधिकाके हैं ११ ॥ इति भाल वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ वेंदी वर्णन ॥

दोहा ॥

भाल लाल वेंदी दिये छुटे वार छवि देत ॥
गह्यो राहुअतिआह करिमनु शशिसूरसमेत १
भाल सुवेंदी लालतकि जगजानी यह रीति ॥
तेरेशीश प्रतीति कै वसी मीत की प्रीति २
मिल चन्दन वेंदी रही गोरे मुखन लखाति ॥
ज्यों ज्यों मदलाली बढ़ै त्यों त्यों उघरत जाति ३
प्रथम सौगुणी छविहुती पुनि सो भई दुचन्द ॥
वेंदी तैंदी भाल में लजत बापुरो चन्द ४
कहत सबै वेंदी दिये आँक दश गुनो होत ॥
त्रियलिलार वेंदीदिये अगणित बढ़त उदोत ५
सोहत वेंदी पीत यों तिय लिलार अभिराम ॥
मनु सुरगुरु सनमानकै शशिदीन्हों शिरठाम ६

भाल लाल बेंदी ललन आखत रहे बिराजि ॥
इन्दुकला शशिमें बसी मनोराहु भय भाजि ७
तिय मुख लखिही राजरी बेंदी बढ़े बिनोद ॥
सुत सनेह मानहुँ लियो बिधु पूरणबुध गोद ८

स० ॥ एकसमै वृषभानुसुता परभातही कामकी केलि बनाई। नैननकी लखि आरति कीरति कीरति मोतिन माल सुहाई ॥ बेंदी जराव लिलाट दिये गहि डोरीदोऊ पटिया पहिराई। ब्रह्मभनै रिपुजानि गह्यो रबिकी मुसके जनुराहु चढ़ाई १ ॥

स० ॥ ऐनसुरा बिंदुली बिधु भालमें नाहिंन मोमन तेटहलै। चन्दके बीचमें कीच असी अलिबालक आनि पस्यो चहलै ॥ ब्रह्मभनै अलकै घुँघरी अलिके कुल काटनको कहलै। बैठि मयंकके फूल चितै परकोऊ न पैठिसकै पहिलै २ ॥ इति बेंदीबर्णनसम्पूर्ण ॥

अथअलक वर्णन ॥

दोहा ॥

इहि बिधि गोल कपोल पै परी छूटि लट साफ।
खुसनबीस मुनसी मदन लिख्यो कांचपर काफ १
सुन्दर गोल कपोल पै छुटी अलक छबि हेत ॥
मनहुं कोस कल धौत के पन्नग पहरे देत २
तियमुख अलक बिलोकि कै लहत ममारख संच ॥
धनुष उतारि मनोज जनु शशि पर धरी प्रतंच ३
अलकममारख तियबदन झलकत झांकि निशंक ॥
मनो चंद के बीच ते निकस्यो जात कलंक ४

छुटी अलक झलकत बदन बढ़त ममारख मोद॥
बिचरत पोवा नाग के मनौ चंद की गोद ५
अलक बाल के बदन लागि रही ममारख राजि॥
चढ़ेजात जल अलिमनौ शशिपर सेना साजि ६
झलक ममारख अलककी लसत बदनकी सींव॥
सेली मनसिज की मनौ मेली शशि के ग्रींव ७
अलक ममारख तिय बदन छूटि लियो जगलूटि॥
प्रलयरूप नागिनि मनौ परी चंद पै टूटि ८
छुटी अलक तिय शीशते करि बेसरि सों रोस॥
मानहुं छौना नाग के चाटन निकसे ओस ९
लट छूटी तिय शीशते रही कुचन पर आय॥
मानहुं कुम्भ गयंद के अंकुश धरे बनाय १०
कुच उतंग पर अलक अलि राजति है यहिबेश॥
शशि मण्डल तजि अहिबधू लपटी अंगमहेश ११
छुटी अलक तिय शीशते खुभी आय उरजंत॥
मानहुं मत्त गयंद ज्यों सूंड़ि रह्यो धरि दंत १२
सटकि अलक कुचपरपरी तिहि शोभाको शोर॥
मनहुं कनक घट मधुभरे शशि ऐंचत स्याडोर १३
स०॥ श्रीनँदलाल गोपाल के कारन कीन्हों शृंगार
राधे बनाई। कुंकुम आड़ सुकंचनदेह दिपै मुकताह
की झलकाई॥ शीशते एक छुटीलट सुन्दर आनिकै
कुच पै लपटाई। गंग कहै मनो चन्दकेबीचके शम्भु
पूजन नागिनि आई १॥
क०॥ आजु लखी ललना लवंग लतिकासी लोनी
अँगन ते जाके आभा उमगै अपार है। लरीही सरोवर

पै लैकर सखीन संग कीन्हों हनुमानतहां तरक विचार है॥ मोतिन की माल चारु कुचपै लखात तापै परी मुख ऊपरते लट सुकुमार है। मानो शम्भु शीश पै निहार गंगजूको मिलै चलीचन्द्रबिम्ब ते कलिंद जाकीधारहै २॥

क०॥ मेचक अलक लट छूटि के कपोल आयो करत कलोल गोद पोश्रा द्विजराजके। भनत दिवाकर सुटेढ़ी बेढ़ी चाबुक सों सोहतहैं झूलि झूमि मार महराजके॥ कैधौं अरबिन्द मकरन्द रस लेबेहेतु श्रेणी श्रेणी बैठिगयो भौंरन समाजके। राधिका रसीली कैधौं सेली लटकाइ शीश फाँसिलेत अकुलाइ प्यारोब्रजराजके ३॥

क०॥ मोहर ज्यों मुकता की युगल बिकारी दई लोचन तरंग कैधौं चाबुक मसंदको। लहकि लहकि टेढ़ी बेढ़ीसी अलक दोऊ बहकि बहकि करै चरचा अनंदको॥ लटकि कपोलन कलोलन करत झूलि फैलि फहरानो कैधौं ध्वजा काम फंदको। बिषम कटोहै अल सोहै से कुशलसिंह नागन के छौना पै बिछौना कियो चंदको ४॥

क०॥ साँवरे रसिक रस बस बिपरीति रची प्यारीके लजोहैं नैन मनको हरत हैं। मंद मंद मेखलाकी ध्वनि सुनि दत्त कबि चेटुआ मरालन के मन पकरत हैं॥ झूमती हैं अलकैं छबीली मुख ऊपर यों मानो बाल ब्याल सुधा चंदते भरत हैं। टूट टूट श्रमजल बुंदयोंपरतमानो कनकलता ते मुकताहल झरत हैं ५॥

क०॥ सोने सो शरीर तापै आसमानी रंग चीर औरै ओप कीनी रवि रतन तरौना है। सोमनाथ कहै इन्दिरा सा जगमगै बाल गाढ़े कुच ठाढ़े मानो ईश युग मौना

है ॥ कारी घुंघुवारी मंद पवन झकोर लागे फरहरे अलक कपोलन के कोना है। सो छवि अमंद मानो पान सुधा बुंद करि इंदु पर खेलत फनिंदनके छौना है ६ ॥

क० ॥ सरस शृंगार रस सारही को धार यह अंकही की राजनि मयंकमाँड़ डारीकी। शीशफूल शीशपैदिनेश मार तरण्ड ताकी सूक्षम सुताकी रुचिराजतपनारीकी ॥ चोटी चारु चित्रित सुहागिनी की माँग भरी लटकी मयंक मुखनागिनहै कारीकी। केशहीकी हलक झलक झलकत लखि लगति न पलक अलक प्राणप्यारीकी ७॥

क० ॥ सरस सुगंध घालि शीशते अन्हाय बाल रोरी बिन्दु भाल की विशाल छवि जोई है। धारी सेत सारी सो किनारी जरतारी कोर रसिक बिहारी प्यारी सुख में समोई है ॥ भीजी लटैं लांबी आय चिपटी उरोजन पै हेरि यह उपमा अनूप उरगोई है। शीत भीत आतप में मानो गिरि ऊपरयों ठौर ठौर पन्नगी पसार पूंछ सोई है ८ ॥

स० ॥ रैनि उनींदी प्रिया पलिका पर शोभा समूह इकैठ रही है। सो छवि प्यारे प्रवीण विलोकत आनंद सो हिय पैठि रही है ॥ गोल कपोल परीलट एक सनेह सनी कछू ऐंठि रही है। हेतु अमी निशिपाल के ऊपर ब्याल वधू मनो बैठि रही है ९ ॥

क० ॥ विरचि अनूप जात रूप सों प्रपूरी प्रभाजर शशि वंश आदि कुण्डली अखण्ड है। तामें माणि भान क्रान्त कान्त पंज राखी गुनी जगमगज्योति रहीताकी अति मण्ड है ॥ भनरघुनाथ किधों चूड़ामणि तेरी बाल सौत मन शालनको दीन्हों कामदण्ड है। कैधों

मेरु शृंग पै घने घन पै जगज्ज्योति तापै उडुकुंड में बिराजो मारतंडहै १० ॥

स० ॥ हैं कचश्याम सोई तनयारबि तेज कढ़ी एक सौति नवीनहै। कै मधुपावनी मंजु मनोहर बैठिरही ढिग कंज अधीनहै॥ बंकपरी लटएक दृगंतर सो छबि देखत प्यारे प्रवीनहै। रूपप्रबाह नदीतट खेलत मैन शिकारी बझावत मीनहै ११ ॥

स० ॥ तीयनदी जलसुंदरता कुचकोक सुबार सिवार लसै। दृगकंज तरंग वली रसरोस करारे लखें सुधि सातौं नसै॥ लटकी लट बेसरिकै बनसी मुकता मनि कंठ सुचारोफंसै। मनमोहनको मनमीन बिधायकैरीझि कै मानो मनोजहँसै १२ ॥

क० ॥ तैसी चख चाहन चलन उतसाहनसों तैसो बिबि बाहन बिराजत बिजैठोहै। तैसो भृकुटी को ठाट तैसोई दिपै लिलाट तैसोई बिलोकिबेको पीको प्राण पैठोहै॥ कहैकबि नीलकंठ तैसी तरुणाई तामेंयौवन नृपति सो फिरत ऐंठो ग्वैठोहै। छूटीलट भालपरसोहै गोरे गालपर मानोरूपमालपर ब्याल ऐंठिबैठोहै १३॥

क० ॥ छोटीछोटी जुलफैं द्वै ओरन मरोरराखीं कैधों मुखकंजमें मधुप अरुझानेहैं। कैधोंचंद मंडलपै पीवन पियूषआये नागिनके छौना मृगमद लपटानेहैं॥ कैधों काम कुंजरके अंकुश सुभगबने भूलिकै धरेहैं रैनिराज पहिचाने हैं। कैधों शिशुश्यामके सिपाही दोऊ एनखूनी खैंचि खैंचि खंजरयै कौनपै रिसाने हैं १४ ॥

क० ॥ निकसी सशंकित कलङ्क रेखछीन कैकै बदन

शशी में दृग देखै अटकतहै। कैधों अलिवाल पाँति चली थकि कंजढिग अधर अमीको नागिनी सी छटकतहै॥ पति मिलिबेको भुजभामिनी पसारी एक सौति चित चाहकी चटक चटकतहै। नैन नटनागर लकुट मनि कण्ठ कैधों कारी सटकारी प्यारी लट लटकतहै १५॥

क०॥ देखै मुखचंद्रद्युति मंदसी लगत अति लोचन विलोके मृगसावक सरफ है। सोनेकैसेपात गाल देखत लजात जात मैनका नकही जातरूपऊ तरफ है॥ मोती मोर बेसरको लसै लाल ओठन पै जैसे मनि बिम्ब ढिग बुन्दन बरफ है। अतरन भीनी लट लटकै कपोलन पै मानो त्रिवि आरसी पै फारसी हरफ है १६॥

क०॥ दृगमीन बाझिबेकी वंशी ये सचीहै कैधों नागिन बचीसी पीवै अमृत अमंद है। प्रेम के कपाट खोलिबेकी अँकुशी है कैधों कैधों ये प्रसाद मन फाँसिबे के फंद है॥ रूपके जहाज बीच लंगर लगोहै कैधों मोहनीमहलपर लसत कमंद है। चंदकी चटकपर राहु की सटक कैधौं रहीहै लटकि लट प्यारेके पसंद है १७॥

क०॥ केशव कसाहै कैधौं अनंग की सुरंग भूमि लोचन कुरंगनकी चाल हटकति है। पिय मन फांसिबेको फांसीसी पसारी कैधों कैधौं उपमाकी मेरीमति भटकति है॥ तरणि तनूजा खेलै तारानाथ साथ कैधों हाथपरी तम की तरुणि मटकति है। सुनि लोल लोचनि नवल निधि नेहनिकी अलकैं कि अलिक अलक लटकत है

क०॥ कैधौं फन्दा दोहरा के चन्दमाके फाँसि
राहुजो चलाके लाके धर्म्म हठताके हैं। कैधौं

सुधा के निमित्त मथिवेके काज रति राज पाट डोर ऐसे लटका के हैं॥ कैधौं मुख फूल गुच्छा केसे पाके मधु पाली कैधौं ज्वाल विरहा के धूम छेके छाके हैं। कैधौं उरगाके जोड़े उमानाथ पिंडिकाके कैधौं बाँके अलक छलक राधिका के हैं १९॥

क०॥ छूटी रति रंग में अनंग की उमंग भरी आनि मुख चन्द पै अनंदित परै दिये। कछू सटकारी कछू अधिक गरूर वारी कछू अनियारी श्याम सारी सों लरै दिये॥ नोने कवि कहै बाल लाल मदमाती कछू आनि करिछिति जो सुहाइ सो भरै दिये। सौरभ बलक वारी झलकै कपोलनि पै अलकै तिहारी प्यारी जुलम करै दिये २०॥ इति पलक बर्णन सम्पूर्णम्॥

अथ पाटी बर्णन॥

क०॥ कैधौं बेनी पन्नगी के फन दुहूं ओर कैधौं मृग दृग रोकिवे की रूप भूप घाटी है। मुख बिधु तानके वितान युग मेरे जान कमल के ऊपर सिवारन की डाटी है॥ कैधौं करतल रसराज राखे माथे दोऊ दिपति दिनेश ताते ललित लिलाटी है। एरी आगे मोहन मयूर से निरखि नाचैं सघन पटलीकी परिपाटी तेरी पाटीहै १॥

क०॥ कैधौं रसनायक बिहंगम के युग पच्छ कैधौं प्रति पच्छ सौति जन के समोद के। कैधौं तम पूरि द्वै कला धरते छप्यो आय कैधौं विप्र बालक दिवाकर के गोद के॥ परशराम कैधौंश्यामवेदके अनूप खण्ड कैधौं काम नटके खिलौना मन मोद के। पाटी के त्रिभागसोहै

पियके अटलभाग नीरभरे मानो चारुपटलपयोदके २॥

क० ॥ कारीनीकी निपट संवारि नेह चिकनाई सनि घनवारी की बनी है प्रेम पथ की। बसन लपेटि कर मुरली मुकुट धरि डोरी करि जगत मनोरथ के रथकी॥ नूर चोप निपट है ताके चलि गयो मन तहीं को भयो है तान गावै ताके गथ की। चढ़े तो चढ्यो है वाट पावै त उतरिबेकी प्यारी तेरीपाटी कैधों घाटी मनमथकी ३॥

स० ॥ कैधों कुहू युग आय मिली कैधों भादों रैनि के ये युग भाग हैं। काम शृंगार अवास किधों किधौं ये पिकके पंख ह्वै संगलाग हैं॥ जाह्नवीधार के दोऊ दिशैं किधौं कालिन्दी धार द्वै सोहे अदाग हैं। केशव कैधों विदर्भसुताके त्रिपाटी लसै युग मैनकी वागहैं ४॥

क० ॥ दरश दरश को परस होत वलिभद्र कैधों है सरस शलासनि सुरभानकी। रसराज पक्षी कैसे उभै पंख कैसे सोहैं ढांकिवैठो छपाकर मेचक वितानकी॥ तमके पटल लिपटानेहैं मुकुट सों कि ससर कदम्बिनी कसौटी पंचबानकी। पाटीतेरी तरुणी युगलऐसी राजै मानो जामी युग यमुना शिखा रतनसानकी ५॥

क० ॥जूरो तियशीशकै कंगूरा काममंदिरको शूरोउर शालतहै पूरोछांह करिकै। चीरि मांगमोती भरि बंदन लगावै कैधों पांवड़े बिछावै सुखलोक को डगरिकै॥ सरस सँवारि पाटी पारिपारिकंगही लै सौतिनके नैनन करोती सीप करिकै। सोरहूकलाते परिपूरण है कलानिधि शीशचढ़ि आईकैधों कारीघटा भरिकै ६॥

क० ॥ रातसेत फूलनकी उलही ललित पांति कैधों

चारु यौवन महीपतिकी आटीहै । कालिदास आस पास बिलसै सलोनी श्याम कैधौं कामकुटिल बहलिया कीटाटीहै ॥ एरीमृगनैनी हरिमन भटकायबेको कैधौं पाटपूरि बेनी घाटही की घाटी है । प्रेम रसपाटी सोहै प्यारीतेरीपाटीकैधौंचारुवरमंत्र बीजबोइबेकीबाटीहै७॥

क० ॥ बदन कलानिधिको परम प्रकाश मानतम भजि हेमशैल शिखर सुडाटी है । कैधौं सुधापाय राहु बैठ्यो चन्द्र मण्डल पै ताको मांगरेख चक्र विष्णु अल काटीहै ॥ मनरघुनाथ किधौं दोनोंओरकाम श्यामबसत हमेश किधौं मोतिनकी टाटी है । सघन सुपाटी घन कैधौंप्रीतिपाटी पढ़िरसपतनाटीकिधौंतेरीबालपाटीहै८॥

स० ॥ बैठी शृँगार शृँगार कैबाल दयो मृगाबिन्दु अनूपम भाल पै । का कहिये उपमा तिहिकी घुंघुवारी लुरैं अलकैंदोऊ गाल पै ॥ पाटिनबीच सिंदूरकी लीक विराजति है द्विज ऐसे सुहाल पै । मैनमहीप मनोजग जीतिकै खूनभरी बरछी धरीढालपै ९ ॥

स० ॥ मंजनकै तियबैठी अवासमें पासखवासिनिहै सवठाढ़ी । सारीसुगंध सचिक्कनकै शुभबेनी बनायगुही अतिगाढ़ी ॥ पाटिनबीच सिंदूरकी रेख पुखी लखियों उपमा अतिबाढ़ी । चन्दके लोलनको भुकिराहुमनो रसनामुख बाहिरकाढ़ी १० ॥

क० ॥ पटिया के पारे कौनपारे तासुउपमा के कवि ताकेगुण ढंग रहत लजाकेहैं । भृगुवर बेंदाके बिराजि- वेको आबदार मेहराबदार दरखम्भ मुकताकेहैं ॥ पिक निक जोड़ेजाके बैठे मुखजोड़े मनोंकैधौं चंद्रमा के बीच

चञ्यों घटाकेहैं। हीराके कतारपर नीलमजटित चांके
धौं निशिनाथताकेअंग कालिमाके हैं ११ ॥ इतिपाटी
र्णन सम्पूर्ण ॥

अथ मांग वर्णन ॥

दोहा ॥

अरुण मांगपाटी नहीं कामजगतको मारि ॥
असित फरीपै लै धरी रकत भरी तरवारि १
श्याम रंग पटियान मधि भारिसेंदुरकी मांग ॥
खून भरी मानो धरी युगल ढाल बिचसांग २
सोहन पाटी असित विचहै सिन्दूर यहि हेत ॥
मानो विधुतुद बन्धु ते रवि कर मिलननदेत ३
मोतिन की लर माँगयो रही वदन द्युति बेधि ॥
मनो अँध्यारी मध्य ते दै भाज्यो शशि सेंधि ४
मिलि टीकोभरि मांगते मोतीलर छविवीर ॥
मनो नील गिरि शिखरते बहत सुरसरीनीर ५

क०॥ तामसी तमोगुण को जानिकै सतोगुणधो
पकी शलाका तासुऊपर चलाई है। कैधौं जगजीत
ाम सांग संदली पै धरी कैधौं सुधाधार राहु सदन में
ाईहै ॥ कैधौं कोऊ ऋषिताकी मनसाहै मेरेजान होम
र मध्यमानो आनि उरझाईहै। नूरकहै निपटअधीन
तलालमेरो प्यारीशिर तीखी मांगमोहनी चनाईहै १॥

क०॥ तमके विपिनमें सरल पंथ सात्विकको कैधौं
लागिरि पर गंगजूकी धारहै। कैधौं वनवारी बीच
जत रजत रेखकीधौं चन्द्र कीन्हों अंधकारको प्रहार

है ॥ मापत शृंगार भूमिडोरी हास्य रसकी कि बलिभद्र
कीरति किलीक सुकुमारहै । पयकीपसार घनसार कि
असार मांग अमृतकी आपगातु पाईकरतारहै २॥

स० नीलके शैल पै राजिरही किधौं गंगकी धार है
शंभुकीढारी। सोहतिहै किधौं श्यामनिशामधि स्वातिकी
पन्थ महा छबिवारी ॥ कामके काननपंथ किधौंतनुरावरे
चंदनरेख निहारी। फूलीतमालपै मल्लिकाकी लतिका
किधौं रुक्मिणी मांगमुरारी ३ ॥

क० ॥ निपट नबेलीबाल सुघर सहेलीलाल रचि
पचिशीश मांगसुंदर बनाईहै । ईंगुरकी चहकारीसीधी
लीक लहकारी ताकीद्युति देखिनूर उपमा सुपाई है ॥
दुहूं ओरपाटी मानो यमुनाकी छबिठाटी ताकेबीच शा-
रदाकी धारसी सुहाईहै । श्यामघटा मध्यमानो बिज्जु
छटाकीसी रेखकैधौं श्यामगिरिपर बहिपांतिछाईहै ४ ॥

क० ॥ दुतियाको चंदकीधौं तमके पर्यो है पाले
कैधौंबेनी नागजीभ सुधाको निकारीहै। कैधौं रति काम
दोऊ झगरिके आपुसमें सुखभूमि बांटि हेमसीमा बीच
डारीहै ॥ कैधौंप्रेम तौलिबेकी डांड़ीसी बनाईबिधि कैधौं
चंदकोपि राहुपर चोटमारी है।कैधौंसुधाधारचलीनागिन
के आनन ते कैधौं मांग नागरी की सखिन सुधारीहै५॥

स० ॥ सोवत बाल गोपाल लखी मुख अंचरटारिकै
मोदभरेउर । को कबिजो छबि भाषिसकै अमभूरि रहे
मनपूरि सुरासुर ॥ मांगमें सेंदुर सोहिरह्यो गिरिधारन
है उपमा तिहूंपुर । मानो मनोजकी लागी कृपानपर्यो
कटिबीचतेराहु वहादुर ॥ ६ ॥

क० ॥ पाटिनमें मांगसोहै उपमाकहै सो कोहै ताते
कहिये बीचउपचार कीन्होंहै। वदन सरोवर में गोल
: गडोरे शीतनितरूप जलवढि जोबन नवीनो हैं॥
थ जल भरिकै सरोवर उछरि युगकान कुंडद्धझकिके
:पपूरिलीन्हों है। नेहीह्वै प्रवाहचल्यो उचटि जोमेन
ला ताहीले शृंगार वारीमाहिकाटि दीन्होंहै ७॥

क० ॥ पहिलेही ललनानवेली अलबेलीरची रचना
नमंतकी सहेलिनके संगहै। कालिदासकैसी पाटीपारत
नीहै घनी अलकै अनूप वन्यो वंदनको रंगहै॥ देखि
न सुंदर गुविंदको मगन भयोकैसी बनिआई मनमो-
नीकी मंग है। लै चल्यो दुशाखा जनुदीपक जगाय
को जोबन तमीपतिके आगेह्वै अनंगहै ८॥

क० ॥ रेशम रसमसम सरोरुह सुंदरीके सघनघटा
ी श्यामताई अहटात है। तापै दुहुंओर करतलन
ँवारिपाटी पियमन पारिवेकी घाटी दरशातहै॥ गुंथित
ननि गजमोतिन सँवारी मांगताकी उपमाको मति
री अकुलातहै। तमक चमक तमपुंजके चमून चीर
ानोचारु चंद्रमाकी चौकीचली जातहै ९॥

स० ॥ चीकनीचारु सनेहसनी चिलकै द्युति मेचक
ाई अपारसों। जीतिलिये मखतूल के तारतमीतम
ार ह्विरेफ कुमारसों॥ पाटी दुहूंबिच मांगकी लाली वि-
ाजिरही योंप्रभा विस्तारसों मानोशृंगारकी ठाटीमनो
नच सींचतहैं अनुरागकी धारसों १०॥ इतिमांग वर्णन
सम्पूर्ण ॥

अथ शीशफूल वर्णन ॥

दोहा

शीश फूल तिय शीश पै नव सत साजे अंग ॥
मानो कंचन बेलि पै मणिले चढ्यो भुजंग १
अद्भुत कौतुक देखिबे योग आज विख्यात ॥
चढ्यो चन्द पर राहु पुनि तापर रबि दरशात २
शीशफूल तिय शीश पै इहि उपमा के भाय ॥
मनो भानुस्वर भानुके शीश चढ्यो दरशाय ३

क॰ अंग अंग भूषण जड़ाऊ के जग मगात चौकी चमकत छवि छाजे भाल गंडकी।सारी जरतारीकी किनारी सुकमारिकी है पसरी किरण रुचि राजत प्रचण्ड की ॥ भागके तखत बैठ्यो सोहत सुहागताको छत्र है छबीली लट लागे द्युति दण्ड की । शीशफूलशीशदेश राजतादिनेश के सघन घनऊपर उदैज्यों मारतण्डकी १॥

क॰ ॥ कैधौं श्याम घन में प्रकाश है प्रभाकर को कैधौं अँधियारी रैनिमध्य आभा इन्दुकी । कैधौं गुरु गिरिके शिखर आनि दीया धस्यो यमुना के जल पर झाईं अरविन्द की ॥ काली के कपाल पर केशव को पदुम पद पन्नग के माथे कैधौं मणिहै फणिन्द की । तेरे शीश शीशफूल ऐसी शोभा देत आली मानिनी के पाँय परी मूरति गोविन्दकी २ ॥

क॰ ॥ शीश फूल शीश पै रतीश के निशान कैधौं लाललै भुजंग दाबे मुखमें सोहातहै । भनत दिवाकरकी यमुना कीतोय पर फूले जलजात सरसात दरसातहै ॥

हारो है लड़ाई कैधौं राहुने छपाकरते लागे चोट ग्रीव
मानो लोहू उगिलातहै। कैधौं काले मेघ में विभास
भान मंगल है मारतण्ड ज्योति पेखि पेखि तरसात है३॥

क० ॥ शीश शीशफूल सोहै त्रिभुवन मन मोहै उप-
मा को कबि टोवैबनतन बानको। कंचन घटित मणिमा-
णेक जटित लागे श्याम श्वेत पीत नग विविध विधान
को ॥ प्यारीकी सँवारी पाटी रुचिर अनूपकारी नूरमति
अनुसारी ज्ञान अनुमानको। श्याम गिरिवर पर प्रबल
प्रचण्ड कर मेरे जान प्रातही उदोत अंशुवानको ४ ॥

क० ॥ बादर रसाल पर दामिनी को ख्याल कैधौं
चंपक की मालसी लसत बाल लालपै। रति के मुकुर
पै भुजंगिनि लसति कैधौं कैधौं कारीलट लटकत गोरे
गालपै॥ द्विजराज श्रीपति रसिकमणि शीशफूल उचकि
उचकि कै परत आछे भालपै। मेरेजान नखत समेत
रवि नटवर प्यारी हाली भरि नाची कालीके कपालपै५॥

क० ॥ पीतम प्रवीण के खिलौना है अनोखे किधौं
द्युति छबि चोखे दिपै हरित दुकूलहै। कैधौं घन पाटिन
के मध्य चंचला में उड़ निकट प्रभान भये उदित अतूल
॥ भनै रघुनाथ दिव्य दिपत तिहारो भाल हाल लाल
मोहनको कैधौं प्रीति मूलहै। शोभा अनुकूल मंजु सेंदुर
समूल किधौं मोती युत मांग बाल तेरे शीशफूलहै ६ ॥

क० ॥ जगर मगर होत यमुनाके जल कैधौं कोक-
नद कमनीय पूरन प्रभनिको। सुकवि रतन कैधौंराजत
तन बर कारी कुण्डली सी फणि ऊपर फवनि को ॥
कैधौं सुर भानुपर भानु भोरही को कैधौं उग्यो भौमतर

देत अनुभव तरनिको। कैधौं प्राण प्यारी की सँवारी पारी पाटिन में सोहत सुभग शीशफूल लाल मनि को ७॥ इति शीशफूल वर्णन सम्पूर्ण॥

अथ केश वर्णन

दोहा

चिकुर चीकने चटक छवि छोरत छुवै छवानि॥
अति मेचक मृदु मन बँधै बिना गिरह गुन खानि १
सहजसचिक्कणश्याम रुचि शुचिसुगंध सुकुमार॥
गनतन मन पथ अपथलखि बिथुरे सुथरे बार २
बिथुरे सुथरे चीकने घने बने घुंघवार॥
रसिक न मन जंजीर से प्यारी थारे बार ३
छुटत छुटावें जगत ते सटकारे सुकुमार॥
मन बाँधत बेनी बँधत नील छबीले बार ४
सटकारे कारे सुभग घुंघवारे सुकुमार॥
मतवारे रसिकन करत नेही तिय तुव बार ५

क०॥ कारे सटकारे केश मृदुता भरी है बेश मखतूल श्याम कैधौं कुहूके अँधेरे हैं। दिवाकर भट्टयह कहत बिचारि बात कैधौं तमधार आय चन्द्रमा को घेरे हैं॥ जम्बुफलहारे देखिकालिमा अनूप छवि कैधौं अम्बु यमुनाके शीशपै बसेरे हैं। निबिड़ पयोद चहुं कोद ऋतु पावस सी छूट कुच शृंगर छ्वै छवालो लट केरे हैं १॥

स०॥ कैसी छवीली की छाय रही छवि छूटि रहेकच कुंचित कारे। कौन कुहू घन कौन कितीक करै तिनसों तम क्यों समतारे। सोहत आनन ऊपर यों अलिवा-

रेज बीच महा तमवारे। कै बिधुऊपर हेतु अवै अहि
ो मिस केशव शीश सुधारे २॥

क०॥ कारे सटकारे फटकारे चटकारे नेकु धूप दै
नवारे सुखमा समूह ग्रसिगो। कोकिला कुहू कै सो दुहूं
ो कियो मैलो मन काशी राम भौंरनि को भावनी के
सिगो॥ सावन के घन वन सघन तमाल तरु तरणि
नूजा ताहि हेरिहियो हँसिगो।तेरे तन रूपकी तरंगिणी
रुण मन पैरिवारपारन से बारनि में फँसिगो ३॥

क०॥ कारे कजरारे सटकारे घुंघवारे प्यारे मणि फ-
णवारे भौर पांयनलौं ऊटे हैं। वासे हैं फुलेल ते नरम
रख तूल ऐसे दीरघ दराज व्याल व्यालिनभौजूटे हैं॥
ासीराम चारु चौर यमुना सिवार वारौ ऐसी श्याम
ाई पै गगन घन लूटे हैं।छाइजे हैं तिमिर विहायरैनि
ाइ जैहै भारि बाँधि अजहूं सँभार बार छूटे हैं ४॥

क०॥ कैधौं करतार तार सरस शृंगार हीते कीन्हों
हैं निकार ताते सुखमा अपार हैं।कैधौं मार पटकार
नरवारे भार भार सोई मखतूल तूल शोभित सुधार
हैं॥ सुख के उदार रूपतार कैसे यार कैधौं कैधौं ताप
ान्हर कुमारजूके प्यार हैं। सटकार सुकुमार मन के
हरणहार कैधौं येजरवदार दारतेरे बार हैं ५॥

क०॥ कोमल कुटिल नील मणि की शिखासे चल
चमल्ल बिशाल चारु चीकने नसरि के। सुन्दर उदार
ऊचनूपुर लौं आनिलागे उनये सघनमानो सुखमासों
भरिके॥ जोहनके काजलागे गोहन गोपालडोलें सोहन
दिनेश मनमोहन हैं हरिके। भौंरनके भार मखतूल

कैसे तारदेखे होतानिशि बारछूटे बारये कुंवरिके ६ ॥

क० ॥ कैसेहैं सिवार जैसे श्याम मखतूल तार कैसेहैं सुतार जैसे अहिके कुमार हैं। कैसे हैं कुमार जैसे मोर पखवार कहि कैसे पखवार जैसे अलिनके हार हैं ॥ कैसे हैं सुहार जैसे कामचोर बारकहिकैसे चौरवारजैसे सघन सुधार हैं। कैसे हैं सुधारजैसे षोडश शृंगार कहिकैसे हैं शृंगार जैसे प्यारी तेरेबारहैं ७॥

॥क० । कालिंदी की धार निरधार है अधारगण अलिके धरत या निकाईके नरेशहैं। जीते अहिराज खंडि डारेहैं सिखंड घन इंद्रनील किरण कराई न हियेशहैं ॥ ऐंड़िन लगत सेनाहियाको हरषकरै देखत हरत रवि कंतको कलेशहैं। चीकने सघन अंधियारे ते अधिक कारे लसतलछारे सटकारे तेरेकेशहैं ८॥

॥ क० ॥ सोंधे सुकुमार के सिवार तंतुतार कैधों मेचक चँवरचारु कामनरनारिके। कैधोंमायाजाल योगजामी मरकत भूमि मन अभिलाष ऊखरसे रसवारिके ॥ निधि नील मंजरी मयूष प्रतिविम्ब कैधों सुंदर बिशदश्याम लांबे ससतारिके। तमीतम तारकेअगार धूमधार कैधों छूटे बारबार वृषभानकी कुमारिके ९ ॥

क० ॥ श्यामाअहि कोयलकी श्यामता लगत कैसे कारे झपकारे प्यारे अरगजे सरसत। दीरघ अमल केश कपोल पै कुचन छ्वै जंघनते लटकि चरणहूलौं परसत ॥ कज्जलते चटक छटाकिरहे शीशपर देखिदेखि मेघन ज्यों कजरारी तरसत। चंदनकी चौकीबैठी बारन सुखावैबाल छोरनते चुवै बुंदमनो मोतीबरसत १०॥

क० ॥ मरकत सूत कैधों पन्नग के पूत कैधों राजत
अभूत तमराज कैसे तार हैं। मख तूल गुण ग्राम शोभि-
त सरस श्याम मृग काननके कुहूके कुमार हैं॥ कोपकी
किरण कैधों नील नलिनी के तंतु उपमा अनन्त चारु
चमर शृँगार हैं। कारे सटकारे भीजेसोंधे सों सुंगध वास
ऐसे बलभद्र नवबाला तेरे बार हैं ११ ॥
स० ॥ मंजन कै तिय बैठी अगार वगार दये जनु
मार कुमार हैं। कोऊ कहै तम तोम की धार कोऊ मख
तूल के तार सिवार हैं॥ कौन कहै उपमा तिनकी द्विज
केशसुकेशी के डारत छार हैं। सारहैं पीतम के दृगके
अथुरे सुथरे अलबेली के बार हैं १२ ॥
क० ॥ मरकत तार कैधों काली के कुमार कैधों तम
निहार कैधों लतिका सिंगार हैं। कुहूकी किरिण धार
कैधों कोप कला चार सनिकी कतार कैधों उठी धूम धार
हैं॥ श्याम मखतूल तार शोभित सिवार कैधों चमर
सिंगार कैधों मोहके पसार हैं। खैंचि मृगमद सार डोरी
टी कैधों मार मार अवतार कैधों दार तेरेबार हैं १३ ॥
क० ॥ यौवन सरोवर के कोमल सिवार मूल काम
तनु तूल मखतूल कैसे तार हैं। पंच शर सिंधुरके श्याम
भौंर भौंर कैधों कैधों शीश सहज सिंगार रस सार हैं॥
साथे मार मरकत मणि के मयूष कैधों कैधों धरे चन्द
के तिमिर परवार हैं। लांबे लांबे जामें ज्योति लताके
वितान कैधों कैधों श्याम वरण छबीले छूटे बार हैं १४॥
क० ॥ वाला वार छोरके निवारतहैं वारवार तारतार
ल रहे चौगिर्द मुखिन्दु के। लहरत एँड़िनलों छहरत

चूमे भूमि झर झर मोती परें पुंजन जलिन्दु के॥ भनै रघुनाथ कैधौं जानिके सुधाके बुन्द जात चले मुदित मनोहर मलिन्दु के। मानो चन्द्रमण्डल पै कुण्ड में अमी के हेतु धाय गये छौना छाय लाखन फणिन्दु के १५॥

क०॥ लांबे सुललित लहकारे सटकारे कारे कंचन के खम्भ फैले बढ़े जात पन्नग कुमार हैं। मधुकर भार मख तूल कैसे तार कैधौं मरकत मणि छबिदार तम धारहैं॥ राजै मणि कण्ठ रसराजके कुमार कैधौं सुखमा सरोवरके सुथरे सिवारहैं। अंजनके सार पियमनके हरन हार कैधौं या छबीलीके छबीले छूटे बार हैं १६॥

क०॥ लांबे लहकारे सटकारे सुकुमार कारे मृग मद धारे मख तूल कैसे तार हैं। तमके निवास कैधौं तामस प्रकास कै शृंगार के सरोवर में सुथरे सिवार हैं॥ मारि शिर मौर के मुबारक ये भौंर कैधौं चातुरी के चोर मनि मेचक के सार हैं। शशिके समीप कैधौं राहुकी रसन सो है नागिन के बार कै सुहागिन के बार हैं १७॥

स०॥ हठि मांगत बाट किधौं लछिमी को सरोजसों आनि सिवार अरे। किधौं आरसीके घर तें उत शंभु समूह फनी छबि के बगरे॥ इमि राधिका के मुखके चहुं ओर बिराजत बार महा सुथरे। भजि चन्द चल्यो बि-चल्यो रन ते तब वृन्द मनो जुरि पाछे परे १८॥

क०॥ रेशम लछारे रसराज रंगडारे तिन्हें उपमा सुधारे सोहैं मतिन गुनीन के। प्यारी तेरे बार मेरेजान है रचे विरंचि साचिकरि कारे रंग सकल दुनीनके॥ देखि कै सिमंतवन्त बिथुरे सनेहवन्त बुद्धिवन्त कैसे रहैं

गुनन गुनीन के। लेत श्यामताई काल कूटहू की आई पुनि ताकी प्रभुताई मनमोहन मुनीनके १९ ॥

स० ॥ जनु इन्दु उयो अवनी तलतें चहुंओर छटा छविकी छहरी। तहां देखत शम्भु गोपाल खरे तियके मुखकी सुखमा सिगरी ॥ बढ़ि एँड़िनलों उमड़े बड़े बार भई तट राधिका न्हाय खरी। जनु सोत समेत धरे तन दिव्य मनो जल तें यमुना निकरी २० ॥

क० ॥ गरकि गुलाब नीर चीर सों लपटि करे आप अङ्ग रँग रंगे आभा अति अगरे। जावक जवान मिलि छाजत छवान छवि जिनकीदवान वन भौंर डाहि डगरे ॥ मृग मद कज्जल कलिन्दी तम धूम धार काशीराम वारिबे को और श्याम सगरे। नैन पाइबे को फल होन दैरी पूरो मत बांधि प्यारी जूरो तू रहै दे बार बगरे २१॥

स० ॥ नीलमणीनके सूत किधों कैधौं पन्नग पूत लसैं छवि बार हैं। रेशम श्याम समूह किधों कैधौं काम वटे के बरोह अपार हैं ॥ राजिव नयन सुनै रघुराज किधौं रसराज नदी के सेवार हैं। कै सटकारे महा छवि वारे प्रकाश पसारे सो रुक्मिणी वार हैं २२ ॥

क० ॥ कोमल अमल चल चीकने चिकुर चारु चितये ते चित चक चौंधिअत केशवदास। सुनहु छबीली राधा छूटे ते छुवै छवानिकारे सटकारे हैं सुभावहीसदा सुवास ॥ सुनिकै प्रकास उपहास निशि वासरको कीनो है सुकेशव सुवास जाय कै अकास। यद्यपि अनेक चन्द्र साथ मोरपक्ष तऊ जीत्यो एक चन्द्र मुखरूप तेरे केश पास २३॥ इति केश वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथबेनी वर्णन ॥

दोहा ॥

त्रियबेनी परिपीठपर यों छबि युत छहराति ॥
जनुसुमेर गिरिकीशिला नागिनिसी लहराति १
सटकारी बेनी ललित छुटीपीठ पर आय ॥
चढ़िदिवाल कापूरपै जनु सांपिनि लहराय २
कामिनि पीठिपरी लखीयों कबरी छबि कीन्ह ॥
कदलीदल त्रय नागिनीगूँथि मनोधरि दीन्ह ३
हे त्रिय बेनी रावरी कारी नागिनि रूप ॥
भेद इतो वाके डसे यहि लखि लहरिअनूप ४
कामकसीसी लसति हैं बेनी अतिगतिपाइ ॥
अबाहितबाजीकरनमें लगतिनितम्बनिजाइ ५
अरुणअसितासितद्युतिधरैलसतिसुमनकीपांति ॥
सफल करति मनकामना तियबेनी की कांति ६

क० ॥ कैधौं मुखकमल चली हैं अलिमाल मिलि कैधौं काम भूपकी कृपान हरलेनी है। चाखन अधर अमी चढ़ी नव नागिनीसी मुरवा निराखिरही आधेमग गैनीहै ॥ कैधौं लाल शीशफूल सूरजसुता की धार कैधौं रसरास नदीजाति अतिपैनी है। पावसकी रैनी नैन चातक न दैनी सुख कैधौं मृगनैनी की बनायगुही वेनी है १ ॥

क० ॥ कंगही करत रायबेलाको फुलेललाय लाल गुणगुही मोतीलर लटकाई है। कैधौं व्याल विषधर कलिहैं समेटि गूढ़ी काम कोतवालके कोड़ाते सरसाई

॥ आज न बचौगे लाल कोलकी निरखि वेनी बरबस सैगीज़ू कठिन विषताईहै। मंत्रऊ न लागै किलकोटि रो शिवनाथ बचौ बनवारी खेंचिमदन दुहाई है २॥
स० ॥ कै मधुपावली मञ्जु लसै अरविन्द लगी मरंदहि पोहै। कै रजनी मणि कण्ठ रिसायकै पाछे को न कियो अरि सोहै॥ वेनी कैधौं ये कलङ्कचुवै किधौं प मसाल को धूम करो है। कंचन खंभ के कंध चढ़ी कि चंद गहे मुख सांपिनी सोहै ३॥
क० ॥ कञ्चन की पाटी पर काजर की धार मानों प मालऊ पै अलि माल लटकतिहै। कैधौं रतिनायक पीठ पै सिंगार लीक देखि कवितानकी सुमति अटकहै॥ श्रीपति भनत कैधौं केसरि के खम्भ पै सदम्भ ई मरकतलरी छटकतिहै। कारी लहकारी वेनी पीठ सजति मानों रँगी रङ्ग पाटी पै भुजंगी सटकतिहै ४॥
स० ॥ कैधौं सुधारस चाखिवे को लपिटी लरितीन अंगिनि कारी। कैधौं प्रभाकर भीति शशी निशि को रकै निकटै निज धारी॥ कामकसा किधौं राजति है लकीधौं शृँगारकी बेलि सुधारी। श्रेनी सही सुखमाकी जी किधौं रुक्मिणी वेनी बनी है तिहारी ५॥
क० ॥ कैधौं शशिकलिमा उतारिमौलि पाछेधरी कैधौं धियारी कारी नागिनके कूलकी। कैसी करवार कीधौं रूकी कुमार कैधौं कालिंदीकी धार कैधौं सुधारस मूल ॥ आनन में अंबुज असित तन नागिनिसी मणिसी राजै माथे शोभा शीशफूलकी। रंगरूप रैनी घनश्याम बदेनी कैधौं अलिकुलश्रेनी सोहै वेनी मखतूलकी ६॥

क० ॥ कच अभिराम ज्योति यमुनाकी जीतलेत मोतिन की मांग सुरसरिता समान है। बीच बीच राजत चमक चार मोतिन की दरशी दिनेश सरसुती ऐन आन है ॥ सब सुखदैनी पिकबैनीकी बनाय गुही श्यामश्वेत अरुण महा बिराजमान है। नाक की निसेनी लपटानी अलिसेनी अरु बेनी मृगनैनी की त्रिबेनी मेरेजानहै ७॥

क० ॥ कैधौं हेमशैल शृंग ऊपर बिराजो राहु कैधौं रतिनाहि ने निवास लियो भाको है। कैधौं बांधि चोटी कियो सहचरि पुछ रम्भ देखि ताहि रम्भाको गुमान कुलथाको है ॥ भनै रघुनाथ कै नवेली इन्दु आननतें निकसिकलंक जाय बैठोछबि छाको है। जूरो जोखिताको पूरभरो है शृंगार कैधौं कैधौं प्रीति पूरण यों सम्पुट छपाको है ८॥

क० ॥ अतर फुलेल मेल हेम ककई सों ओंछ पोंछ कै सरयान दईकेसर तरौटी है। नाइन सिवारसे सम्हार बार बार बार त्रिलर सुधार गुंध कीन्हों ए कसौटी है। भनै रघुनाथ कैधौं आनँद अगोटी रसराजसो रंगोटी रति चोटी करि खोटी है। कैधौं व्याल जोटी युत पन्नगी सुमोटीबाल कैधौं तुव भाल पै सोहाई लसी चोटीहै ९॥

स० ॥ बाल चलै अलबेलीसी चाल कछू कबि ब्रह्मकहै न कहावै। लाज भरे ब्रजराज कुमारकी भाजि चली भजि जान न पावै ॥ दौरि गही मृगनैनीकी बेनी सुप्यारी को यों लचक्यो तन आवै। भौरन की परतंचकिये तमक्यो मनो काम कमान चढ़ावै १०॥

क० ॥ बारनकी रचना रचीहै प्राण प्यारी एरी भली

ी पूरब जनम कछू देनी है। पीठिपर सोहत यों सुबरन
मि पर दीनी धौं शृंगार रूप रस की थलेनी है॥
रतामणि मानों अंग सहज सुबास आस कनक लता
लपटानी अलि श्रेनी है। मालतीके फूलन ललित
ालगुन गूँथी बेनीसी लसति मृगनैनीतेरीबेनी है११॥
क० ॥ बेनी नव बाल की बनाय गुही बलिभद्र कु-
म अरुण पाट मन मोहियतु है। कारी सटकारी
की राजति नितम्बपै पन्नगके नारिनकी द्युतिदहियतु
॥ सात्विक सिताई असिताई तेज तामसकी राजस र-
ई मिलिरूप रोहियतु है। त्रिगुन वपुष धार त्रिभुवन
ोतिबेको मानो महामायाको स्वरूप सोहियतु है १२॥
क० ॥ बार गुहि रेशम से दीन्ही लटकाय पीठ ब्या-
ो मानों हेम के शिला पै लटकारी है। भनत दिवा-
र सुगन्ध सरसात तामें मलया के चाटि कैधौं सौं-
भ बगारी है॥ देखि देखि मोरिनी करति अनुमान
न कैधौं भ्रमरावली को नाग की कुमारी है। लखि
द लाल याते होत हैं बिहाल प्यारी ब्याली ते बड़ेरी
ष बेनी में तिहारी है १३॥
क० ॥ रैनिकी उनींदी राधे सोवत सकारे भये भीनो
ट तानि परी पांयन ते मुखते। शीशते उलट बेनीकंठ
के उरपै ह्वै जानुक्कै छवान ह्वैके लागी सूधे रुखते॥सुरति
मर रति योवनके महाजोर जीतभगवंत अरसायराखी
खते। हरको हराय मानो माल मधुकरन की राखी है
तारि मैन चम्पा के धनुष ते १४॥
स० ॥ राख्यो मयङ्कके पीछे फनीफन रूप बखानन

याको हितूपर। नेहसनी बनी बेनी गुलाबनिसेनीकोऊ सुखकी नाहिं दूपर॥ पीठि में देखत दीठि धसै न उपाय विलोकिये या ब्रज भूपर। अमृत पीवत पूँछ डुलै मनो कञ्चन के कदली दल ऊपर १५॥

क०॥ जीति रति कामहि करति रसरीति तहां प्रीतम ते दुहूं रचि बिपरीत रतिहैं। मची सिसकार रसना की झनकार जहां शम्भु मुख चंद्रमाकी छबि छलकति है॥ कटि लफिलफि लचकत कुचभारनसों हारनते औरौ उर ओप उलहतिहैं। पीठिपर बेनी मृगनयनीके लुरत मानो नागिनि सुमेरु के शिला पै लहरति है १६॥

क०॥ पीठि तन ताकतही दीठि डसि लेत फिरि फैलिकै बिषम बिष रोम रोम धावतो। छिनक में ऐसे हाल केतन के होते तब एतो कोऊ गारुड़ी कहां ते ढूँढ़ि लावतो॥ ईश्वर दुहाई जो पै होती ऐसी ब्याली काली को नथैया कान्ह काहे को कहावतो। मुरि मुसक्यानि मंत्र जानती न राधे तो या बेनी के डसन ब्रज बसन न पावतो १७॥

क०॥ शीश ते सरल ह्वै कै पीठि की पनारी ह्वैकै कैधों धरी धारा जो सिंगार के रिसाल की। निशापति अंक ते कैधों निशा रिसाय चली छांह कै छबीली मुख पंकज के नाल की॥ तमकी तरंगिनी कै बाढ़ी तरुणी के तन कैधों अवलम्बी बेलि अतन तमाल की। काम के बिलासन की बिजै माल कैधों यह कैधों मांग रूप काछे पाछे बेनी चाल की १८॥

स०॥ सेज ते ठाढ़ी भई उठि बाल लई उलटी

गिराय जम्हाई। रोम की राजी विराजी विशाल
टी त्रिवली अरु पीठि खिलाई॥ बेनी परी पग ऊपर
छे ते ब्रह्म यहै उपमा उर आई। लोक त्रिलोक
जीतिबे कारन सोनेकि काम कमान चढ़ाई १६॥
क०॥ चन्दन चढ़ायचारु कुम्कुम लगाय पीछे कैधौं
शिनाथ निशिनेहसों दुराईहै। कैधौं बन्दी बन्दन छि-
के छीर सांपिन सी अलि अवली समीप सुधा सुधि
गईहै॥ केशोदास हासरस मिलि अनुराग रस सरस
गार रस धार धरा धाईहै। मेलि मालतीकी माललाल
री गोरी गुहि बेनीपिकबेनीकी त्रिवेनीसी बनाईहै २०॥
क०॥ लांबीलहकारी अति कारी सुकुमारी सखिया
नै सुधारी मत्त मधुप की सेनी है। डारत कलंकहि
लानिधि निचोरि कैधौं कैधौं मन धीरज बिदारिबेकी
नी है॥ नागरि सनाल मुखकंजसी लगी है कैधौं कैधौं
ारी नागिनि निपट सुखदेनी है। कीनो तम यानके तमी
तेके पाछेपरी कैधौं अंधकार धारकैधौं यह बेनीहै २१॥
क०॥ लांबीलहकारी बहुपेचनकी भारी अरु गरक
ंधि सारीसो न्यारी अति झोककी। बरनो कहांलौं
ोप मदनकी तोपकैधौं इन्द्र करिकोप तररानी एक ओ-
की॥ नटुवाकी साटिकैधौं आलम सधायबेकी कहांलौं
वानौंहौं पढ़्यो न विधि कोककी। नागिनके तिमिर छ-
करमेंछायरह्यो कटिपरबेनी कैनिसेनीसुरलोककी २२॥
स०॥ मृगनैनीकी पीठपै बेनीलसै अतिसोंधे सुगंध
मोयरही। अतिचिक्कन श्याम चुभीचितमें सुसुकेशी
केशन जोयरही॥ उपमाकविदत्तकहा कहिये रविकी

तनया तनतोयरही । मनोकंचनके कदलीदल ऊपर सांवरी सांपिनि सोयरही २३ ॥

क० ॥ मोहनी के अजिरमें परीकैधौं खेलिबे कीमार छोहाराकी छरी चित अवरोहिये । कनकलतापै ह्वैके लख्योहै कालीकैधौं चांदनीकेपीछे तमपुंज वरजोहिये ॥ सुखमा त्रिधामकी लगी है पाछे रसराज तामें कैधौं कालिका को रूप मनमोहिये । मानगृह हेमपाट पै धौं मरकत श्रेनी कैधौं गोरी पाटीपर चोटी चारुसोहिये २४॥

क० ॥ नीलमनि मई मनमथकी निसेनी कैधौंमधुकरश्रेनी हेमलतासों रसति है । हाटक बटीते कैधौं कज्जलकी धारा धसी पीठिपर पाछेकीधौं जनम रसति है ॥ कैधौं छबि छायाहै छपाकरके मध्यकीधौं नागबधू पीछे आनिपग परसतिहै । लालसेत गुनगुही सबसुख देनीकैधौं बेनी मृगएनीकी त्रिबेनीदरसतिहै २५ ॥ इति बेनीबर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ जूरा वर्णन ॥

क० ॥ अचरजकला कलाधर धरि राखीपीछे कैधौं सुरभानजा निकर बेर कांध्यो है । कैधौं कंजकोस ढिग आलि पुंजगुंजरत मंजुल मनोज मृगजानि सरसांध्यो है ॥ कैधौंअहिकारे लहकारे ते लहरवारे सुधाकरजानिकै नवीननेह नांध्योहै । चीकने चिकुर चारु चहचह्योजूरो श्याम ऐंठिग्वैंठि लटनिलपट मनबांध्योहै १ ॥

क० ॥ कीधौं शशि मन्दिर पै श्यामघन कलशसो है कैधौं देहदामिनी पै तिमिर समेटोहै । गुणनको गूढ़ो

धौं शोभाको समूह छूटो कैधौं मखतूल समविराजत
जैठोहै ॥ काजरकी धूम कैधौं लसत मशालरसराज
: शृँगार कैधौं प्राणप्रिय पैठोहै। प्यारी शीशजूरो ऐसो
ोभादेत रूरोकैधौंमानो हेमगिरिपैविषधरऐंठिवैठोहै २॥
क० ॥ कैधौं पुरहूत वारी वाटिकाको नारियर देखि
ष अद्भुत लावतजहूराहै। कैधौं यहकरतार वारिको
टा उदार कैधौं कामवाम धाम छविको कंगूरा है॥
धौं नीलकंजकी कली है रूपतालही की वाल को
ढ़न आगे तैसो विधु पूरा है। मूराहै गरूराहै सिंगा-
ीको कूराकैधौं मारकोमरूराकैधौं प्यारीतेरो जूराहै ३॥
क० ॥ कैधौं नाग गिंडुरी दै फन उकसाय वैठ्यो
धौं काम आँकुश सँवारिवे को पूरा है। कञ्चन को
टिका सो पाटी पारिबे को राख्यो कैधौं सालिग्रामको
नूप रूप सूरा है॥ कैधौं शनिकरत तपस्या तीर का-
न्दी के वृन्दा को सो फल देखियत मन रूरा है।
ोकनो चटक चटकारो कारो श्याम हू ते ऐसो शीश
ारी के बिराजमान जूरा है ४॥
क० ॥ जूरा शीश ऊपर कँगूरा कामवीर कैसो सेंदुर
कीर मानों भानु के प्रकाश है। भनत दिवाकर नखत
र मोती माँग गंगा स्वच्छ पानी नाली यमुना निका-
है॥ कैधौं स्वरभानु घेरी है प्रभात काल तिनके छु-
यवे को तारा आसपासहै। कीरति कुमारी कैधौं श्या-
मन वांधि राख्यो फेंट मारि वैठो मानों नाग आम
ास है ५॥ इति जूरा वर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ सर्बदेहउपमा बा छवि बर्णन ॥

क० ॥ आई बरसाने ते बुलाई वृषभान सुता निर-
खि प्रभान प्रभा भानुकी अथैगई। चकि चकवान के
चुकाये चकचोरनि सों चौंकत चकोर चकचौंधीसी चकै
गई ॥ नन्दजू के नन्दनके नैननि अनन्द मई नन्दजूके
मन्दिरन चंद मई छैगई। कंजन कलिन मई कुंजन
अलिन मई गोकुल की गलिन नलिनमई कैगई १ ॥

क० ॥ आज मुख चंदपर रोचन रुचिर भाल कौन
ब्रजचंदकी बिकावनि सितावकी। छाजति छबीली छबि
बरनी न जात मोपै हरिनी हितू जन के हिय के हिताब
की ॥ रति कीनरम्भा की न शची उरबसी हूकी वारि वारि
डारियत उपमा किताबकी। गालिब गुलाब की न पंक-
जके आबकी रही न आफताबकी न ताबमहताबकी २ ॥

क० ॥ आवति हो देखे आजु बलि गई चालि देखो
रघुनाथ ठाढ़ी एक पट दीन्हे द्वारिये। एतिक सुगंध
फैल्यो गली मानो छिरकि कै तर कीन्ही अतर गुलाब
कीदै फ्वारिये ॥ बरनोकहांलौं नखशिखकी सकल शोभा
पर एते रूपकी बनाई बिधि ग्वारिये। देवनके ऐनवारी
देवदेव सैनवारी एहो लाल जापैबाल मैनवारीवारिये ३॥

क० ॥ आजु एकलालना अन्हात में निहारी लाल
पीन पयोधर वीन बानी छीनलंकहै। यमुनाकेजल बीच
कण्ठके प्रमानपैठि पोंछेजो लिलार लाग्यो मृगमद अंक
है॥मुख अरु पानिको परसभये रघुनाथ ऐसीआनिलसी
शोभा परमअशंकहै। वारिजको नातो मानि धौल करिबे

को मानो कौल कलानिधि में को धोकत कलंक है ४ ॥
क० ॥ अतर पुतायो मढ़्यो महल सुगंधन सों द्वारे गज मोतिन की तोरनी तनी रहैं। चंदन चहल चारु चाँदनी चँदोवा लाल गोप माल मणीकनी कोरनै घनी रहैं ॥ उमा चौर ढारैं रमा आरती उतारैं ठाढ़ी रम्भा रति मैनकासी कोटिन जनी रहैं। हठी देवतान की दिमाकदाररानी तेऊ राधे महरानीजूके हाजिर बनी रहैं ५ ॥
क० ॥ अतर पुतायो चौक चंदनलिपायो बिछौगिलम गलीचनकी पंगति प्रमान की। कारी हरी पीरी लाल झालरैं झलकरहीं जैसी छबिछाई चारु चाँदनी बितान की ॥ झीनी श्वेत सारी जड़ी मोतिन किनारीदार फैली मुख आभा हठी राधे सुखदान की। नाह नेह नदी कर रमा रूप रहीकरबैठी आनिगद्दीपर बेटी बृषभानकी६॥
क० ॥ आजहौं गईती बीर सहज निकुंजनमें कौतुक बिलोक्यो तहां सब सुखदानी के। कहत बनैन मोपै अचरज बाट हठी कहि कहि हारे मुख चार वेद बानी के॥ श्रवण सुनैन मानै आंखिन दिखाऊं तोहि चलदुर मेरे साथ चरित गुमानी के। लूटैं सुख मूटैकरैं मनुहार कोटै बैठे पायँन पैं लोटै लाल राधा महारानी के ७ ॥
क० ॥ अमल अनंगके अनन्दकी उदित भूमि जीति पिया बाजी दगा बाजी सी पसारी है। कनक के पान से उदरमें उदित द्युति त्रिबली तिहारीमें निहारी मैन हारी है ॥ रूप गुण चातुरी सो सुरनर नागन को जीते मानि कण्ठ बिधि सोहै रेख सारी है। सौति सुख उतरेको पिय प्रेमचढ़िबे को कुन्दनकी प्यारीपै रकारी शीश वारी है८॥

क० ॥ आनन की उपमा जो आनन को चाहै तऊ आनन मिलैगो चतुरानन बिचारेको। कुसुम समान के कमानको गुमान गयो करि अनुमान भौंह रूप अति प्यारे को॥ गिरिधर दास दोऊ देखि नयन बारिजात बारिजात बारिजात मानसर वारे को। राधिका को रूप देखि रति को लजात रूप जातरूप जात रूप जात रूप वारे को ९॥

क० ॥ अहिन खिलावत है मृगन लरावत है शकुन पढ़ावत है नेक न टरत हैं। कबहूँ कै शङ्खपूरि शम्भुजी की सेवाकरैं कबहूं के कुण्ड बूड़ि सिंहन धरत हैं॥ कब हूं के कदली के खम्भसों लपेटि जंघ कबहूं के कंज माथे राखि बहरत हैं जा दिना ते न्हात चार आँख भई ता दिनाते बावरो सो भांतिभांति भावना करत हैं १०॥

स० ॥ आई हुती अन्हवावन नाइन सोंधे लिये कर सूधे सुभाइन। कंचुकी की छोर धरी उबटैबे को ईंगुर से रँगकी सुखदाइन। देवस्वरूपकी राशि निहारति पांयते शीशलों शीशतें पांइन। ह्वैरही ठौरही ठाढ़ी ठगीसी हँसै कर ठोड़ी दिये ठकुराइन ११॥

क० ॥ अंग तेरो केशरिसो करिहां केहरि कैसो केशनिकी सरकैसे करिसकै कोतमैं। कहै कविगंग आछे छबि के छबीले नैना नीलेऊ नलिन ऐसे नाहीं देखे होत मैं॥ अहे हे अहीरी तू धौं इहाँ कछु जानातिहै काके भाग औतरी है तोसी तेरे गोतमैं। तरुनी तिलक नँदलाल त्यों तिलक ताकितो परहौंवारौं तिलतिलकै तिलोत्तमैं १२॥

क० ॥ अंगनई ज्योति लै बरंगना बिचित्र एक

आँगन में अंगना अनंग कैसी ठाढ़ी है। छवि की सी उजियारी गोरे तन श्वेत सारी मोतिन की माल सो जुन्हैया जनु बाढ़ी है ॥ आलम सो आली वन-माली चलि देखु द्युति कनक सुगढ़ कीसी रूप गुण गाढ़ी है। देहकी दमक वाके चीर की चमक मानो क्षीर निधि मथि कैधौं चंद मथि काढ़ी है १३ ॥

स० ॥ अंगुरीनलौं जाइ भुलाइ तहीं फिरि आई लुभाई रहो तरवा। चप चाइन चाइ हो एँड़िन छ्वै धय धाय छको छबि छाइ छवा ॥ घन आनंद यों रस भीनि भिजो कबहूं बिसराम न लोक नवा। अल वेली सुजान के पाइँन पाइ परो नटरो मन मेरो भवा १४ ॥

स० ॥ अंजन तोरही ताको करै नित पान लखै सुख त्यो रंग चायन। औरै शृंगार सदा घन आनंद चाहै उमाहसों आपन दायन। तू अलबेली स्वरूपकी राशि सुजान बिराजत शुद्ध सुभायन। आपन नाच कैसाइ कछू जोलटू भयो लागो फिरै तुव पांयन १५ ॥

कुन्दन से अंगनवयौवन सुरंगउठै उरज उतंगधन्य न्यारो परसतहै। सोहत किनारीवारी तन सुखसारी देव शीश शीशफूल अध खुल्यो दरसतहै॥ बेंदिया जराऊ जड़े मोतिन सों नीकी नथ हँसति तखोननिमें रूपसर-सतहै। गोरी गजगौनी लोनी नवल दुलहियाके भाग भरे मुखपै सुहाग बरसतहै १६ ॥

क० ॥ सुन्दर सुरंगनैन शोभित अनंग रंग अंग अंगफैलत तरंगपरिमलके। बारनकेभार सुकुमारिको लचतलंक राजैपरयंकपर भीतरमहलके ॥ कहैपदमा-

कर विलोकि जनरीझै जाहि अम्बर अमल के सकल जलथलके। कोमल कमलके गुलाबनके दलके सुजात गड़ि पायँन बिछौना मखमलके १७ ॥

क० ॥ सुखमा सदनभूरि भूषित बदन जाको सोहत सलोनो चारु चंदहूतें चोखो सो । छांड़ि कुंज मंजु रहे घेरि भौंर पुंज पाय अंग वारो सौरभ समूह अन जोखोसो ॥ बचन बिलास वेस जाको हनुमान कहै राती दिन रहतपियूषहू पै रोखोसो छबिसोंअपारबैठीभौनदै किवार तऊ बारबार होत वारि बीजुरी कोधोखोसो १८॥

क० ॥ कंचन फरस फैली मणिन मयूषै तन्यो जरी को बितान तेज तरणि तरापरै। पांवड़े बिछौना परे मोतिन के कोर वारे चारो ओर जोर जो प्रभाभरी भरा परै ॥ हीरन तखत बैठी राधे महरानी हठी रम्भा रति रूप गिरि धसक धरा परै। छूटी मुख चंद चारु किरण कतार बांध छ्वै २ चंद्र मण्डलसो छबिके छरा परै १६॥

क० ॥ कंचन महलचौक चांदनी बिछौना तामें जरीको बितान तानभानज्योति मन्दकी। लालनकीमालै लाल सारीकोरदार अंगओंठनकी लाली जिमिलाली जीवबन्दकी ॥ रम्भासी रमासी खासीदासी मैनकासी हठीठाढ़ी करजोरें तेऊ छीनै ज्योति चन्दकी । गावैबेद वाणी चौर ढारत भवानी राधेबैठी सुखदानी महारानी नँद नंदकी २० ॥

क० ॥ कोऊ छत्रलीन्हे कोऊ छाहगी कीनेकोऊबीनै लै प्रवीनै ये नवीनै सुर गावती। कोऊ जरीजोरें कर अतर गुलाबबोरें लैलै अलबेली हठी धावनतें आवती

कोऊ चौरढारै कोऊआरती उतारै कोऊ करती सलामै कोऊ मुजरान पावती। बैठीआन तखतपै बखत बलदुराधे बाला दिगपालनकी मालापहिरावती २१॥

क०॥ केशरि सों अंग पट केशरि के रंग रँगे मोती ही मांग है अनंग हू की बालिका। रम्भा सी रमा सी मैनका सी मञ्जु घोषा सम शची सी उमा सी सुखमा सी ज्योति जालिका॥ सांझ समय आन वृषभान की कुमारी राधा ठाढ़ी दरवाजे हठी प्राणन की पालिका। भाग भरे नैनन निहारो नन्दलाल चलिरैनि गुजरी सी उजरी सी दीपमालिका २२॥

क०॥ केशरि सी केतकी सी चम्पक चमीकर सी चपला चमक चारु गातकी गोराई है। जाको मुखचंद देख चन्द मन्द ज्योति होति जाको लखि नैन अरविंद द्युति पाई है॥ नीलमणि मोतिन की माल उर डोलत मयूर औ मरालन की पंगति सोहाई है। देखिबे को दौरि आई गोरी ब्रजबाला सबै भानु की किशोरी आजु नन्द गृह आई है २३॥

क०॥ कोठरी अँधेरी प्यारी बरतिमशाल कैसी दीप के शिखाके द्युति दुरिदबि जाते हैं। भनत दिवाकर कुचन गोल गोरी जोरी श्यामके निहारे दृग झपकिझपाते हैं॥ शीशाकेमहलमें अनेकप्रतिबिम्बजादूसेप्रत्यक्षहोत जात करमातेहैं। भौनसे निकसिके अजिर जब आई राधे चांदनी करत मन्द चन्द भागि जाते हैं २४॥

क०॥ कञ्चन की बेली सी नवेली को शरीर लागे ज्वालामुखी देवी सी सुखार ब्रज भभकी। भनत दिवा-

कर न रति के न रम्भा के न उरबशी न किन्नरी बि-लायो सीव नभ की ॥ आरसी उदास घन सारसी सुवास सुर सम्पा की प्रकाश की जवास तात सभकी। भूषण व अंजनवो अंगराज जावक के रंगन दुकूल देह चव की २५ ॥

क० ॥ कंकणकरन कल किंकिणी कलित कटि कंचन कँगूरा कुच केशकारी यामिनी। कानन करनफूल को-मल कपोल कण्ठ कंबुककपोत ग्रीव कोकिलकलामिनी॥ केसरि कुसुम कलिधौतकी कछून कांति कोविद प्रबीन बेनी करिवर गामिनी। कोक कारि कासीकिन्नरीककन्य-कासीकैधौंकामकी कलासीकमलासीखासीकामिनी २६॥

क० ॥ कुन्ती पांचाली दमयन्ती तारा शकुन्तलाअह-ल्याहू मन्दोदरीपहिले सुधारे हैं। मैनका घृताची रम्भा मंजु घोषा उरबशी तिलोत्तमा को तिनहूं ते हलि की निहारे हैं॥ बिदुष सुकबि भनै गिरा रमा जमा सिया मोहनीहूं रचिफिरिमनमें बिचारेहैं। राधेको बनाय बिधि धोयेहाथजामोरंगताकोभयोचंदकर झारेभयेतारेहैं २७॥

क० ॥ केसरि कलित पच तोरिया ललित लाल लहँगा लसत लंक लोने पर घेरदार। जगमगे जड़ित जड़ाऊ पग पायजेब पंकज प्रभानि प्रभा पांवड़े गड़ेर दार ॥ सदा नन्द सुन्दर सघन घुंघुवारे कच कंचुकी पै डारे अहि कारे मनो फेरदार। ऐंड़दार ऐननि मरोर दार तोरदार करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार २८ ॥

क० ॥ कंचन से गात जलजात से लजीले नयन भृकुटी कमान मानों मैन की मरोरी है। रंचक उरोजकी

चाई त्यों ललाई अधरानकी मिठाई चारु चौगुनी अमोरी है॥ कहै नन्दराम लरिकाई भरे भोरे बैन प्यारी स गोरी वृषभान की किशोरी है। श्वेतरंग सारी अंग ओपतेदुरंग होति जानिपरै केसरि कुसुमरंगबोरी है२९॥

क०॥ कुन्दन से अंग नव जोबन तरंग राजै उरज तंक लंक छान छवि देत है। बादले की सारी दर दामेनि किनारी दार बदनकी ज्योति मानो हूसन समेत है॥ शोभनाथ निरखि सुजान अंगिरान प्यारी दोऊ करजोरि मुख मोरि हित चेत है। सदन मलाहकेसला- सों उछाहभरी मानोरूप सागरकीठाढ़ीथाहलेतहै३०॥

स०॥ को रति है अरु कौन रमा उमा छूटी लटै नेचुरै गुँधी मोती। हाय अनूठे उरोज उठेभये मैन तुठे नये और है कोती॥ त्यों कवि ग्वाल नदी तट न्हाय खड़ी लड़ी रूप की सुंदर ज्योती। मोरति नार मरोरति भौंह निचोरति चित्त निचोरत धोती ३१॥

स०॥ करता पतिकेउर आनँद की सुखमा यों प्रकाशन की सरता। रति रंग सनै निज अंगन सों निशि मैं द्युति दामिन की हरता॥ रघुनाथ भनै विरचीविधि ने तिहिकी धन धन्यहै चातुरता। रति रम्भाशची युत नैन काहू लखि लाजति वालकी सुंदरता ३२॥

क०॥ कंजसे चरण देव गढ़ीसी गुलफ शुभ कदली से जंघ कटि सिंह पहुंचत है। नाभी है गँभीर ग्वाल रोमावली कुम्भ कुच भुज ग्रीव भाय कैसी ठोढ़ी विलसत है॥ मुख चंद विम्बाधर चौका चार शुक नाक मीन नैन भौं हन चकाई अथकत है। माल आधो नि-

धुभाग करन अमृत कूप बेनी पिक बेनीजू की भूमि
परसत है ३३ ॥

स० ॥ कुन्दन को रँग फीको लगै झलकै इमि अं-
गन चारु गोराई। आंखिन में अलसानि चितौनि मैं
मंजु बिलासन की सरसाई ॥ कोबिन मोल बिकात नही
मतिराम लहैं मुसकानि मिठाई । ज्यों ज्यों निहारि ये
नीरे ह्वै नैननि त्यों त्यों खरी निखरै सी निकाई ३४॥

क० ॥ कुन्द से दशन घन कुन्दन बरण तन कुन्द
सी उतारी प्यारी क्यों बनै बिछुरि कै । शोभा सुख क
न्द देखो चाहि कै बदन चंद प्यारी जब मंद मुसक्या
तनेक मुरि कै ॥ सेनापति कमल से सोहत अमल
मुखतामें दृग चंचल दुराये हून दुरिकै । पलकै नला
गै देखि ललकै ललन मन कै कपोल गोल परे अल
कै बिथुरि कै ३५ ॥

क० ॥ केसरि को रंग अंग संग में न जान्यो जात
गातसब सुखमा समूह सरसाई है। खंजन गुमान गंज
लोचन बिमल जाके मीन कंज पुंजन की उपमा दुरा
है ॥ प्यारी अपरा पै दया देव वारि डारीसारी बिम्बओ
प्रबालते ललित अरुणाई है। ऐसी मृगनैनी पिकबैनी
सुख दैनीरति मूरति नवीनीलाल भागनतेपाईहै ३६ ।

क० ॥ कारी रूपकारी बर बरुणी सुसोहै सोहै भौ
हैं मन मोहैं कहो कहाधौं सराहिये । कहैकबि गंग जा
की आंखिन के आगे अलि कमल कमीन लागे मीन
तौ बहाहिये ॥ अँगिया की तगिया सों करत तन
कुच देहकी निकाई देखे दाह्यो सोनो दाहिये । अद्भु

रतूत करी है जोकरतार कहिहांके जानिबेको करामा-
' चाहिये ३७ ॥

क० ॥ काजरसी रँगीरैन कारी सारी अंगऐन चली
मृग नैनी बुद्धि अतिही अथाहवी। कवि मकरंद जागे
चुहुल चुरैलकैरे चमकै अकेली गैल ज्योंचिराक चाह-
वी ॥ दशहू दिशान घनगरजि निशान उठे बोलत
मशान वीर तुजक निवाहवी। मणिवारे सांपन के पांव-
ई जरायजरे सोहतहै जाके अभिसारहू में साहवी ३८॥

क० ॥ कीन्हीसेत साजब्रजराजके मिलनहेतआधी
राति चली प्यारी निकासि अवासते। गगन समाध
छायो तैसो कवि रघुनाथ भूषण समेत चारु आनन
अभासते ॥ देखि देखि पाहरू चकित भये आपुस में
अद्भुत जान सब ऐसो कहै आसते। ढांपि कै मयूषन
ते कंचन लता पै चढ्यो चंदचल्यो जात देखो उतरि
अकास ते ३९ ॥

क० ॥ चारु चांदनी में साजि सोने के सिंहासनपै
बैठी पैन्हि परम पोशाक जरतारी की। जटित जवाहि-
रात जगर मगर साजे जेवर तमाम इतमाम अधिकारी
की ॥ पान खाति पंखाहोत हँसति सखीन संग दूर खरी
दौरिपास पांति प्रतिहारीकी।चाहोचलि चाहो चोरीचोरा
चौंधिरैहो चाहि ठाकुरठसक ठकुराइन हमारीकी ४० ॥

क० ॥ चंद प्रतिविम्ब ऐसो जानि परे जाके आगे
नाथ छवि आनन अनूप ब्रह्मरानी के। लोचन कुरंग
जलजात मीनखंजन से रंजन रसीले मद भंजन भवानी
के ॥ और सब अंग की निकाई में कहांलोंकहौं पांयन

की जोरको न राधा ठकुरानी के। प्यारीके चलत ऐसे लसतधरामें जैसे पांवड़ेपरतहैं बनातसुलतानीके ४१॥

क०॥ चरण धरै न भूमि बिहरैंजहांहीं तहांफूलेफूले फूलन बिछाई परयंकहैं। भारके डरनि सुकुमारिचारु अंगनमें अंगनालगावै रागकेशरिको पंकहैं॥ कविमति राम लखि बातायनबीच मुख आतपमलिन होत बदन मयंकहैं। कैसे सुकुमारि वह बाहिर बिजन आवै बिजन बयार लागे लचकतलंकहैं ४२॥

क०॥ चोपकरि बिरची बिरंचि रूपराशिकैसी कोक की कलासी चारुचातुरी की सालासी। चंद्रमासी चांदनीसी चामीकर चपलासी पीतमसुधासी होतिसौतिन को हालासी॥ कहामंजुघोष उरबशी औ सुकेसी दत्त जाकी छबि आगे वारियत मैन बालासी। चंपक की माला हियेलागे बरसिकाला शिशिर दुशालाहोति ग्रीषममें पालासी ४३॥

क०॥ चंदद्युति वृंदको निचोरिकै बनायोकैधौं भानु छवि छोरियो बिलोकि सगरोपरै। सेवक भनतकोटि कुंदन तपेको रूपरोचकलै बिराचि बिरंचि अगरोपरै॥ बीजुरीके सारकै दवागिनके भाररच्यो राधेके बिचारमें झपाक झगरोपरै। मदनउमंगन ते रंगनके संगप्रति अंगनतेजाके छबिपुंज बगरोपरै ४४॥

क०॥ चारकैसो अंकलंक लचकत कुचभार चारु छबि घेरदार घांघरो घिरतिहै। सुबरण बेलीसीबिराजै अलबेली बाल खेली हंसचाल गजागिरमें थिरति है॥ तिलक कपोलन ममारक कह्योनजाय कमल करोरनैन

गेरनिद्रति है। आनँद सदनकैकलानिधि वदन ऐसी
लही मदनकैसी दुलही फिरतिहै ४५ ॥

क० ॥ चारुमुख चंदते अमंदकला दीपति है रूप
धा वुंदनके वुंद फुटिकेरहे। रचेगंध गलित मदंध
अंध चंचरीक मंदिरके अंदरचहूंघा जुटिगेरहे ॥ घूंघुट
पटमें लपेटरह्यो जातजाल सौतिनविशाल विषघूंटि
ट्टि के रहे। एकक्षण अक्षन छवीली छविदेखनि को
लनिमें छोहभरे छैलछुटिकेरहे ४६ ॥

क० ॥ चंदनकी खौर गोरेगात ज्यों झलमलात
तौसरा चमेलीहार राजत गरेगरे। कैधों द्विजराजआ-
ना जलमें हिलोरें लेत कैधौं सुरसरी शोभाजात लहरे
ग्रेरे ॥ स्वेद जलबुंदके बिशेष मुक्ताहलसे योवन के जो-
री दिखाई है लरेलरे। श्वेत डोरियाकीसारी सोहत
नवेशभारी मानोपौन पानीपर गमत हरेहरे ४७ ॥

क० ॥ चंद सममुख ऐनशोभित विशालनैन भृकुटी
कमानमैन मंजुल वनाईहे। विम्वसे अधरलाल दाड़िम
नें दंतजाल वाणीअतिशय रसाल कोकिला लजाईहे ॥
चंपक कनकरंग निंदत मनोज अंग उरज उतंग कर
कंज सुखदाई है। केशरीते कटिखीन विशदनितम्वपीन
परम प्रवीण प्यारी श्याम मन भाई है ४८ ॥

स० ॥ चांदनी में धन श्वेत शृँगारकै वैठी सुगंध ल-
गाय नवीनो। होड़ परीहै दुहून में रूप की देख विरंचि
स्वरूपको कीनो ॥ ताहि समय इक टूक सोवादर छाय
गयो तन चन्द प्रवीनो। प्यारी की शोभा अमंद निहा-
रि कै चंद लज्यो मनो घूंघट कीनो ४९ ॥

क० ॥ चहचही चहल चहूंघा चारु चंदन की चंदक चुनीन चोक चोकन चढ़ी है आब । कहै पदमाकर फराकत फरश बंद फहर फुहारिन की फरश फबी है फाब ॥ मोद मदमाती मन मोहन मिलै के काज साज मणि मंदिर मनोज कैसी महताब । गोल गुल गादी गुलगिल में गुलाबी गुल गजक गुलाबी गुल गिंदुक गुले गुलाब ५० ॥

स० ॥ चंदकलाकी कला कलधौत की कै चपला थिर ह्वै छबि छाजै । कै शशिसूरजकी किरणै इकठौर ह्वै रूप अनूपम साजै ॥ श्रीपति ज्योतिकी ज्वाल किधौं अवलोकत ही दुख दीरघभाजै । पावक ज्वालकै दीपक मालकै लालकी लालकै बाल बिराजै ५१ ॥

स० ॥ चंद सों आनन चांदनी सों पटतारे सी मोती की माल बिभातिसी । आंखें कुमोदिनी सी हुलसी मणि दीपनि दीपक दानकी जातिसी ॥ हे रघुनाथ कहाकहिये पियकी लियपूरन पुण्यबिसातिसी । आई जुन्हाईके देखिबे को बनि पून्यो कि राति में पून्योकी रातिसी ५२ ॥

स० ॥ चिनगी चमकै बिच अञ्चल सो न लता के मता भटके रहिगे । द्युति दौरै कि दामिनी औरै कोउ गति चोरैखरे खटके रहिगे ॥ सब अंगलखे विनका कहिये गुणसेवकसौ हटके रहिगे । जित जाइपरे तितही के भये दृग मेरे टके अटके रहिगे ५३ ॥

स० ॥ चमकैं दशनावली की निकरै चपि चांदनीहू मुरझानीरहै । करपांयनकी अरुणाई लखै कमलावली हू बिलखानीरहै ॥ नरनागरीकी हनुमानकहा सुरनागरी

शोभा सकानीरहै। गति हेरिमराली लजानीरहै छबिपै रति रानी बिकानी रहै ५४॥

॥ स०॥ चंद कलंकी कहा करिहै सर कोकिल कीर कपोतलजाने। विद्रुम हेमकरी अहि केहरि कंजकली औ अनारके दाने॥ मीन शरासन धूमकीरेख मलूक सरोवर कंबु भुलाने। ऐसी भई नाहिं है जगमें नहिं होयगी नारि कहा कबिजाने ५५॥

॥ क०॥ चौंथती चकोरे चहुंओरेजानि चंदमुखी रही रंचि डरनि दशन द्युति दम्पाके। लीलिजाते बरही बिलोकिबेनी बनिताकी गुही जो न होती तौ कुसुम सर कम्पाके॥ रामजी सुकवि ढिग भौंहैं ना धनुष होती कीर कैसे छांड़ते अधरबिम्ब झम्पाके। दाखकेसे भौंरा भजकत ज्योति योबनके भौंर चाटि जाते जो न होती रंग चम्पाके ५६॥

क० ॥ चोवासों चुपरिकेश केशरी सुरंग अंग केसरि उबटि अन्हवाई है गुलाबसों। अतर तिलौंछि आछे अम्बर लै पोंछि ओंछि छतिया अँगोछि हँसि हँसि रस भावसों॥ कटि मृगराज कैसी मुख है मयङ्कमानो तीखे नैन देवगति सीखी मृगशावसों। पैन्हे पीरो चीर चारु चौकी पर ठाढ़ी भई चांदनी सी प्यारी पै उज्यारी हहताबसों ५७॥

क० ॥ चहचही चुभकै चुभी है चौक चुम्बनकी लहलही लांबीलटें लपटी सुलंक पर। कहै पद्माकर मजानि मरगजी मंजु मसकी सु आंगी है उरोजनके अंकपर॥ सोई सरसार यों सुगन्ध न समाई सेज शीतल

सुलोने कोने बदन मयंक पर। किन्नरी नरीहै कै परी है छविदार परी टूटिसी परी है कै परी है परयंक पर ५८॥

क०॥ चैत चांदनी के कैधों चन्द अवलोकनते क्षीर निधि क्षीर के सपूर पूर उमगे। कहै चिन्तामणि मन आनँद मगन ह्वै कै बिहरति हँसति सु परम प्रेम सों पगे॥ अधखुली अखियां सुरति सुख रसबस मानोंभौर अधखुले कमलन मेंखगे। प्यारीके सकल तन श्रम जल बुन्द सोहैं कनक लता में मुकताफल मनो लगे ५९॥

क०॥ चुनी से चरन चांदनी में चिलकत चकचौंधत चकोर चिनगी के चाप दूनरी। चामीकरहूते चाप्र चौगुनी चमक चोखी चम्पकबरन चोली चुभी चञ्चु भूनरी॥ चन्द्र मुख चन्द्रिका तें चकई चपत चित चोपत प्रवीन बेणी चैत चन्द सूनरी। चुई सी परति चपला सी चै चपल चख चञ्चल चितोन चटकीली चारु चूनरी ६०॥

क०॥ चामी कर जूह चम्प चांदी को चलन कहा चिन्तामणि चेरिन के चाकर लहत हे। चिलक चटक चहूँ घायन चमत्कार चार मुख चक्रपानि चकित रहत है॥ चांपन चरन को चतुर युग चेटुआ है चैन सों प्रवीन बेनी चीरित कहत है। चारु अति चण्डिका को चन्द्रमुख चन्द्रमौलि चखन चकोर किये चोपसों चहत है ६१॥

क०॥ चन्द मई चम्पक जराव जरकस मई आवत ही गेल वाके कमल मई भई। कालिदास मोद मद आनँद विनोद मई लाल रंग मई भई बसुधा सुधा

मई ॥ ऐसी चानि चानिक सो मदन छकाई रसिकाई की निकाई लखि लगन लगी नई। नेह को हितै करि गोशालै मोह दै करि सखिन दुचितै करि चितै करि चली गई ६२॥

क० ॥ चांदनी में चांदे लग्यो चांदनी चँदोवा चारु चांदनी बिछौरन अधिक छवि छाई है। बड़े बड़े मोतिन की लरै रुरै चारयों ओर बीच बीच जरी कोर सोहत सुहाई है॥ गोरे गात श्वेत सारी हीरन किनारी घनी इन्दु से बदन राधे इन्दिरा लजाई है। भालदिये चन्दन सुनेह नन्द नन्दन सो महक सुगन्धन सों सेज पर आई है ६३॥

क० ॥ चामीकर चौकी पर चम्पक बरण हठी अंग की चमकें चारु चञ्चलै चलावती। तारा सी तरंगना सी अतर लगावै रति मुकुर दिखावै त्रिजे बीजन डुलावती। कमलाकरन जोरै विमला सु तन्त्र न तोरै नवलालय मरजी को अरजी सुनावती। सुरनकी रानी सुर पालन की रानी दिगपालन की रानी द्वार मुजरा न पावती ६४॥

क० ॥ चलत मरालनकी महिमा घटावै बैनबोलत अचैनकरै प्रभुता पिकनकी। मुसक्यात सुधाको सोहाग सो सकेलिलेति चरनसो जीते सुदराई सुवरनकी॥ भनत कवींद्र वाकी निरखि सुघरताई पाईहै दृगन बड़ाई डीठि रनकी। मन ते न भूलति भुलावै मनहीको वह चह-चहे चखन की लहलहे तन की ६५॥

क०॥ चंद सो आनन कंजन सो तनहौ लखिकै विन

मोल बिकानी । औ अरबिंद सी आंखिन को हठी देखत मेरी ये आंखि सिरानी ॥ राजत है मनमोहनके संग वारोंमैं कोटि रमा रतिआनी । जीवन मूल सबै ब्रज की ठकुरानी हमारी है राधिका रानी ६६ ॥

क० ॥ छूटे छए छवालौ छबीले घुँघुवारे बार खञ्जन से लोचन बदन सुधा धरसो । पीन कुच क्षीण लङ्क निविड़ नितम्ब नाभी त्रिबली जघन महा मोहनी के घर सो ॥ पङ्कज से पानि पांय बेली सी भुजा हैं जापे द्विज जू गोराई को घुमड़ि घन बरसो । चाइन सों पांइन के पासही रहोगे जहां राधा ठकुराइन को रूप रंग दरसो ६७ ॥

क० ॥ छहरैछबीली छटाछूटि क्षिति मण्डलमें उमग उजेरी महा ओजके जबकसी । कबिपजनेशकंज मंजुल मुखीके गातउपमा दिखात कलकुंदन तबकसी ॥ फैली दीप दीपनलौं दीपति दिपत जाकी दीपमालिका की रही दीपति दबकसी । रहति न ताबदेखे मुखमहताब जब निकसी शिताब महताबके भभकसी ६८ ॥

क० ॥ क्षीरकीसी लहरि छहरगई क्षिति मांहजामिनिकी ज्योति भामिनीको मानु ऐंठो है । ठौरठौर छूटत फुहारे मानोमोतिनके देवबनु पाकोमनुकाको न अमैठो है ॥ सुधाको सरोवर सो अम्बर उदितशशि मुदित मराल मानो पैरिबेको पैठोहै । बेलके बिमल फूलफलत समूलमनो गगनते उड़ि उड़गन जनुबैठोहै ६९ ॥

क० ॥ छूटत लपटे लपटत फिरि छूटछूट थकत न दोऊ विहरत बड़ी बेरके । लंकलचकत अंकेभरत नि-

ंक परयंकपरराखे मुक्तानकर ढेरके॥ तासमय कहत
ंभु गोरीके गरेते टूट छूट चलोसुरत करत फेरफेरके।
ुचबीचअटको विराजतहै हारमानो धसीगंगधार फेर
शिखर सुमेरके ७० ॥

क॰ ॥ जगर मगर जरवाफिये बसनसाजे जेवरज-
ड़ाऊ भक्कझलक प्रमानकी। अंगअंग रंगरंग अमल
तरंग भई अमित उमंगहै न ऐसीओपआनकी॥ ठाकुर
नेहारी बरबनक बिनोद वारिभारी भीरसोहै संगसुंदरी
तेयानकी। भलीभांति करति प्रकाशित गली है यह
आवति चलीहै सो ललीहै वृषभानकी ७१ ॥

क॰ ॥ योबन उज्यारी प्यारी बैठी रंगरावटी में मुख
ी मरीची यों दरीचीबीच झलकै। भूधर सुकबिबांकी
ौहैं मनमोहै खरी खंजनसी आंखैंबनी समनसीपलकैं॥
ीशफूलबेनी बेंदीबीरी और बंदनकी चंदनके चरचा
ी चारुछबिछलकैं। कोरवारी चूनरि चकोरवारी चित
ानि मोरवारी बेसरि मरोरवारी अलकैं ७२ ॥

क॰ ॥ यमुनाके आगम न मारगमें मारुतन भौंरनि
ी भीरनि पटसे लखिपायेहै। संतनसुकबि सुखखानि
ाखिनितेरे रूपके तरंगनि अनंग दरशायेहै ॥ बाहिर
ढ़न कहैतोसों सो अयानी कौन लेहै बदनामी घेर घर
र छायेहै। पटकी लपट लपटति तादिना ते आज
ानो उनगलिन गुलाब छिरकायेहै ७३ ॥

क॰ ॥ जाके अवदात कलकंदन से गात आगे नेक
ुन दीपतिहै दीपति चमेलीकी। मुखसुखमाकी कहूं
उपमा न पाऊं जासुपायनकी लालीकंज लालिमा दुबे-

लीकी ॥ दीपति मसालसीहै बालहनुमान जासों कै रही बिशाल शोभा औरही हवेलीकी । संगमें सहेली सबै सोहती न बेली तऊ राजति अकेली छटाछूटी अलबेली की ७४ ॥

क० जगमगे योबन जराऊ तरवन कान ओंठन अनूठ रस हांसि उमड़े परै । गोरेमुख सेत आवे उससे उरोज बिंद बदन लिलार बड़ेबार घुमड़ेपरे ॥ गोरेमुख श्वेतसारी कंचन किनारीदार देवमणि झुमका झुमकि झुमड़े परे । बड़े बड़े नैन कजरारे बड़े मोती नथ ठोढ़ीमें ठहरि होड़ा होड़ी हुमड़े परे ७५ ॥

क० ॥ ज्योतिसी जगीरहे सो सौतऊजगीरहे सु मेरे जानपाई रूप भूपति जगीरहे । नीलकण्ठ निरखिलजानी पन्नगी सी चार रहत नगीसी रहे समता नगी रहै ॥ ऐसी कछू हेरिहरि लेत हरिनीकी छबि हरिनी की छबि जाहि देखत ठगीरहे । लालसै रिझत हैरी लालसै कचार फेरि लालनअधर लखिलालसे लगीरहे ७६ ॥

स० ॥ जिनहीं बरुणीनसों बांध्यो हियो तिनहीं दृग हाथ सिचावत हे । बिषबोये कटाक्षन सो हँसिकै जो सुजान सुधाहू पियावत हे ॥ अनबोलरहे जो अनोखे अजों रसमें अबरोष दिवावतहे । घनआनंद चूकौ न दांउ कहूं फिरि मारत चाव दिवावत हे ७७ ॥

स० ॥ जोहे जहां मग नंदकुमार तहांचली चंदमुखी सुकुमारि है । मोतिनहूको कियेगहनो मनो फूलिरही शुचि कुंदकी डारिहै ॥ भीतरही जो लखी सो लखी फिर

बाहिर जाहिर होत न दारिहै। जोन्हसी जोन्हगई मिलि यों मिलिजाति ज्यों दूध में दूध की धारि है ७८॥

स०॥ जाहिरे जागतिसी यमुना जबबूड़े वहै उमहै वह बेनी। त्यों पदमाकर हीर के हारन गंग तरंगनकी सुखदैनी॥ पायन के रँगसों रँगिजाति सी भांतिही भांति सरस्वती सेनी। पैरै जहां ई जहां वह बाल तहां तहां ताल में होति त्रिबेनी ७९॥

क०॥ जो पै मुख प्यारी को बताऊं चारु चंद सो मैं तोपैरहै रातही में ज्योतिनकी जोहिनी। याको तो दिवाकर के तेजहू ते तेज तेज जोपै कहूं भानु तोन रैनहोय सोहिनी॥ ग्वाल कवि याते मुख मुख माहिं मुख हैजू सोमुख सोई अति आनंद की बोहिनी। आंखते न देखी सुनी कानते न ऐसी ज्योति जैसी वृषभानु की दुलारी मन मोहिनी ८०॥

क०॥ जोनित के जूहनि दुरासद दुरूहनि प्रकाश के समूहनि उजासनि के आकरनि। फटिक अटूटनि महा रजत कूटनि मुकत मनि जूटनि समेटि रतना करनि॥ छूटिरही ओन्ह जगलूटि रही द्युति देव कमला करनि फूटि दीपति दिवाकरनि। नभ सुधासिंधु गोद पूरन प्रमोद शशि सामुद विनोद मंहूं कोद कुमुदा करनि ८१॥

क०॥ जानैभेद कविताहि गौरव गहे रहत परम प्रसन्न मुखहास छवि छ्वै रह्यो। द्विज बलदेव कहै कञ्चन लतासी चारु चन्द्र ज्यों उदित भरि रूपरस च्वै रह्यो॥ आलम कलुक अंगिराय भेलिसी करत वलित तब सीरन बीच वर ब्वै रह्यो। आइहै तरुनताई याहि

तें उचोहैं कुच सुबुधि सुगन्धको प्रकाश अंग कैरह्यो ८२

क० ॥ यमुना अन्हायबे को जाति जब प्रानप्यारी दौरत चकोर मोर भौंरभीर हारसी। कोककी कलासी चपलासी चारु चन्द्रमासी चंपक लतासी मैन कासी मैन सालसी ॥ गोकुल की गैंडे गोरी ग्वालिनि गुमान भरी गहगहे गात वह लोचन मरालसी। सौतिन के सालसी बिशाल लाल भालसी प्रबाल रबि बालसी कपूर के मसालसी ८३॥

क० ॥ जाहीजुही मल्लिका चमेली मन मोदिनी की कोमल कुमोदिनी की उपमा खराब की। कहै पदमाकर त्यों ताइन बिचारनको बिगर गुनाह अजगैबी गैरआब की ॥ चूरकरी चोखी चांदनीकी छबि छलकत पलकमें छीनीछीन आबमहताबकी। पापर कहतपीय कापरपरैगी आज गरद गुलाबकी अवाई आफताबकी ८४॥

स० ॥ जालकी चूनरी चीकनो गात चकोरथकेमुख चंदके धोखे। लांबीलटै लटकै कटिखीन पयोधर द्वै मनमोहनपोखे॥ बेधेमुबारकके उरमेंशरएको परैनकटाक्ष के ओखे। बांकीनराखी कजाकी कछूजबझांकी चितौनते झांकी झरोखे ८५॥

क० ॥ लगत समीर लंकलहकै समूल अंग फूलसे दुकूलनि सुगंध बिथर्यो परै। चंदसो बदन मंदहासी सुधाबिंदु अरबिंदन मुदित मकरंदन मुर्योपरै॥ ललित लिलार श्रम झलक अलक भार मगमें धरतपग जावक घुर्योपरै। देवमणि नूपुर पदुम पद दूपर कै भूपर अनूपरंग रूपनि चुर्योपरै ८६॥

क० ॥ लहलही लहरैं लुनाई की उदित अंग उचके कुचन कैसी कंचुकी यों गचकी। मंदपग धरति मरू करि गयंद गति चंद्रमुखी चांदनी चकित चाह सच की ॥ कैसे घनश्याम वह वाम वनधाम आवै धामके ल-गेते कोमलता जाति पचकी। अति सुकुमार सिसकाते भार हारनके वारनके भार कैयो वार लंक लचकी ८७॥

क० ॥ ललित कलाई कर कोमल कमल अति मंद मंद गति मनमोहन सो लटकैं। नागर निपट नटनागरी कियेरी वश हेरि हेरि मुख फेरि फेरि कर चटकैं ॥ भोरे भुज मूलते छुटत अँचरारी जब त्रिदश विहारी हारी हारी करि पटकैं। छविसों छलकि जात गोरे अंग उफ-नात रूप की लपट भीने पट में न अटकैं ८८ ॥

स० ॥ ललना मुख इंदु ते दूनो लसै अरविंद वसै चखवारसीलै। मुसकानिमनोहर ज्यों न महाकवि मिश्र जुवान सुधारसीलै। तन ओपकरै द्युति चम्पक लोप सची सकुचै प्रति पारसीलै। कहि आवै न रूप सिंगा-रसी यातें दिखावै लला कर आरसी लै ८९ ॥

स० ॥ लखिकै दृग मीन दुरे जलमें मन में अरविंद सकाने रहैं। वढ़ि वेनी भुवंगम देखि चपे कटि केहरि चाहि लजानेरहैं ॥ उकसोहैं उरोजन देखि त्रिजै मन दे-वन के ललचाने रहैं। मुखचंद की देखि प्रभा दिन में चित में चकवा चकवाने रहैं ९० ॥

क० ॥ जातरूप तखतपै बैठीरूपराशिराधे अंगनकी प्रभा प्रभाकर को लजावती। चीर चारु हीर हार हिये पहिरायकर भूषण बनाय बालसाजन सजावती ॥ अतर

गुलाब लै सुगंधन लगावैसबै चंदन बढ़ाय भाल भौंरन भगावती। जोरि जोरि पाणि देवतानहूंकी रानी हठी कोटि कोटि कोर निशि झुकि के बजावती ६१॥

क०॥ जरीदारकञ्चुकी के ऊपर झलकि आई ललित ललाई मानों चूनिन प्रभाकरी। अंग अनुकूले फूले फूलसे बिलोकियत लपटि दुकूल भुजमूल ते सुभाकरी॥ ऊँचे ऊँचे निपट निवास चढ़ि चंद्रमुखी झांकत झरोखे चोखे वदनसुधाकरी। अगम जिरह पैंधि गिरह उजेरो कर बिरहा नवेली आजआपही बिदाकरी ६२॥

क०॥ सुथरे सवाँरे बार सेंदुर सों मांग भरे शीश फूल ज्योति सब ज्योतिन ते आगरी। सारी जरतारी की पै किरिण किनारी भाल रोरी आड़ बिंदिया जटितरही लागरी। बड़े नैन छोटीनथ गोरे मुख पान रच्यो मेहँदी चुवत दयानिधि अनुरागरी। गरबगहेली छबिपाँयन तेपेलीदेखु हेलीयानबेली अलबेलीको सोहागरी ६३॥

क०॥ सारी जरतारी शीश भारी छबि वारी प्यारी न्यारी ज्योति होति कछु रतिसी छपाय जात। सुधि बिसराय ललचाय मुसक्याय नाथ नेह रोपिबे को हिये भूमिसी न पाय जात॥ हेमकी सी बेली अलबेली जो धरत डग कांपिजात लंकउर शंक न कंपाय जात। दबि जात दामिनि दबकि जात चंद शोभा तपि जात बाम काम अंगनि समाय जात ६४॥

क०॥ सोने सों सुरंग सब वैसई लसत अंग जग मग्यो योवन जवाहिर सों संगतास। रूपतरु कंदुक से सोहैं कुच चंद्रमा सों आनन अमंद द्युति मंद मंद

तैसो हास ॥ शोभा की निकाई देव काहू की निकाई हू ते नीके भाग भूषण भंवर भरे आस पास। चौगुनी चटक तन चीर के चटक हूते सौगुनी सुगंध ते शरीर की सहज वास ६५ ॥

क० ॥ सारी घन घोर वारी जरजरी कोर वारी झब्बा झूल झोर वारी जेब वारी तनको। वेनीछवि छोरवारी धूम धार घोरवारी छूटेलाल डोरवारी लंकलचकनको॥ आँखैं चार कोर वारी कान वोर दोर वारी श्रीपति करोर वारी मीन मृगगनको। हायवह भौंरवारी भृकुटी मरोर वारी मोर वारी वेसर मरोर डारे मन को ६६ ॥

क० ॥ सोहे श्वेत सारी ढिग कंचन किनारी भारी भीर मैं निहारी जाति संग सखियान के। सदा नंद सुंदरी न कोऊ यह रूप जाके आननकी आभासी न आभा शशि भान के॥ दृगन की वोर लागी काननकी छोर जैसी भृकुटी मरोर जोर जोरे धनुवान के। धीरी चाल वारी मुख वीरी मालवारी वह पीरी शाल वारी रहै नीरी अँखियान के ६७ ॥

क० ॥ सोहे तोहिं प्यारी फुलवारी सारी कैसी श्वेत अंचराते राते गात कंचन हरतिहैं। नेकही निहारी इन नैनन ते चारि फेरि न्याय नंदलालनके मन ठहरतिहै ॥ कमल कोमल कर करिहां है केहरी सी कदली से जंघ द्युति दीपसी बरतिहै। तेरे मुख देखे तारा पति उत दुख्योजात फिरिपरीचांदनी चवावसीकरतिहै ६८ ॥

क० ॥ सोलह कलाको इन्दु माणिकमुखारविंद सोलह शृंगार किये सोलह वरस की। अभरण बाहर

कनकवानी बारह किवार हो चरण चुभे चोप कंज रस की ॥ आठो दंत चौकन सों आठोअंग हीराहारे आ- ठहु बरंगना सो बिधना सरस की । चारखग चारमृग चारफलकीसी छबि चारभुजआरतनिकाईहै दरशकी ९९

क० ॥ श्वेतसारी सोहत उज्यारी मुखचन्द कैसी महलन मंद मुसक्यान को भहमही । अंगिया के ऊ- पर ह्वै उरभी उरोजन में उर मतिराम माल मालती डहडही॥ मांजे मंजु मुकुरसे मंजुल कपोल गोल गोरीकी गुराई गोरे गातन गहगही । फूलन की सेजबैठी दीपत फैलाय लायबेलके फुलेलफूली बेलिसीलहलही १००॥

क० ॥ सजि ब्रजबाल नंदलाल के मिलैके लिये ल- गनलगालगमें लमकिलमकिउठै । कहैपदमाकरचिराग ऐसी चांदनीसी चारोंओर चौंकनमें चमकिचमकि उठै ॥ भुकि भुकि भूमि भूमि भिल भिल भेलि भेलि करि हरी भपनमें भमकिभमकिउठै।दरदर देखो दरिवानन में दौरिदौरि दुरिदुरि दामिनीसी दमकिदमकिउठै१०१॥

क० ॥ सोसनी दुकूलनि दुरायो रूप रोशनी ह्वै बूटे- दार घांघरे की घूमन घुमाइ कै । कहै पदमाकर त्यों उन्नत उरोजन पै तंग अंगिया है तनी तनिन तनाइ कै ॥ छज्जन की छांह छकि छैल के मिलैके हेत छाजत छपा में यों छबीली छबि छाइके । ह्वै रही खरीहै छरी फूलकी छरीसी छबि सांकरीगलीमें फूल कांकरी बिछाइकै१०२॥

क० ॥ सोवें लोग घरके बगर के किवांर खले बीती निजजान युग यामयुग यामिनी । चुपचाप चोरा चोरी चौंकत चकित चित चली हित पासचित चाह भरी

भामिनी ॥ पैठत सकेत के निकेत शम्भु शोभादेत ऐसी बन बीथिन बिराजिरही कामिनी। चामीकर चोर जानों चंपलता भौर जानों चांदनी चकोर जानों मोर जानों दामिनी १०३ ॥

क० ॥ सारी जरतारी की झलक झलकत तैसी केसरि को अंगराग कीन्हों सब तनमें। तीक्षण तरणि की किरणि छूते दूनीज्योति जगत जवाहिर जटित आभरन में ॥ कबि मतिराम आभा अंगन अँगार कैसी धूमकैसी धार छबि छाजत कचन में। ग्रीषम दुपहरी में पिय को मिलनजात जानीजाति नारिनादवांरि जातबनमें १०४॥

क० ॥ सजि ब्रजचन्द पै चली है मुख चंद चारु चंद चांदनी को मुख चंद सो करत जात। कहै पदमाकर त्यों सहज सुगंधही के पुंज बन कुंजन में कंज से धरतजात ॥ धरतजहांई जहां पग है सुप्यारी तहां मजुल मजीठहीके माठसे ढरत जात। हारनते हेरोसेतसारी कीकिनारिनते बारनते मुक्ता हजारन झरतजात १०५॥

क० ॥ सूझत न गात बीति आई अधरात अरुसोयेसब जान गुरुजन जेवगरके। छिपिकै छबीली अभिसार के केवांर खोले खुलिगे सुगंधचारु चन्दन अगर के ॥ देवकहै भौर गुंजआये कुंज कुंजनते पूंछि पूंछि पाछे परेपाहरूडगरके। देवताकि दामिनी मसाल कैधों ज्योति ज्वाल झगरे परत जागे सिगरे नगरके १०६ ॥

क० ॥ सौरभ सकेलि मेलि केलिन्ह की बेलि कीन्ही शोभा की सहेली सो अकेली करतारकी। जिनही ढरक काहू तितही ढरक जाय सांचेसे सुडारी सब अंगनसुढा-

रकी ॥ तपतहरत कबि आलम परस मणि अतिही रसिक रीति जानै रस चारकी । शशिहीको सार सरसीर हूकोरस सारे सोनेको स्वरूपलै सँभारी घनसारकी १०७॥

स० ॥ सोने से अंग सरोज मुखी चली श्यामहू पै शशि केसे टके। पगनूपुर दूपुर खोलि धरे सकुचै अति जेहरि के खटके। गुरुलोगन ओर छटीसी कटी निचली रही छुद्रघटी अटके। बिनही अटके अटकीसी चलै अटकी सी फिरै लटके लटके १०८ ॥

स० ॥ सांवरी सारी सखी संग सांवरी सांवरी धारे बिभूषणग्वै के । त्यों पद्माकर सांवरोई अंगरागन आंगी रची कुच द्वैकै ॥ सांवरी रैनिमें यों घहरै घनघोरघटा ओ छटाक्षित छ्वैकै । सांवरीकामरी की देषुही बलिसांवरेपै चली सांवरी ह्वैकै १०९ ॥

स० ॥ सुन्दर जोबन रूप अनूप महागुन ज्ञानकी राशि मची तूं । शील भरी कुललोक उजागरि नागरि पूरन प्रेम पची तूं ॥ भाग को भौन सुहाग सो भूषित भूमिको भूषन सांची सची तूं। आठहू अंग तरंगन रंग सबै रुचि सञ्चि बिरञ्चि रची तूं ११० ॥

स० ॥ सूख सो नारिन नारिनजान अनारिनसो पहिरावतिपैरन । मालिनमाल बिचारतही जकी आपलगी सरदार निबेरन ॥ चित्रिनाचित्र दिखावतही चितहारि रही न कहीकर फेरन । नाइन पाइन जावक देत लगी ठकुराइनको मुखहेरन १११ ॥

क० ॥ सुखमाके सिंधुको सिंगारके सुमन्दिरते मथिके सुरूप सुधासुखसों निकारे हैं। करिउपचारतासों स्व-

च्छता उतारे तामें सौरभ सुहाग औसुहास रसडारे हैं॥ कविरसरंगताको सतजो निथारे तासों राधिका वदनवेस विधिने सँवारे हैं। वदन सँवारिकै जोहाथ धोयडारे सोई जलभयो चंदकरभारे भयेतारे हैं ११२॥

क०॥ सहज विलोकि फँसिजात मनकैसी होइ मंद मुसुकानि वानिफूलसे भरेपरें। द्विजवलदेव रंगसोनेसे सहसगुनो जीवनको लाभलहि हरपि हरेपरें॥ शुचि सुकुमार प्रभामारसे सरसभई राजति सुगंध परिमलते तरेपरें। शशिसम आननको जानन प्रमानन पै सानन विलोकि मृगकानन डरेपरें ११३॥

क०॥ सारी जरतारी लगी मणिन किनारी द्युति दामिनी कहारीगात जातरूप कंद है। हार हिये भूषण जड़ाऊ भाल वेंदी लाल अधरपर वाल विम्व लसै जीव वंद है॥ उमाकी रमाकी सुखमाकी देवताकी हठी रंभा इंदुभासी उपमासी गतिमंदहै।तारापतिकैसो मुख लहत गोविंदवारी तखतपै वैठीराधे वखत वलन्दहै ११४॥

क०॥ सांभहोगईथी वीर भौन वृपभानजीके अति सुकुमार एकरूपकैसी रासीहै। दाड़िम दशन विम्व अधर प्रवालवारी सुधासी भरतचारु मंदमंद हासी है॥ देखीहै गोपाल ग्वालआज गरवीलीहठी राधेकहितेरे जानी रम्भारमा दासीहै। हिमकरकलासी चमकचपलासीहैसोशंभुअवलासीखासीदीपमालिकासीहै ११५॥

क०॥ सारी जरतारी लगी मणिन किनारी त्योंहीं दामिनि दवायलेत दमक रदनकी। हीरनकेहार हठी गजरा गोहावदार अंगअंग फैलिरही दीपक सदनकी।

हेमकी छरीसी मान मुखन जरावजरी सब्रगुण भरीपरी छबिके कदनकी। चांदनी बिछौना भाल चन्दन लगावे बाल चांदनीमें बैठीलाल चंदसे बदनकी ११६॥

क०॥ शशिकैसो बदन जाको कनक ऐसोरूप कुंद की कली मानों डारुसे तोरीहै। चंद्रमाकी ऐसी उजि-यारी केसरि कुसुंभ वारी पहिरे प्रेमसारी दिननहूंकीथो-रीहै॥ कहिबेकोनारी वृषभानकी दुलारी श्रीनंदकी सँ-वारी रुचिरुचि रंगमेंबोरीहै। येहोयशोदारानीकैसेकैस-नेह होत तेरोकृष्णकारोहमारी राधिकाजीगोरीहै ११७॥

क०॥ भूषण जरायन के पांयन अनोटओट कंचन अनूपरूप सांचेहीकी ढारीसी। घुंघुरू पायलपर जेहर बिराजै और छाजे क्षुद्रघंटिका निहारि मतिहारीसी॥ कंठकंठ मालमाथे बेंदीलाल लालकीहै भालकी दिनेश द्युति देखेंलागै तारीसी। मनिमयवारी नखशिख उजि-यारी निशिकारीनीलसारी जगजगतदिवारीसी ११८॥

क०॥ भोजनकै भामिनि भवन बीचठाढ़ीभईचुनीसे चरण चारुचौकी रंगामेजपर। पन्ननके पानदान पानन की बीरी भरनीरी करिदीन्ही लीन्ही मनकी मजेजपर॥ फूलनके हारभरे भौंरनके भारदेव आली पहिराये ते सुहाये तनतेजपर। सौ सौ शशिकैसो आस पास ते उ-दोसो करिआइबैठीशीशाके महलसोंधी सेजपर ११६॥

स०॥ भाषतहै मुखबैन सखीनसों लाखहियेअभि-लाषन जोहै। कोमल हासनि नैन बिलासनि अंग सु-वासनिकै मनमोहै॥ मूरतिवंत किधौं तुलसी तुलसी

बनमें रति मूरतिको है। कुंजविराजत गोपवधू कमला जनुकुंज कुटीमहँ सोहै १२० ॥

क० ॥ भाल में विशेषवास अधर बुझावै प्यास लोयनको कोये शाल ग्राम के प्रकाश हैं। भृकुटी पिना क नाक मघवा निवास पुर पांच जन्य ग्रीवा परि जात के सुवास है। दिवाकर कहै कान करन प्रयाग तीर्थ वेनी शीशशेषदात हीराके उजासहै। येतेद्रव्यदेवमिलेवनिता मिलत अंक ताके परि रम्भनमें कौनपरिहास है १२१ ॥

स० ॥ भौनते गौनकै भानुललो कढ़ि देखन आई सबै ब्रज नारै। पीरो दुकूल शृँगार सजे मनो फूलि रही वन चम्पक डारै॥ पांयनतें अंगुरी नखक्वै हठी लालीकी लीकै कढ़ी असरारै। मैलीभई उपमा सिगरी मनो पीली महीमें महाउर धारै १२२ ॥

क० ॥ मौलसिरी रासतें न मालती हुलास तें गुला व बरदासतें न मानखस खासतें। बेला के विलासतें जुही के परगासतें निवारि हू कीआसतें न सेवती उजासतें॥ चंपक विकासतें न केवरे निकासतेंनसेवक प्रकाशतेंमल्ले के उजुवासतें। लाड़िली के हास तें सो अंग की सुवास तें सुक्कै रह्यो सुवासित अवास आस पास तें १२३ ॥

क० ॥ मन्द मुसक्यानमें अनन्द छवि छलकत छिन छिनहोत छविछीन छपा करकी। लाल कवि भूषन बसन को बनाव दिपै दूनी द्युति देहकी न कहूंपटतरकी॥ तैसी श्याम सारी में लसत ओप भारी देखि हाइ करि हारी हिये प्यारीजलधरकी। भौंहें कजरारीदृग अंजन सुधारी कह्यो कापै असवारी आजभई पंचशर की १२४ ॥

क० ॥ मंद मंद चली नँद नंद पै अनन्द भरी उमँगि अनंद शम्भु मंद मुसकान की। बोलत अलीसों बिहँसत ललना के लटकन की लुरन औ मुरन अधरानकी ॥ फहरात छोर थहरात लहँगेकी छबि गूजरी जराइकीबो जावक जपानकी। पगन की लाली पग नखनउजाली आगेजालीसी परतिजात आली मुक्तानकी १२५ ॥

क० ॥ मृगनकी मीननकीचंचलाई चखनमें मोतिन कीहरिनकी ज्योतिहै रदनमें। ओंठनमें आईहै मिठाई सब सिमिटिके दाखमें न ऊखमें न स्वाद सरदनमें ॥ महा कबि बालम के खुलेहैं बिशाल भाल शतोदित राजति मसालसी सदन में। बिधना गुलाबकैसो अरक उतार मानो चन्द्रकी निकाईराखी प्यारीके बदन में १२६ ॥

क० ॥ मोतिनकी मालतोरि चीर सब चीर डार्यो फेर नहींजैयों आलीदुख बिकरारे है। देवकी नँदन कहै धोखे नाग छौनन के अलकै प्रसून तेऊनोच निरवारे है॥जान मुख चन्द्रकला चोचदीनी अधरन तीनों ये निकुंजन में एकैतार तारे है। ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे तैसे मोर मतवारे लो चकोर मतवारे है १२७ ॥

स० ॥ मद मैनसो यों अलसानी लसै जनुजागी भले भरि यामिनी है। मृदुबैनसुनै हनुमान कहै कहा कोकिल मंजु कलामिनी है ॥ चकचौंध सी लागै लखे अँखियां तव कैसे कहौं रति कामिनी है। परयंक पै सो है सोहाग भरी यों मनो थिर ह्वैरही दामिनी है १२८ ॥

स० ॥ मतिमंद यों जाकी मजाको लखै हँसीहोत गयन्दके चालकीहै। मुखहेरिकै चन्द्र लजोईरहै रुचिके

कहै कञ्ज कमालकीहै ॥ हनुमान नखावलीपै तियके अवली परैफीकी प्रबालकी है । दवि दामिनी जात प्रभा निरखे कितनी छवि मंजु मसालकी है १२९ ॥

क० ॥ मदन तुकासी किधौं राधे कुन्दकासी मनोकञ्ज कलिकासी कुचजोरी हविकासी है । गांसीभरी हांसीमुख भासी मोहफांसीमद योवन उजासी नेहदीयाकीसिखासी हैजाकीरति दासीरसरासीहै रम्भासीकौनतिलोत्तमा ऐसी रूप सदन बिकासी है । कामकी कलासी चपलासी कवि नाथकिधौं चम्पकलतासी चारु चंद्रिकाप्रकासीहै १३०॥

क० ॥ मांग सिंदुरारी तन तरुण अरुण ज्योति बेंदी रचि बन्यो छविपुञ्ज उधरतु है । सघन जघन कुच सकुच दुबीचदब्यो उचकि उचकि लङ्क लचक्यो परतु है ॥ योवन बनक बनेतन में तनक देव भूषण कनकमणिआभा उभरतु है । बेसरिको मोती सुधाबिंदु सो चुवत मुखइन्दु सो उवतु बूड़ि बूड़ि उछरतु है १३१ ॥

क० ॥ मृदु मखतूल तूल कमल गुलाबफूल मखमल सेजपै सम्हारे पाय धरती । कच कुचभारन सों दर चलहारी वेग धारत में कज्जल महावर को डरती ॥ भनै रघुनाथ हे स्वरूप सुखशोभा धाम निज मृदुतासों रति रम्भाको निदरती । अति सुकुमारी प्राणप्यारी रतिरंग समय कैसेप्राण प्यारेको निशङ्क अङ्क भरती १३२ ॥

क० ॥ मोतिन की तोरनी तमासेदारद्वारे रेवा अमित तरैयन की शोभाबड़े सानकी । मखमली गिलम गलीचा मखतूलनके अतर अतूलनकी झोंके हठी मानकी ॥ जरकसी जरव जलूसन की गद्दीपर रचि छवि रही भुकी

झालर बितानकी। कंचनकी बेली रमारति ते नबेली अ-
लबेली रङ्ग रावटी अकेली वृषभान की १३३ ॥
क० ॥ मखमली गिलम गलीचन की पांति चार
जरकसी सेज तैसीरही छबि छाइकै। हीरन के मणिन
केमोत मालतीके हार लालन प्रवालनके ल्यावती बना
इकै ॥ एकै लियेसारी जरतारी कनीकोर वारी एकै हठि
बीनलै रिझावै गीत गाइकै। चन्दन चढ़ाय भाल बन्दन
लगाय राधे बैठी चंद मंदकै मसिंदपर आइकै १३४ ॥
क० ॥ मणिन महल मह महकै सुगंधै तैसी फटिक
शिलानहूं को फरश सँवारो है। जबदार जर्बदारजरी औ
जलूसदार चीजदार बिशद बिछौनन पसारोहै ॥ चंद्रमणि
चौकीपर चम्पक वरण हठी रम्भा रमा उमारूप गरब उ
तारोहै। देखोनँद नंद सुखकंद ब्रजचंद आजु राधेमुख
चंद चंदमंद करि डारोहै १३५ ॥
क० ॥ मलिन अटापै ठाढ़ी पुरट पटापै प्यारी रूपकी
घटासीदेखि रीझतगोपाल है। चरन करनकी औ चमक
आभरनकी तन आभरनकी सुफैली प्रभा लालहै॥ जकि
रहे थकिरहे देखिचक बकरहे हठीनर नारिन को ऐसो
भयो हालहै। कैधौं कछुरूयालहै कै मोहनीको जाल है
कैलालन की मालहै कैमदन मसालहै १३६ ॥
स० ॥ मंजन चीर सुहारहिये शिरचन्दन अंजन मो
तिन बानकी। जावक नूपुरमाल औ किंकिणि कंचुकी
चन्दनहै गति यानकी ॥ कंकणसोहै केयूर भुजान लसै
मुखपान औ बेंदी गुँधानकी। आवै गलीमें त्रिलोको च
ली यह कंजकली सी लली वृषभान की १३७॥

क०॥ मोतिन सों भरी मांग शीशफूल टीको दिये वेसर तरौना छवि सारी जरतारी की। मोतिन को हार माल फूलके हमेल हेम कंकण जराव छवि आरसी निहारी की॥ भरमी सुकविकटि किंकिणी रसाल बाजै जेहर औ पायजेब शोभा सुख कारी की। बिछिया अनौट राजै खोड़श शृँगार साजे मोह्यो मन मोहन कोदेखि द्युति प्यारी की १३८॥

क०॥ भानुसे अधर बिम्ब कृष्णसे चिकुर प्यारी शीत कर आनन छटान वगरायोहै। हरि सोहै लंक बंक भृकुटी कमान मैन नयन खरसान दंत दामिन दुरायोहै॥ वदत दिवाकर उरोज शम्भु गंगा हार नखन सरस्वती बिमल धार छायो है। देखि नापरतहै चलाकी कमलासनकी जिन बानितामें सारे देवता बनायो है १३९

क०॥ बाला कोऊ सेवक बिशाला इहिं घरमांझ माला रूपरंग कीसी चितमें चढ़तिहै। नखशिख नजरिन आवै चखचौंधनिसों जगमग माचेमोदमंत्रसों मढ़तिहै॥ ऐसी दिव्य दीपति न देखी कहूं और ठौर ठौर ठौर फोरि भौन भागिसी वढ़तिहै। आगिसी कढ़ति वड़वागिसी कढ़ति दावा दागसी कढ़ति काम लागसी कढ़तिहै १४०॥

क०॥ बिनलाये अंजन नचत नैन खंजन से कंजन की बास अंगबास में जगति है। कनक की भूमिसी लसत छाती मोतीराम सहज स्वभाइनमें सहजै ठगति है॥ भूषणकी छवि लागे दूषणसी छवि आगे अंगअंग योवनकी ज्योति उमगति है। सजनीय दीपनमें दीपक शिखासीदिपै तारापतिहीमें तारापतिसीलगतिहै १४१॥

स० ॥ बिहँसे द्युति दामिनिसी दरसै तन ज्योति जुन्हाई उईसीपरै। लखि पायनकी अरुणाई अनूप ललाई जपा की जुईसी परै ॥ निकरैसी निकाई निहारै नई रतिरूप लुभाई तुईसीपरै। सुकुमारतामंजु मनोहरता मुख चारुता चारु चुई सी परै १४२ ॥

क० ॥ वृषभानु षष्ठमकी सुखमा कहांलों कहौं अष्टम सीचढ़ै सौतिहिये नखियन पै। तीनमें प्रथम होवे दश केतुजूके जोर कुचन एकादश लजावेलखियन पै॥ कहै मारकंडे कटि पंचम दुरे हैं देखि खायके चतुर्थबर आपने जियन पै। भौंह पैन नौम कबौ आज लौंभयेहैं सप्त द्वादश दिवाने छबिरास आखियन पै १४३ ॥

क० ॥ वारिजात वारिजात पारिजात पारिजात माल ती बिदारिजात सो धेनकी झरीसी। माखन सी मैनसी मुरार मखमल सम कोमल सरस तरु फूलन की छरी सी। गह गही गरुई गुराई गोरी गोरे गात श्री पति बिलौर सीसी ईंगुरसों भरीसी। बीजथिर धरीसी कनक रेखकरीसीप्रबालद्युतिहरीसी ललित लाललरीसी१४४

क० ॥ बांकीचारु चान्द्रका बिराजै भालबांकी खौरि बांकी भौंह चंचल चितौन चख बांकीहै। बांकी नकबेसरि मधुर मुसक्यानि बांकीकहै हनूमान बांकी अध ललाकीहै। सुखराशि भूषण शृंगार चंद्र कला कीने बांकी परयंक बैठी भूरि करुणाकी है। झुकिझुकि झूझूमि झांकी करैं देवबधू कहै अनुपमासिरी राधिक की झांकीहै १४५ ॥

क० ॥ बैसकी किशोरी गोरी शोभा बरणीन जात ग

तकी निकाईछबि नाहीं काहूयोन में। बासर गँवायोखोलि जोमें बियोग बेलि सांझ समय व्यथाबाढ़ी बैठिपिय भोन में॥ औधिके व्यतीत भये रंचको न कलपरी व्याकुलसी भईजात सारे मंद पौनसें। नीचेले उठाय नारिडीढ़ पर जागनासुआगिआगिआगिकैकेभाजिगईभौनमें १४६॥

क०॥ बैठीरंग भरी हैं रँगीली रंग रावटी में कहांलौं बखानौं सुन्दराई शिरताज की। चांदनी की चम्पक की चंचला चमीकर की इन्दिरा तिलोत्तमा की शोभा कौन काजकी॥ मोतिन के हारगरे मोतिनसों मांगभरे मोतिन सों बेनीगुही हठी सुखसाज की। चाल गजराज मृगराज कीसी लंकद्विजराजसो बदनराजै रानीब्रजराजकी १४७॥

क०॥ बजत बधाय गाय मंगल सोहाय मग पांवड़े परायहै अवाई सुखवानकी। बैठी सुखपाल सुखपालनमें रानी साथ ब्रज महरानी के प्रगट जग जानकी॥ बोलिकै पठाईआई नगर लुगाई सब देखिछबि छाईजिन्हैं सूझ-तन आन की। महर मन भाई हठी कुलह सोहाई ऐसी गोकुलहि आई राधे बेटी वृषभान की १४८॥

क०॥ बैठी कुंज भौन गोरी कीरति किशोरी राधे छू-टत फुहारे हिमवारे एकपाती है। अतर गुलाब घिस चन्दन चहल मची चारो ओर सुमन सुगंध सरसाती है॥ कैधौरंग बारीहटी उठती तरंगें त्यों अनन्त अंगना सी अंग आभा उफनाती है। बांधि बांधि परा सरासरी मुख किरणें सोंछोरलों धरापैछूटि छराखाय जातीहै १४९॥

क०॥ बैठीचढ़ि चांदनीमें चन्द्रमा बिलोकनको उन्नत उरोजनते उछरेहरापरे। दमाछमा केतक तिलोत्तमाहं घ-

नश्याम रमा रतिरूपदेखि धसके धरा परै॥ जेवर जड़ाऊ मोर जगमगै अंगनते जेवर जड़ाऊ तेजतरुण तरापरै। राधे मुख मण्डल मयूषन ते महाराज छूटि के छपाकरके ऊपर छरापरै १५० ॥

क० ॥ वह चितवन वह सुन्दरकपोल द्युतिवह दशन निछवि बिज्जुकी धरति है। वह ओंठलाली वह नाशिका सकोरनि में वह हावभाव कैयों कौतुक करति है॥ कहै मनोराम छबि बरणिसकै को वह रतिते सरस मन मुनिको हरति है। वह मुसक्यानि युग भौंहनि कमान द्युति वह बतरानि न बिसारी बिसरति है १५१ ॥

क० ॥ बाटिका बिहारी अभिसार को सिधारी प्यारी सांकर अँधेरीमें उजेरी कैसो कंद है। भादौं को बिषम मेह दीपसी दुरैन देह नागरके नेहको सनेह दृष्टिबंदहै॥ शिवा जान्यो नागरि पिशाचनि कमख्या जान्यो मृगनि कलानिधि औ छली जान्योछंद है। बिज्जु जान्यो घन घोर घटापट मोरजान्यो रविजान्यो चोरन चकोरजान्यो चन्द है १५२ ॥

स० ॥ बारिज सो मुख मीनसे नयन सेवार से बारन की सुख दासी। कम्बु सो कण्ठ लसै कुच कोक सो भौंर सो नाभि भरी भ्रम भासी। गोकुल धारसी रोमावली लहरीसी लसै त्रिबली छबिरासी। लालबिहार करो रस में वह बालबनी सुखकी सरितासी १५३ ॥

क० ॥ फटिक शिलान सो सुधास्यो सुधा मन्दिर उदधि दधिकैसी अधिकाईउमगे अमन्द। भीतरतै बाहिर लों भाति न दिखाई देत दूध कैसो फेन फैल्यो आंगन

फरश बन्द ॥ तारासी तरुणि तामें ठाढ़ी भिलमिलि होति मोतिन की ज्योति मिलि मल्लिका को मकरन्द। आरसी से अम्बर में आभासी उजारीलगै प्यारी राधिका के प्रतिबिम्बसो लगत चन्द १५४॥

क० ॥ फूलेहैं न शरद सरोज इहि समय कहूं फूलेहैं न फूल फैल्यो सौरभ कहांते है। चंपक थलीन मिलि मालतीहू अवलीन केसरि परसि पौन आयो न तहांते है॥ तोल्यो हैन घनसार खोल्यो ना कुरंगसार सौरभ अपार पारावारको जहांतेहै। वल्लभ रसिक हम जानी लपटानीप्यारी आईरंगमहलमें मिलन उहांतेहै १५५॥

क० ॥ फटिक शिलानके महल महरानी बैठी सुरन की रानी जुरिआई मनभावती। कोऊ जलदानी पानदानी पीकदानीलिये कोऊ करबीनैंलै सोहाय गीत गावती॥ कोऊ चीरचीनै चारु चांदनी से चौजवारे हठलै सुगंधनसों अलकै बनावती। मोतिनके माणिनके पन्नग प्रवालनके लालनके हीरनके हार पहिरावती १५६॥

क० ॥ रोहिनी रमण की मरीची सी सुखद सीरी सोहिनी सरस महामोहिनी के थलसी। श्रीपति सुकवि बाला रविके किरण ऐसी सदन मुकुरसी अमल गंगाजलसी॥ ग्वालिगरवीली जाकेगातकी गोराई आगे चपला निकाई ऐसी लागत सहलसी।माखनमहलसीपरागकेचहलसी गुलाबकेपहलसी नरममखमलसी १५७॥

क० ॥ रात पियचांदनी बिलोकिबेको रनिवास सिगरी बुलाई मोदमन्दिरमें भरिगो। रघुनाथ तासमय की शोभाको समाज देखि रीभरह्योमोपै न बखान करू

करिगो ॥ घूंघुटकेखुलत दुलहिनी केआननते दशहूदि शानमें प्रकाश ऐसोअरिगो। ढरिगोगुमान तमसौतिन के जीको भटू तारन समेत तारापति फीकोपरिगो १५८॥

क० ॥ रंगभरी रसभरी सुन्दरसुगंधभरी सुखभरी पैन ऐन नैन मैंनकासीहै। दर्पणसी देह तैसी नेहकी नई नवेली ब्रजबनितान ऐसी सुरपुरबासीहैं॥ आलमसुकबि लोने सोनेकेसरोजहीते फूलहीके भारेभर पानकी लता सीहैं। चन्दनचढ़ाय चारु चांदनीसी छायरही चन्द्रमा सी मोतीसी चमक चन्द्रमासीहै १५६ ॥

क० ॥ राजत रँगीली रंगभौन रसमाती तहां जागत झरोखनते ज्योतिनको वृन्दहै। ज्वालामुखी मंदिरप्रसिद्ध सोदिखात वहां कैधौं स्वर्गशैलकी गुहामें प्रभाकन्द है॥ भनत रघुनाथ लोग लखत विचारे मन तारागण चन्दहै कि भानुहै कि छन्दहै। चन्दते दूनो दीप्त कन्द सदापूनोसम होतहैनऊनो मुखवाला बालचन्दहै १६०।

स० ॥ राधे के अंग गोराईसी और गोराई बिरंचि बनावन लीनी। कैसतबुद्धि बिबेकसों एक अनेकबिचारनमें मति दीनी ॥ बानिक तैसी बनीना बनावत केशव प्रस्तुत होगई हीनी। लैतब केसरि केतकी कंचन चंपकके दल दामिनी कीनी १६१॥

स० ॥ रूपअनूप लख्यो कितनो रघुनाथ कहै ब्रज वनिता को। पैनहिं ऐसो पर्यो कोउदीठि बन्यो इहि भांतिनते शिर पाको॥ और कहौं सोसुनो चितदै जिहि भाँतिनते निरख्योगुन वाको। जात दिगंतनलौ चलि मिलिसाथ समीरके सौरभ जाको १६२॥

स० ॥ राधिका रूप विरंचिरच्यो सबलोकनकी सु-
खमा शुभ लैलै । अंगके रंगनके ढिगजात कै जात है
शंभुसबै रंग मैलै ॥ लालनसो परवालनसों वैधी लालन
जानिपरै वह गैलै । पांवधरै जितही वहबाल तहीं रँग
लाल गुलाब सो फैलै १६३ ॥

क० ॥ राधिका के चरण विराजै चारु माणिकसे मूंग
की फरीसी भली आंगुरी सुभाखै हैं। गदाधर कहै करी
करसे युगल जानु क्षीण कटि केसरि सी विष अभिलाखै
हैं ॥ पानसो उदर हेम कुम्भसे उरोज वर बाहु लतिका
सी खासी कामतरु शाखै हैं । इंदुसो वदन कुरुविंद से
अधर लाल कुंदसे रदन अरविंद सम आँखैहैं १६४ ॥

क० ॥ राधाठकुरानी पासवानी लिये पानीखरी आस
पासचेरी चौरढारै देवदारसी । अंगरागअंगतिलगायबे
कोल्याई रतिअम्बरअमललियेफूलनकोहाररसी॥युगल-
किशोर कहै नन्दको किशोर जहां जोरे करजोहै ज्योति
जिनकी चारसी । मोदकबढ़ायबेको तुरकीहरा है लिये
एक हाथ फूलगेंद एकहाथ आरसी १६५ ॥

क० ॥ हारहीके भार उरभारना सँभारै नारिअलप
अहार रसबासको अहार है। सीरेते सिराति तातेताती
कैके जाति डोलै पौनके परसप्यारी पानकैसी डारहै ॥
कहैकवि आलम न रतिहू न रंभाहू न मैनकाघृताची
ऐसीरूपकी अपार है । बानक विचित्र औन चित्रमें न
ऐसीकोऊ चित्रलिखि पूतरी जिआई करतारहै १६६॥

स० ॥ हीरनके मुक्तानके भूषण अंगन लै घनसार
लगायो । सारी सुपेदलसै जरतारकी शारदरूप स्वरूप

क० ॥ गोरेमुख गोलहरे हँसत कपोलबड़े लोइन बिलोकलाल लोयलिये लाजपर। लोभालागी लाल लखि शोभाते उठत गोभासे लगत देव रूपरंग के समाज पर॥ बादलाकी सारीनवनारी जरतारी दरदावन किनारी भीनी भालरके साजपर। मोतीगुहे कोरन चमक चहुंओरन ज्यों तोरन तरैयनकी तानी द्विजराज पर १७६ ॥

क० ॥ गरब गुरजपै चढ़ाईतोप कोपकरि सौतिन जखीराकियो योबन जमाकोहै। भणित कबिंद्र अभरनभार भारीभटनूपुर नगारे नौबतीन को भमाको है ॥ मैनगढ़पति आगे लड़ैनैन सैनदेके छूटत कटाक्ष बाणलाग उर जाको है। हांको चहुंघाको करि प्यारो लेनचाहै प्यारी तेरोरूप गढ़ ग्वालियरहू ते बांको है १७७॥

क० ॥ गहिरी गुराईते प्रथम चूमि चामीकर चम्पक के ऊपर बहुरि पांवरोप्यो है। तीसरे अमल अरबिंद आभा बसकरि हँसकरि तड़िताको तोयदमें तोप्योहै॥ भनत कबिंद्र तेरे गानसमय सौतेंकहा सुरबनितान को गुमान जात लोप्यो है। मेरेजान आली आज ऐंड़भरो तेरोमुख सोहैंतान भौंहैंरी कलानिधि पै कोप्यो है १७८ ॥

क० ॥ गोरी महाभोरी तेरे गात की गुराई देखि दिन दिन दामिनी की छाती होति खुधा सी। श्रीपति कमल की कसानी मखमल की बदरूसानी लाल की ललाई लागे मुधा सी॥ मोम निदरत सो प्रकाश को हरत जोम रोम रोम छुरत छपायन की क्षुधा सी। सुखमा को ऐनमई शीतल को चैनमई पीवन को मैमई नैनन को सुधासी १७९ ॥

स० ॥ गतिमन्द यों जाकी मजाकी लखें हँसी होति गयंदके चालकीहै। मुख हेरिकै चंद लजोइरहै रुचिको कहै कंज कमालकी है॥ हनुमान नखावलीपै तियके अवलीपरै फीकी प्रवाल की है। दवि दामिनी जाति प्रभा निरखें कितनी छवि मञ्जु मसाल की है १८० ॥

क० ॥ गति पै गयंद वारौं पग अरविंद वारौं हठी अलिवृन्द वारौं अलकन फंद पै। गुलफ गुलिंद वारौं शीतला पै सिंधुवारौं सकल सुगंधवारौंमुखकी सुगंधपै॥ कटिपै मृगेंद्रवारौं तनछवि बृंदवारौं बेनीपै फनिंदवारौं जात नँदनंदपै। ओठ जीव बंधुवारौं हासी सुधाकंद वारौं कोटि कोटि चंदवारौं राधे मुखचंदपै १८१ ॥

क० ॥ पलिकाते पांय जोधरति धाय धरणी में छाले परै पगमांझ पैडक गवन तें। लीलैजो तमोल तौतो ताप आवै बलिभद्र होतिहै अरुचि पानपीक अचवन तें ॥ हारनके भार और चीरहू के तनभार यातेंनहीं बामहोति बाहिर भवनतें। लागै जोसमीर तौतो खुरेपरै सौतिनके फूलज्यों उडत प्यारी पंखाके पवन तें १८२ ॥

क० ॥ पीतसित मिश्रित सुकेशन ललितसारी जगित जवारी ज्योति मोतिन जगीपरै। हीरनकेप्रदर प्रकाश प्रतिबिम्बतापै पगपग मग जगमग उमगीपरै ॥ मर्कत मणिन चंद्रिकान चकचौंधै कौंधै पजन प्रियाके अंग अद्भुत पगीपरै। वरुकसुगंधचन्दनादिक महकमूक पावक लहक झांकि दहक दगी परै १८३ ॥

क० ॥ प्यारी तुव अंगनि की उमगी सुवास सोई लागी हरि चन्दन में इन्दिराके घर में। मालती लता

बनमें सेवती गुलाबनमें मृगमद घनसार अम्बरअगर में॥ उज्ज्वल अछेह छबि छाई पुनि क्षिति पर देखियत सोई मन माणिक मुकुर में। चम्पकबनीमें चिरागनकी अनीमें चारु चंदकी कलामेंचपलामें चामीकरमें १८४॥

क०॥ पलकाते पद भौन भूमिपै धरतु नेकु फलका परत ततकाल पगतलमें। नाइनि गुलाब भांवो भांवति जो हरे हरे भांई परै आनन भँवाई परै बलमें॥ हनूमान कशसीर आदितें अलेपतहू ऊबी रहै आपनेही अंग परमलमें। सुरजा में नागजामें नगजा जलजामें सुकुमार देखी वृषभानुजा सकल में १८५॥

क०॥ पहिरे बनाय सित भूषण दिनेश सब केशन कुसुम गज मोतिन की पांति है। सारी जरतारी तामें तैसी यो किनारी द्युति जाति ना निहारी बनी प्यारी जेहि भांति है॥ बोलि उठी गोपिका कन्हाई तब जान पाई नातो एक देखत उज्यारी जैसी राति है। रूप की अन्हाई क्षीर निधि कैसी छाई छबि मैंतो जानी माई के जुन्हाई चली जाति है १८६॥

क०॥ पैन्हे श्वेतसारी जरी मोतिन किनारी द्युति दामिनि कहारी प्रतिजातरूप कंदहै। हाराहिये भूषण जड़ऊभाल वेंदी लाल अधर प्रबाललाल और ज्योति वंद है॥ दमक समाकी हठी रमा उमा इंदमाकी रति रूप उपमाकी करैगति मंदहै। नखत पतीसो मुख लखत गोविन्द ठाढ़ीतखतपैबैठी राधेबखतबलंदहै १८७॥

क०॥ तनकी सुबास आसपास रासमण्डलमें भौंरनकी भीरभारी देखियतभोरते। संतनकहतलोने लांक

की लोनाईलखि लचकनिविपुल नितम्ब झकझोरते। पांवनतेलखि दरदावन किनारी गज मोतिनसों सारी जरतारी ओरछोरते। श्यामघन घटनते निकसि निशंक मानो चंदमुख चपलनि घेर्यो चहुंओरते १८८ ॥

क० ॥ ताराकिधौं विधुदार किधौं घृत धारसी जावकहै परिरंभौ। कामकी कामिनी कै मधुयामिनी दीपशिखा किधौं बिज्जु सदंभौ ॥ देखी न जाति बिशेखीबधू किधौं हेमबरेखी रमा रुचिरंभौ। सांझ शशी की प्रभातको भानु किधौं वृषभानके भौन अचंभौ १८९ ॥

स० ॥ प्रभा चपला कीकहै को भली लजी जासों दबी घन में घहराति। छपाकर छीन मलीन महा द्युति ताकी नहीं मुख पै ठहराति ॥ कही हनुमान परै तिय क्यों प्रति अंगनते उपमा लहराति। नहीं तनुरूप बिलोकि परै तन ऊपर ह्वै छबि यों छहराति १९० ॥

क० ॥ तैसी चष चाहन लगत उर शायक सी तैसी बिधि बाहन बिराजत बिजैठो है। तैसी भृकुटीन घाट तैसोई लसै लिलाट तैसोई बिलोकिबे को लाल मन पैठो है ॥ कहै नीलकण्ठ अंग तैसी तरुणाई आई योवननरेश तहां फिरै अंग ऐंठो है। छूटी लट भालपै बिराजे गोरे गाल पै सुमानों रूप मालपै बियालऐंठि बैठो है १९१ ॥

क० ॥ देखीभटूभावती प्रकाशभारे भानकैसो कोकिलासे बैन नैन एनन जुरैगई। मैनकासी नारी हठीमैनका कहारी प्यारी रम्भा रमा उमावारी मनको मुरैगई ॥ कमल कलीसीलली राजतअलीनबीच गोकुल गलीनमें गुलाब सो कुरैगई। बिज्जुल के जालन की कोटिन मशा-

लन की लालनकी सालन की दीपति दुरैगई १६२॥

क०॥ देखी भांति भली हरि आज वृषभानुलली ओट कै अलीकी चली या गलीमें जाति है। बापुरो मयंक सर कीजै कहा सकलंक जाके रूपआगे रंकरंभासी लजातिहै॥ केती कबिताई कैसवांरक निकाई कहे सीप गहिराई कहूंसरिता समातिहै। सौरभ सों अंगचढ़ी भौंर भीर संगमढ़ी बाहरकै अंगकढ़ी शोभा मड़रातिहै १६३॥

क०॥ देहमें बनक सीहै नूपुर झनकसीहै लांकहूतनक सीहै महाछबि बढ़ीहै। चालगति मंदसीहै लगेसुखकंदसीहै निरखेते चंदसीहै कोक कलापढ़ीहै॥ आलमके प्रभुबांके पटतरदीजे कौन तेरे चितबसी चहै वाकेसम गढ़ीहै। आंगनमें पगभरे सखी कंध बाहुधरै कंचनके खम्भ मानो चंपलताचढ़ीहै १६४॥

स०॥ दास लला नवला छबिदेखिकै मोमति है उपमानलतासी। चंपक मालसी हेमलतासी कि होइ जवाहिरकी लवलासी॥ ज्योतिसों चित्रकी पूतरी काढ़ि कि ठाढ़ी मनोजहिकी अबलासी। दीपशिखासी मशाल प्रभासी कहौं चपलासी कि चंदकलासी १६५॥

क०॥ घूंघटके घूमके सुझूमके जवाहिरके झिलमिल झालरेकी झूमलौ झुलतजात। कहैपदमाकर सुधाकर मुखीके हीर हारनमें तारनके तोमसे तुलत जात। मंदमंद मोकल मतंगलौ चलेई भले भुजन समेत भुभूषण डुलतजात। झूनाकी झकोरन चहूँघाखोरखोरमें खासे खुशबोईके खजानेसे खुलतजात १६६॥

क०॥ घांघरो घनेरो लांबीलटैं लचकीलो लंकका

करेजी सारीखुली अधखुली ठाड़वह । गोरी गजगौनी दिनदूनी द्युति होतदेव लागति सुलोनी गुरलोगनि के लाड़ वह ॥ चंचल चितौनि चुभिरही चितचोर वारी मोर वारी वेसर औ केसरकी आड़वह। मृदुहँसि बोलनकी गोरे गोरे गोलनकी ललित कपोलन की जीमें गड़ी गाड़ वह १९७॥

स० ॥ उसरैपट पौन प्रसंगनसों द्युति दामिनीके सम दौरति है । बतराय सखीजन सों मुसक्यायसुचांदनी की छबि छोरति है ॥ अधिकाय सुगंधनि सेवक चारु मलिंदन को झुक झोरति है । घनिबाल सुचालसों फालभरे लौ मही रँगलाल में बोरति है १९८ ॥

क० ॥ धारे लालसारी प्यारी हीरन किनारीवारी अंगन अनंग द्युति रंगचढ़ि आयोहै। दामोदर कहै बाल बैठीहै बिनोदभरी लालको बिलोकिबेको मोदमढ़ि आयो है ॥ झांकीझुकि झपकि झरोखा खोलि घूंघटको बदन बिकासको प्रकास बढ़ि आयोहै । जोरिके नक्षत्रन बिथोरि घनघोर मानो फोरि रबिमण्डल को शशि कढ़ि आयो है १९९ ॥

क० ॥ उज्ज्वल अखण्ड खण्ड सातयेमहलमहा मंडल चवारो चंदमण्डलकी चोटही । भीतरहू लालन की लालनि बिशाल ज्योति बाहिरजुन्हाई जगीज्योतिन के जोटही ॥ बरणतिबानी चौर ढारति भवानी करजोरे रमारानी ठाढ़ीरमनकी ओटही। देवादिगपालनिकी देवी सुखदाइनते राधाठकुराइन के पांयन पलोटही २०० ॥

क० ॥ चोटी देख संपालजे चंपा अंग रंग देख कंपा

देख चन्द्र चन्द्र बिम्ब जिहि गोरी को । चाल देख लजत मराल मद माते व्याल देखे जोत जाल जोत जाल तन चोरीको ॥ कहि रघुनाथ हाथ निरखिलजातकंज लाजत है भौम भालबिन्दु लखि रोरीको । नाहींउपमानहै सुजान समताकोकहूं ऐसीहैअनूपरूपकीरतिकिशोरीको २०१॥

क० ॥ दन्तन की दमक दबाके द्युति हीरन की अधर प्रबालनते अति अगरो परै । मंजुल कपोलन की कल कमनीय तासों अनुपम मुकुर सरूप रगरोपरै ॥ निरखी नखनकी निकाई द्विज ऐसीभांति उपमान जिनते सहमि सगरो परै । अमित उमंगनतेकहिये कहांलौ प्रतिअंगन तेजाके छबिपुंज बगरो परै २०२ ॥ इति सर्वदेह उपमा वा छबि वर्णन सम्पूर्णम् ॥

दोहा ॥

नखशिखयह संग्रहकियो अपनी मति अनुसार ॥
भूल चूक जो होय कछु सज्जन लेव सुधार १
संवत उन्निस जानिये तापर और पचास ॥
जेठ कृष्ण तेरस दिना कीन्हों ग्रंथ प्रकास २

इतिनखशिखहजारापरमानन्दसुहानेसंग्रहीतसम्पूर्णम्॥

नवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपा
दिसम्बर सन् १८९३ ई० ॥

और उनके परस्पर प्रीतिमान् और आसक्त होने की कथाओं का कीर्त्तन ९ करोड़ों प्रपंच और छलरचना और बहुरूप धारणकरने की विद्या के द्वारा म्लेच्छोंका विजयकरना और और नानाप्रकार की सुन्दर शोभायमान और चित्तको प्रसन्न करनेवाली कथावर्णित हैं और ये उक्तआख्यान यथोचित रससम्बन्धी नानाप्रकारके छन्दों से संपुटित हैं इस पुस्तककी पूरी पूरी प्रशंसा पढ़नेही से जानी जासक्ती है परन्तु हम संक्षेपमात्र इतना कहसके हैं कि स्वस्थताके समय को व्यतीत करनेके लिये और इसके पढ़नेसे चित्तको प्रसन्न और आह्लादित करनेके लिये यहपुस्तक अद्वितीय है और ऐसी अद्भुत है किहरप्रकारके व्यसनी मनुष्यके लिये उपयोगी है हरभक्त इसको पढ़कर ईश्वरमें दृढ़प्रीति और विश्वास करेंगे--शूरवीर इसके पाठसे वीररसमें छकित होजायँगे रसिकोंका चित्त इसकेअवलोकनसे प्रफुल्लित होजायगा विरहियोंको इसका पाठ प्रिय दर्शनकी समान सूचितहोगा और ईश्वरीय वनस्पति रचनाको अवलोकन काव्यसन रखनेवालों को इसके पाठ में परम प्रीति उत्पन्न होगी ॥

इस अपूर्वग्रंथको स्वदेश निवासी महज्जनोंकी प्रीतिके निमित्त श्रीमद् भार्गववंशावतंस श्रीयुत मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने आगरा नगर पीपलमंडीनिवासि चौरासिया गौड़वंशावतंस पंडित कुंजबिहारीलाल उपनाम कुंजलाल से रचनाकराकर अपनेनिज नामांकित यन्त्रालयमें मुद्रित कराया है अब हमको आशाहै कि हमारे भारतदेश निवासी इस मनोहर अपूर्व और अद्भुत ग्रंथको ले लेकर पढ़ें और इसके पाठसे परमानन्द प्राप्तकरके हमको कृतार्थकरें ॥

मनेजर, नवलकिशोर
प्रेस लखनऊ.

+ यहपुस्तक ८१ जुज़ ४ पत्रेकीहै क़ीमत फ़ी जिल्द ३) रु० है परन्तु मोआमले आधयवा औरभी वहीतादादके ख़रीदारोंको चाहिये कि दफ़्तर कारख़ाने हज़ा किताबतकरें—

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परम रहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगरशौर्य्यादि गुणसं- पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सवप्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदांत व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वहकब इस के अन्तराभिप्रायको जानसक्ते-हैं और यह प्रत्यक्षही है किजब तक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनंद क्योंकर मिलै इसप्र- कार संपूर्ण भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पदाब्जरसिकजनों के चित्तानंदार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्मधुरीण सकल कला चातुरीण सर्व्वविद्या विलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी(सी, आई, ई)ने वहुतसाधन व्ययकर फर्रुखा- बाद निवासि पण्डित उमादत्तजीसे इस मनोरंजन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तकको श्रीशंकराचार्य्य निर्मितभाष्यानुसार संस्कृत से सरलदेश भाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्यसे प्रभा- तकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसकोभाषा मात्र के जानने वाले पुरुष भी जानसक्ते हैं ॥

मिताक्षरा भाषा टीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रोंका शिरोमणिहै जिसमें आचार काण्ड, व्यवहारकाण्ड और प्रायश्चित्तकाण्ड नामक तीनकाण्ड हैं जिनसे गृहस्थादि चारों आश्रम और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के सम्पूर्ण कर्मधर्मादि और राजसम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में वादी प्रतिवादियों के धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुकद्दमों की व्यवस्था वर्णित है ॥